जैन विश्व भारती संस्थान
(मान्य विश्वविद्यालय)
लाडनूं – 341 306

मुनि श्री चौथमल जी कृत

कालु – कौमुदी

हिन्दी व्याख्या
समणी हिमप्रज्ञा

बी. ए. द्वितीय वर्ष
कारक (329 सूत्र से 392 सूत्र तक)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सूत्र (कारक प्रकरण)

329. क्रिया निमित्तं कारकम्
330. स्वतंत्रः कर्ता
331. नाम्नः प्रथमा
332. आमन्त्रणे
333. कर्तुर्व्याप्यं कर्म
334. गौणात्
335. कर्मणि द्वितीया
336. क्रियाविशेषणात्
337. स्मृत्यर्थदयेशां वा
338. अधेः शीङ्स्थासामाधारः
339. अन्वध्याङ्भ्यो वसः
340. उपान्निवासे
341. दुहाद्यर्थानामविवक्षितम्
342. गतिबोधाहारशब्दार्थाऽकर्मणाम्
343. न नीखाद्यदिह्वाशब्दायक्रन्दाम्
344. निकषासमयाहाधिगन्तरान्तरेणातियेनतेनैः
345. सर्वोभयाभिपरिभिस्तसन्तैः
346. उपर्यधोऽधिभिर्द्वित्त्वे
347. उपेन चोत्कृष्टे
348. कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे
349. अपवर्गे तृतीया
350. कर्तृसाधनहेत्वित्थंभूतलक्षणेषु
351. सहार्थे
352. येनाङ्गि विकारः
353. निषेधार्थकृताद्यैः
354. प्रकृत्यादय आख्यायाम्
355. कर्मक्रियाभिप्रेयो दानपात्रम्
356. दानपात्रे चतुर्थी
357. रूच्यर्थानां प्रीयमाणः
358. श्लाघह्नु स्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः
359. क्रुध्द्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रतिकोपः
360. तादर्थ्ये
361. समर्थार्थनमः स्वस्तिस्वाहास्वधावषड्भिः
362. गतेरप्राप्ते वा
363. हितसुखाभ्याम्
364. अपायेऽवधिरपादानम्
365. पञ्चम्यपादाने
366. प्रभृत्यन्यार्थाराद्दिक्शब्दैः
367. पर्यपाभ्यां वर्जने
368. आङावधौ
369. आख्यातर्युपयोगे
370. दूरान्तिकार्थबहिर्भिः
371. शेषे
372. कर्तृकर्मणोः कृति
373. उभयप्राप्तौ कर्तरि वा
374. तृन्नुदन्ताव्ययक्वस्वानशतृक्तक्तवतुकिखलर्थानाम्
375. अकमेरुकस्य
376. द्विषः शतुर्वा
377. क्तस्य वर्तमानाधारयोः
378. भावे वा
379. कृत्यानां कर्तरि वा
380. आधारे सप्तमी
381. यस्य भावेन भावलक्षणम्
382. षष्ठ्यनादरे
383. निमित्तात्कर्मसंयुक्तात्
384. साध्वसाधुभ्याम्
385. निर्धारणेऽविभागे सप्तमी च
386. स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैर्वा
387. तूल्यार्थैस्तृतीयाषष्ठ्यौ
388. ऋते द्वितीयापञ्चम्यौ
389. विना तृतीया च
390. दूरान्तिकार्थादसत्त्वात्सप्तमी ताश्च
391. हेत्वर्थैस्तृतीयाद्याः
392. सर्वादिश्च सर्वाः

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ कारक प्रकरणम्

(329) क्रिया निमित्तं कारकम् ।। 2।4।1।
क्रियाया निमित्तं कर्त्रादि कारकसंज्ञं स्यात्।

■ क्रिया के निमित्त कर्ता आदि की कारक[1] संज्ञा होती है।

(330) स्वतन्त्रः कर्ता ।। 2।4।2।
यः क्रियासिद्धौ प्राधान्येन विवक्ष्यते स कारकः कर्तृसंज्ञः स्यात्।

■ जो क्रिया की सिद्धि में प्रधान रूप से कहा जाता है उस कारक की कर्ता[2] संज्ञा होती है। अब क्रमानुसार प्रथमा आदि विभक्तियों के प्रयोग पर विचार किया जायेगा।

(331) नाम्नः प्रथमा।।2।4।44।
नाम्नः प्रथमा विभक्तिः स्यात्। जिनः, श्रीः, ज्ञानम्, द्रोणः, खारी, आढकम्, एकः, द्वौ, बहवः।

■ नाम से प्रथमा विभक्ति होती है।
जिनः (जिन)
श्रीः (लक्ष्मी)
ज्ञानम् (ज्ञान)
द्रोणः (16 सेर का द्रोण)
खारी (12 मण 32 सेर को खारी कहते हैं)
आढ़कम (चार सेर का आढ़कम)
एकः (एक)
द्वौ (दो)

---

[1] क्रिया के साथ जिनका सीधा सम्बन्ध होता है उन शब्दों को या क्रिया के होने में जो निमित्त बनते हैं उनको कारक कहते हैं। जैसे- 'रामः गृहं गच्छति' वाक्य में राम और गृह का संबंध गच्छति क्रिया से है, इसलिये ये दोनों शब्द कारक हैं। संस्कृत में कारक छह हैं—
1. कर्ता
2. कर्म
3. साधन (करण)
4. दानपात्र (सम्प्रदान)
5. अपादान
6. आधार

सम्बन्ध और सम्बोधन कारक नहीं माने जाते हैं क्योंकि इनका सीधा सम्बन्ध क्रिया के साथ नहीं होता है।
जैसे- 'लता रामस्य पुस्तकं पठति' इस वाक्य में राम का क्रिया के साथ सीधा सम्बन्ध नहीं है। अतः यह कारक नहीं है।

[2] क्रिया की सिद्धि में कर्ता का स्थान प्रधान है, जो क्रिया करता है उसे और जिस शब्द से क्रिया करने वाले का बोध हो उसे कर्ता कारक कहते हैं। जैसे रामः पठति में पढना क्रिया को करने वाला राम अतः इसमें कर्त्ता कारक तथा प्रथमा विभक्ति है।
कर्ता तीन प्रकार के होते हैं—
(अ) स्वतन्त्र कर्ता—
दूसरों की प्रेरणा के बिना ही अपनी इच्छानुसार कार्य करने वाला कर्ता स्वतन्त्र कर्ता होता है। जैसे शिष्यः गुरुं प्रणमति - शिष्य गुरु को प्रणाम करता है।
(ब) प्रेरक कर्ता-
स्वतन्त्र कर्ता को प्रेरित करने वाला कर्ता 'प्रेरक कर्ता' होता है। जैसे - उपाध्यायः शिष्येण गुरुं प्रणामयति- उपाध्याय शिष्य से गुरु को प्रणाम करवाता है। यहां प्रेरक कर्ता उपाध्याय है।
(स) कर्मकर्ता-
कर्म ही जहां कर्ता हो जाता है वह कर्मकर्ता है। जैसे पच्यन्ते शालयः स्वयमेत्र-
चावल अपने आप पकते हैं। इसकी पूर्व अवस्था है-सूदः शालीन् पचति अर्थात् रसोईया चावल पकाता है। कर्ता के व्यापार का जब कर्म में आरोप कर दिया जाता है तब कर्म ही कर्ता बन जाता है। उपर्युक्त वाक्य में सूद कर्ता है और चावल कर्म है। सूद की क्रिया का चावलों में आरोप किया गया है-चावल अपने आप पकते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

बहवः (बहुत) उपर्युक्त उदाहरणों में नाम्नः प्रथमा (331) से प्रथमा विभक्ति हुई है।

(332) आमन्त्रणे।। 2।4।45।

आमन्त्रणमभिमुखीकरणम्। आमन्त्रणेऽर्थे नाम्नः प्रथमा विभक्तिः स्यात्। हे जिन, हे जिनौ, हे जिनाः।

■ (आमन्त्रणमभिमुखीकरणम्) आमन्त्रण का अर्थ है अपनी ओर आकर्षित करना या अपने सम्मुख करना। आमन्त्रण (सम्बोधन) अर्थ में नाम से प्रथमा विभक्ति होती है।
हे जिन, हे जिनौ, हे जिनाः।
इन सभी रूपों में आमन्त्रणे (332) से आमन्त्रण अर्थ में प्रथमा विभक्ति हुई है।

(333) कर्तुर्व्याप्यं कर्म ।।2।।4।3।

कर्त्रा क्रियया यद् व्याप्तुमिष्यते, तद् व्याप्यं कारकं कर्मसंज्ञं स्यात्।

■ कर्ता क्रिया के द्वारा जिसे (व्याप्य) प्राप्त करने की इच्छा करता है, उस व्याप्य कारक की कर्म[1] संज्ञा होती है। जैसे रामः ग्रामं गच्छति यहां राम ग्राम को प्राप्त करना चाहता है अतः ग्राम की कर्म संज्ञा होती है।

(334) गौणात्।। 2।4।46।

अधिकारसूत्रमेतत्। त्यादिभिरनुक्तो गौणः। अग्रे वक्ष्यमाणा द्वितीयादयो विभक्तयो गौणान्नाम्न एव स्युरिति वेदितव्यम्।

■ यह अधिकार सूत्र है (अर्थात् इसकी प्रधानता सभी विभक्तियों में रहेगी)। तिप् आदि से जो अनुक्त है अर्थात् जो नहीं कहा गया है, वह गौण है। आगे कही जाने वाली द्वितीया आदि विभक्तियां गौण नाम से ही जान लेनी चाहिए।

(335) कर्मणि द्वितीया।। 2।4।47।

कर्मणि कारके गौणान्नाम्नो द्वितीया विभक्तिः स्यात्। कटं करोति, काष्ठं दहति, कूपं पश्यति। गौणादिति किम्-घटः क्रियते, कृष्णेन कंसो हतः।

■ कर्म कारक में गौण नाम से द्वितिया विभक्ति होती है।
रामः कटं करोति (राम चटाई करता है)
गौणात् ... (334) की सहायता से
कर्मणि द्वितीया (335) से कट शब्द गौण होने से कट शब्द से द्वितीया विभक्ति हुई है।
काष्ठं दहति (काष्ठ जलाता है)
कूपं पश्यति (कूप देखता है)
इन दोनों रूपों में
कर्तुर्प्याप्यं (333) से कर्म संज्ञा, गौणात् (334) की सहायता से
कर्मणि द्वितीया (335) से काष्ठ, कूप में द्वितीया विभक्ति।
काष्ठं दहति, कूपं पश्यति
यहां पर काष्ठ तथा कूप शब्द गौण होने से द्वितीया विभक्ति हुई है।
द्वितीया गौण से होती है यहाँ गौण होना चाहिए ऐसा क्यों?
रामेण घटः क्रियते, कृष्णेन कंसो हतः राम के द्वारा घट किया गया है। कृष्ण के द्वारा कंस मारा गया है।

---

[1] कर्ता अपनी क्रिया के द्वारा जो वस्तु निष्पन्न करता है या जिस वस्तु पर कर्त्ता के व्यापार का फल पड़ता है उसे कर्म कहते हैं। कर्म की यह विस्तृत परिभाषा है। संक्षेप में कर्ता जो कुछ करता है वह कर्म है।
कर्म के तीन भेद किये जाते है- (अ) निर्वत्य (ब) विकार्य (स) प्राप्य।
(अ) निर्वर्त्य- इसका अर्थ है उत्पाद्य। उत्पाद्य वस्तुएं दो श्रेणी की होती है। एक तो वे जो जन्म से उत्पन्न हो, जैसे माता सूतं प्रसूते। दूसरी वे है जो अविद्यमान हो और उनका निर्माण किया जाये, जैसे तन्तुवायः कटं करोति ।
(ब) विकार्य- वर्तमान वस्तु को अवस्थान्तरित करने से अथवा कर्ता की क्रिया से वस्तु के स्वभाव परिवर्तन होने से जो विकार होता है उस कर्म को विकार्य कहते हैं। जैसे- स्वर्णकारः काञ्चनं कुण्डलीं कुरुते। काष्ठं दहति।
(स) प्राप्य- जिसमें क्रिया से कुछ भी विशेषता न होती हो उसे प्राप्य कहते हैं। जैसे-चक्षुष्मान् आदित्यं पश्यति। यहाँ दर्शन क्रिया से आदित्य में न तो कुछ भी उत्पन्न होता है और न विकृत।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यहां घट तथा कंस प्रधान होने से स्वतंत्रः कर्ता से प्रथमा विभक्ति हुई है।
कर्म होने पर भी कर्मणि द्वितीया (335) से द्वितीया विभक्ति नहीं हुई है।

(336) क्रियाविशेषणात् ।। 2।4।48।

क्रियाविशेषणान्नाम्नो द्वितीया विभक्तिः स्यात्। मन्दं गच्छति, मृदु पचति।

■ क्रिया विशेषण नाम से द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे मन्दं गच्छति, मृदु पचति।
मन्दं गच्छति (धीरे जाता है)
मृदु पचति (अच्छा (स्वादिष्ट) पकाता है)
यहां मन्द और मृदु दोनों शब्द क्रमशः गच्छति, पचति क्रिया की विशेषता बताता है
गौणात् (334) की सहायता से क्रिया विशेषणात् (336) से द्वितीया विभक्ति हुई है।

(337) स्मृत्यर्थदयेशां वा।। 2।4।4।

एषां व्याप्यं कर्मसंज्ञं वा स्यात्। पक्षे शेषषष्ठी। मातुः स्मरति, मातरं स्मरति, सर्पिषो दयते, सर्पिर्दयते, लोकानामीष्टे, लोकानीष्टे।

■ स्मृत्यर्थ, दय्, ईश् इनके व्याप्य की कर्म संज्ञा विकल्प से होती है। पक्ष में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे मातरं स्मरति, मातुः स्मरति, सर्पिर्दयते, सर्पिषो दयते, लोकानिष्टे, लोकानामीष्टे।
स्मृति अर्थ में-मातरं स्मरति (माता का स्मरण करता है)
मातृ स्मरण अर्थ का व्याप्य होने से स्मृत्यर्थदयेशां वा (337) से मातृ शब्द की कर्म संज्ञा।
गौणात् की सहायता से
कर्मणि द्वितीया (335) से मातृ शब्द की विकल्प से द्वितीया विभक्ति।
मातरं स्मरति
शेषे (371) से षष्ठी विभक्ति
मातुः स्मरति
सर्पिर्दयते (घी देता है)
सर्पिषो दयते
लोकानीष्टे (लोगों के लिए इष्ट है)
लोकानामीष्टे
यहां इन दोनों रूपों में
दय (देने) अर्थ में
ईश् (इष्ट) अर्थ में
सर्पि तथा लोक शब्द की
स्मृत्यर्थदयेशां वा (337) से विकल्प से कर्म संज्ञा।
गौणात् (334) की सहायता से
कर्मणि द्वितीया (335) से द्वितीया विभक्ति क्रमशः सर्पिर्दयते, लोकानीष्टे।
शेषे (371) से सर्पि तथा लोक शब्द की षष्ठी विभक्ति।
क्रमशः सर्पिषो दयते, लोकानामीष्टे।

(338) अधेः शीङ्स्थासामाधारः।। 2।4।14।

अधेः परेषामेषामाधारः कर्मसंज्ञः स्यात्। ग्राममधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा मुनिः। अधेरिति किम्-शयने शेते।

■ अधि (उपसर्ग) से परे शीङ्, स्था, आस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है। जैसे-ग्राममधिशेते, अधितिष्ठति, अध्यास्ते वा मुनिः।
शीङ् (सोना), स्था (ठहरना), आस् (बैठना)
ग्राममधिशेते (मुनि गांव में सोता है)
ग्राममधितिष्ठति (मुनि गांव में ठहरता है)
ग्राममध्यास्ते (मुनि गांव में बैठता है)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यहां अधि उपसर्ग पूर्वक शीङ्, स्था, आस् धातु होने से
अधेः शीङ्स्थासामाधारः (338) से ग्राम शब्द की कर्म संज्ञा।
गौणात् (334) की सहायता से
कर्मणि द्वितीया (335) से ग्राम शब्द से द्वितीया विभक्ति हुई है।
अधि उपसर्ग होना चाहिए ऐसा क्यों?
शयने शेते (शयन पर सोता है)

यहां शीङ् धातु है लेकिन अधि उपसर्ग नहीं है अतः आधार की कर्म संज्ञा नहीं हुई है आधारे सप्तमी (380) से सप्तमी विभक्ति हुई है।

(339) अन्वध्याङ्भ्यो वसः।। 2।4।15।

अन्वादिपूर्वकस्य वसतेराधारः कर्मसंज्ञः स्यात्। ग्राममनुवसति, अधिवसति, आवसति वा साधुः।

■ अनु, अधि, आङ् पूर्वक वस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है। जैसे-ग्राममनुवसति, अधिवसति, आवसति वा साधुः। (साधु गांव में रहता है)
अनु, अधि, आङ् उपसर्ग पूर्वक वस् धातु के योग में ग्राम शब्द की
अन्वध्याङ्भ्यो वसः (339) से कर्म संज्ञा।
गौणात् (334) की सहायता से
कर्मणि द्वितीया (335) से ग्राम शब्द से द्वितीया विभक्ति हुई है।

(340) उपान्निवासे।।2।4।16।

निवासेऽर्थे उपात्परस्य वसतेराधारः कर्मसंज्ञः स्यात्। ग्राममुपवसति, निवासं करोतीत्यर्थः। निवासे इति किम्-वने उपवसति, उपवासं करोतीत्यर्थः।

■ निवास अर्थ में उप उपसर्ग के परे वस् धातु के आधार की कर्म संज्ञा होती है। जैसे-ग्राममुपवसति (गांव में निवास करता है)
उप उपसर्ग पूर्वक वस् धातु के योग में ग्राम शब्द की
उपान्निवासे (340) से आधार अर्थ की कर्म संज्ञा होने पर
गौणात् (334) की सहायता से
कर्मणि द्वितीया (335) से ग्राम शब्द की द्वितीया विभक्ति हुई है।
निवास अर्थ होना चाहिए ऐसा क्यों?
वने उपवसति (वन में उपवास करता है)

यहां निवास अर्थ नहीं है उपवास (अनशन) अर्थ है। अतः यहां वस धातु के आधार की कर्म संज्ञा नहीं होती है।

(341) दुहाद्यर्थानामविवक्षितम्।।2।4।19।

दुहादीनां तदर्थानाञ्च धातूनां योगे अविवक्षितं कारकं सम्बन्धो वा कर्मसंज्ञं स्यात्। गां दोग्धि, स्त्रावयति, क्षारयति वा पय इत्यादि।

दुहिः पचिर्याचिरूधी च दण्डिः, पृच्छिर्मथिब्रूचिजिशास्मुषश्च।
नीकृष्बहिर्ह्नन्निति चाप्यमीषा मर्थे गताः स्युर्युगकर्मयुक्ताः ॥1॥

■ दुह् आदि के और उसी अर्थवाली धातुओं का योग होने पर अविवक्षित कारक (जिसे हम कहना नहीं चाहते) उसकी तथा सम्बन्ध की कर्म संज्ञा होती है। जैसे गां दोग्धि, स्रावयति, क्षारयति वा पय इत्यादि। (गाय से दूध दुहता है)
यहां दुह् धातु के योग में गो शब्द की-
दुहाद्यर्थानामविवक्षितम् (341) से कर्म संज्ञा।
गौणात् (334) की सहायता से
कर्मणि द्वितीया (335) से गो शब्द की द्वितीया विभक्ति हुई है।
(गाय से दूध दुहता है)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

गां पयः दोग्ध—इस वाक्य में गाय अपादान कारक है, उसमें पंचमी विभक्ति चाहिए परन्तु वह अपादान के रूप में विवक्षित नहीं हैं, अपितु दुग्ध रूप कर्म के निमित्त रूप में विवक्षित है। इसीलिए 'पयः' के साथ ही 'गाय' की भी कर्म संज्ञा अर्थात् द्वितीया विभक्ति हो जाती है।

श्लोक का अर्थ—दुह्, पच्, याच्, रूध, दण्ड, पृच्छ्, मथ्, ब्रू, चि, जि, शास्, मुष्, नी, कृष्, वह्, ह्रीन्।

ये सोलह धातुएं और इन धातुओं के अर्थ में आने वाली अन्य धातुएं द्वि कर्म युक्त होती है। अर्थात् इन सभी धातुओं के दो कर्म होते हैं: 1. प्रधान या मुख्य कर्म, 2. गौण या अप्रधान कर्म

दुह् (दुहना) गां पयः दोग्धि

यहां पयः प्रधान कर्म है और गां गौण कर्म है। इसी प्रकार–

पच् (पकाना) तण्डुलान् ओदनं पचति

(चावलों से भात पकाता है)

याच् (मांगना)

पौरवं गां याचते (राजा से गाय मांगता है)

रूध् (रोकना)

व्रजम् अवरूणद्धि गाम् (गाय को बाड़े में रोकता है)

दण्ड् (दण्ड देना)

गर्गान् शतं दण्डयति (गर्गो पर सौ रुपये दण्ड लगाता है)

पृच्छ (पूछना)

छात्रं पन्थानम् पृच्छति (छात्र से मार्ग पूछता है)

मथ् (मथना)

अमृतमम्बुनिधिं मथ्नाति (समुद्र से अमृत को मथता है)

ब्रू (कहना)

शिष्यं धर्मं ब्रूते (शिष्य को धर्म का उपदेश देता है)

चि (चुनना)

वृक्षम् अवचिनोति फलानि (पेड़ से फल चुनता है)

जि (जीतना)

शतं जयति देवदत्तम् (देवदत्त से सौ रुपए जीतता है)

शास् (सिखाना)

शिष्यं धर्मं अनुशास्ति (शिष्य को धर्म का उपदेश देता है)

मुष् (चुराना)

चैत्रं शतं मुष्णाति (चैत्र के सौ रुपये चुराता है)

नी (ले जाना)

स अजां ग्रामं नयति (वह बकरी को गांव में ले जाता है)

ह्री (हरना), कृष (खींचना), वह् (ढ़ोना)

ग्रामं शाखां कर्षति।

ग्रामं भारं वहति हरति वा।

उपर्युक्त सभी उदाहरणों में द्वितीया विभक्ति हुई है।

(342) गतिबोधाहारशब्दार्थाऽकर्मणाम्।।2।4।21।

गत्याद्यर्थानामकर्मणाञ्च धातूनामञिन्नवस्थायां यः कर्ता स ञौ सति कर्मसंज्ञः स्यात्। गच्छति मैत्रो ग्रामम्, गमयति मैत्रं ग्रामम्, बुध्यते शिष्यो धर्मम्, बोधयति शिष्यं धर्मम्, भुङ्क्ते शिशुरोदनम्, भोजयति शिशुमोदनम्, जल्पति मैत्रो मन्त्रः। गत्यर्थादीनामिति किम्–पचति ओदनं चैत्रः, पाचयति ओदनं चैत्रेण मैत्रः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

■ गति अर्थवाली (गम् यांक्, इंक्) बोध अर्थवाली (बुध्, ज्ञा, विद् आदि) आहार अर्थवाली (भक्ष्, अद्, अश्, खाद् आदि) शब्द अर्थवाली (जल्प, वद, पठ्, अधि+इ आदि) और अकर्मक धातुओं का अञिन्न् अवस्था में जो कर्ता होता है उसकी ञिन्न् (प्रेरणार्थक णिच् सहित) होने पर कर्म संज्ञा होती है। अर्थात् गति आदि अर्थो वाली धातुओं के साथ सामान्य अवस्था में जो कर्ता होता है वह प्रेरणार्थक (णिच्) ञिनन्त होने पर कर्म हो जाता है।

सामान्य (अञिन्न)	प्रेरणार्थ (ञिनन्त)
1. गत्यर्थक –	
गच्छति मैत्रो ग्रामम्।	गमयति मैत्रं ग्रामम्।
(मैत्र गांव जाता है)	(मैत्र को गांव भेजा जाता है)
2. बुद्ध्यर्थक –	
बुध्यते शिष्यो धर्मम्।	बोधयति शिष्यं धर्मम्।
(शिष्य धर्म को जानता है)	शिष्य को धर्म का (बोध) ज्ञान कराया जाता है।
3. आहारार्थक –	
भुङ्क्ते शिशुरोदनम्	भोजयति शिशुमोदनम्
(शिशु चावल खाता है)	(शिशु को चावल खिलाया जाता है।)

अञिन्न में	ञिन्न में
शब्दार्थक –	
जल्पति मैत्रो मन्त्रम्।	जल्पयति मैत्रं मन्त्रम्।
(मैत्र मन्त्र बोलता है)	(मैत्र को मन्त्र बुलवाया जाता है)
अकर्मक –	
आस्ते मैत्रः	आसयति मैत्रं चैत्रः
(मैत्र बैठता है)	(चैत्र के द्वारा मैत्र को बिठाया जाता है)

उपर्युक्त उदाहरणों में अञिन्न अवस्था का कर्ता ञिन्न अवस्था में कर्म हो गया है।

गति अर्थ वाली, बोध अर्थवाली, आहार अर्थवाली, शब्द अर्थवाली और अकर्मक धातुएं होना चाहिए ऐसा क्यों?

पचति ओदनं चैत्रः (चैत्र चावल पकाता है)

पाचयति ओदनं चैत्रेण मैत्रः (मैत्र चैत्र से भात पकवाता है)

यहां पच् धातु गति आदि अर्थ से बाहर हैं, अतः कर्तृसाधनहेत्वित्थंभूतलक्षणेषु (350) से चैत्र की तृतीया विभक्ति हुई है।

(343) न नीखाद्यदिह्वाशब्दायक्रन्दाम् ।।2।4।26।

एषामञिनः कर्ता ञौ कर्मसंज्ञो न स्यात्। नाययति भारं भृत्येन, खादयति अन्नं मैत्रेण, आदयति अपूपं पुत्रेण, ह्वाययति, शब्दाययति, क्रन्दयति वा मैत्रं चैत्रेण।

■ नी, खादि, अदि, ह्वेन्, शब्दाय, क्रन्द इन धातुओं के अञिन्न का कर्ता की ञिन्न होने पर कर्म संज्ञा नहीं होती है किन्तु कर्तृसाधन ... (350) से वहां तृतीया विभक्ति होती है।

अञिन्न	ञिन्न
नी (ले जाना)	नायि
नयति भारं भृत्यः।	नाययति भारं भृत्येन।
(नौकर भार ले जाता है)	(नौकर से भार लिवाया जाता है)
खादि (खाना)	

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

खादति अन्नं मैत्रः। — खादयति अन्नं मैत्रेण।
(मैत्र अन्न खाता है) — (मैत्र को अन्न खिलवाता है)
अदि (खाना)
अत्ति अपूपं पुत्रः। — आदयति अपूपं पुत्रेण।
(पुत्र माल पुआ खाता है) — (पुत्र को मालपुआ खिलवाता है)
ह्वेन (स्पर्धा और शब्द करना)
ह्वयति मैत्रं चैत्रः। — ह्वाययति मैत्रं चैत्रेण।
(चैत्र मैत्र को बुलाता है) — (चैत्र के द्वारा मैत्र को बुलवाया जाता है)
शब्दाय (शब्द करना)
शब्दायति मैत्रं चैत्रः । — शब्दाययति मैत्रं चैत्रेण।
(चैत्र मैत्र को शब्द करता है) — (चैत्र के द्वारा मैत्र को शब्द करवाया जाता है)
क्रन्द रोना, बुलाना
क्रन्दति मैत्रं चैत्रः — क्रन्दयति मैत्रं चैत्रेण
चैत्र मैत्र को बुलाता है — चैत्र के द्वारा मैत्र को बुलवाया जाता है

(344) निकषासमयाहाधिगन्तरेणातियेनतेनैः ।।2।4।49।

एभिर्युक्तान्नाम्नो द्वितीया स्यात्। निकषा ग्रामम्, समया पर्वतम्, हा चैत्रम्, धिक् मिथ्यादृष्टिम्, अन्तरा निषधं नीलवन्तं च मेरुः, जिनदर्शनमन्तरेण किम्, अतिकुरुन् पाण्डुसेना, येन तेन वा पश्चिमां गतः।

■ निकषा, समया, हा, धिग्, अन्तरा, अन्तरेण, अति, येन, तेन इनसे युक्त नाम से द्वितीया विभक्ति होती है। जैसे—

निकषा, समया (समीप)
निकषा ग्रामम्, समया पर्वतम्,
हा (खेद, दुख, उदासी, पीड़ा, अपव्यय विशेष)
हा चैत्रम् (चैत्र को दुःख है)
धिक् (धिक्कार)
धिक मिथ्यादृष्टिम् (मिथ्यादृष्टि को धिक्कार)
अन्तरा (बीच में)
अन्तरा निषधं नीलवन्तं च मेरुः
(निषध और नीलवन्त के बीच मेरु पर्वत है।)
अन्तरेण (बिना)
जिन दर्शनमन्तरेण किम्?
(जिन दर्शन के बिना क्या?)
अति (अधिक)
अति कुरुन् पाण्डुसेना।
(पाण्डु सेना से कौरव सेना अधिक है।)
येन (जैसे) तेन (तैसे)
येन तेन वा पश्चिमां गतः।
(जिस किसी प्रकार से पश्चिम दिशा में गया।)
निकषा, के योग में ग्राम की,
समया के योग में पर्वत की
हा के योग में चैत्र की
धिक् के योग में मिथ्यादृष्टि की
अन्तरा के योग में निषध नीलवन्तम् की

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अति के योग में कुरु की

येन तेन के योग में पश्चिम की निकषासमयाहाधिगन्तरान्तरेणाति येन तेनैः सूत्र (344) से द्वितीया विभक्ति हुई है।

(345) सर्वोभयाभिपरिभिस्तसन्तैः ।।2।4।50।

एभिस्तसन्तैर्युक्तान्नाम्नो द्वितीया स्यात्। सर्वतः, उभयतः, अभितः,परितो वा ग्रामं पर्वताः।

■ सर्वतः (सब ओर से), उभयतः (दोनों ओर से),

अभितः (सब ओर से), परितः (चारों ओर से)

इन तस् प्रत्ययान्त शब्दों के योग में द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे—सर्वतः ग्रामं पर्वतः, उभयतः ग्रामं परितो, अभितः ग्रामं पर्वतः।

सर्वतः, उभयतः, परितः, अभितः के योग में गौणात् (334) की सहायता से सर्वोभयामिपरिभिस्तसन्तैः (345) से ग्राम शब्द की द्वितीया विभक्ति हुई है।

(346) उपर्यधोऽधिभिर्द्वित्वे ।।2।4।51।

एभिर्द्विरुक्तैर्युक्तान्नाम्नो द्वितीया स्यात्। उपर्युपरि ग्रामम्, अधोऽधो ग्रामम्, अध्यधि ग्रामम्।

■ उपर्युपरि ग्रामम् (उपर-उपर), अधोऽधः (नीचे-नीचें) अध्यधि (भीतर-भीतर)

इन शब्दों से युक्त नाम से द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे—उपर्युपरि ग्रामम्, अधोऽधो ग्रामम्, अध्यधि ग्रामम्।

उपर्युपरि, अधोऽधो, अध्यधि के योग में उपर्यधोऽधिभिर्द्वित्वे (346) से ग्राम शब्द से द्वितीया विभक्ति हुई।

(347) उपेन चोत्कृष्टे ।।2।4।55।

उत्कृष्टेऽर्थे वर्तमानादुपेन अनुना च युक्तान्नाम्नो द्वितीया स्यात्। उपसर्वज्ञं शूराः, अन्वाचार्य साघवः, तस्माद्धीना इत्यर्थः।

■ उत्कृष्ट अर्थ में वर्तमान उप और अनु उपसर्ग से युक्त नाम से द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे—

उपसर्वज्ञं सुराः, अन्वाचार्यं साधवः, तस्माद्धीना इत्यर्थः।

उपसर्वज्ञं सुराः (देवताओं में सर्वज्ञ उत्कृष्ट है)

अन्वाचार्यं साधवः (साधुओं में आचार्य उत्कृष्ट है।)

उप और अनु उपसर्ग के योग में

सर्वज्ञ व आचार्य शब्द से द्वितीया विभक्ति होती है।

गौणात् (334) की सहायता से

उपेन चोत्कृष्टे (347) से सर्वज्ञ, आचार्य शब्द की क्रमशः द्वितीया विभक्ति हुई है।

(348) कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे ।।2।4।56।

काले अध्वनि च वर्तमानान्नाम्नो द्वितीया स्यात् अत्यन्तसंयोगे मासमघीते, क्रोशं पर्वतः।

■ कालवाची और मार्गवाची शब्दों से यदि ये शब्द (अत्यन्त संयोग) निरन्तरता के द्योतक हों तो उनसे द्वितीया विभक्ति होती है।

जैसे—मासमधीते। (पूरे महीने भर पढ़ता है।)

क्रोशं पर्वतः। (कोस भर पर्वत है।)

मास तथा क्रोस शब्द से -

कालाध्वनोरत्यन्तसंयोगे (348) से द्वितीया विभक्ति हुई है। क्योंकि अध्ययन क्रिया का मास से अत्यन्त संयोग है। उसी प्रकार पर्वत का कोस से अत्यन्त संयोग होने से यहां द्वितीया विभक्ति हुई है।

(349) अपवर्गे तृतीया ।।2।4।57।

अपवर्गः फलप्राप्तिः। कालाध्वनोरयन्तसंयोगे तृतीया स्यात् अपवर्गे। मासेनावश्यकमधीतम्, क्रोशेन शाकुन्तलमधीतम्। अपवर्ग इति किम्–मासमधीतो नायातः।

■ अपवर्ग का अर्थ है फल प्राप्ति या कार्य की सिद्धि।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कालवाची और मार्गवाची शब्दों से अत्यन्त संयोग अर्थात् निरन्तर संयोग से फल प्राप्ति होने पर तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

मासेनावश्यकमधीतम्। (मास भर में आवश्यक पढ़ लिया)

क्रोशेन शाकुन्तलमधीतम्। (कोस भर में शाकुन्तल को पढ़ लिया।)

कालवाची मास शब्द से अत्यन्त संयोग होने पर मास शब्द से तथा मार्गवाची कोस शब्द से अत्यन्त संयोग होने पर गौणात् सूत्र की सहायता से

अपवर्गे तृतीया (349) से तृतीया विभक्ति होती है। क्रमशः

मासेनावश्यकमधीतम्,

क्रोशेन शाकुन्तजमधीतम्।

अपवर्ग (फल प्राप्ति) होना चाहिए ऐसा क्यों?

माधमधीतो नायातः। (मास भर पढ़ा कुछ भी नहीं आया।)

यहां फल प्राप्ति नहीं है अतः मास शब्द में तृतीया विभक्ति की बजाय द्वितीया विभक्ति हुई है।

(350) कर्तृसाधनहेत्वित्थंभूतलक्षणेषु ।।2।4।58।

एष्वर्थेषु वर्तमानान्नाम्नस्तृतीया स्यात्। चैत्रेण कृतम्, दात्रेण लुनाति, दानेन कीर्तिः। केनचिद् विशेषेण भूतः - प्राप्तः इत्थंभूतः। कमण्डलुना छात्रमद्राक्षीत्।

■ कर्ता, साधन, हेतु और इत्थंभूतलक्षण[1]

इन अर्थो में रहे हुए नाम से तृतीया विभक्ति होती है। जैसे-

कमण्डलुना छात्रमद्राक्षीत्। (कमण्डलु से युक्त छात्र को देखा।)

चैत्रेण कृतम्। (चैत्र के द्वारा किया गया।)

दात्रेण लुनाति। दांती (काटने का एक उपकरण) से काटता है।

दानेन कीर्तिः। (दान से कीर्ति, यश)

यहां चैत्र कर्ता है, दात्र साधन है, दान हेतु है तथा कमण्डलु इत्थंभूत है अतः इन शब्दों में गौणात् (334) की सहायता से कर्तृसाधनहेत्वित्थंभूतलक्षणेषु (350) से तृतीया विभक्ति हुई।

(351) सहार्थे ।।2।4।59।

सहार्थेगम्ये नाम्नस्तृतीया स्यात्। शिष्येण सह, साकम्, समम्, सार्धम् वा गतो गुरुः।

■ सह अर्थ प्रकट होने पर नाम से तृतीया विभक्ति होती है अर्थात् साकम्, समम्, सार्धम् आदि सह अर्थवाले शब्दों के योग मे तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

शिष्येण सह, साकम् समम्, सार्धम् वा गतो गुरुः। (शिष्य के साथ गुरु गये)

सह, साकम्, समम्, सार्धम् इन सभी का अर्थ है साथ अतः यहां इन शब्दों के योग से सहार्थे (351) से शिष्य शब्द में तृतीया विभक्ति होती है।

(352) येनाङ्गिविकारः ।।2।4।60।

येन विकृतेनांगेनांगिनो विकारो लक्ष्यते ततस्तृतीया स्यात। अक्ष्णा काणः, पादेन खञ्जः।

■ जिस विकृत अंग से अंगी जीव (प्राणी) का विकार जाना जाता है उससे तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

अक्ष्णा काणः। (नेत्र से काणा है।)

पादेन खञ्जः। (पैर से लंगड़ा है।)

यहां विकृत अंग आंख तथा पैर है अतः क्रमशः—

गौणात् (334) की सहायता से

येनाङ्गिविकारः (352) से अक्ष तथा पाद शब्दों में तृतीया विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

अक्ष्णा काणः, पादेन खञ्जः।

[1] किसी विशेष वस्तु या चिन्ह से व्यक्ति की पहचान होती है। जैसे-दण्डेन यतिः दण्ड से यति प्रतीत होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(353) निषेधार्थकृताद्यै : ।।2।।4।61।

निषेधार्थैः कृतादिभिर्युक्तान्नाम्नस्तृतीया स्यात्। कृतं तेन, अलं श्रमेण, किं गतेन।

■ निषेधार्थक कृतं, भवतु, अलं, किं, पूर्णम्, पर्याप्तम् आदि शब्दों से युक्त नाम से तृतीया विभक्ति होती है।

जैसे-

कृतं तेन	उससे क्या
अलं अतिश्रमेण	अतिश्रम से क्या
भवतु तेन	उसे रहने दो
तेन पूर्णम्	उससे क्या
पर्याप्तं धनेन	धन से क्या

यहां कृतं, अलं, किं, भवतु, पूर्णम्, पर्याप्तं ये सभी निषेध अर्थ वाले हैं अतः इन सभी शब्दों के योग में तेन, श्रमेण, गतेन, तेन, धनेन की निषेधार्थकृताद्यैः (353) से तृतीया विभक्ति हुई है।

(354) प्रकृत्यादय आख्यायाम् ।2।4।29।

प्रकृत्यादयः शब्दाः साधनसंज्ञकाः स्युः आख्यायां गम्यमानायाम्। साधनत्वात् तृतीया। प्रकृत्या चारुः, प्रायेण धार्मिकः, नाम्ना चैत्रः, जात्या क्षत्रियः, वर्णेन गौरः।

■ प्रकृति आदि शब्दों की साधन संज्ञा होती है प्रसिद्धि (आख्यायां) अर्थ प्रकट होने पर। अर्थात् यदि उनका अर्थ प्रसिद्धि का वाचक हो तो। जैसे—

प्रकृत्या चारुः (स्वभाव से सुन्दर)

प्रायेण धार्मिकः (प्रायः धार्मिक है)

नाम्ना चैत्रः (नाम से चैत्र है)

जात्या क्षत्रियः (जाति से क्षत्रिय है)

वर्णेन गौरः (वर्ण से गौरा है)

यहां चारु, धार्मिक, चैत्र, क्षत्रिय, गौर ये शब्द प्रसिद्धि वाचक है अतः इनके योग में-

प्रकृत्या, प्रायेण, नाम्ना, जात्या, वर्णेन इन शब्दों से -

प्रकृत्यादय आख्यायाम् (354) से तृतीया विभक्ति हुई है।

(355) कर्मक्रियाभिप्रेयो दानपात्रम् ।।2।4।32।

कर्मणा क्रियया वा यमभिप्रेयते स कारकः दानपात्रसंज्ञः स्यात्।

■ कर्म के द्वारा अथवा क्रिया के द्वारा जिसे देना अभिष्ट हो अथवा श्रद्धा, उपकार, या कीर्ति की इच्छा से जिसको कोई वस्तु दी जाये अथवा जिस के लिए कोई कार्य किया जाये उस कारक की दानपात्र संज्ञा होती है।

जैसे—श्रमणाय भिक्षां ददाति (श्रमण के लिए भिक्षा देता है)

यहां श्रमण को श्रद्धा से भिक्षा दी जा रही है इसलिए श्रमण की कर्मक्रियाभिप्रेयो दानपात्रम् (355) से दानपात्र संज्ञा दानपात्रे (356) से चतुर्थी विभक्ति। अतः श्रमणाय भिक्षां ददाति।

युद्धाय संनह्यते (युद्ध के लिए तैयार होता है) यहां वाक्य में कर्म नहीं केवल क्रिया है। अतः यहां युद्ध की कर्मक्रिया ... (355) से दानपात्र संज्ञा।

दानपात्रे (356) से चतुर्थी विभक्ति। अतः युद्धाय संनह्यते।

(356) दानपात्रे चतुर्थी ।।2।4।63।

दानपात्रसंज्ञकान्नाम्नश्चतुर्थी स्यात्। साधुभ्यो भिक्षां ददाति गुरवे कार्यं निवेदयति। दानपात्रे इति किम्-रजकस्य वस्त्रं ददाति।

■ दानपात्र संज्ञक नाम से चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-

साधुभ्यो भिक्षां ददाति (साधुओं को भिक्षा देता है)

गुरवे कार्यं निवेदयति (गुरु को कार्य निवेदन करता है)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यहां साधु को श्रद्धा के साथ भिक्षा दी जा रही है इसलिए साधु की तथा गुरु से निवेदन किया जाता है इसलिए गुरु की कर्म-क्रियाभिप्रेयो दानपात्रम् (355) से दानपात्र संज्ञा करके दानपात्रे चतुर्थी (356) से चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

प्रस्तुत सूत्र में दानपात्र होना चाहिए ऐसा कहने का परिणाम यह होता है कि रजकस्य वस्त्रं ददाति। इस प्रयोग में चतुर्थी नहीं होती क्योंकि यहां वस्तु का देना तो अवश्य है पर वह श्रद्धा आदि की भावना से नहीं दिया जाता अत: रजक की दानपात्र संज्ञा नहीं है।

(357) रूच्यर्थानां प्रीयमाण: ।।2।4।33।

रूच्यर्थधातूनां योगे प्रीयमाणो योऽर्थस्तत्कारकं दानपात्र संज्ञं स्यात्। मैत्राय रोचते मोदक:, चैत्राय स्वदते दधि।

■ रुचि अर्थ वाली धातुओं के योग में प्रसन्न होने वाले व्यक्ति (प्रीति करनेवाले कारक) की दानपात्र संज्ञा होती है फलस्वरूप उसमें चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे-

मैत्राय रोचते मोदक: (मैत्र को लड्डू अच्छा लगता है)

चैत्राय स्वदते दधि (चैत्र को दही स्वादिष्ट लगता है)

रुच् धातु के समान अर्थ वाली स्वद् धातु भी है। इसके योग में जिसे पदार्थ अच्छा लगता हो उस चैत्र, मैत्र की रूच्यर्थानां प्रीयमाण: (357) से दानपात्र संज्ञा।

दानपात्रे ... (356) से चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

(358) श्लाघह्नु स्थाशपां ज्ञीप्स्यमान: ।।2।4।34।

ज्ञीप्स्यमानो ज्ञापयितुमिष्यमाण:। श्लाघादीनां धातूनां योगे ज्ञीप्स्यमानो योऽर्थस्तत्कारकं दानपात्रसंज्ञं स्यात्। गुरवे श्लाघ्नुते, तिष्ठते, शपते वा। गुरुं ज्ञापयतीत्यर्थ:।

■ जिसे कुछ बताया जाए (ज्ञापित किया जाए) उसे ज्ञीप्स्यमान कहते हैं।

श्लाघ् (प्रशंसा करना) ह्नु (छिपाना) स्था (रूकना) शप् (उलाहना देना)

इन धातुओं के योग में ज्ञीप्स्यमान की दानपात्र संज्ञा होती है। फलस्वरूप इसमें चतुर्थी विभक्ति होती है। जैसे-प्रस्तुत उदाहरण में गुरु ज्ञीप्स्यमान हैं अत: वहां चतुर्थी विभक्ति होती है।

(359) क्रुध्द्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रतिकोप: ।।2।4।37।

क्रुधाद्यर्थानां धातूनां योगे यं प्रति कोपस्तत्कारकं दानपात्रसंज्ञं स्यात्। मैत्राय क्रुध्यति, द्रुह्यति, ईर्ष्यति, असूयति वा चैत्र:।

■ क्रुध्, द्रुह्, ईर्ष्या, असूया इन अर्थ वाली सभी धातुओं के योग में जिसके प्रति क्रोध, द्रोह, ईर्ष्या, असूया आदि की जाये उस कारक की दानपात्र संज्ञा होती है। जैसे-

मैत्राय क्रुध्यति (मैत्र पर क्रोध करता है)

चैत्र मैत्राय द्रुह्यति (चैत्र मैत्र पर द्रोह करता है)

राम: तेभ्य: ईर्ष्यति (राम उनसे ईर्ष्या करता है)

बालक: बालकेभ्य: असूयति (बालक बालक में दोष निकालता है)

यहां मैत्र की तथा बालक आदि की इन धातुओं का योग होने से-क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोप: (359) से दानपात्र संज्ञा होती है। इसलिए दानपात्र ... (356) से चतुर्थी विभक्ति हुई है।

(360) तादर्थ्ये ।।2।4।64।

तादर्थ्ये सम्बन्धविशेषद्योत्ये चतुर्थी स्यात्। घटाय मृत्तिका, कुण्डलाय हिरण्यम्, यूपाय दारू।

■ तादर्थ्य, सम्बन्ध विशेष प्रकट होने पर चतुर्थी विभक्ति होती है। अर्थात् किसी वस्तु से किसी वस्तु का उपयोग होता हो तो उस उपयुक्त वस्तु में चतुर्थी विभक्ति होती है।

जैसे - घटाय मृत्तिका (घट के लिए मिट्टी)

कुण्डलाय हिरण्यम् (कुंडल के लिए सोना)

यूपाय दारु (स्तम्भ के लिए लकड़ी)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यहां मिट्टी से घट, सोने से कुण्डल, लकड़ी से स्तम्भ निर्मित है अत: घट, कुण्डल, यूप में तादर्थ्ये (360) से चतुर्थी विभक्ति हुई है।

(361) समर्थार्थनम: स्वतिस्वाहास्वधावषड्भि: ।।2।4।67।

एभिर्युक्तान्नाम्नश्चतुर्थी स्यात्। समर्थोऽलं शक्त: क्षम: प्रभुर्वा मल्लो मल्लाय। नमो जिनेन्द्राय स्वस्ति पूज्याय, स्वाहा अग्नये, स्वधा पितृभ्य:, वषड् इन्द्राय। उपपदविभक्ते: कारकविभक्तिर्बलीयसीति नमस्करोति जिनान्।

■ समर्थ अर्थ वाले शब्द तथा नम: (नमस्कार) स्वस्ति (कल्याण, आशीर्वाद, स्वीकार सूचक अव्यय), स्वाहा (देवता के उद्देश्य से हवि छोड़ते समय इस शब्द का उच्चारण किया जाता है), स्वधा (मृत पुरुषों के उद्देश्य से हवि आदि का देना, पितरों को भोजनादि निवेदन करना) वषड् (जिसका उच्चारण अग्नि में आहुति देते समय यज्ञों में किया जाता है) शब्द योग मे चतुर्थी विभक्ति होती है।

समर्थोऽलं शक्त: क्षम: प्रभुर्वा मल्लो मल्लाय (पहलवान पहलवान के लिए काफी है)

नमो जिनेन्द्राय	(जिनेन्द्र को नमस्कार)
स्वस्ति पूज्याय	(पूज्य लोगों का कल्याण हो)
स्वाहा अग्नये	(अग्नि के लिए स्वाहा)
स्वधा पितृभ्य:	(पितरों के लिए अन्नादि द्रव्य)
वषड् इन्द्राय	(इन्द्र को हविदान)

यहां समर्थ और उसके अर्थ वाले शब्दों के योग में तथा नम:, स्वस्ति, स्वाहा, स्वघा, वषड् इन शब्दों के योग से मल्ल, जिनेन्द्र, अग्नि, पितृ इन शब्दों से चतुर्थी विभक्ति हुई है।

उपपद विभक्ते: कारक विभक्तिर्बलीयसीति नमस्करोति जिनान् (उपपद विभक्ति से कारक विभक्ति बलवान् होती है)

किसी पद (नम:, स्वस्ति, स्वाहा आदि) को मानकर होने वाली विभक्ति उपपद विभक्ति है। गुरवे नम: में नम: पद के कारण चतुर्थी विभक्ति हुई है। कर्म, करण आदि कारकों को मानकर होने वाली विभक्ति कारक है। जैसे—साधुभ्यो भिक्षां ददाति।

उपपद विभक्ति को रोककर कारक विभक्ति होती है। जैसे—

नमस्करोति देवान् (देवों को नमस्कार करता है)

यहां पर नम: के कारण चतुर्थी विभक्ति प्राप्त है किन्तु नमस्करोति क्रिया का कर्मसंज्ञ होने के कारण देवान् में द्वितीया विभक्ति हुई है।

(362) गतेरप्राप्ते वा ।।2।4।70।

गतेरप्राप्ते कर्मणि चतुर्थी वा स्यात्। गति: पादविहरणम्। ग्रामं ग्रामाय वा गच्छति, नगरं नगराय वा व्रजति। गतेरिति किम्–आदित्यं पश्यति। अप्राप्ते इति किम् ग्रामं गत:।

■ गति के द्वारा अप्राप्त कर्म में चतुर्थी विभक्ति विकल्प से होती है। अर्थात् गति के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना हो और उस स्थान तक नहीं पहुंचा हो तो उस स्थान में चतुर्थी विभक्ति विकल्प से होती है।

गति: पाद विहरणम् - गति का अर्थ है पैरों से चलना। जैसे—

मुनि: ग्रामाय ग्रामं वा गच्छति (मुनि गांव को जाता है)

मुनि: नगरं नगराय वा व्रजति (मुनि नगर को जाता है)

ग्राम, तथा नगर में

गौणात् (334) की सहायता से

गतेरप्राप्ते वा (362) से विकल्प से चतुर्थी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

क्योंकि यहां शरीर से गति हो रही है तथा ग्राम, नगर अभी प्राप्त नहीं हुआ है अत: ग्राम, नगर शब्दों से चतुर्थी विभक्ति हुई है।

पक्ष में ग्रामं, नगरं गच्छति में द्वितीया विभक्ति होती है।

गति के द्वारा अप्राप्त कर्म में चतुर्थी करने का परिणाम होता है कि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आदित्यं पश्यति (सूर्य को देखता है) यहां चतुर्थी नही होती है क्योकि यहां गति नही है। अप्राप्त होना चाहिए ऐसा क्यों?

ग्रामं गतः (गांव पहुंच गया) यहां चतुर्थी नहीं हुई क्योंकि

यहां गांव की प्राप्ति हो गई है अतः गांव शब्द में कर्मणि द्वितीया से द्वितीया विभक्ति हुई है।

(363) हितसुखाभ्यात् ।।2।4।72।

आभ्यां योगे चतुर्थी वा स्यात्। पक्षे शेषषष्ठी। ग्रामाय ग्रामस्य वा हितं सुखं वा।

■ हित और सुख शब्द के योग में चतुर्थी विभक्ति विकल्प से होती है। जैसे—

ग्रामाय हितम्

ग्रामाय सुखम्

ग्रामस्य हितम्

पक्ष में गौणात् (334) की सहायता से

शेषे (371) से ग्राम शब्द की षष्ठी विभक्ति होती है।

(364) अपायेऽवधिरपादानम् ।।2।4।42।

अपायो विश्लेषस्तत्र योऽवधिर्विवक्षितः तत्कारकमपादानसंज्ञं स्यात्।

■ अपायो[1] विश्लेषः

अपाय में जो अवधि विवक्षित है उस कारक की अपादान संज्ञा होती है।

(365) पञ्चम्यपादाने ।। 2 । 4 । 75 ।

अपादाने वर्तमानान्नाम्नः पंचमी स्यात्। ग्रामादायाति, धावतोऽश्वात्पतति चोरेभ्यो बिभेति, यवेभ्यो गां निषेधयति, कूपादन्धं वारयति, अधर्माद् जुगुप्सते, धर्मात् प्रमाद्यति उपाध्यादन्तर्धत्ते, अध्ययनात् पराजयते।

■ अपादान में वर्तमान नाम से पंचमी विभक्ति होती है। जैसे—ग्रामाद् आयाति (गांव से आता है)

इस उदाहरण वाक्य में व्यक्ति का गांव से अलग होना सिद्ध हो रहा है यहां अलग होने से गांव की सीमा है इसलिए गांव का अवधि रूप है, अतः इसकी अपादान संज्ञा होने से पंचमी विभक्ति हुई है इसी प्रकार निम्नलिखित प्रयोगों में पंचमी विभक्ति होती है।

अश्वात् पतति	(घोड़े से गिरता है)
चोरेभ्यो बिमेति	(चोरों से डरता है)
यवेभ्यो गां निषेधयति	(जौ से गाय को हटाता है)
कूपादन्धं वारयति	(कुंआ से अन्धे को रोकता है)
अधर्मात् जुगुप्सते	(अधर्म से धृणा करता है)
धर्मात् प्रमाद्यति	(धर्म से प्रमाद करता है)
उपाध्यायात् अन्तर्धत्ते	(उपाध्याय से छिपता है)
अध्ययनात् पराजयते	(अध्ययन से हारता है)

(366) प्रभृत्यन्यार्थाराद्दिक्शब्दैः ।।2।4।81।

एभिर्युक्तान्नाम्नः पंचमी स्यात्। कार्तिक्याः प्रभृति, आरभ्य ग्रीष्मात्, अन्यो मैत्रात्, भिन्नश्चैत्रात्। आराद् दूरसमीपयोः—आरात् ग्रामात्, पूर्वो ग्रीष्माद् वसन्तः, पश्चिमो रामात् युधिष्ठिरः।

■ प्रभृति, आरभ्य, अन्य अर्थ वाले शब्द (भिन्न, व्यतिरिक्त, पृथक्, विलक्षण, इतर, हिरूक), आरात् (दूर और निकट का वाचक) और दिशावाची शब्दों से युक्त नाम के योग में पंचमी विभक्ति होती है। जैसे-

कार्तिक्याः प्रभृति, (कार्तिकी पूर्णिमा से आग्राहायणी पूर्णिमा एक मास बाद आती है)

आरभ्य ग्रीष्मात्, (ग्रीष्म ऋतु से आरंभ करके)

[1] अपाय का अर्थ है- पृथक होना, अलग होना। किसी व्यक्ति या वस्तु के पृथक् होने में जो कारक ध्रुव या अवधि रूप होता है उसे अपादान कहते है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अन्यो मैत्रात्   (मैत्र से भिन्न)
भिन्नश्चैत्रात्   (चैत्र से भिन्न)
आरात् ग्रामात्   (गांव से दूर या समीप)
पूर्वो ग्रीष्माद् वसन्तः   (ग्रीष्म से पहले वसन्त होता है)
पश्चिमो रामात् युधिष्ठिरः। (राम के बाद युधिष्ठिर हुए)
प्रभृति, आरभ्य, अन्य, भिन्न, आरात् दिशावाची शब्दों के योग में—कार्तिक्या, ग्रीष्मात्, मैत्रात्, ग्रामात्, रामात् इन शब्दों में—प्रभृत्यन्यार्थारा ... (366) से पंचमी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

(367) पर्यपाभ्यां वर्जने।।2।4।76।

आभ्यां युक्तात् वर्जनेऽर्थे वर्तमानान्नाम्नः पंचमी स्यात्। परित्रिगर्तेभ्यः अपत्रिगर्तेभ्यो वा वृष्टो मेघः, त्रिगर्तं मुक्त्वा इत्यर्थः।

■ वर्जन (छोड़कर) अर्थ में परि और अप से युक्त रहे हुए नाम से पंचमी विभक्ति होती है। जैसे–
परित्रिगर्तेभ्य : वृष्टो मेघो   (त्रिगर्त को छोड़कर मेघ बरसा)
अपत्रिगर्तेभ्यो वृष्टो मेघः (त्रिगर्त को छोङकर मेघ बरसा)
परि और अप अव्यय वर्जन अर्थ में होने से परि और अप के योग में त्रिगर्त शब्द से पर्यपाम्यां वर्जने (367) सूत्र से पंचमी विभक्ति हुई है।

(368) आङावधौ ।।2।4।77।

आङा युक्तादवधौ वर्तमानान्नाम्नः पंचमी स्यात्। आबालेभ्यो जिनभक्तिः।

■ आङ्[1] अवधि (मर्यादा) में रहे हुए नाम से पंचमी विभक्ति हो जाती है।

(369) आख्यातर्युपयोगे ।।2।4।78।

आख्याता वक्ता। नियमपूर्वकविद्याध्ययनमुपयोगः। आख्यातृवाचिनो नाम्नः पञ्चमी स्यात् उपयोगविषये। उपाध्यायादधीते शिष्यः। उपयोगे इति किम्—नटस्यगाथां शृणोति।

■ आख्याता का अर्थ है वक्ता, उपदेष्टा, शिक्षक या अध्यापक।

उपयोग—नियमपूर्वक विध्याध्ययन अर्थात् ब्रह्मचर्य आदि नियमों का पालन करते हुए विध्याध्ययन करने को उपयोग कहते हैं। आख्यातृवाची नाम से पंचमी विभक्ति होती है यदि उपयोग विषय हो तो। जैसे—उपाध्यायात् अधीते शिष्यः (शिष्य उपाध्याय से पढ़ता है)
अर्थात् नियमपूर्वक विध्याध्ययन करता है।
यहां नियमपूर्वक विध्याध्ययन होने से उपाध्याय शब्द से
गौणात् (334) की सहायता से
आख्यातर्युपयोगे (369) से पंचमी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।
उपयोग होना चाहिए ऐसा क्यों?
नटस्य गाथां श्रृणोति (नट की गाथा सुनता है)
इस प्रयोग में उपयोग के न होने के कारण चतुर्थी विभक्ति नहीं होती है।

---

[1] ईषदर्थे क्रिया योगे, मर्यादाभिविधौ च यः ।
एतमातं ङितं विद्यात् वाक्य स्मरणयोरङित् ॥
अर्थ—ईषद् अर्थ में आ रहे वहां ईषद् उष्णम जलम् का ओष्णम् जलम् हो जायेगा (थोड़े अर्थ में) क्रिया के योग में (आ होगा वहां आगच्छत्, आगच्छति), मर्यादा और अभिविधि अर्थ में जो आ हो उसे आङ् का आ समझना चाहिए। जैसे आमुक्तेः संसारः (मुक्ति तक या मुक्ति से पहले संसार है) यहां मर्यादा में आ है। अतः पंचमी विभक्ति प्रयुक्त हुई है। मर्यादा का अर्थ-तेन बिना (उसको छोड़कर), अभिविधि का अर्थ-तेन सह (उसको लेकर) आसकलाद् ब्रह्म (ब्रह्म सर्वत्र व्याप्त है) अभिविधि अर्थ में आ है, अतः पंचमी है। वाक्य अर्थ में (आ एवं नू मन्यसे, तू ऐसा मानते हो) और स्मरण अर्थ में (आ एवं किल तत् वह भी ऐसे ही है) आया हुआ आ अङित् अर्थात् शुद्ध आ है ऐसा समझना चाहिए। जहां शुद्ध आ रहता है वहां पर प्रकृतिभाव हो जाता है अर्थात् संधि कार्य नहीं होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(370) दूरान्तिकार्थबहिर्भिः ।।2।4।84।

एभियोंगे नाम्नः पञ्चमी वा स्यात्। पक्षे षष्ठी। दूरम्, विप्रकृष्टम्, अन्तिकम्, सन्निकृष्टम्, बहिर्वा ग्रामात् ग्रामस्य वा।

■ दूर तथा अन्तिक अर्थ वाले शब्दों तथा बहिः के योग में पंचमी विभक्ति विकल्प से होती है। पक्ष में षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-

दूरं, विप्रकृष्टम् (दूर) ग्रामात् (गाँव से दूर)
अन्तिकम्, सन्निकृष्टम्(समीप) ग्रामात् (गाँव के समीप)
बहिः ग्रामात् (गाँव से बाहर)
यहां दूर, अन्तिकम्, बहिः का योग होने से ग्राम शब्द से
गौणात् (334) की सहायता से
दूरान्तिकार्थ बहिर्भिः (370) से विकल्प से पंचमी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।
पक्ष में-
दूरम्, अन्तिकम्, बहिर्वा ग्रामस्य।
गौणात् (334) की सहायता से
शेषे (371) सूत्र से ग्राम शब्द से षष्ठी विभक्ति हुई है।

(371) शेषे।।2।4। 87।

कर्मादिभ्योऽन्यः स्वस्वामिभावादिसम्बन्धः शेषः। तत्र वर्तमानान्नाम्नः षष्ठी स्यात्। राज्ञः पुरुषः, गुरूणां वचनं पथ्यम्।

■ कर्म, करण, संप्रदान, अपादान, अधिकरण से अन्य और स्व स्वामी आदि सम्बन्ध को शेष कहते हैं। शेष में वर्तमान नाम से षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे- राज्ञः पुरुषः (राजा का पुरुष), गुरूणां वचनं पथ्यम् (गुरु के वचन हितकर हैं) यहां उपयुर्क्त उदाहरण में शेषे (371) सूत्र से षष्ठी विभक्ति हुई है।

सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति होती है। सम्बन्ध अनेक प्रकार का होता है। जैसे—

1. स्वस्वामि भाव सम्बन्ध	राज्ञः पुरुषः	राजा का पुरुष
2. जन्य जनक भाव सम्बन्ध	दशरथस्य पुत्रः	दशरथ का पुत्र
3. अवयवावयवि भाव सम्बन्ध	पशोः पादः	पशु का पैर
4. आधाराधेय भाव सम्बन्ध	वृक्षस्य शाखा	वृक्ष की शाखा
5. प्रकृति विकार भाव सम्बन्ध	क्षीरस्य विकारः	दूध का विकार
6. समूह समूहि भाव सम्बन्ध	गवां समूहः	गायों का समूह
7. समीप समीपी भाव सम्बन्ध	कुम्भस्य स्वामी	कुंभ का स्वामी
8. पाल्य पालक भाव सम्बन्ध	पृथिव्याः स्वामी	पृथ्वी का स्वामी
9. अश्याशन भाव सम्बन्ध	गोधूमानामश्नीयात्	गेहूं को खाना चाहिए
10. शिक्षणीय शिक्षण भाव सम्बन्ध	सुभाषितस्य शिक्षते	सुभाषित को सीखता है
11. ज्ञानज्ञेय भाव सम्बन्ध	आवश्यक सूत्रस्य जानीते	आवश्यक सूत्र को जानता है

(372) कर्तृकर्मणोः कृति ।।2।4।89।

कृत्प्रत्यययोगे कर्तरि कर्मणि च षष्ठी स्यात्। चैत्रस्य भोजनम्, मैत्रस्य पठनम्, विश्वस्य ज्ञाता, तीर्थस्य कर्ता, यवानां लावकः, ओदनस्य भोजकः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

■ कृत् प्रत्यय[1] (कृदन्त प्रत्यय) के योग में कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति होती है।

(373) उभयप्राप्तौ कर्तरिवा ।।2।4। 90।

उभयो: कर्तृकर्मणो: प्राप्तिर्यस्मिन् कृति तत्र कर्तरि षष्ठी वा स्यात्। शब्दानामनुशासनमाचार्येणाचार्यस्य वा।

■ जहां (कृदन्त) कृत् प्रत्यय होने पर कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति की प्राप्ति होती है वहां कर्ता में षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है तथा कर्म में षष्ठी विभक्ति नित्य होती है। जैसे—

शब्दानामनुशासनमाचार्येणाचार्यस्य वा (आचार्य के द्वारा शब्दों का अनुशासन)

अनुशासन शब्द में अनु उपसर्ग, शास् धातु, अन् प्रत्यय होने से

कर्तृ कर्मणो: कृति (372) से कर्ता और कर्म में षष्ठी विभक्ति की प्राप्ति होती है किन्तु

उभय प्राप्तौ कर्तरि वा (373) से विकल्प से कर्ता आचार्य में षष्ठी विभक्ति हुई है। शब्दानाम् यह कर्म है, कर्म होने से शब्दानाम् में नित्य षष्ठी विभक्ति हुई है।

पक्ष में—कर्तृ साधन ... (350) से आचार्य कर्ता में तृतीया विभक्ति हुई है।

(374) तृन्नुदन्ताव्ययक्वस्वानशतृक्तवतुकिखलर्थानाम्।।2।4।95।

तृन्नादिप्रत्ययसम्बन्धिनो: कर्तृकर्मणो: प्राप्ता षष्ठी न स्यात्। वदिता जनापवादान्, जिनं दिदृक्षु:, शत्रून्, जिष्णु:, कटं कृत्वा, ओदनं भोक्तुम्, तप: तेपिवान्, शास्त्रं विद्वान्, घटं चक्राण:, पटं कुर्वन्, कटं कृतवान्, कटं चक्रि:, सुकरो घटस्त्वया। कारकषष्ठ्या: प्रतिषेधोऽयम्। सम्बन्धे तु षष्ठी स्यादेव। शत्रोर्जिष्णु:, चैत्रस्य कुर्वन् किंकर इत्यर्थ:।

■ तृन्, उदन्त अव्यय, क्वसु, कान, शान, आनश्, शतृ, क्तवतु, कि, खल अर्थ वाले प्रत्यय से सम्बन्धित कर्ता, कर्म से प्राप्त षष्ठी विभक्ति नहीं होती है। जैसे—

वदिता जनापवादान्	(वद् + तृन्)
लोगों का जनापवाद (अफवाह)	
जिनं दिदृक्षु:	(दृश् + उदन्त)
जिन को देखने का इच्छुक	(दृश् + सन् + उ)
शत्रून जिष्णु	(जिं + सन् + उ)
शत्रुओं को जीतने का इच्छुक	
कटं कृत्वा	

[1] कृत् प्रत्यय अर्थात् कृदन्त के प्रत्यय।
दो प्रकार के प्रत्यय का प्रयोग कृदन्त में होता है कृत प्रत्यय, कृत्य प्रत्यय
कृत्य प्रत्यय - तव्य, अनीय, य, क्यप्, ध्यण, ये पांच कृत्य प्रत्यय हैं। इन सभी का प्रयोग चाहिए अर्थ में होता है। इन पांच प्रत्यय के अतिरिक्त जितने भी कृदन्त में प्रत्यय प्रयुक्त होते हैं, वे सभी कृत प्रत्यय कहलाते हैं।
कृत प्रत्यय - णक्, तृच्, तृन्, अनट्, अच्, अण्, णिन्, टक्, खश्, ख आदि।

चैत्रस्य भोजनम्	(भुज् + अनट्)
(चैत्र का भोजन)	
मैत्रस्य पठनम्	(पठ् + अनट्)
(मैत्र का पढ़ना)	
विश्वस्य ज्ञाता	(ज्ञा + तृच्)
(विश्व को जानने वाला)	
तीर्थस्य कर्ता	(कृ + तृच्)
(तीर्थ को करने वाला)	
यवानां लावक:	(लू + णक:)
(जौ को काटने वाला)	
ओदनस्य भोजक:	(भुज् + णक:)
(चावल को खाने वाला)	

कृत् प्रत्यय के योग में चैत्र तथा मैत्र कर्ता की, विश्व, तीर्थ, यव, ओदन कर्मवाचक शब्द से-
गौणात् (334) की सहायता से
कर्तृ कर्मणो: कृति (372) से षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

चटाई को करके — कृ + त्वा (त्वा प्रत्यय अव्यय है।)
ओदनं भोक्तुम् — (भुज् + तुमन्)
चावल को खाने के लिए — (तुमन् प्रत्यय अव्यय है)
तपः तेपिवान् — (तप + क्वसु)
तप तपा था
शास्त्रं विद्वान् — (विद् + क्वसु)
शास्त्र जाना था
घटं चक्राणः — (कृ + आन)
घट किया था
पटं कुर्वन् — (कृ + शतृ)
पट को करता हुआ
कटं कृतवान् — (कृ + क्तवतु)
चटाई को किया था
कटं चक्रि : — (कृ + कि)
चटाई का करना
सुकरो घटस्त्वया — (सु + कृ + खल)
आपके द्वारा सरलता से घट किया गया

तृन् उदन्त, अव्यय, क्वसु आदि प्रत्ययों के योग में जनापवाद्, जिन, शत्रु आदि शब्दों में कर्तृ कर्मणोः कृति सूत्र (372) से षष्ठी विभक्ति की प्राप्ति होती है किन्तु तृन्नुदन्ताव्ययक्वस्वानशतृक्तवतुकिखलर्थानाम् (374) सूत्र से तृन्नु आदि प्रत्ययों के योग में षष्ठी विभक्ति का निषेध करने पर

गौणात् (334) की सहायता से

कर्मणि द्वितीया (335) से जनापवाद आदि शब्दों की द्वितीया विभक्ति करने पर तृन्नु दन्ता .... (374) यह सूत्र कारक षष्ठी का प्रतिषेध (निषेध) करता है। किन्तु सम्बन्ध कारक न होने से सम्बन्ध में षष्ठी विभक्ति हो जाती है। जैसे-

शत्रोर्जिष्णुः (शत्रु का जेता)
यहां सम्बन्ध होने से शत्रु शब्द में
गौणात् (334) की सहायता से
शेषे (371) से षष्ठी विभक्ति।
इसी प्रकार-
चैत्रस्य कुर्वन् किङ्कर (चैत्र का नौकर)
यहां पर भी चैत्र में षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

(375) अकमेरुकस्य ।।2।4।96।

कमिवर्जितस्य उकप्रत्ययान्तस्य योगे कर्मणि षष्ठी न स्यात्। भोगानभिलाषुकः। अकमेरिति किम्-- दास्याः कामुकः।

■ कमुङ् धातु को छोड़कर उक प्रत्ययान्त का योग होने पर कर्म में षष्ठी विभक्ति नहीं होती है। जैसे—भोगानभिलाषुकः (भोगों को चाहने वाला)

उपर्युक्त उदाहरण के अन्त में उक प्रत्यय है अतः इसके योग में भोग शब्द से कर्तृ कर्मणोः कृति (372) से भोग कर्म में षष्ठी विभक्ति की प्राप्ति किन्तु

अकमेरुकस्य (375) से निषेध करने पर
गौणात् (334) की सहायता से
कर्मणि द्वितीया (335) से द्वितीया विभक्ति करने पर
भोगानभिलाषुकः रूप बनता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कमुङ् धातु में षष्ठी विभक्ति को छोड़ा ऐसा क्यों?
दास्या: कामुक: (दासी की कामना करने वाला)
यहां कमुङ् धातु होने से तथा उकञ् प्रत्यय होने से दासी में—
कर्तृ कर्मणो: कृति (372) से षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।
अत: दास्या: कामुक: रूप बनता है।

(376) द्विष: शतुर्वा।।2।4।99।

शतृप्रत्ययान्तस्य द्विषधातो: षष्ठी वा स्यात्। चौरस्य चौरं वा द्विषन्।

■ शतृ प्रत्ययान्त द्विष् धातु से कर्म में षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है। जैसे-
चौरस्य चौरं वा द्विषन् (चौर का द्वेषी)
शतृ प्रत्ययान्त द्विष् धातु के योग में चौर कर्म में
कर्तृ कर्मणो: कृति (372) से षष्ठी विभक्ति की प्राप्ति किन्तु
तृन्नु दन्ता ... (374) से शतृ प्रत्यय के योग में चौर कर्म में षष्ठी विभक्ति का निषेध करने पर
गौणात् (334) की सहायता से
द्विष: शतु र्वा ... (376) चौर कर्म में शतृ प्रत्यय के योग में विकल्प में षष्ठी विभक्ति।
चौरस्य द्विषन्।
पक्ष में—गौणात् (334) की सहायता से
कर्मणि द्वितीया (335) से द्वितीया विभक्ति।
चौरं द्विषन्।

(377) क्तस्य वर्तमानाधारयो: ।।2।4।100।

वर्तमाने आधारे चैव विहितस्य क्तस्य कर्तृकर्मणो: षष्ठी स्यात् नान्यत्र। राज्ञां मत:, इदमेषां शयितम्। वर्तमानाधारयोरिति किम्-कुलालेन घट: कृत:।

■ वर्तमान और आधार में कहे गये क्त प्रत्यय के कर्ता कर्म की षष्ठी विभक्ति होती है। अन्य जगह नहीं होती है। अर्थात् जब क्त प्रत्यान्त शब्द (जो कि भूतकाल का बोधक होता है; जैसे-स गत:-वह गया) वर्तमान और आधार अर्थ में प्रयुक्त होता है, तो षष्ठी विभक्ति होती है।

राज्ञां मत:	मन् + क्त	राजा मानते हैं
इदमेषां शयितम्	शीङ्क् + क्त	यह इनकी शय्या

वर्तमान और आधार में क्त प्रत्यय होने से राजन् और इदम् शब्द में कर्तृ कर्मणो: ... से कृत प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति की प्राप्ति किन्तु गौणात् (334) की सहायता से क्तस्य वर्तमाना धारयो: (377) से षष्ठी विभक्ति।

इस प्रकार राज्ञां मत: इदमेषां शयितम् रूप बनते हैं।
वर्तमान और आधार होना चाहिए ऐसा क्यों?
कुलालेन घट: कृत: (कुम्हार के द्वारा घट किया गया)
यहां क्त प्रत्यय है लेकिन वर्तमान और आधार न होने से कुलाल शब्द में
कर्तृ साधन ... (350) से तृतीया विभक्ति प्रयुक्त हुई है। यहां कुलाल साधन है।

(378) भावे वा ।।2 । 4 । 101 ।

भावे विहितस्य कर्तरि षष्ठी वा स्यात्। छात्रस्य छात्रेण वा हसितम्।

■ भाव[1] में कहे गए क्त प्रत्यय के कर्ता में षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है। जैसे-
यहां भाव में क्त प्रत्यय होने से कर्तृ कर्मणो: कृति (372) से कृत् प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति की प्राप्ति किन्तु
गौणात् (334) की सहायता से

[1] भाव का अर्थ है—क्रिया। भाव में प्रत्यय होने का अर्थ है क्रिया में प्रत्यय होना। भाव एक होता है, इसलिए क्रिया में एक वचन ही होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भावे वा (378) से क्त प्रत्यय के योग में कर्ता छात्र में विकल्प से षष्ठी विभक्ति।
अतः छात्रस्य हसितम् रूप बनता है।
पक्ष में—छात्रेण हसितम्
गौणात् (334) की सहायता से
कर्तृ साधन ... (350) से छात्र कर्ता की तृतीया विभक्ति।
छात्रेण हसितम्।

(379) कृत्यानां कर्तरि वा ।।2।4।93।

कृत्यप्रत्ययानां प्रयोगे कर्तरि षष्ठी वा स्यात्। पक्षे तृतीया। कर्तव्यः, करणीयः, कृत्यः, कार्यो वा उद्यमो भवतः। भवता वा।

■ कृत्य प्रत्यय का योग होने पर कर्ता में षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है। पक्ष में तृतीया विभक्ति होती है। जैसे—

कर्तव्यः	कृ	+	तव्य
करणीयः	कृ	+	अनीय
कृत्यः	कृ	+	क्यप्
कार्यो वा	कृ	+	ध्यण्

उद्यमो भवतः भवता वा (आप के द्वारा उद्यम करना चाहिए)
तव्य, अनीय, य, क्यप्, घ्यण् ये कृत्य प्रत्यय हैं, अतः इनके योग में कर्ता भवत् शब्द में
कर्तृ कर्मणोः ... (372) से कृत् प्रत्यय के योग में षष्ठी विभक्ति की प्राप्ति किन्तु
गौणात् (334) की सहायता से
कृत्यानां कर्तरि वा (379) से कर्ता भवत् की विकल्प से षष्ठी विभक्ति।
भवतः कर्तव्यः करणीयः कृत्यः कार्यो वा उद्यमोः।
भवता कर्तव्यः करणीयः कृत्यः, कार्यो वा उद्यमो।
गौणात् (334) सूत्र की सहायता से
कृत्यानां कर्तरि वा (379) सूत्र से कर्ता भवत् की विकल्प से षष्ठी विभक्ति।
भवत् कर्तव्यः करणीयः कृत्यः कार्यो वा उद्यमो।

पक्ष में भवता कर्तव्यः करणीयः कृत्यः कार्यो वा उद्यमो गौणात् सूत्र की सहायता से कर्तृ साधन ... (350) से कर्ता भवत् की तृतीया विभक्ति हुई है।

(380) आधारे सप्तमी ।।2।4।102।

आधारे वर्तमानान्नाम्नः सप्तमी स्यात्। स च षोढा-औपश्लेषिकः, अतिव्यापकः सामीप्यकः वैषयिकः, नैमित्तिकः, औपचारिकश्च। कटे शेते, वटेगावः तिलेषु तैलम्, दिवि देवाः, युद्धे सन्नह्यते, अंगुल्यग्रे करिशतम्।

■ आधार में रहे हुए नाम से सप्तमी विभक्ति होती है। जिसमें क्रिया हो रही है उसे आधार कहते हैं। और वह आधार छः प्रकार का होता है।

1. औपश्लेषिक	2. सामीप्यक
3. अभिव्यापक	4. वैषयिक
5. नैमित्तिक	6. औपचारिक

1. औपश्लेषिक-(संयोग सम्बन्ध मूलक आधार)
जिस आधार से संलग्न पदार्थ का बोध हो उस आधार को 'औपश्लेषिक' कहते हैं। जैसे-कटे शेते (चटाई पर सोता है) सोने वाले कर्ता का कट के साथ संयोग सम्बन्ध है। अतः कट में सप्तमी।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

2. सामीप्यक-जिससे समीपता का बोध हो उसे 'सामीप्यक आधार' कहते हैं। जैसे वटे गाव:-गायें बरगद के समीप खड़ी है। अशोके सीता आसाञ्चक्रे-अशोक वृक्ष के समीप सीता बैठी थी। इनसे गायें और सीता का बरगद के नीचे या आसापास रहना प्रतीत होता है। अत: वट और अशोक में सप्तमी।
3. अभिव्यापक-व्याप्य का बोध कराने वाले शब्द को 'अभिव्यापक' आधार कहते हैं। जैसे क्षीरे घृतम् (दूध में घी है) तिलेषु तैलम् (तिलों में तेल है)। यहां दूध, तिल व्यापक है और घी और तैल व्याप्य है। व्याप्य व्यापक सम्बन्ध होने से क्षीर और तिल में सप्तमी है।
4. वैषयिक-जिससे विषय (निवास करने के क्षेत्र) का बोध हो उसे वैषयिक आधार कहते हैं। जैसे-तपोवने तपस्वी वसति (तपोवन में तपस्वी निवास करता है)। दिवि देवा: (स्वर्ग में देवता निवास करते हैं) यहां निवास करने के क्षेत्र का बोध होने से तपोवन में सप्तमी।
5. नैमित्तिक-जिस शब्द से होने वाले कार्य के निमित्त की सूचना मिलती है उसे 'नैमित्तिक आधार' कहते हैं। जैसे युद्ध संनह्यते (युद्ध के लिए तैयार होता है)। यहां लड़ने के लिए तैयार होने का निमित्त युद्ध है अत: युद्ध में सप्तमी।
6. औपचारिक-उपचार यानि संकेत को मानकर जो कहा जाता है उसे 'औपचारिक आधार' कहते हैं। जैसे-अंगुल्यग्रे करिशतम्—अंगुलि की नोक पर सौ हाथी है। यह उपचार से कहा जाता है। अत: अंगुल्यग्र में सप्तमी।

(381) यस्य भावेन भावलक्षणम्।।4।2।109।

भाव: क्रिया। यस्य क्रियया अन्या क्रिया लक्ष्यते तत: सप्तमी स्यात्। वर्षति देवे चैत्रो गत:, गोषु दुह्यमानासु आगत:।

■ भाव का अर्थ है क्रिया। जिस (प्रसिद्ध) क्रिया से इसकी (अप्रसिद्ध) क्रिया का काल माना जाये तो वहां (पहली क्रिया में) सप्तमी विभक्ति होती है।

जैसे-

वर्षति देवे चैत्रो गत: (बादल के बरसने पर चैत्र गया)

बादल रूपी कर्ता में रहने वाली वर्षा रूपी क्रिया से गमन रूपी क्रिया लक्षित होती है, अत: वर्षति और देवे में सप्तमी हुई है।

गोषु दुह्यमानाषु आगत:

(गायों के दुहने पर आया)

गाय रूपी कर्म में रहने वाली दोहन-क्रिया से गमन रूपी क्रिया लक्षित होती है, अत: दुह्यमानासु और गोषु में सप्तमी हुई।

(382) षष्ठ्यनादरे ।।2।4।111।

अनादरयुक्ते भावलक्षणे वर्तमानान्नाम्न: षष्ठी वा स्यात्। पक्षे पूर्वेण सप्तमी। रुदति रुदतो वा प्राव्राजीत्।

■ अनादर युक्त भाव लक्षित होने पर वर्तमान नाम से षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है अर्थात्-
अनादर युक्त भाव से किसी की उपेक्षा कर क्रिया करने से अनादर भाव वाले में षष्ठी विभक्ति विकल्प से होती है। पक्ष में पूर्व सूत्र के द्वारा सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

रुदत्या: मातु: पुत्र: प्राव्राजीत्

षष्ठ्यानादरे (382) सूत्र से विकल्प से षष्ठी विभक्ति हुई है।

रुदति मातरि पुत्र: प्राव्राजीत् (रोती हुई माता को छोड़कर पुत्र ने सन्यास ले लिया)

यस्य भावेन भाव लक्षणम् (381) सूत्र से सप्तमी विभक्ति हुई है।

(383) निमित्तात्कर्मसंयुक्तात् ।।2।4।108।

कर्मसंयुक्तान्निमितान्नाम्न: सप्तमी स्यात्।

चर्मणि द्वीपिनं हन्ति, दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्।
केशेषु चमरीं हन्ति, सीम्नि पुष्कलको हत:॥1॥

कर्मसंयुक्तादिति किम्-वेतनेन धान्यं लुनाति।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

■ कर्म संयुक्त निमित्त नाम से सप्तमी विभक्ति होती है। अर्थात् निमित्त यदि कर्म संयुक्त हो तो निमित्त में सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-

1. चर्मणि द्वीपिनं हन्ति
(चमड़ी के लिए चीता को मारता है)
चर्म निमित्त है, द्वीपी कर्म है। यहां द्वीपी कर्म चर्म-निमित्त से युक्त है, अतः चर्मणि में निमित्तात्कर्मसंयुक्तात् (383) सूत्र से सप्तमी विभक्ति हुई।

2. दन्तयोर्हन्ति कुञ्जरम्
(दांतों के लिए हाथी को मारता है)
दन्त निमित्त है, कुञ्जर कर्म हैं। यहां कुञ्जर-कर्म दन्त-निमित्त से युक्त है, अतः दन्तयोः में निमित्ताकर्म (383) सूत्र से सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

3. केशेषु चमरीं हन्ति
(बालों के लिए सुरा गाय को मारता है)
केश निमित्त है, चमरी कर्म। यहां चर्मरी कर्म केश-निमित्त से युक्त है अतः
निमित्ताकर्म ... (383) सूत्र से सप्तमी हुई है।

4. सीम्नि पुष्कलको हतः
(कस्तूरी के लिए हिरन को मारता है)
(अंडकोश या अण्डकोश में विद्यमान कस्तूरी के लिए कस्तूरी मृग को मारता है)
सीमा का अर्थ है- अण्डकोश
पुष्कलक का अर्थ है- कस्तूरीमृग
यहां कस्तूरी निमित्त है, पुष्कलक कर्म है यहां पुष्कलक-कर्म कस्तूरि निमित्त से युक्त है अतः सीमन् शब्द में सप्तमी विभक्ति हुई है।

कर्म संयुक्त (कर्म से युक्त) होना चाहिए ऐसा क्यों?
वेतनेन धान्यं लुनाति
(वेतन के लिए धान काटता है)
यहां पर धान और वेतन निमित्त है पर वह धान्य के साथ संयुक्त नहीं है अतः सप्तमी विभक्ति की बजाय कर्तृ साधन ... (350) सूत्र से वेतन में तृतीया विभक्ति हुई है।

(384) साध्वसाधुभ्याम् ।।2।4।105।

आभ्यां युक्तान्नाम्नः सप्तमी स्यात्। साधुर्मैत्रो मातरि, असाधुर्मातुले।

■ साधु और असाधु (शब्द) से युक्त नाम से सप्तमी विभक्ति होती है। जैसे-
साधु मैत्रो मातरि (मैत्र माता के लिए भला है)
यहां साधु के योग में मातरि में
साध्वसाधुभ्याम् (384) से सप्तमी विभक्ति हुई है।
असाधु मातुले (मामा के लिए बुरा है)
यहां असाधु के कारण मातुले में साध्वसाधुभ्याम् (384) से सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

(385) निर्धारणेऽविभागे सप्तमी च ।।2।4।112।

निर्धारणे वर्तमानान्नाम्नः षष्ठीसप्तम्यौ स्तः अविभागे गम्यमाने। नृणां नृषु वा क्षत्रियः शूरः, गवां गोषु वा कृष्णां बहुक्षीरा, गच्छतां गच्छत्सु वा धावन्तः शीघ्रतमाः। अविभागे इति किम्-माथुराः पाटलिपुत्रकेभ्य आढ्यतराः।

■ निर्धारण[1] में वर्तमान नाम से षष्ठी और सप्तमी विभक्ति होती है, अविभाग[2] (अर्थ) प्रकट होने पर। जैसे-

[1] जाति, गुण, क्रिया या संज्ञा की विशेषता के आधार पर किसी एक को अपने समुदाय से पृथक् करने को निर्धारण (छांटना) कहते है।
[2] क्षत्रिय नृसमुदाय से अलग नहीं है यही अविभाग है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में शेषे (371) से सम्बन्ध के कारण षष्ठी विभक्ति। गवां स्वामी।

इसी प्रकार गवां गोषु वा ईश्वरः, अधिपति, दायादः (पुत्र, भाई बन्धु), साक्षी (गवाही), प्रतिभूः (जमानत करने वाला), प्रसूतः (उत्पन्न) इन सभी के योग में पूर्ववत् षष्ठी, सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है।

नृणां नृषु वा क्षत्रियः शूरः (मनुष्यों में क्षत्रिय शूर है)
यहां निर्धारण और अविभाग अर्थ प्रकट होने से नृणां, नृषु में-
निर्धारणेऽविभागे सप्तमी च सूत्र (385) से षष्ठी और सप्तमी। इसी प्रकार
गवां गोषु वा कृष्णा बहुक्षीरा
(गायों में काली गाय अधिक दूध देती है)
गच्छतां गच्छत्सु वा धावन्तः शीघ्रतमाः
(चलने वालों में दौड़ने वाला शीघ्र जाता है)
अविभाग होना चाहिए ऐसा क्यों?
मथुराः पाटलिपुत्रकेभ्य आढ्यतराः
(मथुरावासी पटना के लोगों से अधिक धनी हैं)
यहां विभाग होने से पाटलीपुत्रकेभ्यः में पञ्चमी विभक्ति हुई है।

(386) स्वामीश्वराधिपतिदायादसाक्षिप्रतिभूप्रसूतैर्वा ।।2।4।113।

एभिर्युक्तान्नाम्नः सप्तमी वा स्यात्। पक्षे शेषषष्ठी। गवां गोषु वा स्वामी, ईश्वरः, अधिपतिः, दायादः, साक्षी, प्रतिभूः, प्रसूतो वा।

■ स्वामी, ईश्वर, अधिपति, दायाद, साक्षी, प्रतिभू, प्रसूत इन शब्दों से युक्त नाम से सप्तमी विभक्ति विकल्प से होती है। जैसे-
गवां गोषु वा स्वामी (गायों का स्वामी)
स्वामी के कारण गो शब्द से

प्रस्तुत सूत्र से सप्तमी विभक्ति विकल्प से हुई है।

पक्ष में शेषे (371) से सम्बन्ध के कारण षष्ठी विभक्ति गवां स्वामी इसी प्रकार गवां गोषु वा ईश्वरः, अधिपतिः, दायादः (हिस्सेदार) साक्षी (गवाही) प्रतिभूः (जमानत करने वाला) प्रसूत (उत्पन्न) इन सभी के योग में पूर्ववत् षष्ठी, सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त होती है।

(387) तूल्यार्थैस्तृतीयाषष्ठ्यौ ।।2।4।122।

जिनेन जिनस्य वा तुल्यः, समः, सदृशो वा कालुरामाचार्यः।

■ तुल्य अर्थ वाले शब्दों के योग में तृतीया और षष्ठी विभक्ति होती है। जैसे-
जिनेन जिनस्य वा तुल्यः, समः सदृशो वा कालुरामाचार्यः।
(जिन के सदृश कालुरामाचार्य)
तुल्य, सदृश, सम शब्द तुल्य अर्थ वाले हैं, अतः इनके साथ जिन शब्द में-
तुल्यार्थैस्तृतीयाषष्ठ्यौ (387) से तृतीया और षष्ठी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

(388) ऋते द्वितीयापञ्चम्यौ ।।2।4।124।

ऋते वर्जनार्थकमव्ययम्। तद्योगे नाम्नो द्वितीयापञ्चम्यौ स्तः। ऋते धर्मं धर्माद् वा कुतः सुखम्।

■ ऋते यह अव्यय वर्जन (छोड़ने) के अर्थ में है।
ऋते अव्यय के योग में नाम से द्वितीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे-
ऋते धर्मं धर्माद् वा कुतः सुखम् (धर्म के बिना सुख कहां)
यहां ऋते अव्यय का योग होने से धर्म शब्द में
ऋते द्वितीया पञ्चम्यौ (388) से द्वितीया और पञ्चमी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(389) विना तृतीया च ।।2।4।125।

विना शब्देन युक्तान्नाम्नस्तृतीया द्वितीयापञ्चम्यौ च स्याताम्। विना पापेन पापं पापाद् वा सर्वं फलति।

■ विना शब्द से युक्त नाम से तृतीया, द्वितीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे—

विना पापेन, पापं पापाद् वा सर्वं फलति (पाप से रहित सब फलता है)

यहां विना के योग से पाप शब्द में

विना तृतीया च (389) से तृतीया, द्वितीया और पञ्चमी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

(390) दूरान्तिकार्थादसत्त्वात्सप्तमी ताश्च ।।2।4।126।

दूरान्तिकार्थादसत्त्ववाचिनः सप्तमी द्वितीयातृतीयापञ्चम्यश्च स्युः। दूरे, दूरम्, दूरेण दूरात् वा ग्रामात् ग्रामस्य वा वसति। एवं विप्रकृष्टात्, अन्तिकात्, सन्निकृष्टादपि।

■ असत्त्ववाची (द्रव्य वाचक न हो), दूर अर्थ वाले, अन्तिक अर्थ वाले शब्दों से सप्तमी, द्वितीया, तृतीया और पञ्चमी विभक्ति होती है। जैसे–

दूरे, दूरम्, दूरेण, दूरात् वा ग्रामात् ग्रामस्य वा वसति (गांव से दूर)

असत्त्ववाची दूर अर्थ वाले शब्द से

दूरान्तिकार्थादसत्त्वात्सप्तमी ताश्च (390) से क्रमशः सप्तमी, द्वितीया, तृतीया, पंचमी विभक्ति प्रयुक्त हुई है इसी प्रकार–

विप्रकृष्टे, विप्रकृष्टम्, विप्रकृष्टेन, विप्रकृष्टात् वा ग्रामात् ग्रामस्य वा। (गांव से दूर) अन्तिके, अन्तिकम्, अन्तिकेन, अन्तिकात् वा ग्रामात् ग्रामस्य वा। (गांव के समीप)

सन्निकृष्टे, सन्निकृष्टम्, सन्निकृष्टेन, सन्निकृष्टात् वा ग्रामात् ग्रामस्य वा। (गांव के समीप)

(391) हेत्वर्थैस्तृतीयाद्याः ।।2।4।127।

हेतुर्निमित्तम्। तदर्थैः शब्दैर्युक्तात् तैरेव समानाधिकरणात् नाम्नस्तृतीयाद्या विभक्तयः स्युः। धनेन हेतुना, धनाय हेतवे, धनाद्धेतोः, धनस्य हेतोः, धने हेतौ वा वसति। एवं निमित्तकारणप्रयोजनादयः प्रयोक्तव्याः।

■ हेतु, निमित्त पर्यायवाची है।

हेतु अर्थवाले शब्दों से युक्त हेतुवाचक समानाधिकरण (एक विभक्ति एक अर्थ होने से) नाम से तृतीया आदि (चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी) विभक्तियां होती है। जैसे—

धनेन हेतुना, धनाय हेतवे, धनात् हेतोः, धनस्य हेतोः, धने हेतौ वा वसति।

(धन के हेतु से रहता है)

हेत्वर्थैस्तृतीयाद्याः (391) से क्रमशः तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी विभक्ति हुई है।

इसी प्रकार निमित्त, कारण, प्रयोजन आदि का प्रयोग होने पर तृतीया आदि विभक्तियां हो जाती हैं। जैसे–धनेन निमित्तेन, धनेन कारणेन, धनेन प्रयोजनेन आदि।

(392) सर्वादेश्च सर्वाः ।।2।4।128।

हेत्वर्थैर्युक्तात् तैरेव समानाधिकरणात् सर्वादेर्नाम्नः सर्वा विभक्त्य स्युः। को हेतुः, कं हेतुम्, केन हेतुना, कस्मै हेतवे, कस्माद्धेतोः, कस्य हेतोः, कस्मिन् हेतौ वा वसति। एवं निमित्तादीनां योगेऽपि।

कर्ता कर्म तथा चोक्तं, साधनं तु तृतीयकम्।
दानपात्रमपादान–माधारः कारकाणि षट् ॥1॥

■ हेतु अर्थ वाले शब्दों से युक्त हेतुवाचक समान अधिकरण से सर्व आदि नाम से सभी विभक्तियां हो जाती हैं। जैसे–को हेतुः यहां हेतु के अर्थ में किम् शब्द की सर्वादेश्च सर्वाः (392) से प्रथमा विभक्ति प्रयुक्त हुई है। इसी प्रकार

कं हेतुम् केन हेतुना, कस्मै हेतवे, कस्मात् हेतोः, कस्मिन् हेतौ वा वसति।

यहां क्रमशः द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी, पंचमी, षष्ठी, सप्तमी विभक्ति प्रयुक्त हुई है।

इसी प्रकार—

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

निमित्त आदि का योग होने पर भी सभी विभक्तियां हो जाती है। जैसे—
किं निमित्तं, किं कारणं, किं प्रयोजनम् आदि।
छः कारक है
कर्ता, कर्म साधन।
दानपात्र, अपादान, आधार
ये छः कारक (संस्कृत में) है।

इस प्रकार कारक प्रकरण पूर्ण हुआ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कारक प्रकरणम्
अभ्यास कार्य प्रथम

प्र-01 संस्कृत में कारक कितने है, नाम लिखें?
प्र-02 कारक किसे कहते है तथा सम्बन्ध को कारक क्यों नहीं कहा गया?
प्र-03 कर्ता कारक किसे कहते है तथा कर्ता के कितने प्रकार हैं, समझायें?
प्र-04 द्वितीया विभक्ति वाले सूत्र लिखें?
प्र-05 द्विकर्मक धातुएं कौन-कौन सी हैं, नाम व अर्थ लिखें?
प्र-06 सह, साकम्, निकषा, सर्वत:, हेतु, अधोऽध: इनके योग में कौन-कौन सी विभक्ति होती है?
प्र-07 चतुर्थी विभक्ति वाले सूत्र लिखें?
प्र-08 उपपद विभक्ति व कारक विभक्ति किसे कहते हैं?
प्र-09 नम:, स्वस्ति, द्रुह्, अप, दूर, तुल्य इनके योग में कौनसी विभक्ति होती है?
प्र-10 अपाय का क्या अर्थ है?
प्र-11 कृत्, शतृ, कृत्य, क्तवतु इनके योग में कौनसी विभक्ति होती है?
प्र-12 आधार कितने प्रकार का होता है, उदाहरण देकर समझायें?
प्र-13 कर्म संयुक्त निमित्त से कौनसी विभक्ति होती है, ससूत्र उदाहरण देकर समझायें?
प्र-14 ऋते, विना, शप, निर्धारण, अनादर इनके योग में कौन-कौनसी विभक्ति होती है?
प्र-15 कर्म संज्ञक विधायक सूत्र लिखें? (अर्थात् कर्म संज्ञा करने वाले सूत्र लिखें)
प्र-16 कर्म किसे कहते हैं तथा कर्म के कितने भेद हैं?
प्र-17 अञ्न्नि अवस्था तथा ञिन्न अवस्था से आप क्या समझतें हैं कोई दो उदाहरण देकर समझायें?

कारक प्रकरणम्
अभ्यास कार्य प्रथम्

प्र-18 शुद्धाशुद्धि का विवेक करें?

1. नमो जिनेन्द्रम्	2. अक्षि काण:	3. गुरो: श्लाघते
4. चोरस्य बिभेति	5. चैत्रम् भोजनम्	6. नरेभ्य: क्षत्रिय: शूर:
7. साधुभ्यो भिक्षां ददाति	8. ग्रामात् परित:	9. मैत्रं क्रुध्यति
10. प्रकृत्या चारु:	11. कुण्डलाय हिरण्यम्	

प्र- 19 सूत्र पूर्ति करें।

1. .... नम: ....
2. तृन्नु ....
3. .... सप्तमी
4. .... सर्वा:
5. गति ....

प्र-20 सूत्र पूर्ति करते हुए सोदाहरण अर्थ लिखें?

1. .... तृतीया ....
2. .... कर्म ....
3. क्तस्य ....
4. बोधा ....
5. दुहा ....

प्र-21 ऐसा सूत्र लिखें जिसमें सभी विभक्तियां हुई हों?

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

परिशिष्ट

अ

3	अ, इ, उ, ऋ, लृ, ए, ऐ	।।	1/1/4
10	अं अनुस्वारः	।।	1/1/11
11	अः विसर्गः	।।	1/1/12
375	अकमेरुकस्य	।।	2/4/96
338	अधेः शीङ्स्थासामाधारः	।।	2/4/14
748	अधोऽध्युपरिसामी	।।	8/4/94
18	अन्त्यस्वरादिष्टिः	।।	1/1/34
19	अन्त्यात् पूर्व उपधा	।।	1/1/35
339	अन्वध्याङ्भ्यो वसः	।।	2/4/15
349	अपवर्गे तृतीया	।।	2/4/57
364	अपायेऽवधिपादानम्	।।	2/4/42
7	अवर्जा नामिनः	।।	1/1/8
54	असन्धिरदसोमु.	।।	1/2/35

आ

20	आदैदारो वृद्धिः	।।	1/3/36
9	आद्यन्ताभ्यां प्रत्याहा.	।।	2/2/5
70	आद्यन्तौ ट्किृतौ	।।	2/2/62
380	आधारे सप्तमी	।।	2/4/102

इ

29	इवर्णादीनां स्वरे	।।	1/2/1
48	इन्द्रे	।।	1/2/8

ई

55	ईदूदेद् द्विवचनं.	।।	2/2/36

उ

69	उदः स्थास्तम्भोः सः	।।	1/3/64
346	उपर्याऽधिभिर्द्धित्त्वे	।।	2/4/51
340	उपान्निवासे	।।	2/4/16
347	उपेन चोत्कृष्टे	।।	2/4/55
373	उभयप्राप्तौ कर्तरि वा	।।	2/4/90

ऋ

37	ऋलृवर्णो वा	।।	1/1/19
42	ऋणे प्रसवनक0	।।	1/2/14
43	ऋत्युवसर्गस्य	।।	1/2/16

लृ

8	लृदन्ताः समानाः	।।	1/1/9

ए

9	एऐ ओ औ संध्यक्ष.	।।	1/1/10

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

6	एक द्वि त्रिमात्रा.	।। 1/1/7
33	एदैतोरयायौ	।। 1/2/3
40	एदैतोरैत्	।। 1/2/29
44	एदोतोऽतः पदान्ते	।। 1/2/32
49	एदोतोरुपसर्गस्य	।। 1/2/26
22	एदोदरो गुणः	।। 1/1/37
51	एवेऽनवधारणे	।। 1/2/29

ओ

34	ओदौतोरवावौ	।। 1/2/4
41	ओदौतोरौत्	।। 1/2/22
57	ओन्निपातः	।। 1/2/38
1	ओम्	।। 1/1/1
52	ओष्ठौत्वोः समासे वा	।। 1/2/31

औ

5	औदन्ताः स्वराः	।। 1/1/6

क

333	कर्तुर्व्याप्यं कर्म	।। 2/4/3
372	कर्तृकर्मणोः कृति	।। 2/4/89
350	कर्तृसाधनहेत्वित्थं भूतलक्षणेषु	।। 2/4/58
409	कर्तृ साधने कृता	।। 3/1/52
355	कर्मक्रियाभिप्रेयो दानपात्रम्	।। 2/4/32
335	कर्मणि द्वितीया	
24	कार्यायेत्	।। 1/1/38
15	कुचुटुतुपु वर्गाः	।। 1/1/16
379	कृत्यानां कर्तरि वा	।। 2/4/93
377	क्तस्य वर्तमानाधारयोः	।। 2/4/100
329	क्रियानिमित्तं कारकम्	।। 2/4/1
336	क्रियाविशेषणात्	।। 2/4/48
359	क्रुद्धुहेर्ष्यासूयार्थाना यं प्रतिकोपः	।। 2/4/37

ख

72	खसे चपा झथानाम्	।। 1/3/40

ग

342	गतिबोधाहारशब्दार्थाऽकर्मणाम्	।। 2/4/21
362	गतेरप्राप्ते वा	।। 2/4/70
45	गवः स्वरेऽनक्षे	।। 1/1/7
334	गौणात्	।। 2/4/46

ङ

74	ङ्ण्नो ह्रस्वाद् द्विः स्वरे	।। 1/3/22

च

73	चपाच्छश्छोऽ मे वा	।। 1/3/3

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

26	चादयोः निपातः	।। 1/1/40

ज

62	जबाद्धो झभाः	।। 1/3/4

झ

31	झबे जबा झसानाम्	।। 1/3/43
59	झसा जबाः	।। 2/1/108
39	झसानां झसे सवर्णे	।। 1/3/63

60	ञमे जबा ञमा वा	।। 1/3/1

त

97	तदः सेः स्वर पाद.	।। 1/3/65
23	तदन्तं पदम्	।। 1/1/22
25	तस्य लोपः	।। 1/1/29
17	तुल्यस्थानाभ्यन्तर.	।। 3/1/18
374	तृन्नुदन्ताव्ययक्वस्थानशतृवतुकिखलर्थानाम्	।। 2/4/95
387	तुल्यार्थैस्तृतीयाषष्ठयौ	।। 2/4/122
67	तो:षि	।। 1/3/8

द

356	दानपात्रे चतुर्थी	।। 2/4/63
14	दीर्घः	।। 1/1/15
341	दुहाद्यर्थानामविवक्षितम्	।। 2/4/19
370	दूरान्तिकार्थबहिर्भिः	।। 2/4/84
390	दूरान्तिकार्था दस.	।। 2/4/126
376	द्विषः शतुर्वा	।। 2/4/99

ध

58	धावो दितौ	।। 1/2/42

न

343	न नीखाद्यदिह्वाशब्दायक्रन्दाम्	।। 2/4/26
66	न पदान्तोट्टोरना.	।। 1/3/7
96	नाग्नञ् समासे	।। 1/3/61
93	नामिनो रोऽबे	।। 1/3/55
344	निकषासमयाहा धिगन्तरान्तरेणातियेनतेनैः	।। 2/4/49
383	निमित्तात्कर्मसंयुक्तात्	।। 2/4/208
385	निर्धारणेऽविभागे सप्तमी च	।। 2/4/122
353	निषेधार्थकृताद्यैः	।। 2/4/161
50	नैत्ये धत्योः	।। 1/2/27
81	नोऽप्रशानः सक् छते	।। 1/3/13

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प

365	पञ्चम्यपादाने	।। 2/4/75
367	पर्यपाभ्यां वर्जने	।। 2/4/76
354	प्रकृत्यादय आख्या.	।। 2/4/29
61	प्रत्यये	।। 1/3/32
366	प्रभृत्यन्यार्थाराधि.	।। 2/4/81
27	प्रादिरूपयसर्गः क्रियायोगे	।। 1/1/41

म

56	मणीवादीनां वा	1/2/37
77	मोऽनुस्वारयमौ हसे.	1/3/18
79	म्नां झपे यमः सव.	1/3/34
381	यस्य भावेन भावलक्षणम्	4/2/109
352	येनाङ्गविकारः	2/4/60
87	यो विसर्गस्य	1/3/53

र

91	रः	1/3/56
357	रूच्यर्थानां प्रीयमाणः	2/4/33
90	रोऽरस्यादिभे	2/1/106
94	रो रि लोपो दीर्धश्चा.	1/3/36

ल

68	लिलः	1/3/10
28	लोकात्	1/1/3

व

399	वा तृतीया सप्तम्योः	3/2/3
83	वा शसे	1/3/45
92	वाहर्पत्यादयः	1/3/57
389	विना तृतीया च	2/4/125
82	विसर्गस्य सश्छते	1/3/44

श

53	शकादीनां टेरन्ध्वा.	1/2/11
64	शात्	1/3/9
47	शिदनेक वर्णः	8/4/124
71	शे चग्वा नोऽश्चे	1/3/21
371	शेषे	2/4/87
358	श्लाघह्नुस्थाशपां ज्ञीप्स्यमानः	2/4/34

ष

382	षष्ठ्यनादरे	2/4/111
46	षष्ठ्यान्त्यस्य	8/4/123
65	ष्टुभिः ष्टु.	1/3/6

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स

13	संयोगे गुरुः	1/1/14
361	समर्थार्थे नमस्व.	2/4/67
36	समानानां सवर्णे	1/2/12
78	सम्राट्	1/3/20
351	सहार्थे	2/4/49
384	साध्वसाधुभ्याम्	2/4/205
22	सितिबादिर्विभक्तिः	1/1/21
2	सिद्धिरनेकान्तात्	1/1/2
95	सैषाद्धसे लोपः	1/3/60
88	सोऽह्वः	2/1/105
63	स्तोः श्चुभिः श्चुः	1/3/5
89	स्रोर्विसर्गः	2/1/103
330	स्वतन्त्रः कर्ता	2/4/2
75	स्वरात्	1/3/25
16	स्वरानन्तरिताह.	1/1/17
35	स्वरे वाऽसन्धिश्च	1/3/53
386	स्वामीश्वराधिपति.	2/4/113

ह

85	हबे	1/3/50
80	हशसेऽनुस्वारः	1/3/35
363	हितसुखाभ्याम्	2/4/72
391	हेत्वर्थैस्तृतीयाद्याः	2/4/127
32	ह्रस्वोऽपदे वा	1/2/2
12	ह्रस्वो लघुः	1/1/13

इति परिशिष्टम्

☆☆☆

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जैन विश्व भारती संस्थान

(मान्य विश्वविद्यालय)

लाडनूं – 341 306

मुनि श्री चौथमल जी कृत

कालु – कौमुदी

हिन्दी अनुवाद एवं साधनिका

(परिशिष्ट सहित)

समणी चिन्मयप्रज्ञा

बी. ए. द्वितीय वर्ष

समासप्रकरणम्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(393 सूत्र से 513 सूत्र तक)

विषयानुक्रम

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ
1	भूमिका	प.अप
2	संकेत सूची	अपप
3	समास-प्रकरण के सूत्र	अपपप.पग
4	अव्ययीभाव समास	1-12
5	तत्पुरुष समास	13-57
6	बहुव्रीहि समास	58-73
7	द्वन्द्व समास	74-89
8	अलुक् समास	90-93
9	समासाश्रयविधि	94-118
10	परिशिष्ट प्	120-123
11	परिशिष्ट प्प्	124-126
12	परिशिष्ट प्प्प्	127-136

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भूमिका

संस्कृतभाषारूपी दुर्ग की दो महत्त्वपूर्ण परिखाएं हैं सन्धि एवं समास। बिना इनको लांघे किसी को भी संस्कृतभाषा की गरिमा ठीक से विदित नहीं हो सकती। संस्कृतभाषा में ऐसा कोई ग्रन्थ नहीं जो सन्धि और समास से रहित हो। इन दोनों का सम्यक् बोध, पाठ के सम्यगर्थ में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है। एक युग ऐसा भी आया था जिसमें समासबहुल रचना पाण्डित्य का निकष मानी जाने लगी थी। अनेक पङ्क्तियों तक के सुदीर्घ समासों से विभूषित रचनायें विद्वत्समाज के मनोविनोद का साधन बन गई थी। समास क्या है? संस्कृत वैयाकरणों ने समास का लक्षण सामान्यत: इस प्रकार किया है —

विभक्तिर्लुप्यते यत्र तदर्थस्तु प्रतीयते।
पदानां चैकपद्यं च समासः सोऽभिधीयते ॥

जहां विभक्ति का लोप होता है पर उसका अर्थ प्रतीत होता रहता है, और जहां परस्पर अपेक्षा रखने वाले अनेक पद मिलकर एक पद के रूप में परिणत हो जाते हैं उसे समास कहा जाता है। समास शब्द का अक्षरार्थ है समसनम् — एक साथ या पास-पास रखना। जब दो या दो से अधिक शब्द पास पास रख दिए जाते हैं तो संस्कृत-भाषा के सन्दर्भ में पहला परिवर्तन उसमें यह आता है कि वे अपनी-अपनी स्वतन्त्र सत्ता खो बैठते हैं। जिस विभक्ति के कारण वे पद बने थे उसी का लोप हो जाता है। भिन्न-भिन्न पदों के एक साथ मिल जाने पर उनके अपने-अपने पदत्व के स्थान पर उन सभी का एक अलग ही पद के रूप में उदय होता है। समस्यमान पदों की अपनी-अपनी विभक्तियों, जिन्हें अन्तर्वर्तिनी विभक्तियां कहा जाता है, क्यों कि वे समस्त पद के बीच-बीच में पड़ती हैं, के लोप हो जाने से समास में कुछ संक्षिप्तता आ जाती है। संक्षिप्तता समास का प्रयोजन है। समास में सन्धि नित्य होती है।

समस्त पद के अर्थ का बोध कराने के लिए जो वाक्य या शब्दावली प्रयुक्त की जाती है उसे 'विग्रह' कहते हैं। वह दो प्रकार का है — लौकिक और अलौकिक। लोक में जो प्रयोग के योग्य होता है उसे लौकिक विग्रह कहते हैं; जैसे — संसारम् अतीत:। जो प्रयोग में नहीं आता वह अलौकिक विग्रह है; जैसे — संसार + अम् + अतीत + सि। अलौकिक विग्रह केवल व्याकरण की प्रक्रिया दर्शाने के लिए होता है। जब समास नित्य होता है तब लौकिक विग्रह एक समस्यमान पद के साथ दूसरे किसी असमस्यमान पद को जोड़कर दिखाया जाता है; जैसे — कुम्भस्य समीपम् ➝ उपकुम्भम्। जब समास विकल्प से होता है तब लौकिक विग्रह समस्यमान पदों का दिखाया जाता है; जैसे — संसारम् अतीत: इति संसारातीत:।

समास-परिचय

संस्कृत में पदों की प्रधानता एवं अप्रधानता के आधार पर समास के चार प्रकार हैं — अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि एवं द्वन्द्व। द्विगु एवं कर्मधारय तत्पुरुष के ही भेद हैं।

अव्ययीभावसमास

अव्ययीभाव एक अन्वर्थ अर्थात् अर्थानुसारी संज्ञा है। इस समास में प्राय: पूर्व पद अव्यय होता है और उत्तरपद अनव्यय, परन्तु समास होने पर समस्त पद अव्यय बन जाता है। अनव्ययं अव्ययं भवतीति

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अव्ययीभाव: अर्थात् जो अव्यय नहीं था उसका अव्यय हो जाना। अव्ययीभाव समास में प्राय: पूर्वपद के अर्थ की प्रधानता होती है; जैसे—स्त्रीषु इति अधिस्त्रि (अर्थात् स्त्रियों में)। यहां 'अधि' यह पूर्वपद है जो सप्तमी अर्थ का द्योतक है, अत: 'अधिस्त्रि' इस समस्त पद में भी सप्तमी की प्रधानता है।

अव्ययीभाव समास के नियम

- अव्ययीभाव समास में समस्त पद का रूप सभी विभक्तियों में एक जैसा रहता है।
- दीर्घान्त शब्द ह्रस्वान्त हो जाते हैं।
- सभी शब्द नपुंसकलिंग हो जाते हैं।
- हसान्त शब्द समासान्त प्रत्यय हो जाने से स्वरान्त हो जाते हैं।
- अकारान्त वर्जित स्वरान्त के बाद आने वाली सभी विभक्तियों का लुक् हो जाता है।
- अकारान्त के बाद तृतीया, पञ्चमी एवं सप्तमी को छोड़कर शेष सभी विभक्तियों के स्थान पर अम् होता है। तृतीया एवं सप्तमी विभक्ति के स्थान पर विकल्प से अम् हो जाता है। जहां अम् नहीं होता है वहां तृतीया, पञ्चमी एवं सप्तमी विभक्ति का रूप जिनवत् हो जाएगा।

तत्पुरुष समास

दो पदों के उस समास को तत्पुरुष कहते हैं जिसमें उत्तरपदार्थ प्रधान होता है अर्थात् जिसमें उत्तरपद का क्रिया में अन्वय होता है और जिसमें पूर्वपद नाना विभक्तियों में होता हुआ उत्तरपद के अर्थ का परिच्छेदक होता है। उत्तरपद में जो लिङ्ग एवं वचन होता है समास के बाद भी वही लिङ्ग एवं वचन रहता है; जैसे—

द्वितीया — संसारम् अतीत: इति संसारातीत:।
तृतीया — अहिना दष्ट: इति अहिदष्ट:।
चतुर्थी — कुण्डलाय हिरण्यम् इति कुण्डलहिरण्यम्।
पञ्चमी — ग्रामात् निर्गत: इति ग्रामनिर्गत:।
षष्ठी — गवां क्षीरम् इति गोक्षीरम्।
सप्तमी — अक्षेषु शौण्ड: इति अक्षशौण्ड:।

तत्पुरुष समास का दूसरा रूप भी मिलता है, पहले पद में अव्यय और दूसरे पद में प्रथमा आदि छह विभक्तियां। इसका प्रयोग दो पदों से अन्य अर्थ में होता है। इसलिए इसे बहुव्रीहिरूपक तत्पुरुष समास कहते हैं। बहुव्रीहि समास और बहुव्रीहिरूपक तत्पुरुष की पहचान विग्रह से होती है। दोनों के विग्रह में बहुत अन्तर है। बहुव्रीहिरूपक तत्पुरुष समास के विग्रह में अव्यय का अर्थ साथ में रहता है, बहुव्रीहि समास में नहीं। समास के बाद उत्तरपद का लिङ्ग नहीं रहता। वह विशेषण बन जाता है। जैसे—

प्रथमा — प्रगत: आचार्य: इति प्राचार्य:।
द्वितीया — अतिक्रान्त: गङ्गाम् इति अतिगङ्ग:।
तृतीया — अनुगतमर्थेन इति अन्वर्थम्।
चतुर्थी — अलं कुमार्यै इति अलंकुमारि:।
पञ्चमी — उत्क्रान्तं कुलात् इति उत्कुलम्।
षष्ठी — पूर्व: कायस्य इति पूर्वकाय:।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तत्पुरुष के दो अवान्तर भेद और होते हैं— कर्मधारय एवं द्विगु। कुछ वैयाकरण इन दोनों को स्वतन्त्र समास मानते हैं। उनकी मान्यता के अनुसार समास के छह भेद होते हैं।

कर्मधारय समास

विशेषण और विशेष्य अथवा उपमान और उपमेय के रूप में जहां दो शब्दों का मेल होता है वहां कर्मधारय समास होता है। अथवा जिस समास के विग्रह में दोनों पदों के साथ एक ही विभक्ति आती है उसे कर्मधारय समास कहते हैं। कर्म का अर्थ है क्रिया। इस समास के सब पद एक ही क्रिया में अन्वित होते हैं। इसके छह भेद हैं—

1. विशेषणपूर्वपद— जिसमें पूर्वपद विशेषण हो; जैसे— कृष्णश्चासौ सर्पश्च— कृष्णसर्पः। यहां 'कृष्ण' सर्प का विशेषण है।
2. विशेषणोत्तरपद— जिसमें उत्तरपद विशेषण हो; जैसे आचार्यप्रवरः। यहां 'प्रवर' आचार्य का विशेषण है।
3. विशेषणोभयपद — जिसमें दोनों पद विशेषण हो; जैसे शीतं च उष्णं च त्र शीतोष्णम्।
4. उपमानपूर्वपद— जिसमें पूर्वपद उपमानवाची हो; जैसे— घन इव श्यामः त्र घनश्यामः।
5. उपमानोत्तरपद — जिसमें उत्तरपद उपमानवाची हो; जैसे — पुरुषः सिंहः इव त्र पुरुषसिंहः।
6. अवधारणबोधक (निश्चयबोधक) — जिसका पहला पद किसी भी (उपमान, उपमेय आदि) अर्थ में हो और वह दूसरे पद से जोड़ा जाए उसे 'अवधारण बोधक' कहते हैं; जैसे — विद्या एव धनम् त्र विद्याधनम्।

द्विगु समास

जब कर्मधारय समास में पूर्वपद संख्यावचक होता है तब वह द्विगु समास होता है। यह एक प्रकार से कर्मधारय का ही उपभेद है क्योंकि संख्यावाची शब्द विशेषण ही होते हैं। द्विगुसमास प्रायः समुदायबोधक होता है। इसमें नपुंसकलिङ्ग अथवा स्त्रीलिङ्ग एकवचन होता है। जैसे— पञ्चानां पात्राणां समाहारः त्र पञ्चपात्रम्, शतानामब्दानां समाहारः त्र शताब्दी।

बहुव्रीहि समास

बहुव्रीहि पद में दो शब्द हैं— बहु एवं व्रीहि। बहु का अर्थ है अनेक। व्रीहि शब्द धान्यवाची नहीं है, अपितु पदवाचक है अर्थात् जहां दो या दो से अधिक पद मिलकर (अर्थात् एक पद होकर) किसी अन्य (अर्थात् उनसे बहिर्भूत) पद के अर्थ को विशिष्ट करे, वहां बहुव्रीहि समास होता है। बहुव्रीहि समास में सभी पद गौण होते हैं। उन पदों से अन्य पद की प्रधानता होती है। अन्य पदार्थ प्रथमा विभक्ति को छोड़ द्वितीया आदि किसी एक विभक्ति से कहा जाता है। उसके प्रधान होने से बहुव्रीहि का लिङ्ग एवं वचन वही होता है जो उसके वाच्य अन्य पदार्थ का। दूसरे शब्दों में बहुव्रीहि समास विशेषण बनता है। विशेष्य के अनुसार इसमें लिङ्ग एवं वचन होते हैं। विग्रह में यत् शब्द का प्रयोग किया जाता है। यत् शब्द विशेष्य से सम्बन्ध रखता है। यत् शब्द में द्वितीया से लेकर सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। बहुव्रीहि समास में जिन शब्दों में समास होता है, वे शब्द 'तत्' शब्द के द्वारा सूचित अर्थ के विशेषण बन जाते हैं; जैसे—

द्वितीया —आरूढो वानरो यं सः आरूढवानरो वृक्षः।
तृतीया —ऊढो रथो येन सः ऊढरथोऽनड्वान्।
चतुर्थी —उपहृतो बलिर्यस्मै सः उपहृतबलिर्यक्षः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पञ्चमी —भीताः शत्रवो यस्मात् सः भीतशत्रुर्नृपः।

षष्ठी—चित्रा गावो यस्य सः चित्रगुः गोपालः।

सप्तमी—वीरा पुरुषाः सन्ति यस्मिन् सः वीरपुरुषो ग्रामः।

- बहुव्रीहि समास समान विभक्ति के साथ होता है; जैसे—आरूढो वानरो यमिति आरूढवानरः।
- बहुव्रीहि समास भिन्न विभक्ति के साथ भी होता है; जैसे—कण्ठे कालो यस्य सः कण्ठेकालः।
- बहुव्रीहि समास सह अर्थ में होता है, जैसे—सह पुत्रेण त्र सपुत्रः।
- बहुव्रीहि समास में प्रायः विशेषण, क्तप्रत्ययान्त एवं सप्तम्यन्त पद का प्राक् निपात होता है।

प्रवृत्तिनिमित्त के एक होने पर जो भाषितपुंस्क हो अर्थात् जिसका पुल्लिंग में भी प्रयोग हो ऐसे स्त्रीलिङ्ग शब्द को उसी का पुंवद्भाव हो जाता है तुल्यार्थ स्त्रीलिङ्ग शब्द परे होने पर; जैसे—दर्शनीया भार्या यस्य सः दर्शनीयभार्यः।

द्वन्द्व समास

जिसमें सब पद प्रधान हों और जिसके विग्रह में 'च' शब्द का प्रयोग होता है उसे द्वन्द्वसमास कहते हैं। द्वन्द्व का अर्थ है जोड़ा। इस समास के उदाहरणों में प्रायः जोड़ों की बहुलता देखी जाती है अतः यह द्वन्द्व समास है। जैसे—मातापितरौ, लाभालाभौ, जयाजयौ आदि।

द्वन्द्व समास के दो भेद हैं—1. इतरेतर 2. समाहार। इन दोनों में ही समुदाय वाच्य होता है।[1]

1. इतरेतर—जिसमें समूह के अवयव पृथक्-पृथक् प्रतीत होते हैं अर्थात् पृथक्-पृथक् प्रत्येक शब्द का समान महत्त्व होता है उसे इतरेतरद्वन्द्व कहते हैं। इसमें जितने पद होते हैं उन्हीं के अनुसार द्विवचन और बहुवचन होता है। समास होने के बाद जो अंतिम शब्द का लिङ्ग होता है वही लिङ्ग रहता है; जैसे—तिलमाषौ, घटशङ्खपटाः, कृत्तिकारोहिण्यौ आदि।
2. समाहार—जिस में समूह के अवयव पृथक्-पृथक् नहीं होते किन्तु उनका एक समुच्चयात्मकरूप होता है। अर्थात् पृथक्-पृथक् शब्दों का महत्त्व न होकर सिर्फ समूह का महत्त्व होता है उसे समाहारद्वन्द्व या एकत्वद्वन्द्व कहते हैं। इसमें एकवचन एवं नपुंसकलिङ्ग होता है; जैसे—लाभालाभम्, अश्वमहिषम् आदि।

द्वन्द्वसमास का एक भेद और है जिसे एकशेष कहते हैं। दो शब्दों में से एक शब्द शेष रहकर दोनों का बोध कराये उसे 'एकशेष' कहते हैं; जैसे—माता च पिता च त्र पितरौ।

द्वन्द्वसमास में प्राक् निपात का नियम अनियमित है।

अलुक् समास

समास में विभक्तियों का लुक् होता है। कुछ शब्द ऐसे हैं जिनमें समास करने पर भी उनकी विभक्तियों का लुक् नहीं होता, उन्हें अलुक्समास कहते हैं; जैसे—परस्मै पदम् त्र परस्मैपदम्।

---

[1] इतरेतरयोगेऽपि, समुदायः प्रकल्प्यते।
समाहारेऽप्यसावेवं, तद्भेदस्तु हरोदितः॥
आद्ये तु संहता वाच्यास्तेन द्विवचनादयः।
समाहारे तु संघातो वाच्यस्तेनैकतैव हि ॥
(प्रक्रिया सर्वस्व, समास खण्ड, पृष्ठ 55)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

केवलसमास

जब समास तो किया जाता है परन्तु उसकी शास्त्र में कोई विशेष संज्ञा नहीं की गई हो तो उसे केवल समास कहते हैं; जैसे—पूर्वं भूतो भूतपूर्वः आदि।

प्रस्तुत कार्य का संक्षिप्त विवरण

- सर्वप्रथम कुछ बड़े एवं गहरे काले अक्षरों में दिए गए सूत्र हैं। उनसे पूर्व दी गई संख्या कालुकौमुदी की सूत्रसंख्या है तथा अन्त में कोष्ठक में दी गई संख्या भिक्षुशब्दानुशासनम् की है।
- सूत्र के तत्काल बाद उसकी संस्कृत वृत्ति है।
- वृत्ति के पश्चात् हिन्दी में सूत्र का अनुवाद है। जहां कहीं सूत्र का अर्थ स्पष्ट करना था वहां उस सूत्र से सम्बन्धित रूपसिद्धियों के पश्चात् रेखाङ्कित पङ्क्तियों में स्पष्ट किया गया है।
- अनुवाद के पश्चात् उन-उन सूत्रों से सम्बन्धित रूपसिद्धियां हैं।
- यत्र तत्र आवश्यकतानुसार संक्षिप्त टिप्पण भी दिए गए हैं।
- कोष्ठक का प्रयोग दो प्रयोजन से किया है—

  क. शब्द के स्पष्टीकरण के लिए। ऐसे कोष्ठक का प्रारम्भ अर्थात् से किया गया है जैसे 406 सूत्र में नान्त अपद (अर्थात् जिसकी पद संज्ञा नहीं है उस) ......।

  ख. वाक्यपूर्ति के लिए; जैसे 397 वें सूत्र में अव्ययीभाव (समास) से परे ......।
- रूपसिद्धि में विविध प्रकारों का उपयोग किया है —

  क. कुछ रूपों की सिद्धि पूरी की गई हैं; जैसे अधिस्त्रि, उपकुम्भम्, जिनश्रितः आदि।

  ख. कुछ रूपों में समास एवं समाससंज्ञा करने के बाद किस रूप की सिद्धि किसकी तरह होगी उसका उल्लेख है। ऐसी रूपसिद्धियों को समासप्रत्यययोः (395) सूत्र से प्रारम्भ करना है। जैसे सूत्र 397 में अधिकुमारि में अधिस्त्रिवत् उल्लेख है। इसका अर्थ है अधिस्त्रि रूप सिद्ध करने के लिए जिन-जिन सूत्रों को काम में लिया गया है उन्हीं सूत्रों का प्रयोग अधिकुमारि रूप की सिद्धि में करना है।

  ग. जिन रूपसिद्धियों में सूत्र विकल्प से काम करते हैं वहां पक्ष में निष्पन्न होने वाले रूप का प्रारम्भ विकल्प से काम करने वाले सूत्र के पश्चात् से किया है। जैसे 431 वें सूत्र में कदुष्णम्। इसका अर्थ है प्रारम्भ की प्रक्रिया पूर्व उल्लिखित रूपवत् होगी।

  घ. कुछ विकल्प से निष्पन्न होने वाले रूपों के प्रारम्भ में ही लिखा है शेष प्रक्रिया अमुकवत्। इसका अर्थ है विकल्प से काम करने वाले सूत्र को छोड़कर लौकिक विग्रह से अन्त तक प्रक्रिया उस रूप की तरह होगी जिसका वहां उल्लेख है। जैसे 502 सूत्र में द्विचत्वारिंशत् रूप में लिखा है शेष प्रक्रिया द्वाचत्वारिंशत्।

  च. जिस रूप की सिद्धि एक बार कर दी है। यदि वही रूप अन्यत्र कहीं आया है तो जिस सूत्र में उसकी सिद्धि की है उसका उल्लेख किया गया है।
- प्रस्तुत कार्य में तीन परिशिष्ट हैं—

  प्रथम परिशिष्ट में समास प्रकरण, समास प्रकरण में प्रयुक्त समास प्रकरण के अतिरिक्त कालुकौमुदी एवं भिक्षुशब्दानुशासनम् के सूत्रों की अकारादिवर्णानुक्रमणिका है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

दूसरे परिशिष्ट में समास प्रकरण में सिद्ध किए गए समस्त पदों की अकारादिवर्णानुक्रमणिका है। उन पदों के आगे दिए गए अङ्क उन सूत्रों के हैं जिनमें उनकी सिद्धि की गई है।

तीसरे परिशिष्ट में सम्पूर्ण समास-प्रकरण की संक्षिप्त झांकी है। सर्वप्रथम जिस सूत्र में उस समस्त पद की सिद्धि की गई है उसकी संख्या है। तत्पश्चात् क्रमशः समस्त पद, समास-विग्रह, समास का नाम एवं समास करने वाला सूत्र संख्या के साथ दिया है।

रूपसिद्धि की सामान्य प्रक्रिया

1. सिद्ध किए जाने वाला रूप
2. लौकिक विग्रह
3. अलौकिक विग्रह
4. समास एवं समास संज्ञा करना
5. विभक्ति का लुक् समासप्रत्ययो: (395) सूत्र से
6. प्राक् निपात (अमुक-अमुक नाम को पूर्व में रखना)
7. समासान्त प्रत्यय (यदि प्राप्ति हो)
8. समासान्त प्रत्यय के निमित्त से होने वाले कार्य; जैसे स्वरादि प्रत्यय परे होने पर—
   अवर्णान्त, इवर्णान्त का लोप इवर्णावर्णस्य (451) सूत्र से।
   नान्त पद की टि का लोप नोऽपदस्य तद्धिते (406) सूत्र से।
   हसादि प्रत्यय परे होने पर—नान्त पद के न् का लोप नाम्नो नोऽनह्नः (135) सूत्र से
9. समास से निष्पन्न होने वाला शब्द बनने पर प्रथमा आदि विभक्तियों में रूप सिद्ध करना।

नोट— (क) परीक्षा में एक बार सूत्र अवश्य ही पूरा लिखें। तत्पश्चात् संकेत देकर ...... कर दें।
(ख) रूप सिद्धि पूरी करें।

आत्म निवेदन

(क) मेरा यह लघु प्रयास संस्कृत व्याकरण में रुचि रखने वाले विद्यार्थियों के ज्ञानवर्धन में अवश्य ही सहायक होगा। 'को न विमुह्यति शास्त्रसमुद्रे' इस कहावत को ध्यान में रखकर जहां कहीं भी त्रुटि एवं कमी प्रतीत हो उसकी ओर मेरा ध्यान अवश्य ही आकर्षित करेंगे ऐसा विश्वास है।
(ख) प्रस्तुत कार्य के सम्बन्ध में अपने विचार सम्प्रेषित कर मेरे उत्साह को संवर्धित करें।

ध्यान दें— तद्धित प्रकरण की भूमिका में 'तद्धित रूपसिद्धियों के सामान्य नियम' शीर्षक के अन्तर्गत पांचवें बिन्दु में हसान्त के स्थान पर हसादि कर लें।

—समणी चिन्मय प्रज्ञा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

संकेत सूची

अ. वि.	अलौकिक विग्रह
ए. व.	एक वचन
च. ए. व.	चतुर्थी एक वचन
तृ. ए. व.	तृतीया एक वचन
तृ. वि.	तृतीया विभक्ति
द्वि. व.	द्वितीया विभक्ति
पं. वि.	पञ्चमी विभक्ति
प्र. ए. व.	प्रथमा एक वचन
प्र. ब. व.	प्रथमा बहु वचन
प्र. वि.	प्रथमा विभक्ति
ब. व.	बहु वचन
भिक्षु.	भिक्षुशब्दानुशासनम्
लौ. वि.	लौकिक विग्रह
विभ.	विभक्ति
ष. ब. व.	षष्ठी बहु वचन
स. ए. व.	सप्तमी एक वचन
स. वि.	सप्तमी विभक्ति
सू.	सूत्र

विभक्ति प्रत्यय

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सि (स्)	औ	जस् (अस्)
द्वितीया	अम्	औ	शस् (अस्)
तृतीया	टा (आ)	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे (ए)	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि (अस्)	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस् (अस्)	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि (इ)	ओस्	सुप् (सु)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समास प्रकरण के सूत्र

393. नाम नाम्नैकार्थ्ये समासो बहुलम्।
394. अव्ययं कारकसमीपसमृद्धव्यसंप्रत्यर्था-
भावाऽत्ययाऽसंपत्तिख्यातिपश्चाद्योग्यता-
वीप्सापदार्थानतिवृत्तिसादृश्यसदृशयौग-
पद्यानुपूर्व्यसंपत्तिसाकल्यान्तेषु पूर्वार्थे।
395. समासप्रत्यययोः।
396. प्रथमोक्तं प्राक्।
397. अनतो लुक्।
398. अव्ययीभावस्यातोऽमपञ्चम्याः।
399. वा तृतीयासप्तम्योः।
400. अकालेऽव्ययीभावे।
401. यथाऽसादृश्ये।
402. शरदादेरव्ययीभावात्।
403. जराया जरश्च।
404. अनः।
405. वृत्त्यन्तः।
406. नोऽपदस्य तद्धिते।
407. श्रितादिभिः।
408. ऊनार्थपूर्वादिभिः।
409 कर्तृसाधने कृता।
410. तुम्क्त्वाक्तवतुभिः।
411. चतुर्थी प्रकृत्या।
412. हितादिभिः।
413. पञ्चमी भयादिभिः।
414. षष्ठ्ययत्नाच्छेषे।
415. कृति।
416. पूरणशतृशानाव्ययतृप्तार्थैः।
417. सप्तमी शौण्डादिभिः।
418. काकादिभिः क्षेपे।
419. सिंहादिभिः पूजायाम्।
420. नञ्तत्पुरुषः।
421. नञत्।
422. अन् स्वरे
423. नखादयः।
424. सप्तम्युक्तं कृता।
425. ऊर्याद्यनुकरणोपसर्गच्विडाचोगतिर्धातोः प्राक् च।
426. गतिः।
427. कुः पापाल्पयोर्नित्यम् ।
428. कोः कत्तत्पुरुषे।
429. अल्पे।
430. पुरुषे वा।
431. कवश्चोष्णे।
432. प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया।
433. अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया।
434. अन्यार्थे स्त्रीप्रत्ययगोरन्त्यस्याऽक्वि-
पोऽनंशिसमासेयोबहुव्रीहौ।
435. अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया ।
436. पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या।
437. निरादयो गताद्यर्थे पञ्चम्या।
438. पूर्वापराधरोत्तरमभिन्नेनांशिना।
439. अर्धं समेंऽशे वा।
440. सायाह्नादयः।
441. विशेषणं विशेष्येण तुल्यार्थे कर्मधारयश्च।
442. पुंवत् कर्मधारये।
443. अच्वेस्तुल्यार्थजातीययोः।
444. शाकपार्थिवादीनां मध्यपदलोपश्च।
445. कुत्सितानि कुत्सनैरपापाद्यैः।
446. उपमानानि सामान्यैः।
447. उपमेयानि व्याघ्रादिभिः सामान्याप्रयोगे।
448. अधिकं च तद्धितोत्तरपदसमाहारेषु।
449. संख्यापूर्वो द्विगुश्च।
450. सखेष्टः।
451. इवर्णावर्णस्य।
452. राज्ञोऽस्त्रियाम्।
453. किं क्षेपे।
454. न किमः क्षेपे।
455. नञस्तत्पुरुषात्।
456. अह्नः।
457. सर्वांशसंख्याव्ययात्।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

458. अतोऽह्नस्य।
459. सर्वांशसंख्यातपुण्यवर्षादीर्घाच्च रात्रेः।
460. तुल्यार्थं चानेकं च।
461. शेषे।
462. विशेषणम
463. पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङः स्त्रियास्तुल्यार्थे स्त्रियाम्
464. हंसगमनादयः
465. तेन सहः
466. सहस्य सो वा बहुव्रीहौ
467. सर्वादिश्च बहुव्रीहा
468. सप्तम्यन्तम्
469. नेन्द्वादिभ्यः
470. प्रहरणेभ्यः
471. स्वाङ्गादीपो जातेश्चामानिनि
472. द्विपदाद्धर्मादन्
473. उपसर्गात्
474. नसस्य
475. जायाया जानिः
476. सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः
477. स्त्रियामिनः
478. ऋन्नित्यदितः
479. ईबादीदूतां क
480. न कपि
481. चार्थे द्वन्द्वः सहोक्तौ
482. द्वन्द्वे लघ्वक्षरमेकम्
483. इदुदन्तमसखि
484. स्वराद्यदन्तम्
485. अल्पस्वरम्
486. अर्चितम्
487. मासर्तुभ्रातृनक्षत्राण्यानुपूर्व्येण
488. वर्णाः
489. नित्यवैरिणाम्
490. विरोधिनामद्रव्याणाम्
491. आ द्वन्द्वे
492. पुत्रे
493. आत्मनः पूरणे
494. परात्मभ्यां चतुर्थ्याः
495. मूर्खे देवानांप्रियः
496. अमूर्धमस्तकात्स्वाङ्गादकामे
497. तत्पुरुषे कृति
498. ईपः
499. घञ्युपसर्गस्य बहुलम्
500. एकादशषोडशषोडन्षोढाषड्ढाः
501. द्वित्र्यष्टानां द्वात्रयोऽष्टाः प्राक् शतादनशीति बहुव्रीहौ
502. चत्वारिंशदादौ वा
503. खित्यनव्ययस्वरान्तारुषां मुम् ह्रस्वश्च
504. कृत्येऽवश्यमो लोपः
505. समो हिततयोर्वा
506. काममनसोस्तुमश्च
507. अन्यस्य दुगीयकारके
508. अर्थे वा
509. दृग्दृश्दृक्षेषु
510. अन्यत्यदादेराः
511. किमिदमोः कीशीशौ
512. तस्करादयश्चोरादिषु
513. पृषोदरादयः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ समास-प्रकरणम्

अब समास प्रकरण प्रारम्भ हो रहा है।

समासेषु अव्ययीभावः

समासों में अव्ययीभाव (समास प्रारम्भ हो रहा है।)

393. नाम नाम्नैकार्थ्ये समासो बहुलम्[1]। (3/1/19)

नाम नाम्ना सहैकार्थ्ये[2] सति बहुलं समस्यते। स च समाससंज्ञकः स्यात्।

नाम नाम के साथ ऐकार्थ्य होने पर बहुलता से समस्त होता है और वह समाससंज्ञक होता है।

स चतुर्धा—अव्ययीभावतत्पुरुषबहुव्रीहिद्वन्द्वभेदात्। द्विगुकर्मधारयौ तत्पुरुषभेदावेव।

वह (समास) चार प्रकार का है— अव्ययीभाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि एवं द्वन्द्व। द्विगु और कर्मधारय तत्पुरुष के ही भेद हैं।

394. अव्ययं कारकसमीपसमृद्ध्यसंप्रत्यर्थाभावाऽत्ययाऽसंपत्तिख्यातिपश्चाद्योग्यतावीप्सा-पदार्थानतिवृत्तिसादृश्यसदृश[3]यौगपद्यानुपूर्व्यसंपत्ति[4]साकल्यान्तेषु पूर्वार्थे। (3/1/23)

कारकाद्यर्थेषु यदव्ययं तन्नाम्ना सह ऐकार्थ्ये सति पूर्वपदार्थे समस्यते सोऽव्ययीभावसमासः स्यात्। स्त्री + सुप् + अधि इत्यलौकिके विग्रहवाक्ये सप्तम्यर्थद्योतकमधि अव्ययं स्त्रीनाम्ना सह समस्तम्। कारक आदि (अर्थात् कारक, समीप, समृद्धि, असंप्रति, अर्थाभाव, अत्यय, असंपत्ति, ख्याति, पश्चात्, योग्यता, वीप्सा, पदार्थानतिवृत्ति, सादृश्य, सदृश, यौगपद्य, आनुपूर्व्य, संपत्ति, साकल्य और अन्त) अर्थों में जो अव्यय है उसका नाम के साथ ऐकार्थ्य होने पर पूर्व पद के अर्थ में समास होता है और वह अव्ययीभाव समास है।

---

[1] क्वचित् प्रवृत्तिः क्वचिदप्रवृत्तिः, क्वचिद् विभाषा क्वचिदन्यदेव।
विधेर्विधानं बहुधा समीक्ष्य, चतुर्विधं बाहुलकं वदन्ति॥
कहीं पर सूत्र की प्रवृत्ति होती है, कहीं पर सूत्र की प्रवृत्ति नहीं होती, कहीं पर विकल्प से होती है तथा कहीं पर अन्य ही कार्य हो जाता है। इस प्रकार सूत्रों की प्रवृत्ति की बहुत प्रकार से समीक्षा करके (विद्वान्) बाहुलक को चार प्रकार का कहते हैं।

[2] आकाङ्क्षा आदि के वश परस्पर सम्बद्धार्थ होना पदों का सामर्थ्य है। जब तक आकाङ्क्षा, योग्यता और आसत्ति न हो पदों का परस्पर सम्बन्ध नहीं बनता और न ही वे समर्थ कहला सकते। जैसे—'राज्ञः पुरुषः' ये पद परस्पर आकाङ्क्षा रखते हैं। केवल राज्ञः कहने से आकाङ्क्षा रहती है कि राजा का क्या? जब 'पुरुषः' कह देते हैं तो वह आकाङ्क्षा शान्त हो जाती है। इसी तरह केवल 'पुरुषः' कहने पर भी आकाङ्क्षा बनी रहती है किस का पुरुष? जब 'राज्ञः' कह दिया जाता है तो वह आकाङ्क्षा मिट जाती है। इस प्रकार 'राज्ञः' को 'पुरुषः' की और 'पुरुषः' को 'राज्ञः' की आकाङ्क्षा रहने से इन पदों में सामर्थ्य रहता है अतः इन का समास हो जाता है। जब तक पदों में परस्पर मिलने की योग्यता न हो वे असमर्थ रहते हैं। जैसे—अग्निना सिञ्चति। ये असम्बद्ध पद हैं क्योंकि अग्नि में सिञ्चन की योग्यता नहीं पाई जाती। इसी प्रकार उचित आसत्ति (अर्थात् निकटता) न होने पर भी पदों में सामर्थ्य नहीं होता। यदि 'राज्ञः' पद अब कह दिया और 'पुरुषः' पद तुरन्त बाद न कहकर अनुचित व्यवधान के बाद कहा जाए तो आसत्ति न रहने से इनमें सामर्थ्य न रहेगा।
सामर्थ्य दो प्रकार का होता है—व्यपेक्षाभाव सामर्थ्य और एकार्थीभाव सामर्थ्य। वाक्य में व्यपेक्षाभाव सामर्थ्य होता है जैसे—'राज्ञः पुरुषः' एक वाक्य है। इसमें 'राज्ञः' और 'पुरुष' ये दोनों पद ऊपर कहे गए प्रकार से व्यपेक्षा रखते हैं। परन्तु समास में एकार्थीभाव (अर्थात् मिलकर एक अर्थ कहना) रूप सामर्थ्य होता है। जैसे—'राजपुरुषः' इसमें राज्ञः पुरुषः' ये दो पृथक् पद हैं। इनका पृथक्-पृथक् अर्थ है किन्तु जब इन दो पदों का समास होकर 'राजपुरुषः' एक पद बन जाता है तब उन दोनों पदों के अर्थ का एक साथ बोध होता है इसको एकार्थीभाव सामर्थ्य कहते हैं।
इस प्रकार व्यपेक्षा और एकार्थीभाव रूप सामर्थ्य से युक्त पदों का ही समास हो सकता है।

[3] सादृश्यशब्दो धर्मवाची, सदृशस्तु धर्मिवाचीत्यनयोर्भेदः।
सादृश्य शब्द धर्मवाची है, सदृश शब्द धर्मीवाची (अर्थात् जिसमें धर्म रहे) है।

[4] प्रश्न है समृद्धि शब्द आ चुका फिर सम्पत्ति का ग्रहण क्यों? समृद्धि एवं सम्पत्ति में अन्तर है। 'सम्पत्तिरात्मभावनिष्पत्तिः, समृद्धिस्त्वन्यभावनिष्पत्तिरिति तयोर्भेदः'। स्वयं के द्वारा निष्पन्न होने वाली सम्पत्ति है अन्य द्वारा निष्पन्न (अर्थात् देवता आदि के प्रसाद से प्राप्त की गई) समृद्धि है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

395. समासप्रत्यययो:। (3/2/6)

समासे सति प्रत्यये च परे विभक्तेर्लुक् स्यात्। इति विभक्तेर्लुकि सति स्त्री अधि इति स्थिते।

समास होने पर और प्रत्यय परे होने पर विभक्ति का लुक् होता है।

396. प्रथमोक्तं[1] प्राक्। (3/1/165)

अत्र समासमात्रे सूत्रे प्रथमान्तपदेन यदुक्तं तत्प्राक् प्रयोक्तव्यम्।

अव्ययीभावञिन्नन्ते, कृत्यक्तानखलन्तकम्।
त्वाद्यन्तं त्वमभिव्याप्य, भावे द्वन्द्वैकता तथा॥

इति लिङ्गानुशासनात् नपुंसकत्वम्। नपुंसके इति ह्रस्वे — अधिस्त्रि।

केवल समास करने वाले सूत्र में जो प्रथमान्त पद से कहा गया है उसका पहले प्रयोग करना (अर्थात् पहले रखना) चाहिए।

397. अनतो लुक्। (3/2/5)

अव्ययीभावात् स्यादेर्लुक् स्यात् न त्वदन्तात्। इति सर्वत्र समानरूपाणि। एवं कुमार्यामिति —– अधिकुमारि।

समीपे — कुम्भस्य समीपमिति विग्रहे।

अव्ययीभाव (समास) से परे सि आदि (विभक्तियों) का लुक् होता है लेकिन (शब्द के) अकार अन्त में नहीं होना चाहिए।

अधिस्त्रि

स्त्रीषु इति लौ. वि.

स्त्री + सुप् + अधि अ. वि.

अव्ययं कारक ..... (394) सूत्र से सप्तमी अर्थ द्योतक अधि अव्यय का स्त्री नाम के साथ समास और अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास .... (395) सू. से विभ. का लुक्

स्त्री अधि

प्रथमोक्तं..... (396) सू. से अधि अव्यय को पूर्व में रखने पर

अधिस्त्री

अव्ययीभावञिन्नन्ते, कृत्यक्तानखलन्तकम्।
त्वाद्यन्तं त्वमभिव्याप्य, भावे द्वन्द्वैकता तथा॥[2]

इस कारिका से अधिस्त्री शब्द को नपुंसकलिंग करने पर

नपुंसके (198) सू. से ह्रस्व

अधिस्त्रि

---

[1] केवल समास करने वाले सूत्रों में जो प्रथमान्त से उक्त (अर्थात् कहा गया) है उसका प्राक् निपात होता है। जैसे — अव्ययं कारकसमीप ...... (394) सू. में 'अव्ययं' पद प्रथमा से उक्त है अत: अव्ययीभाव समास में अव्यय का प्राक् निपात (अर्थात् पूर्व में रखना) होता है। इसी प्रकार चतुर्थी प्रकृत्या (411) सू. में 'चतुर्थी' पद प्रथमा से उक्त है अत: लौकिक विग्रह में जो पद चतुर्थ्यन्त होगा उसका प्राक् निपात होगा। जैसे — घटाय मृत्तिका = घटमृत्तिका। यदि किसी सूत्र में प्रथमा से उक्त पद साक्षात् न पढ़ा गया हो तो उस सूत्र में अनुवृत्ति से प्राप्त पदों में जो पद प्रथमा से उक्त है लौकिक विग्रह में उसका बोध कराने वाले पद का प्राक् निपात होगा। जैसे — श्रितादिभि: (407) सू. में अनुवृत्ति से प्राप्त 'द्वितीया' पद प्रथमा से उक्त है अत: उसके बोध्य पद का प्राक् निपात होगा। जैसे — जिनं श्रित: = जिनश्रित:।

[2] अव्ययीभाव (समास में निष्पन्न होने वाले शब्द), भाव में होने वाले ञिन्, कृत्य (अर्थात् तव्य, अनीय, य, क्यप्, घ्यण्), क्त, आन (कान), अनट्, खल्, त्व से लेकर त्व तक (अर्थात् भिक्षु. 7/3/56 से 7/3/78 के मध्य आने वाले प्रत्यय त्व, ट्यण्, य, एयण्, अञ्, अ, अकञ्, ईय, त्व) ये प्रत्यय जिनके अन्त में हैं ऐसे शब्द तथा द्वन्द्व समास में एकत्व होने पर नपुंसक लिंग होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्र. वि. के ए. वि. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अधिस्त्रि + सि

अनतो..... (397) सू. से सि प्रत्यय का लुक् करने पर अधिस्त्रि रूप सिद्ध हुआ।

(प्रथमा से सप्तमी तक सभी विभक्तियों में अधिस्त्रि रूप बनेगा।)

अधिकुमारि

कुमार्याम् इति लौ. वि.

कुमारी + ङि + अधि अ. वि.

अव्ययं..... (394) सू. से सप्तमी अर्थ द्योतक अधि अव्यय का कुमारी नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष अधिस्त्रिवत्

398. अव्ययीभावस्यातोऽमपञ्चम्याः। (3/2/2)

अदन्ताव्ययीभावात् स्यादेरमादेशः स्यात् पञ्चमीं त्यक्त्वा। उपकुम्भं तिष्ठति, पश्यति देहि वा सर्वत्राऽम्। अपञ्चम्या इति किम्—उपकुम्भात्।

अदन्त अव्ययीभाव से पञ्चमी विभक्ति को छोड़कर सि आदि (प्रत्ययों) को अम् आदेश होता है।

उपकुम्भम्

कुम्भस्य समीपम् इति लौ. वि.

कुम्भ + ङस् + उप अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से समीप अर्थ द्योतक उप अव्यय का कुम्भ नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कुम्भ उप

प्रथमोक्तं .... (396) सू. से उप अव्यय को पूर्व में रखने पर

उपकुम्भ

अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

उपकुम्भ + सि

अव्ययी .... (398) सू. से सि प्रत्यय को अम् आदेश

उपकुम्भ + अम्

समानादमः (104) सू. से अम् के अकार का लोप

उपकुम्भ + म्

वर्णों को मिलाने पर उपकुम्भम् रूप सिद्ध हुआ।

उपकुम्भं तिष्ठति, उपकुम्भं पश्यति, उपकुम्भं देहि—इन उदाहरणों में क्रमशः प्रथमा, द्वितीया एवं चतुर्थी विभक्ति के एकवचन के स्थान पर अव्ययी ...... (398) सू. से अम् हुआ है। शेष प्रक्रिया पूर्ववत्।

अव्ययी ...... (398) सूत्र में पञ्चमी विभक्ति को क्यों छोड़ा? उपकुम्भात् इस उदाहरण में अव्ययी ...... (398) सू. से ङसि के स्थान पर अम् नहीं होगा।

उपकुम्भात्

कुम्भस्य समीपम् लौ. वि.

कुम्भ + ङस् + उप अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से समीप अर्थ द्योतक उप अव्यय का कुम्भ नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कुम्भ उप
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से उप अव्यय को पूर्व में रखने पर
उपकुम्भ
अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग
पं. वि. के ए. व. की विवक्षा में ङसि प्रत्यय
उपकुम्भ + ङसि
ङसिराद् (110) सू. से ङसि प्रत्यय को आद् आदेश
उपकुम्भ + आद्
समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ
उपकुम्भाद्
वावसाने (111) सू. से द् का विकल्प से त् करने पर उपकुम्भात् रूप सिद्ध हुआ।
पक्ष में — जहां पर वावसाने (111) सू. से द् को त् नहीं होगा वहां उपकुम्भाद् रूप होगा।

399. वा तृतीयासप्तम्योः। (3/2/3)

अदन्ताव्ययीभावात् तृतीयासप्तम्योरमादेशो वा स्यात् । उपकुम्भम् उपकुम्भेन वा कृतम् । उपकुम्भम् , उपकुम्भे वा स्थितम् । एवं मद्राणां समृद्धिः सुमद्रम् , निद्रा सम्प्रति न युज्यते इत्यतिनिद्रम् , मक्षिकाणामभावो निर्मक्षिकम् । अत्ययो विनाशः । हिमस्य अत्ययः अतिहिमम् , यवनानामसंपत्तिर्दुर्यवनम् , भिक्षोः ख्यातिरितिभिक्षु , जिनस्य पश्चात् अनुजिनम् , रूपस्य योग्यम् अनुरूपं चेष्टते । बहूनां सजातीयानां क्रियादिना साकल्येन व्याप्तुमिच्छा वीप्सा । अर्थमर्थं प्रति प्रत्यर्थम् । शक्तिमनतिक्रम्य यथाशक्ति ।

अदन्त अव्ययीभाव (समास) से परे तृतीया एवं सप्तमी (विभक्तियों) को अम् आदेश विकल्प से होता है।

उपकुम्भं कृतम्

कुम्भस्य समीपम् लौ. वि.
कुम्भ + ङस् + उप अ. वि.
अव्ययं ...... (394) सू. से समीप अर्थ द्योतक उप अव्यय का कुम्भ नाम के साथ समास और अव्ययीभावसमास संज्ञा
समास ..... (395) सू. से विभ. का लुक्
कुम्भ उप
प्रथमोक्तं .... (396) सू. से उप अव्यय को पूर्व में रखने पर
उपकुम्भ
अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग
तृ. वि. के ए. व. की विवक्षा में टा प्रत्यय
उपकुम्भ + टा
अव्ययी ...... (398) सू. से टा प्रत्यय के स्थान पर अम् की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
वा तृतीया ...... (399) सू. से टा प्रत्यय के स्थान पर विकल्प से अम्
उपकुम्भ + अम्
समानादमः (104) सू. से अम् के अकार का लोप करने पर
उपकुम्भ + म्
वर्णों को मिलाने पर उपकुम्भम् रूप सिद्ध हुआ।
पक्ष में — जहां वा तृतीया ...... (399) सू. से टा को अम् नहीं होगा वहां —

उपकुम्भेन कृतम्

कुम्भस्य समीपम् लौ. वि. से तृ. वि. के ए. व. की विवक्षा में टा प्रत्यय तक पूर्ववत् प्रक्रिया

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

उपकुम्भ + टा

टेनः (106) सू. से टा प्रत्यय को इन

उपकुम्भ + इन

अवर्णस्येवर्णादावेदोदरलः (38) सू. से अकार का इकार के साथ ए करने पर उपकुम्भेन रूप सिद्ध हुआ।

उपकुम्भं स्थितम्

कुम्भस्य समीपम् लौ. वि.

कुम्भ + ङस् + उप अ. वि.

अव्यय ...... (394) सू. से समीप अर्थ द्योतक उप अव्यय का कुम्भ नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कुम्भ उप

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से उप अव्यय को पूर्व में रखने पर

उपकुम्भ

अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग

स. वि. के ए. व. की विवक्षा में ङि प्रत्यय

उपकुम्भ + ङि

अव्ययी..... (398) सू. से ङि प्रत्यय के स्थान पर अम् की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

वा तृतीया ...... (399) सू. से विकल्प से ङि प्रत्यय को अम्

उपकुम्भ + अम्

समाना ...... (104) सू. से अम् के अकार का लोप

उपकुम्भ + म्

वर्णों को मिलाने पर उपकुम्भम् रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में—जहां पर वा तृतीया ...... (399) सू. से ङि का अम् नहीं होगा वहां—

उपकुम्भे स्थितम्

कुम्भस्य समीपम् लौ. वि. से लेकर स. वि. के ए. व. की विवक्षा में ङि प्रत्यय तक पूर्ववत् प्रक्रिया

उपकुम्भ + ङि, ङ् अनुबन्ध

उपकुम्भ + इ

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का इकार के साथ ए करने पर उपकुम्भे रूप सिद्ध हुआ।

उपकुम्भ शब्द के रूप

विभ.	**ए. व.**	**द्वि. व.**	**ब. व.**
प्र. वि.	उपकुम्भम्	उपकुम्भम्	उपकुम्भम्
द्वि. वि.	उपकुम्भम्	उपकुम्भम्	उपकुम्भम्
तृ. वि.	उपकुम्भम्	उपकुम्भम्	उपकुम्भम्
	उपकुम्भेन	उपकुम्भाभ्याम्	उपकुम्भैः
च. वि.	उपकुम्भम्	उपकुम्भम्	उपकुम्भम्
प. वि.	उपकुम्भात्	उपकुम्भाभ्याम्	उपकुम्भेभ्यः
ष. वि.	उपकुम्भम्	उपकुम्भम्	उपकुमभम्
स. वि.	उपकुम्भम्	उपकुम्भम्	उपकुम्भम्
	उपकुम्भे	उपकुम्भयोः	उपकुम्भेषु

सुमद्रम्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मद्राणां समृद्धिः[1] लौ. वि.

मद्र + आम् + सु अ. वि.

अव्ययं .... (394) सू. से समृद्धि अर्थ द्योतक सु अव्यय का मद्र नाम के साथ समास और अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपकुम्भवत्

अतिनिद्रम्

निद्रा सम्प्रति न युज्यते लौ. वि.

निद्रा + सि + अति अ. वि.

अव्ययं .... (394) सू. से असम्प्रति[1] अर्थ द्योतक अति अव्यय का निद्रा नाम के साथ समास और अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

निद्रा अति

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अति अव्यय को पूर्व में रखने पर

अतिनिद्रा

अव्ययीभाव .... इस कारिका से नपुंसकलिंग

नपुंसके (198) सू. से ह्रस्व

अतिनिद्र

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अतिनिद्र + सि

शेष उपकुम्भवत्

निर्मक्षिकम्

मक्षिकाणामभावः लौ. वि.

मक्षिका + आम् + निर् अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से अर्थाभाव[2] द्योतक निर् अव्यय का मक्षिका नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

मक्षिका निर्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से निर् अव्यय को पूर्व में रखने पर

निर्मक्षिका

जलतुम्बिका[3] न्याय से रेफ का ऊर्ध्वगमन

निर्मक्षिका

अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग

नपुंसके (198) सू. से ह्रस्व

निर्मक्षिक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

निर्मक्षिक + सि

शेष उपकुम्भवत्

अतिहिमम्

हिमस्य अत्ययः लौ. वि.

---

[1] ऋद्धेराधिक्यं समृद्धिः।
ऋद्धि की अधिकता का नाम है समृद्धि।

[1] असंप्रति वर्तमानकाले उपभोगादेः प्रतिषेधः।
असंप्रति का अर्थ है — वर्तमान काल में (उसके) उपभोग आदि का निषेध।

[2] अर्थाभावो वस्तुनोऽभावः।
वस्तु का अभाव अर्थाभाव है।

[3] जैसे जल रहित तुम्बी पानी के ऊपर रहती है वैसे ही स्वर रहित रकार ऊपर चल जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

हिम + ङस् + अति अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से अत्यय (अर्थात् विनाश) अर्थ द्योतक अति अव्यय का हिम नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपकुम्भवत्

दुर्यवनम्

यवनानामसम्पत्तिः लौ. वि.

यवन + आम् + दुर् अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से असम्पत्ति अर्थ द्योतक दुर् अव्यय का यवन नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ..... (395) सू. से विभ. का लुक्

यवन दुर्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से दुर् अव्यय को पूर्व में जोड़ने पर

दुर्यवन

जलतुम्बिका न्याय से रेफ का ऊर्ध्वगमन

दुर्यवन

अव्ययीभाव ...... कारिका से नपुंसकलिंग

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

दुर्यवन + सि

शेष उपकुम्भवत्

इतिभिक्षु

भिक्षोः ख्यातिः लौ. वि.

भिक्षु + ङस् + इति अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से ख्याति (अर्थात् प्रकट करना) अर्थ द्योतक इति अव्यय का भिक्षु नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

भिक्षु इति

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से इति अव्यय को पूर्व में रखने पर

इतिभिक्षु

अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

इतिभिक्षु + सि

अनतो..... (397) सू. से सि प्रत्यय का लुक् करने पर इतिभिक्षु रूप सिद्ध हुआ।

अनुजिनम्

जिनस्य पश्चात् लौ. वि.

जिन + ङस् + अनु अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से पश्चात् अर्थ द्योतक अनु अव्यय का जिन नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपकुम्भवत्

अनुरूपं चेष्टते

रूपस्य योग्यम् लौ. वि.

रूप + ङस् + अनु अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से योग्यता अर्थ द्योतक अनु अव्यय का रूप नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपकुम्भवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रत्यर्थम्

अर्थमर्थं प्रति लौ. वि.

अर्थ + अम् + प्रति अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से वीप्सा[1] अर्थ द्योतक प्रति अव्यय का अर्थ नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपकुम्भवत्

यथाशक्ति

शक्तिमनतिक्रम्य लौ. वि.

शक्ति + अम् + यथा अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से पदार्थानतिवृत्ति (अर्थात् उत्तरपद के अर्थ का अतिक्रमण नहीं करना) अर्थ में यथा अव्यय का शक्ति नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष इतिभिक्षुवत्

400. अकालेऽव्ययीभावे। (3/2/127)

अव्ययीभावे सहस्य सादेशः स्यात् अकालवाचिन्युत्तरपदे। शीलस्य सादृश्यं सशीलमनयोः, व्रतेन सदृशमिति सव्रतम्, चक्रेण सह गदां धेहीति सचक्रम्, ज्येष्ठस्यानुक्रमेण इति अनुज्येष्ठम्, क्षत्राणां संपत्तिरिति सक्षत्रम्, सतृणमभ्यवहरति, न किञ्चित्त्यजतीत्यर्थः, सपिण्डैषणमधीते, पिण्डैषणापर्यन्तमधीते इत्यर्थः।

अव्ययीभाव (समास) में सह को स आदेश होता है कालवाची उत्तरपद में नहीं होने पर।

सशीलम्

शीलस्य सादृश्यम् लौ. वि.

शील + ङस् + सह अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से सादृश्य (अर्थात् समानता) अर्थ द्योतक सह अव्यय का शील नाम के साथ समास और अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

शील सह

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से सह अव्यय को पूर्व में रखने पर

सहशील

अकाले ...... (400) सू. से सह को स आदेश

सशील

अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

सशील + सि

शेष उपकुम्भवत्

सव्रतम्

व्रतेन सदृशम् लौ. वि.

व्रत + टा + सह अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से सदृश (अर्थात् समान) अर्थ द्योतक सह अव्यय का व्रत नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

---

[1] बहूनां सजातीयानां क्रियादिना साकल्येन व्याप्तुमिच्छा वीप्सा।
बहुत से सजातीय (अर्थात् समान जातीय पदार्थों) का क्रिया एवं गुण के कारण से सम्पूर्ण रूप से व्याप्त (अर्थात् विशेष रूप से प्राप्त) करने की इच्छा वीप्सा है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष सशीलवत्

सचक्रम्

चक्रेण युगपत् लौ. वि.

चक्र + टा + सह अ. वि.

अव्ययं...... (394) सू. से युगपत् (अर्थात् एक साथ) अर्थ द्योतक सह अव्यय का चक्र नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष सशीलवत्

अनुज्येष्ठम्

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण (अर्थात् अनुक्रमेण) लौ. वि.

ज्येष्ठ + ङस् + अनु अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से आनुपूर्व्य (अर्थात् क्रमशः) अर्थ द्योतक सह अव्यय का ज्येष्ठ नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपकुम्भवत्

सक्षत्रम्

क्षत्राणां संपत्तिः लौ. वि.

क्षत्र + आम् + सह अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से संपत्ति अर्थ द्योतक सह अव्यय का क्षत्र नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपकुम्भवत्

सतृणम्[1] अभ्यवहरति

तृणमपरित्यज्य अभ्यवहरति लौ. वि.

तृण + अम् + सह अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से साकल्य (अर्थात् सम्पूर्ण) अर्थ द्योतक सह अव्यय का तृण नाम के साथ समास और अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष सशीलवत्

सपिण्डैषणमधीते

पिण्डैषणायाः पर्यन्तमधीते लौ. वि.

पिण्डैषणा + ङस् + सह अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से अन्त अर्थ द्योतक सह अव्यय का पिण्डैषणा के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पिण्डैषणा सह

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से सह अव्यय को पूर्व में रखने पर

सहपिण्डैषणा

अकाले ...... (400) सू. से सह को स आदेश

सपिण्डैषणा

अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग

नपुंसके (198) सू. से ह्रस्व

सपिण्डैषण

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

सपिण्डैषण + सि

[1] सतृणमभ्यवहरति अर्थात् तृण का भी परित्याग किए बिना खाता है। यहां तृणभक्षण में तात्पर्य नहीं, परोसे हुए भोजन को बिना कुछ छोड़े खाता है इतना ही विवक्षित है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष उपकुम्भवत्

401. यथाऽसादृश्ये। (3/1/24)

असादृश्येऽर्थे यथा इत्यव्ययं समस्यते सोऽव्ययीभावसमासः स्यात्। यथावृद्धमर्चय, ये ये वृद्धास्तान्नित्यर्थः। असादृश्ये इति किम्—यथा ऋषभस्तथा वीरः।

सादृश्यवर्जित अर्थ में यथा[1] अव्यय समस्त होता है और वह अव्ययीभावसमास होता है।

यथावृद्धमर्चय

ये ये वृद्धाः लौ. वि.

वृद्ध + जस् + यथा अ. वि.

यथा ...... (401) सू. से समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपकुम्भवत्

यथा ...... (401) सू. में यथा अव्यय सादृश्यवर्जित अर्थ में हो ऐसा क्यों? यथा ऋषभस्तथा वीरः (अर्थात् ऋषभ के समान महावीर हैं।)। यहां यथा अव्यय सादृश्य अर्थ में है अतः यथा अव्यय का ऋषभ नाम के साथ समास नहीं होगा।

402. शरदादेरव्ययीभावात्। (8/3/27)

शरदाद्यन्तादव्ययीभावाट्टः समासान्तः स्यात्। उपशरदम्, उपत्यदम्। अव्ययीभावस्य नपुंसकलिङ्- गत्वाट्टान्तस्य स्त्रियां वृत्तिर्न।

शरद् आदि अन्त वाले अव्ययीभावसमास से ट (प्रत्यय) समासान्त होता है।

उपशरदम्[2]

शरदः समीपम् लौ. वि.

शरद् + ङस् + उप अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से समीप अर्थ द्योतक उप अव्यय का शरद् नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

शरद् उप

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से उप अव्यय को पूर्व में रखने पर

उपशरद्

शरदादे ...... (402) सू. से समासान्त ट प्रत्यय

उपशरद् + ट, ट् अनुबन्ध

उपशरद् + अ

स्वरहीनं परेण संयोज्यम् न्याय से वर्णों को मिलाने पर

उपशरद

अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

उपशरद + सि

शेष उपकुम्भवत्

उपत्यदम्

---

[1] यथा—योग्यतावीप्सार्थानतिवृत्तिसादृश्ये।

यथा अव्यय चार अर्थों में प्रयुक्त होता है—योग्यता, वीप्सा, उत्तर पद के अर्थ का अतिक्रमण नहीं करना एवं सादृश्य।

[2] यद्यपि शरद् शब्द संस्कृत में स्त्रीलिंग है किन्तु अव्ययीभाव समास में नपुंसक लिङ्ग होने से ट समासान्त शरद् शब्द का (भी) स्त्रीलिंग में व्यवहार नहीं होगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

त्यदः समीपम् लौ. वि.
त्यद् + ङस् + उप अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से समीप अर्थ द्योतक उप अव्यय का त्यद् नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपशरदवत्

403. जराया जरश्च। (8/3/29)

जराशब्दान्तादव्ययीभावाट्टः स्यात् जराया जरसादेशश्च। उपजरसम्, प्रतिजरसम्। राज्ञः समीपमित्यत्र तु—

जरा शब्दान्त अव्ययीभाव से ट (प्रत्यय समासान्त) होता है और जरा (शब्द) को जरस् आदेश होता है।

उपजरसम्

जरायाः समीपं अथवा जरसः समीपम् लौ. वि.
जरा + ङस् + उप अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से समीप अर्थ द्योतक उप अव्यय का जरा नाम के साथ समास और अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
जरा उप

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से उप अव्यय को पूर्व में रखने पर
उपजरा

जराया ...... (403) सू. से समासान्त ट प्रत्यय एवं जरा को जरस् आदेश
उपजरस् + ट, ट् अनुबन्ध
उपजरस् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर उपजरस
अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिङ्ग
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
उपजरस + सि

शेष उपकुम्भवत्

प्रतिजरसम्

जरां जरां प्रति अथवा जरसं जरसं प्रति लौ. वि.
जरा + अम् + प्रति अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से वीप्सा अर्थ द्योतक प्रति अव्यय का जरा नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपजरसवत्

404. अनः। (8/3/31)

अन्नन्तादव्ययीभावाट्टः स्यात्।

अन् अन्त वाले अव्ययीभाव (समास) से ट (समासान्त) होता है।

405. वृत्यन्तः। (1/1/29)

वृत्तिः[1] पदसमुदायसमासादिरूपा। तस्या अन्तः पदसंज्ञो न स्यात्। अन्तर्वर्तिन्या विभक्तेः स्थानिवद्भावेन उभयत्र पदत्वे प्राप्ते अन्त्यस्य निषेधार्थं वचनम्।

---

[1] परार्थाभिधानं वृत्तिः। समास आदि में जब पद (या शब्द) अपने-अपने अर्थ को पूर्णतः या अंशतः छोड़कर एक विशिष्ट अर्थ को कहने लग जाते हैं तो उसे पूर्वाचार्य 'वृत्ति' कहते हैं।
वृत्ति के तीन प्रकार हैं—

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वृत्ति पदों के समुदाय समासादि रूप होती है। उस (वृत्ति) के अन्त की पदसंज्ञा नहीं होती है। (अन्तर्वर्तिनी विभक्ति के स्थानिवद् भाव होने से दोनों के पदसंज्ञा की प्राप्ति है किन्तु अंतिम की पदसंज्ञा का निषेध के लिए वृत्त्यन्तः (405) सू. का विधान किया है।)

406. नोऽपदस्य तद्धिते। (8/4/62)

अपदस्य नान्तस्य टेर्लोपः स्यात् तद्धिते। उपराजम्, उपतक्षम्, प्रत्यात्मम्।

नान्त अपद (अर्थात् जिसकी पदसंज्ञा नहीं है उस) की टि का लोप होता है तद्धित विषय में।

उपराजम्

राज्ञः समीपम् लौ. वि.

राजन् + ङस् + उप अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से समीप अर्थ द्योतक उप अव्यय का राजन् नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

राजन् उप

प्रथमोक्तं ...... (396) से अव्यय को पूर्व में रखने पर

उपराजन्

अनः (404) सू. से समासान्त ट प्रत्यय

उपराजन् + ट, ट् अनुबन्ध

उपराजन् + अ

तदन्तं पदम् (23) सू. से उप एवं राजन् की पदसंज्ञा की प्राप्ति किन्तु

वृत्त्यन्तः (405) सू. से राजन् की पदसंज्ञा का निषेध

अन्त्यस्वरादिष्टिः (18) सू. से अन् की टिसंज्ञा

नोऽपदस्य...... (406) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप

उपराज् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर उपराज

अव्ययीभाव ...... कारिका से नपुंसकलिंग

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

उपराज + सि

शेष उपकुम्भवत्

उपतक्षम्

तक्ष्णः समीपम् लौ. वि.

तक्षन् + ङस् + उप अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से समीप अर्थ द्योतक उप अव्यय का तक्षन् नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपराजवत्

प्रत्यात्मम्

क. समासवृत्ति—दो या दो से अधिक पद मिलकर परस्पर सम्बद्ध एकार्थीभावरूप विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं वहां समासवृत्ति होती है। जैसे राज्ञः पुरुषः = राजपुरुषः।

ख. तद्धितान्तवृत्ति—जहां प्रकृति (अर्थात् मूल शब्द) तथा तद्धित प्रत्यय मिलकर एकार्थीभावरूप विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं वहां तद्धितान्तवृत्ति होती है। जैसे दाशरथिः। इसमें दशरथ + इञ् ये दोनों मिलकर 'दशरथ की सन्तान' इस विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं।

ग. नामधातुवृत्ति—नाम के साथ विशिष्ट प्रत्यय जोड़कर जब उसे धातु बना लिया जाता है, उसे नामधातु कहते हैं। जहां नाम एवं प्रत्यय मिलकर एकार्थीभावरूप विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं वहां नामधातु वृत्ति होती है। जैसे पुत्रकाम्यति। इसमें पुत्र + काम्य + तिप् ये मिलकर 'पुत्र को चाहता है' इस विशिष्ट अर्थ को प्रकट करते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आत्मानम् आत्मानं प्रति लौ. वि.

आत्मन् + अम् + प्रति अ. वि.

अव्ययं ...... (394) सू. से वीप्सा अर्थ द्योतक प्रति अव्यय का आत्मन् नाम के साथ समास एवं अव्ययीभावसमास संज्ञा

शेष उपराजवत्

इति अव्ययीभावः
अव्ययीभावसमास समाप्त।

अथ तत्पुरुषः
अब तत्पुरुष समास प्रारम्भ किया जा रहा है।

407. श्रितादिभिः। (3/1/45)

द्वितीयान्तं नाम श्रितादिभिः सह वा समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। जिनं श्रितः—जिनश्रितः। एवं संसारातीतः, नरकपतितः, ग्रामगतः, नरकगामीत्यादि। पक्षे वाक्यमेव।

द्वितीयान्त नाम का श्रित आदि (शब्दों) के साथ विकल्प से समास होता है वह तत्पुरुषसमास है।

जिनश्रितः

जिनं श्रितः लौ. वि.

जिन + अम् + श्रित + सि अ. वि.

श्रितादिभिः (407) सू. से विकल्प से समास और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

जिन श्रित

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से जिन को पूर्व में रखने पर

जिनश्रित

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

जिनश्रित + सि, इकार उच्चारणार्थ

जिनश्रित + स्

वर्णों को मिलाने पर जिनश्रितस्

स्रोर्विसर्गः (89) सू. से स् का विसर्ग करने पर जिनश्रितः रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—जिनं श्रितः।

संसारातीतः

संसारम् अतीतः लौ. वि.

संसार + अम् + अतीत + सि अ. वि.

श्रिता ...... (407) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां पर समास नहीं होगा वहां—संसारम् अतीतः।

नरकपतितः

नरकं पतितः लौ. वि.

नरक + अम् + पतित + सि अ. वि.

श्रिता ...... (407) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में— जहां पर समास नहीं होगा वहां— नरकं पतितः।

ग्रामगतः

ग्रामं गतः लौ. वि.

ग्राम + अम् + गत + सि अ. वि.

श्रिता ...... (407) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में— जहां समास नहीं होगा वहां— ग्रामं गतः।

नरकगामी

नरकं गामी लौ. वि.

नरक + अम् + गामिन् + सि अ. वि.

श्रिता ...... (407) सू. से विकल्प से समास और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नरक गामिन्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नरक को पूर्व में रखने पर

नरकगामिन्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

नरकगामिन् + सि

पुंस्त्रियोः स्यमौजस् (133) सू. से सि की थुट् संज्ञा

इन्हन्पूषन्नर्यम्णां सौ च (223) सू. से उपधा को दीर्घ

नरकगामीन् + सि

हसेपः सेर्लोपः (183) सू. से सि प्रत्यय का लुक्

नाम्नो नोऽनह्नः (135) सू. से न् का लुक् करने पर नरकगामी रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में— जहां समास नहीं होगा वहां— नरकं गामी।

408. ऊनार्थपूर्वादिभिः। (3/1/50)

तृतीयान्तं नाम ऊनार्थैः पूर्वादिभिश्च सह वा समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। मासेनोनम्— मासोनम्, मासविकलम्, मासपूर्वः, वाग्निपुणः, धान्यार्थः इत्यादि।

तृतीयान्त नाम का ऊनार्थक एवं पूर्व आदि (शब्दों) के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

मासोनम्

मासेन ऊनम् लौ. वि.

मास + टा + ऊन् + सि अ. वि.

ऊनार्थ ...... (408) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

मास ऊन्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से मास को पूर्व में रखने पर

मासऊन

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का ऊकार के साथ ओकार

मासोन

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

मासोन + सि

अतोऽम् (191) सू. से सि प्रत्यय को अम्

मासोन + अम्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समानादमः (104) सू. से अम् के अकार का लोप

मासोन + म्

वर्णों को मिलाने पर मासोनम् रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—मासेन ऊनम्।

मासविकलम्

मासेन विकलम् लौ. वि.

मास + टा + विकल + सि अ. वि.

ऊनार्थ ...... (408) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

मास विकल

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से मास को पूर्व में रखने पर

मासविकल

प्र. वि. के. ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

मासविकल + सि

शेष मासोनवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—मासेन विकलम्।

मासपूर्वः

मासेन पूर्वः लौ. वि.

मास + टा + पूर्व + सि अ. वि.

ऊनार्थ ...... (408) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—मासेन पूर्वः।

वाग्निपुणः

वाचा निपुणः लौ. वि.

वाच् + टा + निपुण + सि अ. वि.

ऊनार्थ ...... (408) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

वाच् निपुण

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से वाच् को पूर्व में रखने पर

वाच्निपुण

झसा जबाः (59) सू. से च् का ज्

वाज्निपुण

चजोः कगौ (245) सू. से ज् का ग्

वाग्निपुण

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

वाग्निपुण + सि

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—वाचा निपुणः।

धान्यार्थः

धान्येन अर्थः लौ. वि.

धान्य + टा + अर्थ + सि अ. वि.

ऊनार्थ ...... (408) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—धान्येन अर्थः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

409 कर्तृसाधने कृता। (3/1/52)

कर्तरि साधने च यत्तृतीयान्तं नाम तत् कृदन्तेन सह वा समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। आत्मना कृतम्—आत्मकृतम्, अहिदष्टः, नखभिन्नः, परशुच्छिन्नः।

कर्ता और साधन में जो तृतीयान्त नाम है उसका कृदन्त के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

आत्मकृतम्

आत्मना कृतम् लौ. वि.

आत्मन् + टा + कृत + सि अ. वि.

कर्तृसाधने ...... (409) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

आत्मन् कृत

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से आत्मन् को पूर्व में रखने पर

आत्मन्कृत

नाम्नो ......(135) सू. से न् का लोप

आत्मकृत

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

आत्मकृत + सि

शेष मासविकलवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—आत्मना कृतम्।

अहिदष्टः

अहिना दष्टः लौ. वि.

अहि + टा + दष्ट + सि अ. वि.

कर्तृ ...... (409) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमाससंज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—अहिना दष्टः।

नखभिन्नः

नखेन नखैर्वा भिन्नः लौ. वि.

नख + टा + भिन्न + सि अ. वि.

नख + भिस् + भिन्न + सि अ. वि.

कर्तृ ...... (409) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—नखेन नखैर्वा भिन्नः।

परशुच्छिन्नः

परशुना छिन्नः लौ. वि.

परशु + टा + छिन्न + सि अ. वि.

कर्तृ ...... (409) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

परशु छिन्न

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से परशु को पूर्व में रखने पर

परशुछिन्न

स्वरात् (75) सू. से छ् को द्वित्व

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

परशुछ्छिन्न
खसे चपा झथानाम् (72) सू. से पूर्व छ् को च्
परशुच्छिन्न
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
परशुच्छिन्न + सि
शेष जिनश्रितवत्
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — परशुना छिन्नः।

410. तुम्क्त्वाक्तवतुभिः। (3/1/55)

तृतीयान्तं नाम एभिः सह न समस्यते। पूर्वापवादः। परशुना छेतुम्, परशुना छित्वा, दात्रेण लूनवान्।

तृतीयान्त नाम का तुम्, क्त्वा एवं क्तवतु (प्रत्ययान्त) के साथ समास नहीं होता है। (यह सू. कर्तृ ...... (409) सू. का अपवाद है)

परशुना छेतुम् (तुम् प्रत्ययान्त), परशुना छित्वा (क्त्वा प्रत्ययान्त), दात्रेण लूनवान् (क्तवतु प्रत्ययान्त)। इन उदाहरणों में कर्तृ ...... (409) सू. से समास की प्राप्ति किन्तु तुम् ...... (410) सू. से निषेध करने पर समास नहीं होगा।

411. चतुर्थी प्रकृत्या। (3/1/56)

चतुर्थ्यन्तं नाम प्रकृतिवाचिना सह वा समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। प्रकृतिर्मूलकारणम्। घटाय मृत्तिका — घटमृत्तिका। एवं कुण्डलहिरण्यम्, यूपदारु।

चतुर्थी अन्त नाम का प्रकृतिवाची (प्रकृति का अर्थ है मूल कारण) के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

घटमृत्तिका

घटाय मृत्तिका लौ. वि.
घट + ङे + मृत्तिका + सि अ. वि.
चतुर्थी ...... (411) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
घट मृत्तिका
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से घट को पूर्व में रखने पर
घटमृत्तिका
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
घटमृत्तिका + सि
आपः (172) सू. से सि प्रत्यय का लोप करने पर घटमृत्तिका रूप सिद्ध हुआ।
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — घटाय मृत्तिका।

कुण्डलहिरण्यम्

कुण्डलाय हिरण्यम् लौ. वि.
कुण्डल + ङे + हिरण्य + सि अ. वि.
चतुर्थी ...... (411) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष मासविकलवत्
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — कुण्डलाय हिरण्यम्।

यूपदारु

यूपाय दारु लौ. वि.
यूप + ङे + दारु + सि अ. वि.
चतुर्थी ...... (411) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यूप दारु
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से यूप को पूर्व में रखने पर
यूपदारु
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
यूपदारु + सि
नपुंसकस्य स्यमोर्लुक् (199) सू. से सि प्रत्यय का लुक् करने पर यूपदारु रूप सिद्ध हुआ।
पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—यूपाय दारु।

412. हितादिभिः। (3/1/57)।

चतुर्थ्यन्तं नाम हितादिभिः सह वा समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। साधुभ्यो हितम् — साधुहितम्, श्राद्धसुखम्, भूतबलिरित्यादि।

चतुर्थी अन्त नाम का हित आदि (शब्दों) के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

साधुहितम्

साधुभ्यो हितम् लौ. वि.
साधु + भ्यस् + हित + सि अ. वि.
हितादिभिः (412) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष मासविकलवत्
पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—साधुभ्यो हितम्।

श्राद्धसुखम्

श्राद्धाय सुखम् लौ. वि.
श्राद्ध + ङे + सुख + सि अ. वि.
हितादिभिः (412) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष मासविकलवत्
पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—श्राद्धाय सुखम्।

भूतबलिः

भूताय बलिः लौ. वि.
भूत + ङे + बलि + सि अ. वि.
हितादिभिः (412) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष जिनश्रितवत्
पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—भूताय बलिः।

413. पञ्चमी भयादिभिः। (3/1/60)

पञ्चम्यन्तं नाम भयादिभिः सह वा समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। व्याघ्राद् भयम्— व्याघ्रभयम्, वृकभीतिः, ग्रामनिर्गतः, चक्रमुक्तः।

पञ्चमी अन्त नाम का भय आदि (शब्दों) के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

व्याघ्रभयम्

व्याघ्राद् भयम् लौ. वि.
व्याघ्र + ङसि + भय + सि अ. वि.
पञ्चमी ...... (413) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष मासविकलवत्
पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—व्याघ्राद् भयम्।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वृकभीतिः

वृकाद् भीतिः लौ .वि.

वृक + ङसि + भीति + सि अ. वि.

पञ्चमी ...... (413) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—वृकाद् भीतिः।

ग्रामनिर्गतः

ग्रामात् निर्गतः लौ. वि.

ग्राम + ङसि + निर्गत + सि अ. वि.

पञ्चमी ...... (413) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—ग्रामात् निर्गतः।

चक्रमुक्तः

चक्रात् मुक्तः लौ. वि.

चक्र + ङसि + मुक्त + सि अ. वि.

पञ्चमी ...... (413) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—चक्रात् मुक्तः।

414. षष्ठ्ययत्नाच्छेषे। (3/1/63)

शेषे या षष्ठी तदन्तं नाम नाम्ना सह वा समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। न चेत् स शेषो यत्नाद् विहितः स्यात्। राज्ञः पुरुष—राजपुरुषः, गवां क्षीरम्—गोक्षीरम्। अयत्नादिति किम्—मातुः स्मारकः। शेषे इति किम्—रुदतः प्रव्रजितः, नराणां क्षत्रियः शूरः।

शेष (अर्थ) में जो षष्ठी है उस षष्ठी अन्त नाम का नाम के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है। यदि वह शेष (स्मृत्यर्थदयेशां वा (337) इत्यादि) यत्न से किया गया न हो।

राजपुरुषः

राज्ञः पुरुषः लौ. वि.

राजन् + ङस् + पुरुष + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमाससंज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

राजन् पुरुष

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से राजन् का पूर्व में रखने पर

राजन्पुरुष

नाम्नो...... (135) सू. से न् का लोप

राजपुरुष

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

राजपुरुष + सि

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—राज्ञः पुरुषः।

गोक्षीरम्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

गवां क्षीरम् लौ. वि.

गो + आम् + क्षीर + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष मासविकलवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—गवां क्षीरम्।

अयत्न से किया गया शेष हो ऐसा क्यों? मातु: स्मारक:। इस उदाहरण में कृत् प्रत्यय के योग में कर्म में षष्ठी है न कि अयत्न शेष षष्ठी। अत: मातु: स्मारक: में समास नहीं होगा। शेष में षष्ठी ही ऐसा क्यों? रुदत: प्रव्रजित:। यहां रुदत: में षष्ठी विभक्ति अनादर में हुई है अत: समास नहीं हुआ। नराणां क्षत्रिय: शूर:। यहां नराणां में निर्धारण अविभाग में षष्ठी हुई है अत: समास नहीं होगा।

415. कृति। (3/1/64)

कृत्प्रत्ययनिमित्ता या षष्ठी तदन्तं नाम नाम्ना सह वा समस्यते स तत्पुरुषसमास: स्यात्। सिद्धसेनस्य कृति:—सिद्धसेनकृति:, गणधरोक्ति:, पलाशशातन:।

कृत् प्रत्यय के निमित्त से जो षष्ठी है उस षष्ठी अन्त नाम का नाम के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

सिद्धसेनकृति:

सिद्धसेनस्य कृति: लौ. वि.

सिद्धसेन + ङस् + कृति + सि अ. वि.

कृति (415) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—सिद्धसेनस्य कृति:।

गणधरोक्ति:

गणधरस्य उक्ति: लौ. वि.

गणधर + ङस् + उक्ति + सि अ. वि.

कृति (415) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमाससंज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—गणधरस्य उक्ति:।

पलाशशातन:

पलाशस्य शातन: लौ. वि.

पलाश + ङस् + शातन + सि अ. वि.

कृति (415) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—पलाशस्य शातन:।

416. पूरणशतृशानाव्ययतृप्तार्थै:। (3/1/74)

एभि: सह षष्ठ्यन्तं नाम न समस्यते। तीर्थंकराणां षोडश: शान्ति:, चैत्रस्य पठन्, मैत्रस्य पचमान:, चैत्रस्य कृत्वा, फलानां तृप्त:, सुहितो वा। सर्वत्र सम्बन्धे षष्ठी।

षष्ठी अन्त नाम का पूरणार्थक, शतृ, शान (प्रत्यय अन्त वाले), अव्यय एवं तृप्त अर्थ वाले शब्दों के साथ समास नहीं होता है।

तीर्थंकराणां षोडश: (पूरणार्थक) शान्ति:, चैत्रस्य पठन् (शतृ), मैत्रस्य पचमान: (शान), चैत्रस्य कृत्वा (अव्यय), फलानां तृप्त: सुहितो वा इन सभी उदाहरणों में षष्ठ्य ...... (414) सू. से समास की प्राप्ति किन्तु पूरण ...... (416) सू. से निषेध कर देने पर समास नहीं होगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

417. सप्तमी शौण्डादिभिः। (3/1/70)

सप्तम्यन्तं नाम शौण्डादिभिः सह वा समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। अक्षेषु शौण्डः — अक्षशौण्डः, शिरःशेखरः, हस्तकटक इत्यादि।

सप्तमी अन्त नाम का शौण्ड आदि (शब्दों) के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

अक्षशौण्डः

अक्षेषु शौण्डः लौ. वि.

अक्ष + सुप् + शौण्ड + सि अ. वि.

सप्तमी ...... (417) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—अक्षेषु शौण्डः।

शिरःशेखरः

शिरसि शेखरः लौ. वि.

शिरस् + ङि + शेखर + सि अ. वि.

सप्तमी...... (417) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास...... (395) सू. से विभ. का लुक्

शिरस् शेखर

प्रथमोक्तं...... (396) सू. से शिरस् को पूर्व में रखने पर

शिरस्शेखर

नाम...... (131) सू. से शिरस् की पद संज्ञा

स्रोर्वि...... (89) सू. से स् का विसर्ग

शिरःशेखर

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

शिरःशेखर + सि

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—शिरसि शेखरः।

हस्तकटकः

हस्ते कटकः लौ. वि.

हस्त + ङि + कटक + सि अ. वि.

सप्तमी ...... (417) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमासंसज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—हस्ते कटकः।

418. काकादिभिः क्षेपे। (3/1/78)

सप्तम्यन्तं नाम काकदिभिः सह समस्यते क्षेपे वाच्ये, सः तत्पुरुषसमासः स्यात्। तीर्थे काक इव तीर्थकाकः। एवं तीर्थवायसः, तीर्थश्वा। उपमया चात्र क्षेपो गम्यते। क्षेप इति किम्—तीर्थे काकस्तिष्ठति।

क्षेप अर्थात् (निन्दा) प्रकट होने पर सप्तमी अन्त नाम का काक आदि शब्दों के साथ समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

तीर्थकाकः

तीर्थे काक इव लौ. वि.

तीर्थ + ङि + काक + सि अ. वि.

काकादिभिः ...... (418) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष जिनश्रितवत्

तीर्थवायसः

तीर्थे वायस इव लौ. वि.

तीर्थ + ङि + वायस + सि अ. वि.

काकादिभिः ...... (418) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

तीर्थश्वा

तीर्थे श्वा इव लौ. वि.

तीर्थ + ङि + श्वन् + सि अ. वि.

काकादिभिः ...... (418) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

तीर्थ श्वन्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से तीर्थ को पूर्व में रखने पर

तीर्थश्वन्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

तीर्थश्वन् + सि

पुंस्त्रियोः ...... (133) सू. से सि प्रत्यय की थुट् संज्ञा

नोपधाया नुटि चाधौ दीर्घः (196) सू. से उपधा को दीर्घ

तीर्थश्वान् + सि

हसेपः ...... (183) सू. से सि प्रत्यय का लोप

नाम्नो ...... (135) सू. से न् का लोप करने पर तीर्थश्वा रूप सिद्ध हुआ।

तीर्थकाकः, तीर्थवायसः एवं तीर्थश्वा इन उदाहरणों में उपमा द्वारा क्षेप (अर्थात् निन्दा) प्रकट हो रहा है।[1]

निन्दा प्रकट हो ऐसा क्यों? काकस्तिष्ठति इस उदाहरण में वाक्य से निन्दा गम्य नहीं हो रही है।

419. सिंहादिभिः पूजायाम्। (3/1/79)

सप्तम्यन्तं नाम सिंहादिभिः सह समस्यते पूजायां गम्यमानायां, स तत्पुरुषसमासो भवति। समरे सिंह इव — समरसिंहः, रणव्याघ्रः, कलिगौतमः।

सप्तमी अन्त नाम का सिंह आदि (शब्दों) के साथ समास होता है पूजा गम्य होने पर और वह तत्पुरुषसमास है।

समरसिंहः

समरे सिंह इव लौ. वि.

समर + ङि + सिंह + सि अ. वि.

सिंहादिभिः ...... सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

रणव्याघ्रः

रणे व्याघ्र इव लौ. वि.

रण + ङि + व्याघ्र + सि अ. वि.

सिंहादिभिः ...... (419) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

[1] जिस प्रकार कौआ तीर्थ के फल को नहीं जानता हुआ चिरस्थायी नहीं होता है उसी प्रकार जो व्यक्ति कार्यों का प्रारम्भ करके उसका निर्वाह नहीं करता है वह तीर्थाधार वाले कौए से उपमित किया जाता हुआ निन्दा को प्राप्त करता है। इससे उसकी अस्थिरताजन्य निन्दा का प्रकटीकरण होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष जिनश्रितवत्

कलिगौतमः

कलौ गौतम इव लौ. वि.

कलि + ङि + गौतम + सि अ. वि.

सिंहादिभिः ...... (419) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

(यह नित्य समास है। उपमा से पूजा गम्य होती है वाक्य से नहीं।)

420. नञ्तत्पुरुषः। (3/1/34)

नञिति नाम्ना सह समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्।

नञ् (अव्यय) का नाम के साथ समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

421. नञत्। (3/2/97)

नञ अकारादेशः स्यात् उत्तरपदे। न ब्राह्मणः— अब्राह्मणः, असाधुः, अहिंसा, असत्यम्।

नञ् को अकार आदेश होता है उत्तरपद परे होने पर।

अब्राह्मणः

न ब्राह्मणः लौ. वि.

नञ् + ब्राह्मण + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नञ् ब्राह्मण

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नञ् को पूर्व में रखने पर

नञ्ब्राह्मण

नञत् (421) सू. से नञ् के स्थान पर अकार आदेश

अब्राह्मण

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अब्राह्मण + सि, इकार उच्चारणार्थ

स्रोर्विसर्गः (89) सू. से स् का विसर्ग करने पर अब्राह्मणः रूप सिद्ध हुआ।

असाधुः

न साधुः लौ. वि.

नञ् + साधु + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष अब्राह्मणवत्

अहिंसा

न हिंसा लौ. वि.

नञ् + हिंसा + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नञ् हिंसा

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नञ् को पूर्व में रखने पर

नञ्हिंसा

नञत् (421) सू. से नञ् के स्थान पर अकार आदेश

अहिंसा

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अहिंसा + सि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष घटमृत्तिकावत्

असत्यम्

न सत्यम् लौ. वि.

नञ् + सत्य + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नञ् सत्य

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नञ् को पूर्व में रखने पर

नञ्सत्य

नञत् (421) सू. से नञ् के स्थान पर अकार आदेश

असत्य

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

असत्य + सि

शेष मासविकलवत्

422. अन् स्वरे। (3/2/101)

नञित्यस्य अनादेशः स्यात् स्वरादावुत्तरपदे। न अश्वः—अनश्वः, अनजः, अनन्तः।

नञ् को अन् आदेश होता है स्वरादि उत्तर पद परे होने पर।

अनश्वः

न अश्वः लौ. वि.

नञ् + अश्व + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नञ् अश्व

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नञ् को पूर्व में रखने पर

नञ्अश्व

अन् ...... (422) सू. से नञ् को अन् आदेश

अन्अश्व

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर अनश्व

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अनश्व + सि

शेष जिनश्रितवत्

अनजः

न अजः लौ. वि.

नञ् + अज + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष अनश्ववत्

अनन्तः

न अन्तः लौ. वि.

नञ् + अन्त + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष अनश्ववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

423. नखादयः। (3/2/100)

नखादयः शब्दा अकृतनञकाराद्यादेशा निपात्यन्ते। नास्य खं विद्यते इति नखः, न गच्छतीति नगः। एवं नकुलः, नपुंसकः, नक्षत्रम्, नक्रः, नाकः, नग्नः इत्यादि।

(जिन शब्दों में) नञ् के स्थान पर अकार एवं अन् आदेश नहीं किया गया है ऐसे नख आदि शब्द निपातन[1] से सिद्ध होते हैं।

नखः

नास्य खं विद्यते इति लौ. वि.

नञ् + ख + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नञ् ख

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नञ् को पूर्व में रखने पर

नञ्ख

नञत् (421) सू. से नञ् के स्थान पर अकार आदेश की प्राप्ति किन्तु

नखादयः (423) सू. से निषेध

नञ्ख, ञकार उच्चारणार्थ

नख

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

नख + सि

शेष जिनश्रितवत्

नगः

न गच्छतीति लौ. वि.

नञ् + ग अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नञ् को पूर्व में रखने पर

नञ्ग

शेष नखवत्

नकुलः

नास्य कुलमस्तीति लौ. वि.

नञ् + कुल + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष नखवत्

नपुंसकः

न पुमान् न स्त्रीति लौ. वि.

नञ् + पुंस् + सि + स्त्री + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नञ् पुंस् स्त्री

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नञ् को पूर्व में रखने पर

[1] जो व्याकरण के नियमों से सिद्ध न हो वह निपात है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

नञ्पुंस्स्त्री
नञत् (421) सू. से नञ् के स्थान पर अकार आदेश की प्राप्ति किन्तु
नखादय: (423) सू. से निषेध एवं निपातन से पुंस् एवं स्त्री के स्थान पर पुंसक आदेश
नञ्पुंसक, ञ् उच्चारणार्थ
नपुंसक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
नपुंसक + सि
शेष जिनश्रितवत्

नक्षत्रम्

न क्षीयते अथवा न क्षरति इति लौ. वि.
नञ् + क्षत्र अ. वि.
नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नञ् को पूर्व में रखने पर
नञ्क्षत्र
नञत् (421) सू. से नञ् के स्थान पर अकार आदेश की प्राप्ति किन्तु
नखादय: (423) सू. से निषेध
नञ्क्षत्र, ञकार उच्चारणार्थ
नक्षत्र
प्र. वि. के ए. वि. की विवक्षा में सि प्रत्यय
नक्षत्र + सि
शेष मासविकलवत्

नक्र:

न क्रामति अथवा न क्रीणाति इति लौ. वि.
नञ् + क्र अ. वि.
नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष नगवत्

नाक:

नास्मिन्नकं (अर्थात् दुखम्) अस्ति इति लौ. वि.
नञ् + अक + सि अ. वि.
नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
नञ् अक
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नञ् को पूर्व में रखने पर
नञ्अक, ञकार उच्चारणार्थ
न अक
अन् ...... (422) सू. से नञ् के स्थान पर अन् आदेश की प्राप्ति किन्तु
नखादय: (423) सू. से निषेध
समानानां ...... (36) सू. से अकार का अकार के साथ दीर्घ
नाक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
नाक + सि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष जिनश्रितवत्

नग्नः

न विद्यन्ते ग्नाः (अर्थात् श्रियः छन्दांसि वा) अस्य इति लौ. वि.

नञ् + ग्न अ. वि.

नञत् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष नगवत्

424. सप्तम्युक्तं कृता। (3/1/98)

कृत्प्रत्ययविधायके सूत्रे सप्तम्यन्तेन यदुक्तं तत्सप्तम्युक्तम्। सप्तम्युक्तं नाम कृदन्तेन सह नित्यं समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। कुम्भं करोतीति कुम्भकारः, शरलावः।

कृत् प्रत्यय करने वाले सूत्र में सप्तमी अन्त से जो कहा गया है वह सप्तमी उक्त है।[1] सप्तमी उक्त नाम का कृदन्त के साथ नित्य समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

कुम्भकारः

कुम्भं करोति लौ. वि.

कुम्भ + अम् + कार[2] अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

शरलावः

शरान् लुनाति लौ. वि.

शर + शस् + लाव अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

425. ऊर्याद्यनुकरणोपसर्गच्विडाचो गतिर्धातोः प्राक् च। (3/1/1)

ऊर्यादयः शब्दा गतिसंज्ञकाः स्युः धातोश्च प्रागेव प्रयुज्यन्ते।

ऊरी आदि (अर्थात् ऊरी, अनुकरणवाची शब्द, उपसर्ग, च्वि एवं डाच् प्रत्ययान्त) शब्द गतिसंज्ञक होते हैं और (वे) धातु से पहले ही प्रयुक्त होते हैं।

426. गतिः। (3/1/87)

गतिसंज्ञकं नाम नाम्ना सह नित्यं समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। विहारः, प्रहारः, व्याघ्रः।

गति संज्ञक नाम का नाम के साथ नित्य समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

विहारः

विहरणम् लौ. वि.

वि + हार अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से वि उपसर्ग की गतिसंज्ञा एवं धातु से पूर्व रखने पर

गतिः (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

विहार

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

विहार + सि

---

[1] कर्मण्यण् (उत्तरार्धकौमुदी 531) सू. में कर्मणि पद में सप्तमी है। अतः कर्म शब्द सप्तमी उक्त है। सप्तमी उक्त के बोध्य कुम्भ आदि का कृदन्त शब्द के साथ समास होता है तब वह नित्य होता है। इसी प्रकार सर्वत्र जान लेना चाहिए।

[2] गतिकारकसप्तम्युक्तानां विभक्त्यन्तानामेव कृदन्तैर्विभक्त्युत्पत्तेः प्रागेव समासः। अर्थात् गतिसंज्ञक, कारक एवं सप्तमी उक्त इन विभक्ति अन्तों का कृदन्त के साथ विभक्ति (अर्थात् स्यादि) की उत्पत्ति से पूर्व ही समास होता है। इस न्याय के अनुसार यहां कार शब्द कृदन्त है इसके साथ स्यादि विभक्ति जुड़े उससे पूर्व कुम्भ के साथ समास हो जाएगा। समास होने के बाद स्यादि विभक्तियां जुड़ेंगी।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष जिनश्रितवत्

प्रहार:

प्रहरणरम् लौ. वि.

प्र + हार अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से प्र उपसर्ग की गतिसंज्ञा एवं धातु से पूर्व रखने पर

गति: (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

प्रहार

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

प्रहार + सि

शेष जिनश्रितवत्

व्याघ्र:

वि अर्थात् विविधमाजिघ्रति लौ. वि.

वि + आघ्र अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से वि उपसर्ग की गति संज्ञा एवं धातु से पूर्व रखने पर

गति: (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

वि + आघ्र

इवर्णादीनां स्वरे यवरला: (269) सू. से इ का य्

व्य् + आघ्र

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर व्याघ्र

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

व्याघ्र + सि

शेष जिनश्रितवत्

427. कु: पापाल्पयोर्नित्यम्। (3/1/86)

पापे अल्पे चार्थे कुरिति नित्यं समस्यते स तत्पुरुषसमास: स्यात्। कुत्सितो ब्राह्मण: — कुब्राह्मण:।

पाप (अर्थात् निन्दा) और अल्प अर्थ में कु का (नाम के साथ) नित्य समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

कुब्राह्मण:

कुत्सित: ब्राह्मण: लौ. वि.

कु + ब्राह्मण + सि अ. वि.

कु: पापा ...... (427) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

428. को: कत्तत्पुरुषे। (3/2/102)

स्वरादावुत्तरपदे परे कुशब्दस्य कदादेश: स्यात्तत्पुरुषे। कुत्सितमन्नम् — कदन्नम्, कदश्व:।

तत्पुरुष समास में स्वरादि उत्तरपद परे होने पर कु को कत् आदेश होता है।

कदन्नम्

कुत्सितमन्नम् लौ. वि.

कु + अन्न + सि अ. वि.

कु: पापा ...... (427) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कु अन्न

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से कु को पूर्व में रखने पर

कुअन्न

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

को: ...... (428) सू. से कु को कत् आदेश

कत्अन्न

झसा जबा: (59) सू. से त् का द्

कद्अन्न

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर कदन्न

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

कदन्न + सि

शेष मासविकलवत्

कदश्व:

कुत्सित: अश्व: लौ. वि.

कु + अश्व + सि अ. वि.

कु: पापा ...... (427) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कु अश्व

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से कु को पूर्व में रखने पर

कुअश्व

को: ...... (428) सू. से कु को कत् आदेश

कत्अश्व

झसा ...... (59) सू. से त् का द्

कद्अश्व

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर कदश्व

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

कदश्व + सि

शेष जिनश्रितवत्

429. अल्पे। (3/2/106)

अल्पेऽर्थे कुशब्दस्य कादेश: स्यादुत्तरपदे परे। ईषन् मधुरम्—कामधुरम्।

अल्प अर्थ में कु को का आदेश होता है उत्तरपद परे होने पर।

कामधुरम्

ईषन् मधुरम् लौ. वि.

कु + मधुर + सि अ. वि.

कु: पापा ...... (427) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कु मधुर

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से कु को पूर्व में रखने पर

कुमधुर

अल्पे (429) सू. से कु को का आदेश

कामधुर

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

कामधुर + सि

शेष मासविकलवत्

430. पुरुषे वा। (3/2/107)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पुरुषशब्दे उत्तरपदे परे कुशब्दस्य का इत्यादेशो वा भवति। कुत्सितः पुरुषः—कापुरुषः, कुपुरुषः।

उत्तरपद में पुरुष शब्द परे होने पर कुशब्द को का आदेश विकल्प से होता है।

कापुरुषः

कुत्सितः पुरुषः लौ. वि.

कु + पुरुष + सि अ. वि.

कुः ...... (427) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कु पुरुष

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से कु को पूर्व में रखने पर

कुपुरुष

पुरुषे वा (430) सू. से विकल्प से कु को का आदेश

कापुरुष

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

कापुरुष + सि

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में जहां कु को का आदेश नहीं होगा वहां—

कुपुरुषः

कुत्सितः पुरुषः लौ. वि. से प्रथमोक्तं ...... (396) तक पूर्ववत् प्रक्रिया

कुपुरुष

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

कुपुरुष + सि

शेष जिनश्रितवत्

431. कवश्चोष्णे। (3/2/108)

कुशब्दस्य कव, का इत्यादेशौ वा स्तः उष्णे परे। पक्षे यथाप्राप्तम्। ईषदुष्णम्—कवोष्णम्, कोष्णम्, कदुष्णम्।

कु शब्द को कव और का आदेश विकल्प से होते हैं उष्ण परे होने पर।

कवोष्णम्, कोष्णम्

ईषदुष्णम् लौ. वि.

कु + उष्ण + सि अ. वि.

कुः पापा ...... (427) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कु उष्ण

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से कु को पूर्व में रखने पर

कुउष्ण

कव ...... (431) सू. से कु को विकल्प से कव और का आदेश

कवउष्ण

काउष्ण

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार एवं आकार का उकार के साथ ओ

कवोष्ण, कोष्ण

प्र. वि. के ए .व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कवोष्ण + सि

कोष्ण + सि

शेष मासविकलवत्

पक्ष में जहां कु को कव और का आदेश नहीं होंगे वहां—

कदुष्णम्

ईषदुष्णम् लौ. वि. से प्रथमोक्तं ...... (396) सूत्र तक पूर्ववत् प्रक्रिया

कुउष्ण

अल्पे (429) सू. से कु को कत् आदेश

कत्उष्ण

झसा...... (59) सू. से त् का द्

कद्उष्ण

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर कदुष्ण

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

कदुष्ण + सि

शेष मासविकलवत्

432. प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया। (3/1/92)

प्रादयः शब्दा गताद्यर्थे प्रथमान्तेन सह समस्यन्ते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। प्रगतः आचार्यः— प्राचार्यः, संगतोऽर्थः—समर्थः, विरुद्धः पक्षः—विपक्षः, प्रत्यर्थी पक्षः—प्रतिपक्षः इत्यादि।

प्र आदि शब्दों का गत आदि अर्थ में प्रथमान्त के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष समास है।

प्राचार्यः

प्रगतः आचार्यः लौ. वि.

प्र + आचार्य + सि अ. वि.

प्रादयो ...... (432) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

प्र आचार्य

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से को प्र को पूर्व में रखने पर

प्रआचार्य

समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ

प्राचार्य

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

प्राचार्य + सि

शेष जिनश्रितवत्

समर्थः

संगतोऽर्थः लौ. वि.

सम् + अर्थ + सि अ. वि.

प्रादयो ...... (432) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

सम् अर्थ

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से सम् को पूर्व में रखने पर

सम्अर्थ

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर समर्थ
प्र. वि. के ए. व .की विवक्षा में सि प्रत्यय
समर्थ + सि
शेष जिनश्रितवत्

विपक्षः

विरुद्धः पक्षः लौ. वि.
वि + पक्ष + सि अ. वि.
प्रादयो...... (432) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष जिनश्रितवत्

प्रतिपक्षः

प्रत्यर्थी पक्षः लौ. वि.
प्रति + पक्ष + सि अ. वि.
प्रादयो ...... (432) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष जिनश्रितवत्

433. अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया। (3/1/93)

अत्यादयः शब्दाः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयान्तेन सह समस्यन्ते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। अतिक्रान्तः खट्वामिति विग्रहे।

अति आदि शब्दों का क्रान्त आदि अर्थ में द्वितीयान्त (शब्दों) के साथ समास होता हैं और वह तत्पुरुषसमास है।

434. अन्यार्थे स्त्रीप्रत्ययगोरन्त्यस्याऽक्विपोऽनंशिसमासेयोबहुव्रीहौ। (2/3/115)

अन्यार्थे वर्तमानस्य अन्त्यस्य स्त्रीप्रत्ययस्य गोशब्दस्य च ह्रस्वादेशः स्यात् न तु क्विबन्तस्य न चेदंशिसमासान्त ईयस्वन्तबहुव्रीह्यन्तो वा स्यात्। अतिखट्वः। एवमतिमालः, अतिगङ्गः, प्रतिगतोऽक्षम् — प्रत्यक्षः इत्यादि।

अन्य अर्थ में रहे हुए अन्तिम स्त्री प्रत्यय एवं गो शब्द को ह्रस्व आदेश होता है यदि वह (शब्द) क्विप् प्रत्ययान्त, अंशिसमासान्त अथवा ईयसु प्रत्ययान्त बहुव्रीहि हो तो (ह्रस्व) नहीं होता है।

अतिखट्वः

अतिक्रान्तः खट्वाम् लौ. वि.
अति + खट्वा + अम् अ. वि.
अत्यादयः ...... (433) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अति खट्वा
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अति को पूर्व में रखने पर
अतिखट्वा
अन्यार्थे ...... (434) सू. से ह्रस्व
अतिखट्व
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
अतिखट्व + सि
शेष जिनश्रितवत्

अतिमालः

अतिक्रान्तः मालाम् लौ. वि.
अति + माला + अम् लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अत्यादयः ...... (433) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष अतिखट्ववत्

अतिगङ्गः

अतिक्रान्तः गङ्गाम् लौ. वि.
अति + गङ्गा + अम् अ. वि.
अत्यादयः ...... (433) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष अतिखट्ववत्

प्रत्यक्षः

प्रतिगतोऽक्षम् लौ. वि.
प्रति + अक्ष + अम् लौ. वि.
अत्यादयः ...... (433) सू. से समास और तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
प्रति अक्ष
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से प्रति को पूर्व में रखने पर
प्रतिअक्ष
इवर्णादीनां स्वरे यवरलाः (29) सू. से इकार को यकार
प्रत्य्अक्ष
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर प्रत्यक्ष
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
प्रत्यक्ष + सि
शेष जिनश्रितवत्

435. अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया। (3/1/94)

अवादयः शब्दाः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयान्तेन नाम्ना सह समस्यते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। अवक्रुष्टम् कोकिलया— अवकोकिलम्, अनुगतमर्थेन— अन्वर्थम्, संगतमक्षेण— समक्षम्, वियुक्तमर्थेन— व्यर्थम् इत्यादि।

अव आदि शब्दों का क्रुष्ट (अर्थात् कूजित) आदि अर्थों में तृतीयान्त नाम के साथ समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

अवकोकिलम्

अवक्रुष्टं कोकिलया लौ. वि.
अव + कोकिला + टा अ. वि.
अवादयः ...... (435) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अवकोकिला
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अव को पूर्व में रखने पर
अवकोकिला
अन्यार्थे...... (434) सू. से ह्रस्व
अवकोकिल
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
अवकोकिल + सि
शेष मासविकलवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अन्वर्थम्

अनुगतमर्थेन लौ. वि.

अनु + अर्थ + टा अ. वि.

अवादयः ...... (435) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अनु अर्थ

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अनु को पूर्व में रखने पर

अनुअर्थ

इवर्णादीनां ...... (29) सू. से उकार को वकार

अन्व्अर्थ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर अन्वर्थ

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अन्वर्थ + सि

शेष मासविकलवत्

समक्षम्

संगतमक्षेण लौ. वि.

सम् + अक्ष + टा अ. वि.

अवादयः ...... (435) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

सम अक्ष

प्रथमोक्तं ......(396) सू. से सम् को पूर्व में रखने पर

सम्अक्ष

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर समक्ष

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

समक्ष + सि

शेष मासविकलवत्

व्यर्थम्

वियुक्तमर्थेन लौ. वि.

वि + अर्थ + टा अ. वि.

अवादयः ...... (435) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

वि अर्थ

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से वि को पूर्व में रखने पर

विअर्थ

इवर्णादीनां ...... (29) सू. से इकार का यकार

व्य्अर्थ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर व्यर्थ

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

व्यर्थ + सि

शेष मासविकलवत्

436. पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या। (3/1/95)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पर्यादयः शब्दाः ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्यन्तेन नाम्ना सह समस्यन्ते, स तत्पुरुषसमास स्यात्। परिग्लानोऽध्ययनाय — पर्यध्ययनः, अलं कुमार्यै — अलंकुमारिः इत्यादि।

परि आदि शब्दों का ग्लान आदि अर्थ में चतुर्थी अन्त नाम के साथ समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

पर्यध्ययनः

परिग्लानोऽध्ययनाय लौ. वि.

परि + अध्ययन + ङे अ. वि.

पर्यादयो ...... (436) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष प्रत्यक्षवत्

अलंकुमारिः

अलं कुमार्यै लौ. वि.

अलम् + कुमारी + ङे अ. वि.

पर्यादयो ...... (436) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अलम् कुमारी

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अलम् को पूर्व में रखने पर

अलम्कुमारी

नाम ...... (131) सू. से अलम् की पदसंज्ञा

मोऽनुस्वारयमौ हसे सवर्णौ (77) सू. से मकार का अनुस्वार

अलंकुमारी

अन्यार्थे ...... (434) सू. से ह्रस्व

अलंकुमारि

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अलंकुमारि + सि, इकार उच्चारणार्थ

स्रोर्वि ...... (89) सू. से स् का विसर्ग करने पर अलंकुमारिः रूप सिद्ध हुआ।

437. निरादयो गताद्यर्थे पञ्चम्या। (3/1/96)

निरादयः शब्दाः गताद्यर्थे पञ्चम्यन्तेन सह समस्यन्ते स तत्पुरुषसमासः स्यात्। निर्गतः कौशाम्ब्याः — निष्कौशाम्बिः, अपगतः शाखायाः — अपशाखः, उत्क्रान्तं कुलात् — उत्कुलम्। एवमुच्छृंखलादयः।

निर् आदि शब्दों का गत आदि अर्थ में पञ्चमी अन्त (शब्दों) के साथ समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

निष्कौशाम्बिः

निर्गतः कौशाम्ब्याः लौ. वि.

निर् + कौशाम्बी + ङसि अ. वि.

निरादयो ...... (437) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

निर् कौशाम्बी

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से निर् को पूर्व में रखने पर

निर्कौशाम्बी

स्रोर्वि ...... (89) सू. से र् का विसर्ग

निःकौशाम्बी

निर्दुर्बहिराविःप्रादुश्चतुराम् (भिक्षु. 2/2/8) सू. से विसर्ग का ष्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

निष्कौशाम्बी

अन्यार्थे ...... (434) सू. से ह्रस्व

निष्कौशाम्बि

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

निष्कौशाम्बि + सि, इकार उच्चारणार्थ

स्त्रोर्वि ...... (89) सू. से स् का विसर्ग करने पर निष्कौशाम्बिः रूप सिद्ध हुआ।

अपशाखः

अपगतः शाखायाः लौ. वि.

अप + शाखा + ङसि अ. वि.

निरादयो ...... (437) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष अतिखट्ववत्

उत्कुलम्

उत्क्रान्तं कुलात् लौ. वि.

उद् + कुल + ङसि अ. वि.

निरादयो ...... (437) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

उद् कुल

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से उद् को पूर्व में रखने पर

उद्कुल

खसे ...... (72) सू. से द् का त्

उत्कुल

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

उत्कुल + सि

शेष मासविकलवत्

उच्छृङ्खलः

उत्क्रान्तः शृङ्खलायाः लौ. वि.

उद् + शृंखला + ङसि अ. वि.

निरादयो ...... (437) सू. से समास एवं तत्पुरुषमसास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

उद् शृङ्खला

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से उद् को पूर्व में रखने पर

उद्शृङ्खला

अन्यार्थे ...... (434) सू. से ह्रस्व

उद्शृङ्खल

खसे ...... (72) सू. से द् का त्

उत्शृङ्खल

चपाच्छश्छोऽमे वा (73) सू. से श् का छ्

उच्छृङ्खल

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

उच्छृङ्खल + सि

शेष जिनश्रितवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

438. पूर्वापराधरोत्तरमभिन्नेनांशिना। (3/1/35)

पूर्वादयः शब्दा अभिन्नेनांशिना सह वा समस्यन्ते तत्पुरुषश्च समासः स्यात्। पूर्वः कायस्य — पूर्वकायः। एवमपरकायः, अधरकायः, उत्तरकायः। अभिन्नेनेति किम् — पूर्वश्छात्राणाम्।

पूर्व आदि (अर्थात् पूर्व, अपर, अधर, उत्तर) शब्दों का अभिन्न अंशी के साथ विकल्प से समास होता है और वह तत्पुरुषसमास है।

पूर्वकायः

पूर्वः कायस्य लौ. वि.

पूर्व + सि + काय + ङस् अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

पूर्वापर ...... (438) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहां — पूर्वः कायस्य।

अपरकायः

अपरः कायस्य लौ. वि.

अपर + सि + काय + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

पूर्वापर ...... (438) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहां अपरः कायस्य।

अधरकायः

अधरः कायस्य लौ. वि.

अधर + सि + काय + ङस् अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

पूर्वापर ...... (438) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहां अधरः कायस्य।

उत्तरकायः

उत्तरः कायस्य लौ. वि.

उत्तर + सि + काय + ङस् अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

पूर्वापर ...... (438) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहां उत्तरः कायस्य।

अभिन्न अंशी के साथ समास होता है ऐसा क्यों? पूर्वश्छात्राणाम्। एक छात्र दूसरे छात्र से भिन्न होता है अतः अभिन्न नहीं होने से प्रस्तुत उदाहरण में समास नहीं होगा।

439. अर्धं समेंऽशे वा। (3/1/37)

समांशवाच्यर्धशब्दो वा समस्यन्ते समासश्च प्राग्वत्। अर्धं पिप्पल्याः — अर्धपिप्पली। पक्षे पिप्पल्यर्धमिति षष्ठीसमासोऽपि। समेंऽशे इति किम् — ग्रामार्धः।

सम अंश वाची अर्ध शब्द का विकल्प से समास होता है और वह समास पूर्ववत् (अर्थात् तत्पुरुष) है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अर्धपिप्पली

अर्धं पिप्पल्याः लौ. वि.

अर्ध + सि + पिप्पली + ङस् अ. वि.

अर्धं ...... (439) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अर्ध पिप्पली

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अर्ध को पूर्व में रखने पर

अर्धपिप्पली

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अर्धपिप्पली + सि

हसेपः ...... (183) सू. से सि प्रत्यय का लोप करने पर अर्धपिप्पली रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में जहां अर्धं ...... (439) सू. से समास नहीं होगा वहां

पिप्पल्यर्धम्

पिप्पल्याः अर्धम् लौ. वि.

पिप्पली + ङस् + अर्ध + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पिप्पली अर्ध

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से पिप्पली को पूर्व में रखने पर

पिप्पलीअर्ध

इवर्णदीनां ...... (29) सू. से ईकार का यकार

पिप्पल्य्अर्ध

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पिप्पल्यर्ध

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पिप्पल्यर्ध + सि

शेष मासविकलवत्

सम अंशवाची अर्ध शब्द हो ऐसा क्यों? ग्रामार्धः। समांशवाची अर्ध शब्द नपुंसकलिंग होता है। केवल अंशवाची अर्ध शब्द पुल्लिंग होता है। ग्रामार्धः इस उदाहरण में अर्ध शब्द पुल्लिंग होने के कारण अंशवाची है समांशवाची नहीं। अतः अर्धं......(439) सू. से समास नहीं होगा।

ग्रामार्धः

ग्रामस्य अर्धः लौ. वि.

ग्राम + ङस् + अर्ध + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

440. सायाह्नादयः। (3/1/36।)

एते कृततत्पुरुषसमासा निपात्यन्ते। सायमह्नः — सायाह्नः, मध्याह्नः, मध्यरात्र इत्यादि।

जिसमें तत्पुरुष समास किया है ऐसे सायाह्न आदि शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं।

सायाह्नः

सायमह्नः लौ. वि.

साय + सि + अहन् + ङस् अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सायाह्नादय: (440) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
साय अहन्
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से साय को पूर्व में रखने पर
सायअहन्
समानानां ...... (36) सू. से अकार का अकार के साथ दीर्घ
सायाहन्
सर्वांश ...... (457) सू. से समासान्त ट प्रत्यय एवं अहन् शब्द को अह्न आदेश
सायाह्न + ट, ट् अनुबन्ध
सायाह्न + अ
तदन्तं पदम् (23) सू. से पदसंज्ञा की प्राप्ति किन्तु
वृत्यन्त: (405) सू. से अन्तिम की पदसंज्ञा का निषेध
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
सायाह्न् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर सायाह्न
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
सायाह्न + सि
शेष जिनश्रितवत्

मध्याह्न:

मध्यमह्न: लौ. वि.
मध्य + सि + अहन् + ङस् अ. वि.
षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
सायाह्ना ...... (440) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष सायाह्नवत्

मध्यरात्र:

मध्यं रात्रे: लौ. वि.
मध्य + सि + रात्रि + ङस् अ. वि.
षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
सायाह्ना ...... (440) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
मध्य रात्रि
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से मध्य को पूर्व में रखने पर
मध्यरात्रि
सर्वांश ...... (459) सू. से समासान्त अ प्रत्यय
मध्यरात्रि + अ
तदन्तं पदम् (23) सू. से पदसंज्ञा की प्राप्ति किन्तु
वृत्यन्त: (405) सू. से अन्तिम की पदसंज्ञा का निषेध
इवर्णा ...... (451) सू. से इकार का लोप
मध्यरात्् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर मध्यरात्र

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

मध्यरात्र + सि

शेष जिनश्रितवत्

441. विशेषणं विशेष्येण तुल्यार्थे कर्मधारयश्च। (3/1/100)

विशेषणवाचि नाम विशेष्यवाचिनाम्ना सह तुल्यार्थे वा समस्यन्ते स कर्मधारयः तत्पुरुषश्च समासः स्यात्। नीलं च तद् उत्पलं च नीलोत्पलम्। एवं रक्तकम्बलः।

विशेषणवाची नाम का विशेष्यवाची नाम के साथ तुल्यार्थ[1] (अर्थात् समान आधार) होने पर विकल्प से समास होता है और वह कर्मधारय एवं तत्पुरुषसमास है।

नीलोत्पलम्

नीलं च तद् उत्पलं च अथवा नीलमुत्पलम् लौ. वि.

नील + सि + उत्पल + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नील उत्पल

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से विशेषण को पूर्व में रखने पर

नीलउत्पल

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का उकार के साथ ओकार

नीलोत्पल

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

नीलोत्पल + सि

शेष मासविकलवत्

पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहां—नीलं च तद् उत्पलं च अथवा नीलमुत्पलम्।

रक्तकम्बलः

रक्तः च सः कम्बलः च अथवा रक्तः कम्बलः लौ. वि.

रक्त + सि + कम्बल + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहां रक्तः च सः कम्बलः च अथवा रक्तः कम्बलः।

442. पुंवत् कर्मधारये। (3/2/61)

भाषितपुंस्कादनूङः स्त्रियाः पुंवत् स्यात् कर्मधारये। एका शाटी—एकशाटी, रक्तलता, ब्राह्मणभार्या, चन्द्रमुखभार्या।

कर्मधारय (समास) में ऊङ् (प्रत्ययान्त) वर्जित भाषितपुंस्क[1] स्त्रीलिंग को पुवंत् हो जाता

एकशाटी

एका च सा शाटी च अथवा एका शाटी लौ. वि.

एका + सि + शाटी + सि अ. वि.

विशेषणं...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास...... (395) सू. से विभ. का लुक्

---

[1] भिन्नप्रवृत्तिनिमित्तयोः शब्दयोरेकस्मिन्नर्थे वृत्तिस्तत् तुल्यार्थम्।
भिन्न-भिन्न प्रवृत्ति के निमित्त दो शब्दों का एक पदार्थ में रहना तुल्यार्थ है।

[1] जिस प्रवृत्तिनिमित्त को लेकर शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है उसी प्रवृत्ति निमित्त से वही शब्द नपुंसक लिङ्ग अथवा स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है तो वह भाषितपुंस्क कहलाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एका शाटी
प्रथमोक्तं...... (396) सू. से एका को पूर्व में रखने पर
एकाशाटी
पुवंत्...... (442) सू. से एका को पुल्लिंगवत्
एकशाटी
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
एकशाटी + सि
शेष अर्धपिप्पलीवत्
पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहाँ एका शाटी।

रक्तलता

रक्ता च सा लता च अथवा रक्ता लता लौ. वि.
रक्ता + सि + लता + सि अ. वि.
विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
रक्ता लता
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से विशेषण (रक्ता) को पूर्व में रखने पर
रक्तालता
पुवंत् ...... (442) सू. से (रक्ता को) पुवंत्
रक्तलता
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
रक्तलता + सि
शेष घटमृत्तिकावत्
पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहाँ रक्ता च सा लता च अथवा रक्ता लता।

ब्राह्मणभार्या

ब्राह्मणी च सा भार्या च अथवा ब्राह्मणी भार्या लौ. वि.
ब्राह्मणी + सि + भार्या + सि अ. वि.
विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष रक्तलतावत्
पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहाँ ब्राह्मणी च सा भार्या च अथवा ब्राह्मणी भार्या।

चन्द्रमुखभार्या

चन्द्रमुखी च सा भार्या च अथवा चन्द्रमुखी भार्या लौ. वि.
चन्द्रमुखी + सि + भार्या + सि अ. वि.
विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष रक्तलतावत्
पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहाँ चन्द्रमुखी च सा भार्या च अथवा चन्द्रमुखी भार्या।

443. अच्वेस्तुल्यार्थजातीययोः। (3/2/71)

अच्व्यन्तस्य महच्छब्दस्य डा इत्यादेशः स्यात् तुल्यार्थे जातीयप्रत्यये च परे। महावीरः, महापुरुषः, महादेवः। अच्वेरिति किम्—अमहान्महान्भूतो महद्भूतश्चन्द्रमाः।

च्वि अन्त वर्जित महत् शब्द को डा होता है तुल्यार्थ (समान विभक्ति) होने पर अथवा जातीय प्रत्यय परे होने पर।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

महावीरः

महान् चासौ वीरः च अथवा महान् वीरः लौ. वि.

महत् + सि + वीर + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

महत् वीर

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से महत् को पूर्व में रखने पर

महत्वीर

षष्ठ्यान्त्यस्य (41) सू. की सहायता से

अच्वे ...... (443) सू. से त् को डा

महडावीर

अन्त्य ...... (18) सू. से अ की टि संज्ञा

डिति टेः (146) सू. से टिसंज्ञक वर्ण का लोप

मह्आवीर

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर महावीर

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

महावीर + सि

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहाँ महान् चासौ वीरः च अथवा महान् वीरः।

महापुरुषः

महान् चासौ पुरुषः च अथवा महान् पुरुषः लौ. वि.

महत् + सि + पुरुष + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष महावीरवत्

पक्ष में जहां समास नहीं होगा वहाँ महान् चासौ पुरुषः च अथवा महान् पुरुषः।

महादेवः

महान् चासौ देवः च अथवा महान् देवः लौ. वि.

महत् + सि + देव + सि अ. वि.

विशेषणं...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष महावीरवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—महान् चासौ देवः च अथवा महान् देवः।

च्वि अन्त वर्जित क्यों कहा? अमहान्महान्भूतो महद्भूतश्चन्द्रमाः। इस उदाहरण में महद्भूतः पद में महत् च्वि प्रत्ययान्त होने के कारण त् को डा नहीं होगा।

444. शाकपार्थिवादीनां मध्यमपदलोपश्च। (3/1/110)

एषां मध्यमपदस्य लोपः स्यात् कर्मधारयश्च समासः। शाकप्रियः पार्थिवः—शाकपार्थिवः, देवानां पूजको ब्राह्मणः—देवब्राह्मणः।

शाकपार्थिव आदि के मध्यमपद का लोप होता है और वह कर्मधारयसमास है।

शाकपार्थिवः

शाकः प्रियः यस्य सः लौ. वि.

शाक + सि + प्रिय + सि अ. वि.

तुल्यार्थं चानेकं च (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
शाक प्रिय
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से शाक को पूर्व में रखने पर
शाकप्रिय
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
शाकप्रिय + सि
शेष जिनश्रितवत्
शाकप्रियः पार्थिवः लौ. वि.
शाकप्रिय + सि + पार्थिव + सि अ. वि.
विशेषणं...... (441) सू. से समास
समास...... (395) सू. से विभ. का लुक्
शाकप्रिय पार्थिव
प्रथमोक्तं...... (396) सू. से शाकप्रिय को पूर्व में रखने पर
शाकप्रियपार्थिव
शाक...... (444) सू. से मध्यम पद का लोप एवं कर्मधारयसमास संज्ञा
शाकपार्थिव
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
शाकपार्थिव + सि
शेष जिनश्रितवत्

देवब्राह्मणः

देवानां पूजकः लौ. वि.
देव + आम् + पूजक + सि अ. वि.
षष्ठ्य ...... (414) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
देव पूजक
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से देव को पूर्व में रखने पर
देवपूजक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
देवपूजक + सि
शेष जिनश्रितवत्
देवपूजको ब्राह्मणः लौ. वि.
देवपूजक + सि + ब्राह्मण + सि अ. वि.
विशेषणं ...... (441) सू. से समास
शेष शाकपार्थिववत्

445. कुत्सितानि कुत्सनैरपापाद्यैः। (3/1/102)

कुत्सितवाचि नाम पापादिवर्जितैः कुत्सनवाचिभिः सह तुल्यार्थे वा समस्यते कर्मधारयश्च समासः स्यात्। मुनिश्चासौ धूर्तश्च — मुनिधूर्तः, क्षत्रियभीरुः, वैयाकरणखसूचिः। अपापाद्यैरिति किम् — पापवैयाकरणः, दुष्टामात्यः, क्षुद्रतापसः।

कुत्सितवाची नाम, पाप आदि वर्जित कुत्सनवाची नाम के साथ तुल्यार्थ (समान विभक्ति) होने पर विकल्प से समास होता है और (वह) कर्मधारयसमास है।

मुनिधूर्तः

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मुनिश्चासौ धूर्तश्च लौ. वि.

मुनि + सि + धूर्त + सि अ. वि.

कुत्सितानि ...... (445) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—मुनिश्चासौ धूर्तश्च।

क्षत्रियभीरुः

क्षत्रियश्चासौ भीरुश्च लौ. वि.

क्षत्रिय + सि + भीरु + सि अ. वि.

कुत्सितानि ...... (445) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—क्षत्रियश्चासौ भीरुश्च।

वैयाकरणखसूचिः

वैयाकरणश्चासौ खसूचिश्च लौ. वि.

वैयाकरण + सि + खसूचि + सि अ. वि.

कुत्सितानि ...... (445) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—वैयाकरणश्चासौ खसूचिश्च।

पापादि शब्दों को क्यों छोड़ा? पापवैयाकरणः, दुष्टामात्यः, क्षुद्रतापसः—इन उदाहरणों में पाप, दुष्ट एवं क्षुद्र शब्द पापादि हैं अतः इन उदाहरणों में कुत्सितानि ...... (445) सू. से समास नहीं होगा।

पापवैयाकरणः

पापश्चासौ वैयाकरणः च अथवा पापः वैयाकरणः लौ. वि.

पाप + सि + वैयाकरण + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—पापश्चासौ वैयाकरणः च अथवा पापः वैयाकरणः।

दुष्टामात्यः

दुष्टश्चासौ अमात्यः च अथवा दुष्टः अमात्यः लौ. वि

दुष्ट + सि + अमात्य + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—दुष्टश्चासौ अमात्यः च अथवा दुष्टः अमात्यः।

क्षुद्रतापसः

क्षुद्रश्चासौ तापसः च अथवा क्षुद्रः तापसः लौ. वि.

क्षुद्र + सि + तापस + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—क्षुद्रश्चासौ तापसः च अथवा क्षुद्रः तापसः।

446. उपमानानि सामान्यैः। (3/1/103)

उपमानोपमेययोः साधारणो धर्मः सामान्यम्। उपमानवाचि नाम सामान्यवाचिभिर्नामभिः सह वा समस्यते समासश्च पूर्ववत्। घन इव श्यामः — घनश्यामः, मृगचपला। सामान्यैरिति किम् — अग्निरिव माणवकः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

उपमान और उपमेय का साधारण धर्म सामान्य कहलाता है। उपमानवाची नाम का सामान्यवाची नाम के साथ विकल्प से समास होता है। वह कर्मधारय और तत्पुरुषसमास है।

घनश्याम:

घन इव श्याम: लौ. वि.

घन + सि + श्याम + सि अ. वि.

उपमानानि ...... (446) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—घन इव श्याम:।

मृगचपला

मृग इव चपला लौ. वि.

मृग + सि + चपला + सि अ. वि.

उपमानानि ...... (446) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष घटमृत्तिकावत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—मृग इव चपला।

सामान्यवाची नाम के साथ समास होता है ऐसा क्यों? अग्निरिव माणवक:। यहां केवल उपमेय (माणवक:) उपमान (अग्नि) उपमावाची (इव) का उल्लेख है किन्तु सामान्य धर्म का उल्लेख नहीं अत: उपमानानि ...... (446) सू. से समास नहीं होगा।

447. उपमेयानि व्याघ्रादिभि: सामान्याप्रयोगे। (3/1/104)

उपमेयवाचीनि नामानि उपमानवचिभि: व्याघ्रादिभि: सह वा समस्यन्ते सामान्याप्रयोगे कर्मधारयश्च समास: स्यात्।

पुरुषो व्याघ्र इव—पुरुषव्याघ्र:, पुरुषसिंह:, पुरुषवृषभ:। सामान्याप्रयोगे इति किम्—पुरुषो व्याघ्र इव शूर:।

उपमेयवाची नाम का उपमानवाची व्याघ्र आदि के साथ विकल्प से समास होता है सामान्य (अर्थात् साधारण) धर्म का प्रयोग नहीं करने पर और वह कर्मधारय (एवं तत्पुरुष) समास है।

पुरुषव्याघ्र:

पुरुषो व्याघ्र इव लौ. वि.

पुरुष + सि + व्याघ्र + सि अ. वि.

उपमेयानि ...... (447) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—पुरुषो व्याघ्र इव।

पुरुषसिंह:

पुरुष: सिंह इव लौ. वि.

पुरुष + सि + सिंह + सि अ. वि.

उपमेयानि ...... (447) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—पुरुष: सिंह इव।

पुरुषवृषभ:

पुरुषो वृषभ इव लौ. वि.

पुरुष + सि + वृषभ + सि अ. वि.

उपमेयानि ...... (447) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारयसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — पुरुषो वृषभ इव।

सामान्य धर्म का प्रयोग न हो ऐसा क्यों? पुरुषो व्याघ्र इव शूरः। इस उदाहरण में उपमान और उपमेय के सामान्य धर्म शूर का प्रयोग किया है अतः यहां पुरुष और व्याघ्र का समास नहीं होगा।

448. अधिकं च तद्धितोत्तरपदसमाहारेषु। (3/1/23)

तद्धितविषये उत्तरपदे च परतः समाहारे च वाच्ये अधिकशब्दो दिक्संख्ये च तुल्यार्थे वा समस्यन्ते समासश्च प्राग्वत्। अधिकया षष्ट्या क्रीतः अधिकषाष्टिकः। पूर्वस्यां शालायां भवः पौर्वशालः।

तद्धित विषय में, उत्तर पद परे होने पर और समाहार प्रकट होने पर अधिक शब्द, दिशावाची एवं संख्यावाची (शब्द) का तुल्यार्थ (समान विभक्ति) होने पर विकल्प से समास होता हैं और वह कर्मधारयसमास है।

तद्धित विषय में अधिक शब्द के साथ समास

अधिकषाष्टिकः

अधिकया षष्ट्या क्रीतः लौ. वि.

अधिक + टा + षष्टि + टा अ. वि.

अधिकं च ...... (सू.) से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अधिक षष्टि

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अधिक शब्द को पूर्व में रखने पर

अधिकषष्टि

मूल्यैः क्रीते (617) सू. से इकण् प्रत्यय

अधिकषष्टि + इकण्

मान-संवत्सरस्याऽशाण-कुलिजस्याऽसंज्ञायाम् (भिक्षु. 8/4/10) सू. से षष्टि के आदि स्वर की वृद्धि

अधिकषाष्टि + इकण्, ण् अनुबन्ध

तदन्तं ...... (23) सू. से अधिक एवं षष्टि की पदसंज्ञा की प्राप्ति किन्तु

वृत्त्यन्तः ...... (405) सू. से अन्तिम की पदसंज्ञा का निषेध

इवर्णावर्णस्य (451) सू. से इकार का लोप

अधिकषाष्ट् + इक

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर अधिकषाष्टिक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अधिकषाष्टिक + सि

शेष जिनश्रितवत्

तद्धित विषय में दिशावाची शब्द के साथ समास

पौर्वशालः

पूर्वस्यां शालायां भवः लौ. वि.

पूर्वा + ङि + शाला + ङि अ. वि.

अधिकं च ...... (448) सू. से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पूर्वा शाला

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से पूर्वा को पूर्व में रखने पर

पूर्वाशाला

पुवंत् ...... (442) सू. से पूर्वा को पुंवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पूर्वशाला

भवे (594) सू. से अण् प्रत्यय

पूर्वशाला + अण्, ण् अनुबन्ध

वृद्धिः स्वराणामादेर्ञ्णिति तद्धिते (519) सू. से आदिस्वर की वृद्धि

पौर्वशाला + अ

तदन्तं ...... (23) सू. से पौर्व एवं शाला की पदसंज्ञा की प्राप्ति किन्तु

वृत्यन्तः ...... (405) सू. से अन्तिम की पदसंज्ञा का निषेध

इवर्णावर्णस्य (451) सू. से आकार का लोप

पौर्वशाल् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पौर्वशाल

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पौर्वशाल + सि

शेष जिनश्रितवत्

449 संख्यापूर्वो द्विगुश्च। (3/1/124)

पूर्वसूत्रोक्तः संख्यापूर्वः समासः द्विगुसंज्ञकोऽपि स्यात्। पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः पञ्चकपालः। अधिकं धनं प्रियं यस्य सः अधिकधनप्रियः। एवं पूर्वराष्ट्रप्रियः। पञ्चग्रामधनः। अनेकस्य कथंचिदेकत्वं समाहारः। समाहारे दिगधिकौ न संभवतः। पञ्चानां पात्राणां समाहारः पञ्चपात्रम्।

पूर्व सूत्र में कहे गए विषय में (अर्थात् तद्धित विषय में, उत्तरपद परे होने पर एवं समाहार प्रकट होने पर) जिसके संख्या पूर्व में है वह समास द्विगुसंज्ञक भी होता है।

तद्धित विषय में संख्यावाची शब्द के साथ समास

पञ्चकपालः

पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः लौ. वि.

पञ्चन् + सुप् + कपाल + सुप् अ. वि.

अधिकं च ...... (448) सू. से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

संख्यापूर्वो ...... (449) सू. से द्विगुसमास संज्ञा भी करने पर

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पञ्चन् कपाल

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से पञ्चन् को पूर्व में रखने पर

पञ्चन्कपाल

नाम्नो ...... (135) सू. से न् का लोप

पञ्चकपाल

सस्कृते भक्ष्ये (567) सू. से अण् प्रत्यय

पञ्चकपाल + अण्, ण् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदिस्वर की वृद्धि

पाञ्चकपाल + अ

तदन्तं ...... (23) सू. से पाञ्च एवं कपाल की पदसंज्ञा की प्राप्ति किन्तु

वृत्यन्तः ...... (405) सू. से अन्तिम की पदसंज्ञा का निषेध

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

पाञ्चकपाल् + अ

द्विगो ...... (568) सू. से अण् का लुक्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः[1] न्याय से वृद्धि एवं अकारलोप का अभाव

पञ्चकपाल

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पञ्चकपाल + सि

शेष जिनश्रितवत्

उत्तर पद परे होने पर अधिक शब्द के साथ समास

अधिकधनप्रियः

अधिकं धनं प्रियं यस्य सः लौ. वि.

अधिक + सि + धन + सि + प्रिय + सि अ. वि.

अधिकं च ...... (448) सू. से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

उत्तर पद परे होने पर दिशावाची के साथ समास

पूर्वराष्ट्रप्रियः

पूर्वं राष्ट्रं प्रियं यस्य सः लौ. वि.

पूर्व + सि + राष्ट्र + सि + प्रिय + सि अ. वि.

अधिकं च ...... (448) सू. से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

उत्तर पद परे होने पर संख्यावाची के साथ समास

पञ्चग्रामधनः

पञ्च ग्रामाः धनं यस्य सः लौ. वि.

पञ्चन् + जस् + ग्राम + जस् + धन + सि अ. वि.

अधिकं च ...... (448) सू. से समास एवं कर्मधारयसमास संज्ञा

संख्यापूर्वो ...... (449) सू. से द्विगुसमास संज्ञा भी करने पर

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पञ्चन् ग्राम धन

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से पञ्चन् को पूर्व में रखने पर

पञ्चन्ग्रामधन

नाम्नो ...... (135) सू. से न् का लोप

पञ्चग्रामधन

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पञ्चग्रामधन + सि

शेष जिनश्रितवत्

समाहार में दिशावाची एवं अधिक शब्द नहीं होते हैं अतः इनके साथ समास नहीं होगा।

समाहार में संख्यावाची के साथ समास

पञ्चपात्रम्

पञ्चानां पात्राणां समाहारः लौ. वि.

पञ्चन् + आम् + पात्र + आम् लौ. वि.

अधिकं च ...... (448) सू. से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

संख्यापूर्वो ...... (449) सू. से द्विगुसमास संज्ञा भी करने पर

[1] निमित्त (अर्थात् कारण) का अभाव होने पर नैमित्तिक (अर्थात् कार्य) का भी अभाव हो जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पञ्चन् पात्रम्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से पञ्चन् को पूर्व में रखने पर

पञ्चन्पात्रम्

नाम्नो ...... (135) सू. से पञ्चन् के नकार का लोप

पञ्चपात्र

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पञ्चपात्र + सि

शेष मासविकलवत्

450 सखेष्टः। (8/3/6)

सखिशब्दान्तात्तत्पुरुषाट्टः स्यात्।

सखि शब्दान्त तत्पुरुष से ट (प्रत्यय) होता है।

451 इवर्णावर्णस्य। (8/4/71)

इवर्णस्य अवर्णस्य चाऽपदसंज्ञकस्य लोपः स्यात् तद्धिते परे। राजसखः, महासखः, पञ्चसखः।

अपद संज्ञक इवर्ण और उवर्ण का लोप होता है तद्धित परे होने पर।

राजसखः

राजा चासौ सखा च लौ. वि.

राजन् + सि + सखि + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

राजन् सखि

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से राजन् को पूर्व में रखने पर

राजन्सखि

नाम्नो ...... (135) सू. से न् का लोप

राजसखि

सखेष्टः (450) सू. से समासान्त ट प्रत्यय

राजसखि + ट, ट् अनुबन्ध

तदन्तं पदम् (23) सू. से दोनों (राज एवं सखि) के पदसंज्ञा की प्राप्ति किन्तु

वृत्त्यन्तः (405) सू. से अन्तिम की पदसंज्ञा का निषेध

इवर्णा ...... (451) सू. से इकार का लोप

राजसख् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर राजसख

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

राजसख + सि

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—राजा चासौ सखा च।

राजसखः

राज्ञां सखा लौ. वि.

राजन् + आम् + सखि + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष राजसखवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — राज्ञां सखा।

महासख:

महान् चासौ सखा च लौ. वि.

महत् + सि + सखि + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से महत् को पूर्व में रखने पर

महत्सखि

षष्ठ्या ...... (46) सू. की सहायता से

अच्वे ...... (443) सू. से त् के स्थान पर डा

महडासखि, ड् अनुबन्ध

अन्त्य ...... (18) सू. से अ की टि संज्ञा

डिति ...... (146) सू. से टिसंज्ञक वर्ण का लोप

मह्आसखि

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर महासखि

सखेष्ट: (450) सू. से समासान्त ट प्रत्यय

महासखि + ट

शेष राजसखवत्

पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — राजा चासौ सखा च।

महासख:

महतां सखा लौ. वि.

महत् + आम् + सखि + सि अ. वि.

षष्ठ्य...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष महासखवत्

पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — महतां सखा।

पञ्चसख:

पञ्चानां सखीनां समाहार: लौ. वि.

पञ्चन् + आम् + सखि + आम् अ. वि.

अधिकं च ...... (448) सू. से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

संख्यापूर्वो ...... (449) सू. से द्विगुसमास संज्ञा भी करने पर

शेष राजसखवत्

452 राज्ञोऽस्त्रियाम्। (8/3/7)

राजन्शब्दान्तात् तत्पुरुषात् ट: स्यात् न तु स्त्रियाम्। देवराज:, महाराज:। अस्त्रियामिति किम् — महाराज्ञी।

स्त्रीलिंग को छोड़कर राजन् शब्दान्त तत्पुरुष से ट (प्रत्यय) होता है।

देवराज:

देवश्चासौ राजा च लौ. वि.

देव + सि + राजन् + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

देव राजन्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से देव शब्द को पूर्व में रखने पर

देवराजन्

राज्ञो ...... (452) सू. से समासान्त ट प्रत्यय

देवराजन् + ट, ट् अनुबन्ध

देवराजन् + अ

तदन्तं पदम् (23) सू. से देव एवं राजन् की पद संज्ञा की प्राप्ति किन्तु

वृत्यन्तः (405) सू. से अन्तिम की पद संज्ञा का निषेध

अन्त्य ...... (18) सू. से अन् की टि संज्ञा

नोऽपदस्य ...... (406) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप

देवराज् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों के मिलाने पर देवराज

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

देवराज + सि

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—देवश्चासौ राजा च।

देवराजः

देवानां राजा लौ. वि.

देव + आम् + राजन् + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुष और कर्मधारयसमास संज्ञा

शेष देवराजवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—देवानां राजा।

महाराजः

महान् चासौ राजा च लौ. वि.

महत् + सि + राजन् + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुष और कर्मधारयसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

महत् राजन्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से महत् को पूर्व में रखने पर

महत्राजन्

षष्ठ्या ...... (46) सू. की सहायता से

अच्वे ...... (443) सू. से त् का डा

महडाराजन्, ड् अनुबन्ध

अन्त्य ...... (18) सू. से अ की टि संज्ञा

डिति ...... (146) सू. से टिसंज्ञक वर्ण का लोप

मह्आराजन्

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर महाराजन्

राज्ञो ...... (452) सू. से समासान्त ट प्रत्यय

महाराजन् + ट, ट् अनुबन्ध

अन्त्य ...... (18) सू. से अन् की टि संज्ञा

नोऽपदस्य ...... (406) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप

महाराज् + अ

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर महाराज
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
महाराज + सि
शेष जिनश्रितवत्
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — महान् चासौ राजा च।

महाराजः

महतां राजा लौ. वि.
महत् + आम् + राजन् + सि अ. वि.
विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष महाराजवत्
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — महतां राजा।

स्त्रीलिंग को क्यों छोड़ा? महाराज्ञी। इस उदाहरण में राज्ञी शब्द स्त्रीलिंग है अतः राज्ञो ...... (452) सू. से समासान्त ट प्रत्यय नहीं होगा।

महाराज्ञी

महती चासौ राज्ञी च लौ. वि.
महती + सि + राज्ञी + सि अ. वि.
विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
महती राज्ञी
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से महती को पूर्व में रखने पर
महतीराज्ञी
पुंवत् ...... (442) सू. से महती को पुंवत्
महत्राज्ञी
अच्वे ...... (443) सू. से त् का डा
महडाराज्ञी, ड् अनुबन्ध
अन्त्य ...... (18) सू. से अकार की टिसंज्ञा
डिति ...... (146) सू. से टिसंज्ञक वर्ण का लोप
मह्आराज्ञी
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर महाराज्ञी
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
महाराज्ञी + सि
शेष अर्धपिप्पलीवत्
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — महती चासौ राज्ञी च।

महाराज्ञी

महतां राज्ञी लौ. वि.
महत् + आम् + राज्ञी + सि अ. वि.
षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष महाराज्ञीवत्
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — महतां राज्ञी।

453 किं क्षेपे। (3/1/114)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

किम्शब्दस्तुल्यार्थे नाम्ना सह समस्यते क्षेपे तत्पुरुषकर्मधारयश्च समासः स्यात्। को राजा इति विग्रहे — समासान्ते टे प्राप्ते।

निन्दा अर्थ में किम् शब्द का तुल्यार्थ (अर्थात् समान विभक्ति) होने पर नाम के साथ समास होता है और वह तत्पुरुष एवं कर्मधारयसमास है।

454 न किमः क्षेपे। (8/3/2)

क्षेपे वर्तमानात् किम्शब्दात् परः समासान्तो न स्यात्। किंराजा यो न रक्षति। एवं किंसखा योऽभिद्रुह्यति। क्षेपे इति किम् — केषां राजा किंराजः, किंसखः।

निन्दा अर्थ में रहे हुए किम् शब्द से परे समासान्त (ट प्रत्यय) नहीं होता है।

किंराजा यो न रक्षति

को राजा लौ. वि.

किम् + सि + राजन् + सि अ. वि.

किं ...... (453) सू. से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

किम् राजन्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से किम् को पूर्व में रखने पर

किम्राजन्

मोऽनुस्वार ...... (77) सू. से मकार का अनुस्वार

किंराजन्

राज्ञो ...... (452) सू. से समासान्त ट प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु

न किमः ...... (454) सू. से निषेध

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

किराजन् + सि

शेष तीर्थश्वावत्

किंसखा योऽभिद्रुह्यति

कः सखा लौ. वि.

किम् + सि + सखि + सि अ. वि.

किं ...... (453) सू. से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

किम् सखि

प्रथमोक्तं...... (395) सू. से किम् को पूर्व में रखने पर

किम्सखि

मोऽनुस्वार ...... (77) सू. से मकार का अनुस्वार

किंसखि

सखेष्टः (450) सू. से समासान्त ट प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु

न किमः...... (454) सू. से निषेध

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

किंसखि + सि

ऋदुशनस्पुरुदंशोऽनेहसश्च सेरधेर्डाः (148) सू. से सि का डा

किंसखि + डा

अन्त्य ...... (18) सू. से इकार की टिसंज्ञा

डिति ...... (146) सू. से टिसंज्ञक वर्ण का लोप

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

किंसख् + आ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर किंसखा रूप सिद्ध हुआ।

निन्दा अर्थ प्रकट हो ऐसा क्यों? किंराजा, किंसखा में किम् का अर्थ 'किनका' है निन्दा नहीं अतः यहां कर्मधारय और तत्पुरुष समास नहीं होगा।

किंराजः

केषां राजा लौ. वि.

किम् + आम् + राजन् + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

किम् राजन्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से किम् को पूर्व में रखने पर

किम्राजन्

मोऽनुस्वार ...... (77) सू. से मकार का अनुस्वार किंराजन्

राज्ञो ...... (452) सू. से समासान्त ट प्रत्यय

किंराजन् + ट

शेष देवराजवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—केषां राजा।

किंसखः

केषां सखा लौ. वि.

किम् + आम् + सखि + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

किम् सखि

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से किम् को पूर्व में रखने पर

किम्सखि

मोऽनुस्वार ...... (77) सू. से मकार का अनुस्वार

किंसखि

सखेष्टः (450) सू. से समासान्त ट प्रत्यय

किंसखि + ट

शेष राजसखवत्

455 नञस्तत्पुरुषात्। (8/3/5)

नञ्पूर्वात् तत्पुरुषात् समासान्तो न स्यात्। न राजा—अराजा, असखा।

नञ् पूर्व में है जिसके ऐसे तत्पुरुष से समासान्त (ट प्रत्यय) नहीं होता है।

अराजा

न राजा लौ. वि.

नञ् + राजन् + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नञ् + राजन्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नञ् को पूर्व में रखने पर

नञ्राजन्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

नञत् (421) सू. से नञ् को अकारादेश

अराजन्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अराजन् + सि

शेष तीर्थश्वावत्

असखा

न सखा लौ. वि.

नञ् + सखि + सि अ. वि.

नञ् ...... (420) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नञ् सखि

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से नञ् को पूर्व में रखने पर

नञ्सखि

नञत् ...... (421) सू. से नञ् को अकारादेश

असखि

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

असखि + सि

शेष किंसखावत्

456 अह्नः। (8/3/8)

अहन्शब्दान्तात् तत्पुरुषात् टः स्यात्। परमाहः, उत्तमाहः।

अहन् शब्दान्त तत्पुरुष से ट (प्रत्यय) होता है।

परमाहः

परमञ्च तदहश्च अथवा परममहः लौ. वि.

परम + सि + अहन् + सि लौ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

परम अहन्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से परम को पूर्व में रखने पर

परमअहन्

समानानां ...... (36) सू. से अकार का अकार के साथ दीर्घ

परमाहन्

अह्नः (456) सू. से समासान्त ट प्रत्यय

परमाहन् + ट, ट् अनुबन्ध

शेष देवराजवत्

पक्ष में— जहां समास नहीं होगा वहां— परमञ्च तदहश्च अथवा परममहः।

उत्तमाहः

उत्तमञ्च तदहश्च अथवा उत्तममहः लौ. वि.

उत्तम + सि + अहन् + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष परमाहवत्

पक्ष में— जहां समास नहीं होगा वहां— उत्तमञ्च तदहश्च अथवा उत्तममहः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

457 सर्वांशसंख्याव्ययात्। (8/3/10)

एभ्यः परो यः अहन्शब्दस्तदन्तात् तत्पुरुषात् टः स्यात् तस्य च अह्नादेशः।

इन (सर्व, अंशवाची, संख्यावाची और अव्यय) से परे जो अहन् शब्द है उस अहन् शब्दान्त तत्पुरुष से ट (प्रत्यय) होता है और उस (अहन्) को अह्न आदेश होता है।

458 अतोऽह्नस्य। (2/2/77)

अदन्तात् पूर्वपदस्थात् निमित्तात्परस्य अह्नस्य नस्य णः स्यात्। सर्वाह्णः, पूर्वाह्णः।

अदन्त पूर्व पद में स्थित निमित्त से परे अह्न के न का ण होता है।

सर्वाह्णः

सर्वञ्च तदहश्च अथवा सर्वमहः लौ. वि.

सर्व + सि + अहन् + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

सर्व अहन्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से सर्व को पूर्व में रखने पर

सर्वअहन्

सर्वांश ...... (457) सू. से समासान्त ट प्रत्यय एवं अहन् को अह्न आदेश

सर्वअह्न

समानानां ...... (36) सू. से अकार का अकार के साथ दीर्घ

सर्वाह्न

अतो ...... (458) सू. से न का ण

सर्वाह्ण

प्र. वि. के ए. वि. की विवक्षा में सि प्रत्यय

सर्वाह्ण + सि

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—सर्वञ्च तदहश्च अथवा सर्वमहः।

पूर्वाह्णः

पूर्वम् अह्नः लौ. वि.

पूर्व + सि + अहन् + ङस् अ. वि.

पूर्रापरा ...... (438) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष सर्वाह्णवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—पूर्वम् अह्नः।

459 सर्वांशसंख्यातपुण्यवर्षादीर्घाच्च रात्रेः। (8/3/55)

एभ्यः संख्याव्ययेभ्यश्च परो यो रात्रिशब्दस्तदन्तात् तत्पुरुषात् अः स्यात्। सर्वरात्रः, पूर्वरात्रः, अपररात्रः, संख्यातरात्रः, पुण्यरात्रः, वर्षारात्रः, दीर्घरात्रः, द्विरात्रः, अतिरात्रः।

इन (सर्व, अंशवाची, संख्यात, पुण्य, वर्षा, दीर्घ), संख्यावाची और अव्यय से परे जो रात्रि शब्द है उस रात्रि अन्त तत्पुरुष से अ (प्रत्यय) होता है।

सर्वरात्रः

सर्वा चासौ रात्रिः च अथवा सर्वा रात्रिः लौ. वि.

सर्वा + सि + रात्रि + सि अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सर्वा रात्रि
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से सर्वा को पूर्व में रखने पर
सर्वारात्रि
पुंवत् ...... (442) सू. से सर्वा को पुंवत्
सर्वरात्रि
सर्वांश ...... (459) सू. से समासान्त अ प्रत्यय
सर्वरात्रि + अ
तदन्तं ...... (23) सू. से सर्व एवं रात्रि की पदसंज्ञा की प्राप्ति किन्तु
वृत्त्यन्तः (405) सू. से अन्तिम की पदसंज्ञा का निषेध
इवर्णा ...... (451) सू. से इकार का लोप
सर्वरात् + अ
स्वरहीनं...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर सर्वरात्र
प्र. वि. के ए. वि. की विवक्षा में सि प्रत्यय
सर्वरात्र + सि
शेष जिनश्रितवत्
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — सर्वा रात्रिः।

पूर्वरात्रः

पूर्वं रात्रेः लौ. वि.
पूर्व + सि + रात्रि + ङस् अ. वि.
पूर्वापरा...... (438) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष मध्यरात्रवत्
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — पूर्वं रात्रेः।

अपररात्रः

अपरं रात्रेः लौ. वि.
अपर + सि + रात्रि + ङस् अ. वि.
पूर्वापरा...... (438) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष मध्यरात्रवत्
पक्ष में — जहां पर समास नहीं होगा वहां — अपरं रात्रेः।

संख्यातरात्रः

संख्याता चासौ रात्रिश्च अथवा संख्याता रात्रिः लौ. वि.
संख्याता + सि + रात्रि + सि अ. वि.
विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष सर्वरात्रवत्
पक्ष में — जहां पर समास नहीं होगा वहां — संख्याता चासौ रात्रिश्च अथवा संख्याता रात्रिः।

पुण्यरात्रः

पुण्या चासौ रात्रिश्च अथवा पुण्या रात्रिः लौ. वि.
पुण्या + सि + रात्रि + सि अ. वि.
विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष सर्वरात्रवत्
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — पुण्या चासौ रात्रिश्च अथवा पुण्या रात्रिः।

वर्षारात्रः

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वर्षाणां रात्रिः लौ. वि.
वर्षा + आम् + रात्रि + सि अ. वि.
षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
वर्षा रात्रि
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से वर्षा को पूर्व में रखने पर
वर्षारात्रि
सर्वांश ...... (459) सू. से समासान्त अ प्रत्यय
वर्षारात्रि + अ
शेष मध्यरात्रवत्
पक्ष में—जहां पर समास नहीं होगा वहां—वर्षाणां रात्रिः।

दीर्घरात्रः

दीर्घा चासौ रात्रिश्च अथवा दीर्घा रात्रिः लौ. वि.
दीर्घा + सि + रात्रि + सि अ. वि.
विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष सर्वरात्रवत्
पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—दीर्घा चासौ रात्रिश्च अथवा दीर्घा रात्रिः।

द्विरात्रः

द्वयोः रात्र्योः समाहारः लौ. वि.
द्वि + ओस् + रात्रि + ओस् अ. वि.
अधिकं च ...... (448) सू. से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा
संख्यापूर्वो ...... (449) सू. से द्विगुसमास संज्ञा भी करने पर
शेष मध्यरात्रवत्

अतिरात्रः

अतिक्रान्तः रात्रिम् लौ. वि.
अति + रात्रि + अम् अ. वि.
अत्यादयः ...... (433) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष मध्यरात्रवत्

इति तत्पुरुषः
तत्पुरुष समास समाप्त।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ बहुव्रीहिः

अब बहुव्रीहि समास प्रारम्भ हो रहा है।

460. तुल्यार्थं चानेकं च। (3/1/128)
एकमनेकं च तुल्यार्थं नाम अव्ययं च नाम्ना सह द्वितीयाद्यन्यार्थे समस्यते स च बहुव्रीहिसमासः स्यात्। आरूढो वानरो यमिति विग्रहे।

एक अथवा अनेक तुल्यार्थ (अर्थात् समान अधिकरण) नाम अथवा अव्यय का नाम के साथ द्वितीया आदि अन्य अर्थ में समास होता है और वह बहुव्रीहिसमास है।

461. शेषे (3/1/198)
प्रहरणादन्यत्र शेषः। शेषे बहुव्रीहिसमासे क्तप्रत्ययान्तं नाम प्राग्निपतति। आरूढवानरो वृक्षः, ऊढो रथो येन स ऊढरथोऽनड्वान्, उपहृतो बलिर्यस्मै स उपहृतबलिर्यक्षः, भीताः शत्रवो यस्मात् स भीतशत्रुर्नृपः। चित्रा गावो यस्येति विग्रहे।

प्रहरणवाची (अर्थात् शस्त्रवाची) से भिन्न (नाम) शेष है। शेष (अर्थात् प्रहरणवर्जित) बहुव्रीहि समास में क्त प्रत्ययान्त नाम का प्राक् निपात होता है (अर्थात् पूर्व में रखा जाता है)।

आरूढवानरो वृक्षः

आरूढो वानरो यं सः लौ. वि.
आरूढ + सि + वानर + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास और बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
आरूढ वानर
शेषे (461) सू. से आरूढ को पूर्व में रखने पर
आरूढवानर
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
आरूढवानर + सि
शेष जिनश्रितवत्

ऊढरथोऽनड्वान्

ऊढो रथो येन सः लौ. वि.
ऊढ + सि + रथ + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
शेष आरूढवानरवत्

उपहृतबलिर्यक्षः

उपहृतो बलिर्यस्मै सः लौ. वि.
उपहृत + सि + बलि + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
शेष आरूढवानरवत्

भीतशत्रुर्नृपः

भीताः शत्रवो यस्मात् सः लौ. वि.
भीत + जस् + शत्रु + जस् अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष आरूढवानरवत्

462. विशेषणम् (3/1/191)

बहुव्रीहिसमासे विशेषणं प्राग् निपतति।

बहुव्रीहि समास में विशेषण का प्राक् निपात होता है।

463. पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङः स्त्रियास्तुल्यार्थे स्त्रियाम् (3/2/48)

भाषितपुंस्कात्परस्य ऊङ्वर्जितस्त्रीप्रत्ययस्य पुंवत् स्यात् तुल्यार्थे स्त्रीलिङ्गे परे। 'अन्यार्थे स्त्रीप्रत्यय' इत्यादिना गोशब्दस्य ह्रस्वे, सन्ध्यक्षराणां हस्वादेशे स्थानसाम्यादिदुतौ। चित्रगुः। एवं दर्शनीयभार्यः, पटुभार्यः, शोभनभार्यः, वीराः पुरुषाः सन्ति यस्मिन् स वीरपुरुषो ग्रामः। अनेकं च — आरूढा बहवो वानरा यं स आरूढबहुवानर इत्यादि। अव्ययम् — उच्चैर्मुखमस्य स उच्चैर्मुखः। एवं नीचैर्मुखः।

भाषित पुंस्क से परे ऊङ्वर्जित स्त्रीप्रत्यय को पुल्लिंगवत् हो जाता है तुल्यार्थ स्त्रीलिंग परे होने पर।

चित्रगुः

चित्रा गावो यस्य सः लौ. वि.

चित्रा + जस् + गो + जस् अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

चित्रा गो

विशेषणम् (462) सू. से चित्रा को पूर्व में रखने पर

चित्रागो

पुंवद्भाषित ...... (463) सू. से पुल्लिंगवत्

चित्रगो

अन्यार्थे ...... (434) सू. से गो शब्द को ह्रस्व[1]

चित्रगु

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

चित्रगु + सि

शेष जिनश्रितवत्

दर्शनीयभार्यः

दर्शनीया भार्या यस्य सः लौ. वि.

दर्शनीया + सि + भार्या + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष चित्रगुवत्

पटुभार्यः

पट्वी भार्या यस्य सः लौ. वि.

पट्वी + सि + भार्या + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष चित्रगुवत्

शोभनभार्यः

शोभना भार्या यस्य सः लौ. वि.

शोभना + सि + भार्या + सि अ. वि.

---

[1] उच्चारण स्थान का साम्य होने से ए और ऐ का ह्रस्व इ एवं ओ और औ का ह्रस्व उ होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
शेष चित्रगुवत्

वीरपुरुषो ग्रामः

वीराः पुरुषाः सन्ति यस्मिन् सः लौ. वि.
वीर + जस् + पुरुष + जस् अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
वीर पुरुष
विशेषणम् (462) सू. से वीर को पूर्व में रखने पर
वीरपुरुष
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
वीरपुरुष + सि
शेष जिनश्रितवत्

आरूढबहुवानरः

आरूढा बहवो वानरा यं सः लौ. वि.
आरूढ + जस् + बहु + जस् + वानर + जस् अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
शेष आरूढवानरवत्

उच्चैर्मुखः

उच्चैः मुखमस्य सः लौ. वि.
उच्चैस् + मुख + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
उच्चैस् मुख
विशेषणम् (462) सू. से उच्चैस् को पूर्व में रखने पर
उच्चैस्मुख
स्रोर्वि ...... (89) सू. से स् का विसर्ग
उच्चैःमुख
नामिनो रोऽबे (93) सू. से विसर्ग का र्
उच्चैर्मुख
जलतुम्बिका न्याय से रेफ का ऊर्ध्वगमन
उच्चैर्मुख
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
उच्चैर्मुख + सि
शेष जिनश्रितवत्

नीचैर्मुखः

नीचैः मुखमस्य सः लौ. वि.
नीचैस् + मुख + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
शेष उच्चैर्मुखवत्

464. हंसगमनादयः (3/1/129)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

हंसगमनादयः शब्दा बहुव्रीहिसमासान्ता निपात्यन्ते। हंसस्य गमनमिव गमनं यस्या सा हंसगमना। एवं चन्द्रवदना, उष्ट्रमुखः, वृषस्कन्धः इत्यादि।

बहुव्रीहि समासान्त हंसगमन आदि शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं।

हंसगमना[1]

हंसस्य गमनम् लौ. वि.

हंस + ङस् + गमन + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

हंस गमन

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से हंस को पूर्व में रखने पर

हंसगमन

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

हंसगमन + सि

अतोऽम् (191) सू. से सि का अम्

हंसगमन + अम्

समानादमः (104) सू. से अम् के अकार का लोप

हंसगमन + म्

वर्णों को मिलाने पर हंसगमनम् रूप बना।

हंसगमनमिव गमनं यस्याः सा लौ. वि.

हंसगमन + सि + गमन + सि अ. वि.

हंसगमनादयः (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

हंसगमन गमन

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से हंसगमन को पूर्व में रखने पर

हंसगमनगमन

हंसगमना ...... (464) सू. से उपमानभूत (पूर्व) गमन का लोप

हंसगमन

आबतः स्त्रियाम् (395) सू. से आप् प्रत्यय

हंसगमन + आप्, प् अनुबन्ध

समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ

हंसगमना

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

हंसगमना + सि

आपः (172) सू. से सि प्रत्यय का लोप करने पर हंसगमना रूप सिद्ध हुआ।

चन्द्रवदना

चन्द्रस्य वदनम् लौ. वि.

चन्द्र + ङस् + वदन + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष हंसगमनवत्

चन्द्रवदनमिव वदनं यस्याः सा लौ. वि.

[1] हंसगमना आदि पदों में पहले तत्पुरुष समास किया जाता है तत्पश्चात् बहुव्रीहि समास करने से उत्तरपद का लोप हो जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

चन्द्रवदन + सि + वदन + सि अ. वि.

हंसगमनादयः (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष हंसगमनावत्

उष्ट्रमुखः

उष्ट्रस्य मुखम् लौ. वि.

उष्ट्र + ङस् + मुख + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष हंसगमनवत्

उष्ट्रमुखमिव मुखमस्य सः लौ. वि.

उष्ट्रमुख + सि + मुख + सि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

उष्ट्रमुख मुख

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से उष्ट्रमुख को पूर्व में रखने पर

उष्ट्रमुखमुख

हंसगमना ...... (464) सू. से उपमानभूत (पूर्व) मुख का लोप

उष्ट्रमुख

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

उष्ट्रमुख + सि

शेष जिनश्रितवत्

वृषस्कन्धः

वृषस्य स्कन्धः लौ. वि.

वृष + ङस् + स्कन्ध + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

वृषस्कन्धः इव स्कन्धः यस्यः सः लौ. वि.

वृषस्कन्ध + सि + स्कन्ध + सि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष उष्ट्रमुखवत्

465. तेन सहः (3/1/130)

सहेति नाम तृतीयान्तेन सह वा समस्यते अन्यार्थे स च बहुव्रीहिः स्यात्।

'सह' इस नाम का तृतीयान्त के साथ अन्य अर्थ में विकल्प से समास होता है और वह बहुव्रीहिसमास है।

466. सहस्य सो वा बहुव्रीहौ (3/2/124)

उत्तरपदे परे बहुव्रीहौ सहस्य सादेशो वा स्यात्। सह पुत्रेणेति सहपुत्रः सपुत्रो वा, सधनः, सहधनः, समदः, सहमदः।

बहुव्रीहि समास में सह को स आदेश विकल्प से होता है उत्तरपद परे होने पर।

सपुत्रः

सह पुत्रेण लौ. वि.

सह + पुत्र + टा अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तेन ...... (465) सू. से विकल्प से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
सह पुत्र
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से सह को पूर्व में रखने पर
सहपुत्र
सहस्य ...... (466) सू. से विकल्प से सह को स आदेश
सपुत्र
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
सपुत्र + सि
शेष जिनश्रितवत्
पक्ष में — जहां सह को स आदेश नहीं होगा वहां — सहपुत्रः।
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — सह पुत्रेण।

सधनः

सह धनेन लौ. वि.
सह + धन + टा अ. वि.
तेन ...... (465) सू. से विकल्प से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
शेष सपुत्रवत्
पक्ष में — जहां सह को स आदेश नहीं होगा वहां — सहधनः।
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — सह धनेन।

समदः

सह मदेन लौ. वि.
सह + मद + टा अ. वि.
तेन ...... (465) सू. से विकल्प से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
शेष सपुत्रवत्
पक्ष में — जहां सह को स आदेश नहीं होगा वहां — सहमदः।
पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — सह मदेन।

467. सर्वादिश्च बहुव्रीहौ (3/1/190)

बहुव्रीहिसमासे सर्वादिः संख्या च प्राग्निपतति। सर्वशुक्लः, विश्वमित्रः, चतुर्ह्रस्वः, पञ्चदीर्घः।

बहुव्रीहि समास में सर्वादि और संख्यावाची (शब्दों का) प्राक् निपात होता है।

सर्वशुक्लः

सर्वं शुक्लं यस्य सः लौ. वि.
सर्व + सि + शुक्ल + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
सर्व शुक्ल
सर्वादिश्च ...... (467) सू. से सर्व को पूर्व में रखने पर
सर्वशुक्ल
प्र. वि. के ए. वि. की विवक्षा में सि प्रत्यय
सर्वशुक्ल + सि
शेष जिनश्रितवत्

विश्वमित्रः

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

विश्वं मित्रं यस्य सः लौ. वि.

विश्व + सि + मित्र + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष सर्वशुक्लवत्

चतुर्ह्रस्वः

चत्वारः ह्रस्वाः सन्ति यस्मिन् लौ. वि.

चतुर् + जस् + ह्रस्व + जस् अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

चतुर् ह्रस्व

सर्वादिश्च ...... (467) सू. से चतुर् को पूर्व में रखने पर

चतुर्ह्रस्व

स्रोर्वि ...... (89) सू. से र् का विसर्ग चतुःह्रस्व

रः (91) सू. से विसर्ग का रकार चतुर्ह्रस्व

जलतुम्बिका न्याय से रेफ का ऊर्ध्वगमन चतुर्ह्रस्व

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

चतुर्ह्रस्व + सि

शेष जिनश्रितवत्

पञ्चदीर्घः

पञ्च दीर्घाः सन्ति यस्मिन् लौ. वि.

पञ्चन् + जस् + दीर्घ + जस् अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पञ्चन् दीर्घ

सर्वादिश्च ...... (467) सू. से पञ्चन् का प्राक् निपात

पञ्चन्दीर्घ

नाम्नो ...... (135) सू. से न् का लोप

पञ्चदीर्घ

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पञ्चदीर्घ + सि

शेष जिनश्रितवत्

468. सप्तम्यन्तम् (3/1/193)

बहुव्रीहिसमासे सप्तम्यन्तं प्राग्निपतति। हंसगमनादित्वात् समासः। कण्ठेकालः, उदरेमणिः, उरसिलोमा। अत्र सप्तम्या अलुक्।

बहुव्रीहि समास में सप्तमी अन्त का प्राक् निपात होता है।

कण्ठेकालः

कण्ठे कालो यस्य सः लौ. वि.

कण्ठ + ङि + काल + सि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से ङि (अर्थात् स. ए. व.) एवं सि (अर्थात् प्र. ए. व.) विभ. के लुक् की प्राप्ति किन्तु

अमूर्धमस्तकात्स्वाङ्गादकामे (496) सू. से स. वि. के लुक् का निषेध

कण्ठे काल

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सप्तम्यन्तम् (468) सू. से सप्तमी अन्त को पूर्व में रखने पर
कण्ठेकाल
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
कण्ठेकाल + सि
शेष जिनश्रितवत्

उदरेमणि:

उदरे मणि: यस्य स: लौ. वि.
उदर + ङि + मणि + सि अ. वि.
हंसगमना ...... (466) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
शेष कण्ठेकालवत्

उरसिलोमा

उरसि लोमानि यस्य स: लौ. वि.
उरस् + ङि + लोमन् + जस् अ. वि.
हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से ङि (अर्थात् स. ए. व.) एवं जस् (अर्थात् प्र. ब. व.) विभ. के लुक् की प्राप्ति किन्तु
अमूर्ध ...... (496) सू. से सप्तमी लुक् का निषेध
उरसि लोमन्
सप्तम्यन्तम् (468) सू. से उरसि को पूर्व में रखने पर
उरसिलोमन्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
उरसिलोमन् + सि
शेष तीर्थश्वावत्

469. नेन्द्वादिभ्य: (3/1/195)

बहुव्रीहिसमासे इन्द्वादिभ्य: सप्तम्यन्तं प्राग् न निपतति। इन्दुर्मौलौ यस्य स इन्दुमौलि:, शशिशेखर:, पद्महस्त:।

बहुव्रीहि समास में सप्तमी अन्त का इन्दु आदि से पूर्व निपात नहीं होता है।

इन्दुमौलि:

इन्दुर्मौलौ यस्य स: लौ. वि.
इन्दु + सि + मौलि + ङि अ. वि.
हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
इन्दु मौलि
सप्तम्यन्तम् (468) सू. से सप्तमी अन्त को पूर्व में रखने की प्राप्ति किन्तु
नेन्द्वादिभ्य: (469) सू. से निषेध
इन्दुमौलि
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
इन्दुमौलि + सि
शेष जिनश्रितवत्

शशिशेखर:

शशी शेखरे यस्य स: लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शशिन् + सि + शेखर + ङि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (495) सू. से विभ. का लुक्

शशिन् शेखर

सप्तम्यन्तम् (468) सू. से सप्तमी अन्त को पूर्व में रखने की प्राप्ति किंतु

नेन्द्वा ...... (469) सू. से निषेध

शशिन्शेखर

नाम्नो ...... (135) सू. से न् का लोप

शशिशेखर

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

शशिशेखर + सि

शेष जिनश्रितवत्

पद्महस्तः

पद्मं हस्ते यस्य सः लौ. वि.

पद्म + सि + हस्त + ङि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष इन्दुमौलिवत्

470. प्रहरणेभ्यः (3/1/196)

प्रहरणवाचिभ्यः सप्तम्यन्तं प्राग् न निपतति। दण्डपाणिः, चक्रपाणिः, वज्रपाणिः, धनुर्हस्तः।

सप्तमी अन्त (नाम) का प्रहरणवाची से पूर्व निपात नहीं होता है।

दण्डपाणिः

दण्डः पाणौ यस्य सः लौ. वि.

दण्ड + सि + पाणि + ङि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

दण्ड पाणि

सप्तम्यन्तम् (468) सू. से सप्तमी अन्त को पूर्व में रखने की प्राप्ति किंतु

प्रहरणेभ्यः (470) सू. से निषेध

दण्डपाणि

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

दण्डपाणि + सि

शेष जिनश्रितवत्

चक्रपाणिः

चक्रं पाणौ यस्य सः लौ. वि.

चक्र + सि + पाणि + ङि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष दण्डपाणिवत्

वज्रपाणिः

वज्रं पाणौ यस्य सः लौ. वि.

वज्र + सि + पाणि + ङि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष दण्डपाणिवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

धनुर्हस्तः

धनुः हस्ते यस्य सः लौ. वि.
धनुस् + सि + हस्त + ङि अ. वि.
हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
धनुस् हस्त
सप्तम्यन्तम् (468) सू. से सप्तमी अन्त को पूर्व में रखने की प्राप्ति किंतु
प्रहरणेभ्यः (470) सू. से निषेध
इसुसुस्सजुषाम् (253) सू. से स् का र्
धनुर्हस्त
स्रोर्वि ...... (89) सू. से र् का विसर्ग धनुःहस्त
रः (91) सू. से विसर्ग का र् धनुर्हस्त
जलतुम्बिका न्याय से रेफ का ऊर्ध्वगमन धनुर्हस्त
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
धनुर्हस्त + सि
शेष जिनश्रितवत्

471. स्वाङ्गादीपो जातेश्चामानिनि (3/2/60)

स्वाङ्गात् परस्येपः जातेश्च स्त्रियाः प्राप्तः पुंवन्न स्यात् अमानिन्युत्तरपदे। चन्द्रमुखीभार्यः, दीर्घकेशीभार्यः, ब्राह्मणीभार्यः, शूद्राभार्यः। अमानिनीति किम — दीर्घकेशमानिनी।

स्वाङ्ग से परे ईप् एवं जातिवाची स्त्रीलिंग को पुंवत् (अर्थात् पुल्लिंगवत्) नहीं होता है मानिनीवर्जित उत्तरपद परे होने पर।

चन्द्रमुखीभार्यः

चन्द्रमुखी भार्या यस्य सः लौ. वि.
चन्द्रमुखी + सि + भार्या + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
चन्द्रमुखी भार्या
विशेषणम् (462) सू. से विशेषण को पूर्व में रखने पर
चन्द्रमुखीभार्या
पुंवद् ...... (463) सू. से ईप् को पुंवद्भाव की प्राप्ति किन्तु
स्वाङ्गादीपो ...... (471) सू. से निषेध
अन्यार्थे ...... (434) सू. से आ को ह्रस्व
चन्द्रमुखीभार्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
चन्द्रमुखीभार्य + सि
शेष जिनश्रितवत्

दीर्घकेशीभार्यः

दीर्घकेशी भार्या यस्य सः लौ. वि.
दीर्घकेशी + सि + भार्या + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
शेष चन्द्रमुखीभार्यवत्

ब्राह्मणीभार्यः

ब्राह्मणी भार्या यस्य सः लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ब्राह्मणी + सि + भार्या + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
शेष चन्द्रमुखीभार्यवत्

शूद्राभार्यः

शूद्रा भार्या यस्य सः लौ. वि.
शूद्रा + सि + भार्या + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
शेष चन्द्रमुखीभार्यवत्

मानिनीवर्जित उत्तरपद परे होने पर ऐसा क्यों? दीर्घकेशमानिनी पद में दीर्घकेशी को पुंवद् भाव पुंवद् ...... (463) सू. से नहीं होगा क्योंकि इसके मानिनी उत्तरपद में है।

दीर्घकेशमानिनी

दीर्घकेशीमात्मानं मन्यते या सा लौ. वि.
दीर्घकेशी + अम् + मानिनी अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
दीर्घकेशी मानिनी
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से दीर्घकेशी को पूर्व में रखने पर
दीर्घकेशीमानिनी
पुंवद् ...... (463) सू. से पुंवत्
दीर्घकेशमानिनी
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
दीर्घकेशमानिनी + सि
शेष अर्धपिप्पलीवत्

472. द्विपदाद्धर्मादन् (8/3/74)

धर्मशब्दान्तात् द्विपदाद् बहुव्रीहेरन् स्यात्। सुधर्मा, कल्याणधर्मा। द्विपदादिति किम्—परमस्वधर्मः।

धर्म शब्दान्त दो पद वाले बहुव्रीहि (समास) से अन् (समासान्त) होता है।

सुधर्मा

सु (शोभनः) धर्मः यस्य सः लौ. वि.
सु + धर्म + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
सु धर्म
विशेषणम् (462) सू. से विशेषण को पूर्व में रखने पर
सुधर्म
द्विपदा ...... (472) सू. से समासान्त अन् प्रत्यय
सु धर्म + अन्
तदन्तं पदम् (23) सू. से सु एवं धर्म की पदसंज्ञा किन्तु
वृत्यन्तः (405) सू. से अन्तिम की पदसंज्ञा का निषेध
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
सुधर्म् अन्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर सुधर्मन्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सुधर्मन् + सि

शेष तीर्थश्वावत्

कल्याणधर्मा

कल्याण: धर्म: यस्य स: लौ. वि.

कल्याण + सि + धर्म + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष सुधर्मावत्

<u>दो पद से अन् प्रत्यय होगा ऐसा क्यों? परमस्वधर्म: इसमें तीन पद होने के कारण अन् नहीं होगा।</u>

परमस्वधर्म:

परम: स्व: धर्म: यस्य स: लौ. वि.

परम + सि + स्व + सि + धर्म + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (365) सू. से विभ. का लुक्

परम स्व धर्म

विशेषणम् (462) सू. से विशेषण को पूर्व में रखने पर

परमस्वधर्म

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

परमस्वधर्म + सि

शेष जिनश्रितवत्

473. उपसर्गात् (8/3/85)

उपसर्गात्परस्य नासिकाया बहुव्रीहौ नस इत्यादेश: स्यात्। प्रगता नासिका अस्येति अनेन नसादेशे।

बहुव्रीहि समास में उपसर्ग से परे नासिका को नस आदेश हो जाता है।

474. नसस्य (2/2/75)

पूर्वपदस्थान्निमित्तात्परस्य नसस्य नस्य ण: स्यात्। प्रणसं मुखम्, निर्णसं मुखम्।

पूर्व पद में रहे हुए निमित्त (अर्थात् र्, ष्, ऋ) से परे नस के न का ण होता है।

प्रणसं मुखम्

प्रगता प्रवृद्धा वा नासिका यस्य तत् लौ. वि.

प्र + नासिका + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

प्र नासिका

विशेषणम् (462) सू. से प्र को पूर्व में रखने पर

प्रनासिका

उपसर्गात् (473) सू. से नासिका को नस आदेश

प्रनस

नसस्य (474) सू. से न का ण प्रणस

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

प्रणस + सि

शेष मासविकलवत्

निर्णसं मुखम्

निर्गता नासिका यस्य तत् लौ. वि.

निर् + नासिका + सि अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
निर् नासिका
विशेषणम् (462) सू. से निर् को पूर्व में रखने पर
निर्नासिका
उपसर्गात् (473) सू. से नासिका को नस आदेश निर्नस
नसस्य (474) सू. से न का ण निर्णस
जलतुम्बिका न्याय से रेफ का ऊर्ध्वगमन निर्णस
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
निर्णस + सि
शेष मासविकलवत्

475. जायाया जानिः (8/3/88)

जायाशब्दस्य बहुव्रीहौ जानिरादेशः स्यात्। युवजानिः।

बहुव्रीहिसमास में जाया शब्द को जानि आदेश होता है।

युवजानिः

युवतिः जाया यस्य सः लौ. वि.
युवति + सि + जाया + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
युवति जाया
विशेषणम् (462) सू. से विशेषण को पूर्व में रखने पर
युवतिजाया
पुंवद् ...... (473) सू. से युवति को पुंवत्
युवन्जाया
नाम्नो ...... (135) सू. से नकार का लोप
युवजाया
जायाया ...... (475) सू. से जाया को जानि आदेश
युवजानि
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
युवजानि + सि
शेष जिनश्रितवत्

476. सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः (8/3/104)

सुहृत्, दुर्हृदिति बहुव्रीहौ यथासख्यं मित्रे अमित्रे च निपात्यते। सुहृन्मित्रम्, दुर्हृदमित्रः। अन्यत्र सुहृदयो मुनिः।

बहुव्रीहि समास में सुहृत् एवं दुर्हृत् शब्द क्रमशः मित्र एवं अमित्र (अर्थात् शत्रु) अर्थ में निपातन से सिद्ध होते हैं।

सुहृत् (मित्र)

सु (शोभनं) हृदयं यस्य सः लौ. वि.
सु + हृदय + सि अ. वि.
तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
सु हृदय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

विशेषणम् (462) सू. से सु का प्राक् निपात

सुहृदय

सुहृद् ...... (476) सू. से निपातन से हृदय के स्थान में हृद् आदेश

सुहृद्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

सुहृद् + सि

हसेपः सेर्लोपः (183) सू. से सि प्रत्यय का लोप

सुहृद्

वावसाने (111) सू. से विकल्प से द् का त् करने पर सुहृत् रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में — जहां द् का त् नहीं होगा वहां — सुहृद्।

दुर्हृत् (शत्रु)

दुः (दुष्टं) हृदयं यस्य सः लौ. वि

दुर् + हृदय + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

दुर् हृदय

विशेषणम् (462) सू. से दुर् को पूर्व में रखने पर

दुर्हृदय

सुहृद् ...... (476) सू. से निपातन से हृदय को हृद् आदेश

दुर्हृद्

जलतुम्बिका न्याय से रेफ का ऊर्ध्वगमन दुर्हृद्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

दुर्हृद् + सि

शेष सुहृत्वत्

जहां सुहृत् का अर्थ मित्र एवं दुर्हृत् का अर्थ शत्रु नहीं होगा वहां —

सुहृदयो मुनिः

सु (शोभनं) हृदयं यस्य सः लौ. वि.

सु + हृदय + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

सु हृदय

विशेषणम् (462) सू. से सु को पूर्व में रखने पर

सुहृदय

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

सुहृदय + सि

शेष जिनश्रितवत्

477. स्त्रियामिनः (8/3/108)

इन्नन्ताद् बहुव्रीहेः कप् स्यात् स्त्रियाम्। बहुदण्डिका सेना, बहुस्वामिका पुरी।

स्त्रीलिङ्ग में इन् अन्त बहुव्रीहि से कप् (प्रत्यय) होता है।

बहुदण्डिका सेना

बहवः दण्डिनो यस्यां सा लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

बहु + जस् + दण्डिन् + जस् अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

बहु दण्डिन्

विशेषणम् (462) सू. से विशेषण को पूर्व में रखने पर

बहुदण्डिन्

स्त्रियामिनः (477) सू. से कप् प्रत्यय

बहुदण्डिन् + कप्, प् अनुबन्ध

नाम्नो ..... (135) सू. से नकार का लोप

बहुदण्डि + क

वर्णों को मिलाने पर बहुदण्डिक

आबतः ...... (295) सू. से आप् प्रत्यय

बहुदण्डिक + आप्, प् अनुबन्ध

बहुदण्डिक + आ

समानानां ...... (36) सू. से आकार को आकार के साथ दीर्घ

बहुदण्डिका

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

बहुदण्डिका + सि

शेष घटमृत्तिकावत्

बहुस्वामिका पुरी

बहवः स्वामिनो यस्यां सा लौ. वि.

बहु + जस् + स्वामिन् + जस् अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (462) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष बहुदण्डिकावत्

478. ऋन्नित्यदितः (8/3/109)

ऋकारान्तान्नित्यं दिदादेशो यस्मात्तदन्ताच्च बहुव्रीहेः कप् स्यात्। बहुकर्तृकः।

ऋकारान्त से एवं जिन शब्दों से (स्त्रीलिंग में ङित् प्रत्यय के स्थान में) नित्य दित् आदेश होते हैं वे (शब्द) जिनके अंत में है ऐसे बहुव्रीहि (समास) से कप् (प्रत्यय) होता है।

बहुकर्तृकः

बहवः कर्तारः यस्मिन् सः लौ. वि.

बहु + जस् + कर्तृ + जस् अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

बहु कर्तृ

विशेषणम् (462) सू. से विशेषण को पूर्व में रखने पर

बहुकर्तृ

ऋन् ...... (478) सू. से कप् प्रत्यय

बहुकर्तृ + कप् , प् अनुबन्ध

वर्णों को मिलाने पर बहुकर्तृक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

बहुकर्तृक + सि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष जिनश्रितवत्

479. ईबादीदूतां के (2/3/109)

एषां ह्रस्वः स्यात् कप्रत्यये परे।

ईप्, आ, ई एवं ऊ का ह्रस्व हो जाता है क प्रत्यय परे होने पर।

480. न कपि (2/3/110)

पूर्वेण प्राप्तो ह्रस्वो न स्यात् कपि परे। बहुकुमारीकः।

ईबा ...... (479) सू. से प्राप्त ह्रस्व नहीं होता है कप् परे होने पर।

बहुकुमारीकः

बह्व्यः कुमार्यो यस्य सः लौ. वि.

बह्वी + जस् + कुमारी + जस् अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

बह्वी कुमारी

विशेषणम् (462) सू. से विशेषण को पूर्व में रखने पर

बह्वीकुमारी

पुंवद् ...... (463) सू. से बह्वी को पुंवद्

बहुकुमारी

ऋन् ...... (478) सू. से कप् प्रत्यय

बहुकुमारी + कप्, प् अनुबन्ध

ईबा ...... (479) सू. से ह्रस्व की प्राप्ति किंतु

न कपि (480) सू. से निषेध

वर्णों को मिलाने पर बहुकुमारीक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

बहुकुमारीक + सि

शेष जिनश्रितवत्

इति बहुव्रीहिः

बहुव्रीहिसमास समाप्त।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ द्वन्द्वः

अब द्वन्द्व समास प्रारम्भ हो रहा है।

481. चार्थे द्वन्द्वः सहोक्तौ (3/1/133)

सहोक्तिविषये चार्थे वर्तमानं नाम नाम्ना सह वा समस्यते स च द्वन्द्वसमासः स्यात्। समुच्चयान्वाचयेतरेतरयोगसमाहारश्चार्थाः। तत्र परस्परनिरपेक्षस्याऽनेकस्य क्रियाकारका-देरेकस्मिन्नन्वयः समुच्चयः। चैत्रः पचति पठति च, चैत्रो मैत्रश्च पठति। समुच्चये एवान्यतरस्य गौणत्वेऽन्वाचयः। वटो! भिक्षामट गां चानय। मिलितानामन्वय इतरेतरयोगः। चैत्रश्च मैत्रश्च चैत्रमैत्रौ गच्छतः। संहतिः समाहारः। समाहारे एकवद्भावः। धवश्च खदिरश्च पलाशश्च धवखदिरपलाशं तिष्ठति। अत्राद्ययोः सहोक्त्यभावात् समासो न।

सहोक्तिविषय[1] में च के अर्थ में वर्तमान नाम का नाम के साथ विकल्प से समास होता है और वह द्वन्द्वसमास है।[2] च के चार अर्थ होते हैं — समुच्चय , अन्वाचय , इतरेतरयोग और समाहार। परस्पर निरपेक्ष अनेक क्रिया अथवा कारकों का एक में अन्वय (अर्थात् सम्बन्ध) होता है वहां च का अर्थ समुच्चय होता है। जैसे — चैत्रः पचति पठति च। यहां एक कारक (चैत्रः) का पचति एवं पठति दो क्रियाओं से सम्बन्ध है अतः इनके बाद प्रयुक्त होने वाला च समुच्चय अर्थ में है। समुच्चय में ही जब कोई एक गौण हो जाए तब वहां च का अर्थ अन्वाचय होता है। जैसे — भिक्षामट गां च आनय। (भिक्षार्थ भ्रमण कर, यदि मार्ग में गाय मिले तो उसे भी लेते आना।) यहां भिक्षा के लिए जाना आवश्यक कर्त्तव्य है और गाय का लाना गौण है अतः गां के बाद प्रयुक्त च अन्वाचय अर्थ में है। जब अनेक पदार्थ मिलकर किसी एक क्रियादि में अन्वित होते हैं वहां च का अर्थ इतरेतरयोग होता है। जैसे — चैत्रश्च मैत्रश्च चैत्रमैत्रौ गच्छतः। जब समूह एकीभूत होकर क्रिया आदि में अन्वित होता है तब वहां च का अर्थ समाहार होता है। समाहार में एकवत् भाव हो जाता है। समुच्चय और अन्वाचय में सहोक्ति का अभाव होने से समास नहीं होता।

482. द्वन्द्वे लघ्वक्षरमेकम् (3/1/168)

द्वन्द्वे लघ्वक्षरं नाम प्राग् निपतति यत्र चानेकं तत्रैकमेव। तिलमाषौ, घटशङ्खपटाः, पटशङ्खघटाः।

द्वन्द्व (समास) में लघु अक्षर वाले नाम का प्राक् निपात होता है। जहां अनेक (लघु अक्षर वाले नाम होते हैं) उनमें एक का ही (प्राक् निपात होता है)।

तिलमाषौ

तिलश्च माषश्च लौ. वि.

तिल + सि + माष + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

तिलमाष

द्वन्द्वे ...... (482) सू. से तिल शब्द को पूर्व में रखने पर

तिलमाष

प्र. वि. के द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय

तिलमाष + औ

ओदौतोरौत् (41) सू. से अकार का औकार के साथ औकार करने पर तिलमाषौ रूप सिद्ध हुआ।

घटशङ्खपटाः

घटश्च शङ्खश्च पटश्च लौ. वि.

---

[1] यद्वर्तिपदैः प्रत्येकं पदार्थानां युगपदभिधानं सा सहोक्तिः।
जब समास के घटक पदों से प्रत्येक पदार्थ का एक साथ कथन होता है तब वह सहोक्ति कहलाती है।

[2] द्वन्द्व समास में जहां समास नहीं होगा वहां वाक्य ही रह जाएगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

घट + सि + शङ्ख + सि + पट + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

घट शङ्ख पट

द्वन्द्वे ...... (482) सू. से घट शब्द को पूर्व में रखने पर

घटशङ्खपट

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

घटशङ्खपट + जस् , ज् अनुबन्ध

अदेतोरपदान्तेऽत: (102) सू. से अकारलोप की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

अतो जस्भ्यांये (103) सू. से अकार का आकार

घटशङ्खपटा + अस्

समानानां ...... (36) सू. से आकार का अकार के साथ दीर्घ

घटशङ्खपटास्

स्रोर्वि ...... (89) सू. से सकार का विसर्ग करने पर घटशङ्खपटा: रूप सिद्ध हुआ।

पटशङ्खघटा:

घटश्च शङ्खश्च पटश्च लौ. वि.

घट + सि + शङ्ख + सि + पट + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

घट शङ्ख पट

द्वन्द्वे ...... (482) सू. से पट शब्द को पूर्व में रखने पर

पटशङ्खघट

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

पटशङ्खघट + जस्

शेष घटशङ्खपटवत्

483. इदुदन्तमसखि (3/1/170)

सखिशब्दं वर्जयित्वा इकारान्तोकारान्तमेकं नाम द्वन्द्वसमासे प्राग् निपतति। पतिसुतौ, पटुगुप्तौ। असखीति किम्—सुतसखायौ।

सखि शब्द को छोड़कर इकारान्त अथवा उकारान्त एक नाम का द्वन्द्व समास में प्राक् निपात होता है।

पतिसुतौ

पतिश्च सुतश्च लौ. वि.

पति + सि + सुत + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पतिसुत

इदुदन्त ...... (483) सू. से पति शब्द का प्राक् निपात

पतिसुत

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

पतिसुत + औ

शेष तिलमाषवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पटुगुप्तौ

पटुश्च गुप्तश्च लौ. वि.

पटु + सि + गुप्त + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पटु गुप्त

इदुदन्त ...... (483) सू. से पटु शब्द का प्राक् निपात

पटुगुप्त

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

पटुगुप्त + औ

शेष तिलमाषवत्

सखि शब्द को क्यों छोड़ा ? सुतसखायौ। इस उदाहरण में सखि शब्द का, इकारान्त होने पर भी, प्राक् निपात नहीं होगा क्योंकि सूत्र में सखि शब्द के प्राक् निपात का निषेध है।

सुतसखायौ

सुतश्च सखा च लौ. वि.

सुत + सि + सखि + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

सुतसखि

द्वन्द्वे ...... (482) सू. से सुत शब्द का प्राक् निपात

सुतसखि

प्र. वि. के द्विवचन की विवक्षा में औ प्रत्यय

सुतसखि + औ

ऐः सख्युरितोऽशिधौ (149) सू. से इकार का ऐकार

सुतसखै + औ

एदैतोरयायौ (33) सू. से ऐ का आय्

सुखसख् आय् औ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर सुखसखायौ रूप सिद्ध हुआ।

484. स्वराद्यदन्तम् (3/1/173)

द्वन्द्वसमासे स्वरादि यददन्तं तदेकं नाम प्राग् निपतति। अश्वखरौ, इन्द्रचन्द्रौ।

द्वन्द्वसमास में जो स्वरादि अकारान्त (अर्थात् जिसके स्वर आदि में है और अकार अन्त में है ऐसा) नाम है उस एक नाम का प्राक् निपात होता है।

अश्वखरौ

अश्वश्च खरश्च लौ. वि.

अश्व + सि + खर + सि अ. वि.

द्वन्द्वे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अश्व खर

स्वराद्य ...... (484) सू. से अश्व शब्द का प्राक् निपात

अश्वखर

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अश्वखर + औ

शेष तिलमाषवत्

इन्द्रचन्द्रौ

इन्द्रः च चन्द्रः च लौ. वि.

इन्द्र + सि + चन्द्र + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

शेष अश्वखरवत्

485. अल्पस्वरम् (3/1/176)

द्वन्द्वसमासे अल्पस्वरमेकं नाम प्राग् निपतति। धवखदिरौ, वागर्थौ।

द्वन्द्व समास में अल्प स्वर वाले एक नाम का प्राक् निपात होता है।

धवखदिरौ

धवश्च खदिरश्च लौ. वि.

धव + सि + खदिर + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

धव खदिर

अल्पस्वरम् ...... (485) सू. से धव शब्द का प्राक् निपात

धवखदिर

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

धवखदिर + औ

शेष तिलमाषवत्

वागर्थौ

वाक् च अर्थश्च लौ. वि.

वाच् + सि + अर्थ + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

वाच्अर्थ

अल्पस्वरम् (485) सू. से वाच् शब्द का प्राक् निपात

वाच्अर्थ

चजोः कगौ (245) सू. से च् का क्

वाक्अर्थ

झसा जबाः (59) सू. से क् का ग्

वाग्अर्थ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर वागर्थ

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

वागर्थ + औ

शेष तिलमाषवत्

486. अर्चितम् (3/12/179)

द्वन्द्वसमासे यदर्चितं तदेकं नाम प्राग् निपतति। देवदैत्यौ, मातापितरौ।

द्वन्द्वसमास में जो पूजित है उस एक नाम का प्राक् निपात होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

देवदैत्यौ

देवश्च दैत्यश्च लौ. वि.

देव + सि + दैत्य + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

देव दैत्य

अर्चितम् ...... (486) सू. से देव शब्द का प्राक् निपात

देवदैत्य

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

देवदैत्य + औ

शेष तिलमाषवत्

मातापितरौ

माता च पिता च लौ. वि.

मातृ + सि + पितृ + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

मातृ पितृ

अर्चितम् (486) सू. से मातृ शब्द का प्राक् निपात

मातृपितृ

आ द्वन्द्वे (491) सू. से ऋकार का आकार

मातापितृ

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

मातापितृ + औ

पुंस्त्रियोः ...... (133) सू. से औ प्रत्यय की थुट् संज्ञा

थुटि (167) सू. से ऋ को अर्

मातापितर् + औ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर मातापितरौ रूप सिद्ध हुआ।

487. मासर्तुभ्रातृनक्षत्राण्यानुपूर्व्येण (3/1/182)

इत्येतद्वाचिशब्दरूपमानुपूर्व्येण प्राग् निपतति द्वन्द्वे। फाल्गुनचैत्रौ, हेमन्तवसन्तौ, बलदेववासुदेवौ, कृत्तिकारोहिण्यौ।

द्वन्द्व समास में मास , ऋतु , भ्रातृ एवं नक्षत्रवाची शब्दरूप का क्रमशः प्राक् निपात होता है।

फाल्गुनचैत्रौ

फाल्गुनश्च चैत्रश्च लौ. वि.

फाल्गुन + सि + चैत्र + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

फाल्गुन चैत्र

मासर्तु ...... (487) सू. से फाल्गुन शब्द का प्राक् निपात

फाल्गुनचैत्र

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

फाल्गुनचैत्र + औ

शेष तिलमाषवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

हेमन्तवसन्तौ

हेमन्तश्च वसन्तश्च लौ. वि.

हेमन्त + सि + वसन्त + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

हेमन्त वसन्त

मासर्तु ...... (487) सू. से हेमन्त शब्द का प्राक् निपात

हेमन्तवसन्त

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

हेमन्तवसन्त + औ

शेष तिलमाषवत्

बलदेववासुदेवौ

बलदेवश्च वासुदेवश्च लौ. वि.

बलदेव + सि + वासुदेव + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

शेष फाल्गुनचैत्रवत्

कृत्तिकारोहिण्यौ

कृत्तिका च रोहिणी च लौ. वि.

कृत्तिका + सि + रोहिणी + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कृत्तिका रोहिणी

मासर्तु ...... (487) सू. से कृत्तिका शब्द का प्राक् निपात

कृत्तिकारोहिणी

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

कृत्तिकारोहिणी + औ

इवर्णादीनां ...... (29) सू. से ईकार का यकार

कृत्तिकारोहिण्य् + औ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर कृत्तिकारोहिण्यौ रूप सिद्ध हुआ।

488. वर्णाः (3/1/187)

द्वन्द्वे वर्णवाचीन्यानुपूर्व्येण प्राग् निपतन्ति। ब्राह्मणक्षत्रियौ, विट्शूद्रौ। पूर्वोक्तानां पूर्वनिपातः क्वचिद्वा। गुणवृद्धी, वृद्धिगुणौ, धर्मार्थौ, अर्थधर्मौ, समीरणाग्नी, अग्निसमीरणौ, वसन्तग्रीष्मौ, ग्रीष्मवसन्तौ, भीमसेनार्जुनौ, अर्जुनभीमसेनौ। क्वचिन्न — जायापती, जंपती, दंपती, भार्यापती, पुत्रपती, शूद्रार्यौ, उलूखलमूसले, नरनारायणौ, पाण्डुधृतराष्ट्रौ, पुष्यपुनर्वसू।

द्वन्द्वसमास में वर्णवाची का क्रमशः प्राक् निपात होता है।

ब्राह्मणक्षत्रियौ

ब्राह्मणश्च क्षत्रियश्च लौ. वि.

ब्राह्मण + सि + क्षत्रिय + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

ब्राह्मण क्षत्रिय

वर्णाः (488) सू. से ब्राह्मण शब्द का प्राक् निपात

ब्राह्मणक्षत्रिय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

ब्राह्मणक्षत्रिय + औ

शेष तिलमाषवत्

विट्शूद्रौ

विट् च शूद्रश्च लौ. वि.

विश् + सि + शूद्र + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

विश् शूद्र

वर्णाः (488) सू. से विश् शब्द का प्राक् निपात

विश्शूद्र

शराज्भ्राज्यज्सृज्मृज्भ्रस्ज्व्रश्च्परिव्राजां षः (179) सू. से श् का ष् विष्शूद्र

झसा ...... (59) सू. से ष् का ड्

विड्शूद्र

खसे ...... (72) सू. से ड् का ट्

विट्शूद्र

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

विट्शूद्र + औ

शेष तिलमाषवत्

वृद्धिगुणौ

वृद्धिश्च गुणश्च लौ. वि.

वृद्धि + सि + गुण + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

वृद्धि गुण

इन्दुदन्त ...... (483) सू. से वृद्धि शब्द के प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर गुणवृद्ध्यादिषु वा (भिक्षु. 3/1/172) सू. से विकल्प से वृद्धि का प्राक् निपात

वृद्धिगुण

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

वृद्धिगुण + औ

शेष तिलमाषवत्

पक्ष में—जहां गुण ...... (भिक्षु 3/1/172) सू. से वृद्धि का प्राक् निपात नहीं होगा वहां—

गुणवृद्धी

वृद्धिश्च गुणश्च लौ. वि.

वृद्धि + सि + गुण + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

वृद्धि गुण

राजदन्तादिषु (भिक्षु. 3/1/166) सू. से गुण शब्द का प्राक् निपात

गुणवृद्धि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

गुणवृद्धि + औ

इदुतोऽस्त्रेरौरीदूत् (140) सू. से औ को ई

गुणवृद्धि + ई

समानानां ...... (36) सू. से इकार को ईकार के साथ दीर्घ करने पर गुणवृद्धी रूप सिद्ध हुआ।

अर्थधर्मौ

अर्थश्च धर्मश्च लौ. वि.

अर्थ + सि + धर्म + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अर्थ धर्म

स्वराद्यदन्तम् (484) सू. से अर्थ शब्द के नित्य प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

धर्मार्थादिषु वा (भिक्षु. 3/1/175) सू. से विकल्प से अर्थ का प्राक् निपात

अर्थधर्म

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

अर्थधर्म + औ

शेष तिलमाषवत्

पक्ष में—जहां धर्मा ...... (भिक्षु. 3/1/175) सू. अर्थ शब्द का प्राक् निपात नहीं होगा वहां—

धर्मार्थौ

अर्थश्च धर्मश्च लौ. वि.

धर्म + सि + अर्थ + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

धर्म अर्थ

राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सू. से धर्म शब्द का प्राक् निपात

धर्मअर्थ

समानानां ...... (36) सू. से अकार का अकार के साथ दीर्घ

धर्मार्थ

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

धर्मार्थ + औ

शेष तिलमाषवत्

अग्निसमीरणौ

अग्निश्च समीरणश्च लौ. वि.

अग्नि + सि + समीरण + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अग्नि समीरण

अल्पस्वरम् (485) सू. से अग्नि शब्द के प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

समीरणाग्न्यादिषु वा (भिक्षु. 3/1/178) सू. से अग्नि शब्द का विकल्प से प्राक् निपात

अग्निसमीरण

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अग्निसमीरण + औ

शेष तिलमाषवत्

पक्ष में—जहां समीरणा ...... (भिक्षु. 3/1/175) सू. से अग्नि का प्राक् निपात नहीं होगा वहां—

समीरणाग्नी

अग्निश्च समीरणश्च लौ. वि.

अग्नि + सि + समीरण + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अग्नि समीरण

राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सू. से समीरण शब्द का प्राक् निपात

समीरणअग्नि

समानानां ...... (36) सू. से अकार का अकार के साथ दीर्घ

समीरणाग्नि

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

समीरणाग्नि + औ

शेष गुणवृद्धिवत्

वसन्तग्रीष्मौ

वसन्तश्च ग्रीष्मश्च लौ. वि.

वसन्त + सि + ग्रीष्म + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

वसन्त ग्रीष्म

मासर्तु ...... (487) सू. से वसन्त शब्द के नित्य प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर वसन्तग्रीष्मादिषु वा (भिक्षु. 3/1/183) सू. से वसन्त शब्द का विकल्प से प्राक् निपात

वसन्तग्रीष्म

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

वसन्तग्रीष्म + औ

शेष तिलमाषवत्

पक्ष में—जहां वसन्त ...... (भिक्षु. 3/1/183) सू. से वसन्त शब्द का प्राक् निपात नहीं होगा—

ग्रीष्मवसन्तौ

वसन्तश्च ग्रीष्मश्च लौ. वि.

वसन्त + सि + ग्रीष्म + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

ग्रीष्म वसन्त

राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सू. से ग्रीष्म शब्द का प्राक् निपात

ग्रीष्मवसन्त

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

ग्रीष्मवसन्त + औ

शेष तिलमाषवत्

भीमसेनार्जुनौ

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भीमसेनश्च अर्जुनश्च लौ. वि.

भीमसेन + सि + अर्जुन + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

भीमसेन अर्जुन

मासर्तु ...... (487) सू. से भीमसेन शब्द के नित्य प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर भीमसेनार्जुनादिषु वा (भिक्षु. 3/1/185) सू. से भीमसेन शब्द का विकल्प से प्राक् निपात

भीमसेनअर्जुन

समानानां ...... (36) सू. से अकार का अकार के साथ दीर्घ

भीमसेनार्जुन

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

भीमसेनार्जुन + औ

शेष तिलमाषवत्

पक्ष में—जहां भीमसेन ...... (भिक्षु. 3/1/185) सू. से भीमसेन का प्राक् निपात नहीं होगा वहां—

अर्जुनभीमसेनौ

भीमसेनश्च अर्जुनश्च लौ. वि.

भीमसेन + सि + अर्जुन + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अर्जुन भीमसेन

राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सू. से अर्जुन शब्द का प्राक् निपात

अर्जुनभीमसेन

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

अर्जुनभीमसेन + औ

शेष तिलमाषवत्

जंपती

जाया च पतिश्च लौ. वि.

जाया + सि + पति + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

जाया पति

इन्दुदन्त ...... (484) सू. से पति शब्द के प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सूत्र से जाया शब्द का प्राक् निपात एवं जाया को विकल्प से जं आदेश

जंपति

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

जंपति + औ

शेष गुणवृद्धिवत्

जहां राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सू. से जाया के स्थान पर विकल्प से दं आदेश होगा वहां—

दंपती

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष प्रक्रिया जंपतीवत्

जहां राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/66) सू. से जाया के स्थान पर जं एवं दं आदेश नहीं होगा वहां —

जायापती

शेष प्रक्रिया जंपतीवत्

पुत्रपती

पुत्रश्च पतिश्च लौ. वि.

पुत्र + सि + पति + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पुत्र पति

इन्दुदन्त ...... (484) सू. से पति शब्द के प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु

न जायापत्यादिषु (भिक्षु. 3/1/171) सू. से निषेध

राजदन्तादिषु (भिक्षु. 3/1/166) सूत्र से पुत्र शब्द का प्राक् निपात

पुत्रपति

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

पुत्रपति + औ

शेष गुणवृद्धिवत्

शूद्रार्यौ

शूद्रश्च आर्यश्च लौ. वि.

शूद्र + सि + आर्य + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

शूद्र आर्य

स्वराद्यदन्तम् (484) सू. से आर्य शब्द के प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु

न शूद्रार्यादिषु (भिक्षु. 3/1/174) सू. से निषेध

राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सूत्र से शूद्र शब्द का प्राक् निपात

शूद्रआर्य

समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ

शूद्रार्य

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

शूद्रार्य + औ

शेष तिलमाषवत्

उलूखलमूसले

उलूखलञ्च मूसलञ्च लौ. वि.

उलूखल + सि + मूसल + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

उलूखल मूसल

अल्पस्वरम् (485) सू. से मूसल शब्द के प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु

नोदूखलमूसलादिषु (भिक्षु. 3/1/177) सू. से निषेध

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सूत्र से उलूखल शब्द का प्राक् निपात

उलूखलमूसल

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

उलूखलमूसल + औ

ईरौः (192) सू. से औ को ई

उलूखलमूसल + ई

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का ईकार के साथ एकार करने पर उलूखलमूसले रूप सिद्ध हुआ।

नरनारायणौ

नरश्च नारायणश्च लौ. वि.

नर + सि + नारायण + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नर नारायण

अर्चितम् (486) सू. से नारायण शब्द के प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु

न नरनारायणादिषु (भिक्षु. 3/1/180) सू. से निषेध

राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सू. से नर शब्द का प्राक् निपात

नरनारायण

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

नरनारायण + औ

शेष तिलमाषवत्

पाण्डुधृतराष्ट्रौ

पाण्डुश्च धृतराष्ट्रश्च लौ. वि.

पाण्डु + सि + धृतराष्ट्र + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पाण्डु धृतराष्ट्र

मासर्तु ...... (487) सू. से धृतराष्ट्र शब्द के प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु

न पाण्डुधृतराष्ट्रादिषु (भिक्षु. 3/1/184) सू. से निषेध

राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सू. से पाण्डु शब्द का प्राक् निपात

पाण्डुधृतराष्ट्र

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

धृतराष्ट्र + औ

शेष तिलमाषवत्

पुष्यपुनर्वसू

पुष्यश्च पुनर्वसुश्च लौ. वि.

पुष्य + सि + पुनर्वसु + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पुष्य पुनर्वसु

मासर्तु ...... (487) सू. से पुनर्वसु शब्द के प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

न पुष्यपुनर्वस्वादिषु (भिक्षु. 3/1/186) सू. से निषेध
राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सू. से पुष्य शब्द का प्राक् निपात
पुष्यपुनर्वसु
प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय
पुष्यपुनर्वसु + औ
इदुतो ...... (140) सू. से औ को ऊ
पुष्यपुनर्वसु + ऊ
समानानां ...... (36) सू. से उकार का ऊकार के साथ दीर्घ करने पर पुष्यपुनर्वसू रूप सिद्ध हुआ।

489. नित्यवैरिणाम् (3/1/152)

एषां द्वन्द्व एकत्वं स्यात्। अहिनकुलम्, अश्वमहिषम्, मार्जारमूषकम्।

जिनका जातिनिबद्ध वैर हो उन नित्य वैरी (प्राणियों) का द्वन्द्व समास में एकत्व हो जाता है।

अहिनकुलम्

अहिश्च नकुलश्च लौ. वि.
अहि + सि + नकुल + सि अ. वि.
चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अहि नकुल
अल्प ...... (485) सू. से अहि शब्द का प्राक् निपात
अहिनकुल
नित्य ...... (489) सू. से एकत्व
अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
अहिनकुल + सि
शेष मासविकलवत्

अश्वमहिषम्

अश्वश्च महिषश्च लौ. वि.
अश्व + सि + महिष + सि अ. वि.
चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा
शेष अहिनकुलवत्

मार्जारमूषकम्

मार्जारश्च मूषकश्च लौ. वि.
मार्जार + सि + मूषक + सि अ. वि.
चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
मार्जारमूषक
नित्य ...... (489) सू. से एकत्व
अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
मार्जारमूषक + सि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष मासविकलवत्

490. विरोधिनामद्रव्याणाम् (3/1/160)

अद्रव्यवृत्तीनां विरोधिवाचिनां द्वन्द्वमेकत्वं वा स्यात्। सुखदु:खम्, सुखदु:खे, लाभालाभम्, लाभलाभौ। विरोधिनामिति किम्—कामक्रोधौ। अद्रव्याणामिति किम्—शीतोष्णे जले।

द्रव्यवर्जित में रहने वाले विरोधिवाची का द्वन्द्व समास में एकत्व विकल्प से होता है।

सुखदु:खम्

सुखञ्च दु:खञ्च लौ. वि.

सुख + सि + दु:ख + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

सुख दु:ख

अर्चितम् (484) सू. से सुख शब्द का प्राक् निपात

सुखदु:ख

विरोधिना ...... (490) सू. से विकल्प से एकत्व

अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

सुखदु:ख + सि

शेष मासविकलवत्

पक्ष में—जहां पर विरोधिना ...... (490) सू. से एकत्व नहीं होगा वहां—

सुखदु:खे

सुखञ्च दु:खञ्च लौ. वि. से अर्चितम् (486) सू. तक पूर्ववत् प्रक्रिया

सुखदु:ख

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

सुखदु:ख + औ

ईरौ: (192) सू. से औ का ई

सुखदु:ख + ई

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का ईकार के साथ एकार करने पर सुखदु:खे रूप सिद्ध हुआ।

लाभालाभम्

लाभश्च अलाभश्च लौ. वि.

लाभ + सि + अलाभ + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

लाभ अलाभ

अर्चितम् (486) सू. से लाभ शब्द का प्राक् निपात

लाभअलाभ

समानानां ...... (36) सू. से अकार का अकार के साथ दीर्घ

लाभालाभ

विरोधि ...... (490) सू. से विकल्प से एकत्व

अव्ययीभाव ...... इस कारिका से नपुंसकलिंग

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

लाभालाभ + औ

शेष सुखदु:खवत्

पक्ष में—जहां विरोधिना ...... (490) सू. से एकत्व नहीं होगा वहां—

लाभालाभौ

लाभश्च अलाभश्च लौ. वि. से समानानां ...... (36) सू. तक पूर्ववत् प्रक्रिया

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

लाभालाभ + औ

शेष तिलमाषवत्

विरोधीवाची हो ऐसा क्यों? कामक्रोधौ। काम और क्रोध विरोधी नहीं है अत: इनमें विरोधिना ...... (490) सू. से एकत्व नहीं होगा।

कामक्रोधौ

कामश्च क्रोधश्च लौ. वि.

काम + सि + क्रोध + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कामक्रोध

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

कामक्रोध + औ

शेष तिलमाषवत्

द्रव्य में वर्तन नहीं करना चाहिए ऐसा क्यों? शीतोष्णे जले। जल एक द्रव्य है। शीत और उष्ण जल में वर्तन करते हैं अत: शीतोष्ण में विरोधिना ...... (490) सू. से विकल्प से एकत्व नहीं होगा।

शीतोष्णे

शीतञ्च उष्णञ्च लौ. वि.

शीत + सि + उष्ण + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

शीत उष्ण

स्वराद्य ...... (448) सू. से उष्ण शब्द के प्राक् निपात की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

राजदन्ता ...... (भिक्षु. 3/1/166) सू. से शीत शब्द का प्राक् निपात

शीतउष्ण

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का उकार के साथ ओकार

शीतोष्ण

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

शीतोष्ण + औ

शेष सुखदु:खवत्

491. आ द्वन्द्वे (3/2/39)

विद्यायोनिसम्बन्धिनामृकारान्तानां द्वन्द्वे उत्तरपदे परे आकारादेश: स्यात्। होतापोतारौ, मातापितरौ।

द्वन्द्व समास में उत्तरपद परे होने पर विद्या एवं योनि सम्बन्धी ऋकारान्त को आकार आदेश होता है।

होतापोतारौ

होता च पोता च लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

होतृ + सि + पोतृ + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा से पुंस्त्रियोः .... (133) सू. से औ की थुट् संज्ञा तक मातापितरौवत् प्रक्रिया

तृस्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षत्तृहोतृपोतृप्रशास्तृणामार् (162) सू. से ऋकार का आर्

होतापोत् आर् + औ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर होतापोतारौ रूप सिद्ध हुआ।

मातापितरौ

यह रूप 486 वें सू. में सिद्ध कर चुके हैं।

492. पुत्रे (3/2/40)

पुत्रशब्दे उत्तरपदे परे विद्यायोनिसंबन्धिन ऋकारान्तस्य आकारान्तादेशो भवति द्वन्द्वसमासे। मातापुत्रौ, पितापुत्रौ।

द्वन्द्वसमास में पुत्रशब्द उत्तरपद में होने पर विद्या एवं योनि सम्बन्धी ऋकारान्त को आकारान्त आदेश होता है।

मातापुत्रौ

माता च पुत्रश्च लौ. वि.

मातृ + सि + पुत्र + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

मातृ पुत्र

अर्चितम् (486) सू. से मातृ शब्द का प्राक् निपात

मातृपुत्र

पुत्रे (492) सू. से ऋकार का आकार

मातापुत्र

प्र. वि. के द्वि. व. की विवक्षा में औ प्रत्यय

मातापुत्र + औ

शेष तिलमाषवत्

पितापुत्रौ

पिता च पुत्रः च लौ. वि.

पितृ + सि + पुत्र + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

शेष मातापुत्रवत्।

इति द्वन्द्वः

द्वन्द्व समास समाप्त।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ अलुक्समासः
अब अलुक् समास प्रारम्भ हो रहा है।

493. आत्मनः पूरणे (3/2/14)

आत्मनः परस्य तृतीयाया लुग् न स्यात् पूरणप्रत्ययान्ते परे। आत्मनाचतुर्थः, आत्मनाषष्ठः। पूर्वादित्वात् समासः।

आत्मन् से परे तृतीया (विभक्ति) का लुक् नहीं होता है पूरणप्रत्ययान्त परे होने पर।

आत्मनाचतुर्थः

आत्मना चतुर्थः लौ. वि.

आत्मन् + टा + चतुर्थ + सि अ. वि.

ऊनार्थ ...... (408) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से तृ. ए. व. (अर्थात् टा प्रत्यय) एवं प्र. ए. व. (अर्थात् सि प्रत्यय) के लुक् की प्राप्ति किन्तु

आत्मनः ...... (493) सू. से तृ. वि. के लुक् का निषेध

आत्मना चतुर्थ

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से आत्मना का प्राक् निपात

आत्मनाचतुर्थ

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

आत्मनाचतुर्थ + सि

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—आत्मना चतुर्थः।

आत्मना षष्ठः

आत्मना षष्ठः लौ. वि.

आत्मन् + टा + षष्ठ + सि अ. वि.

ऊनार्थ ...... (408) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष आत्मनाचतुर्थवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां—आत्मना षष्ठः।

494. परात्मभ्यां चतुर्थ्याः (3/2/17)

आभ्यां परस्याश्चतुर्थ्या लुग् न स्यात् संज्ञायामुत्तरपदे परे। परस्मैपदम्, आत्मनेपदम्। हितादित्वात्समासः।

संज्ञा होने पर इन (पर एवं आत्मन् शब्दों) से परे चतुर्थी (विभक्ति) का लुक् नहीं होता है उत्तरपद परे होने पर।

परस्मैपदम्

परस्मै पदम् लौ. वि.

पर + ङे + पद + सि अ. वि.

हितादिभिः (412) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से च. ए. व. (अर्थात् ङे प्रत्यय) एवं प्र. ए. व. (अर्थात् सि प्रत्यय) के लुक् की प्राप्ति किन्तु

परात्मभ्यां ...... (494) सू. से चतुर्थी लुक् का निषेध

परस्मै पद

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से परस्मै को पूर्व में रखने पर

परस्मैपद

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

परस्मैपद + सि

शेष मासविकलवत्

पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — परस्मै पदम्।

आत्मनेपदम्

आत्मने पदम् लौ. वि.

आत्मन् + ङे + पद + सि अ. वि.

हितादिभिः (412) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष परस्मैपदवत्

पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — आत्मने पदम्।

495. मूर्खे देवानांप्रियः (3/2/34)

देवानांप्रिय इति षष्ठ्या लुगभावो निपात्यते मूर्खेऽभिधेये। अन्यत्र देवप्रियः।

मूर्ख अर्थ होने पर षष्ठी विभक्ति के लुक् के अभाव में देवानांप्रिय यह निपातन से सिद्ध होता है।

देवानांप्रियः

देवानां प्रियः लौ. वि.

देव + आम् + प्रिय + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से ष. ब. व. (अर्थात् आम् प्रत्यय) एवं प्र. ए. व. (अर्थात् सि प्रत्यय) के लुक् की प्राप्ति किन्तु

मूर्खे ...... (495) सू. से षष्ठी विभ. के लुक् का निषेध

देवानाम् प्रिय

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से देवानाम् को पूर्व में रखने पर

देवानाम्प्रिय

मोऽनुस्वार ...... (77) सू. से मकार का अनुस्वार

देवानांप्रिय

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

देवानांप्रिय + सि

शेष जिनश्रितवत्

जहां मूर्ख अर्थ नहीं होगा वहां —

देवप्रियः

देवानां प्रियः लौ. वि.

देव + आम् + प्रिय + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से विकल्प से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां — देवानां प्रियः।

496. अमूर्धमस्तकात्स्वाङ्गादकामे (3/2/21)

मूर्धमस्तकवर्जितादन्तात् हसान्ताच्च स्वाङ्गवाचिनः परस्याः सप्तम्या लुक् न स्यात् कामवर्जिते उत्तरपदे परे। कण्ठेकालः, उदरेमणिः, शिरसिशिखः। अमूर्धमस्तकादिति किम् — मूर्धशिखः, मस्तकशिखः। अकाम इति किम् — मुखे कामोऽस्य मुखकामः।

मूर्धन् एवं मस्तक वर्जित अदन्त एवं हसान्त स्वाङ्गवाची से परे सप्तमी (विभक्ति) का लुक् नहीं होता है कामवर्जित उत्तरपद परे होने पर।

कण्ठेकालः एवं **उदरेमणिः** रूप 468 सू. में सिद्ध कर चुके हैं।

शिरसिशिखः

शिरसि शिखा यस्य सः लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शिरस् + ङि + शिखा + सि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से स. ए. व. (अर्थात् ङि प्रत्यय) एवं प्र. ए. व. (अर्थात् सि प्रत्यय) के लुक् की प्राप्ति किन्तु

अमूर्ध ...... (496) सू. से स. वि. के लुक् का निषेध

शिरसि शिखा

सप्तम्यन्तम् (468) सू. से सप्तमी अन्त को पूर्व में रखने पर

शिरसिशिखा

अन्यार्थे ...... (434) सू. से ह्रस्व

शिरसिशिख

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

शिरसिशिख + सि

शेष जिनश्रितवत्

मूर्धन् एवं मस्तक को क्यों छोड़ा? मूर्धशिखः, मस्तकशिखः। इन दोनों उदाहरणों के पूर्वपद में क्रमशः मूर्धन् एवं मस्तक हैं अमूर्ध ...... (496) सू. के द्वारा इन दोनों का निषेध कर देने के कारण इनके बाद आने वाली विभक्ति का लुक् हो जाता है।

मूर्धशिखः

मूर्धनि शिखा यस्य सः लौ. वि.

मूर्धन् + ङि + शिखा + सि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

मूर्धन् शिखा

सप्तम्यन्तं ...... (468) सू. से सप्तमी अन्त को पूर्व में रखने पर

मूर्धन्शिखा

नाम्नो ...... (135) सू. से न् का लोप

मूर्धशिखा

अन्यार्थे ...... (434) सू. से ह्रस्व

मूर्धशिख

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

मूर्धशिख + सि

शेष जिनश्रितवत्

मस्तकशिखः

मस्तके शिखा यस्य सः लौ. वि.

मस्तक + ङि + शिखा + सि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

मस्तक शिखा

सप्तम्यन्तम् (468) सू. से सप्तमी अन्त को पूर्व में रखने पर

मस्तकशिखा

अन्यार्थे ...... (434) सू. से ह्रस्व

मस्तकशिख

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

मस्तकशिख + सि

शेष जिनश्रितवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

काम शब्द उत्तरपद में नहीं हो ऐसा क्यों? मुखकामः। इस उदाहरण में काम शब्द उत्तरपद में होने के कारण स. वि. का लुक् हो गया।

मुखकामः

मुखे कामोऽस्य सः लौ. वि.
मुख + ङि + काम + सि अ. वि.
हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
मुख काम
सप्तम्यन्तम् (468) सू. से सप्तमी अन्त को पूर्व में रखने पर
मुखकाम
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
मुखकाम + सि
शेष जिनश्रितवत्

497. तत्पुरुषे कृति (3/2/22)

अदन्तात् हसान्ताच्च परस्याः सप्तम्या लुग् न स्यात् कृदन्ते उत्तरपदे तत्पुरुषसमासे। स्तम्बेरमः, कर्णेजपः।

अदन्त और हसान्त से परे सप्तमी विभक्ति का लुक् नहीं होता है तत्पुरुषसमास में कृदन्त उत्तरपद परे होने पर।

स्तम्बेरमः

स्तम्बे रमते लौ. वि.
स्तम्ब + ङि + रम अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से स. ए. व. (अर्थात् ङि प्रत्यय) के लुक् की प्राप्ति किन्तु
तत्पुरुषे ...... (497) सू. से स. वि. के लुक् का निषेध
स्तम्बे रम
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से स्तम्बे को पूर्व में रखने पर
स्तम्बेरम
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
स्तम्बेरम + सि
शेष जिनश्रितवत्

कर्णेजपः

कर्णे जपति लौ. वि.
कर्ण + ङि + जप अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष स्तम्बेरमवत्

इत्यलुक्समासः
अलुक्समास समाप्त।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ समासाश्रयविधि
अब समासाश्रयविधि प्रारम्भ हो रही है।

498. ईपः (3/2/65)

तरादिषु[1] परेषु भाषितपुंस्कात्परस्येपो ह्रस्वः स्यात् तुल्यार्थे। गौरितरा, कुमारिकल्पा।

तरादि (तर, तम, रूप, कल्प, चेलड् , ब्रुव , गोत्र , मत , हत) परे होने पर भाषितपुंस्क से परे ईप् ह्रस्व होता है समान विभक्ति होने पर।

गौरितरा

इयमनयोः अतिशयेन गौरी लौ. वि.
द्वयोर्विभज्ये च तरः (715) सू. से तर प्रत्यय
गौरी + सि + तर अ. वि.
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
गौरी तर
वर्णों को मिलाने पर गौरीतर
आबतः ...... (295) सू. से आप् प्रत्यय
गौरीतर + आप् , प् अनुबन्ध
समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ
गौरीतरा
ईपः (498) सू. से ह्रस्व
गौरितरा
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
गौरितरा + सि
आपः (172) सू. से सि प्रत्यय का लोप करने पर गौरितरा रूप सिद्ध हुआ।

कुमारिकल्पा

ईषदसमाप्ता कुमारी लौ. वि.
अतमादेरीषदसमाप्ते कल्पदेश्यदेशीयाः (725) सू. से कल्प प्रत्यय
कुमारी + सि + कल्प अ. वि.
शेष गौरितरावत्

499. घञ्युपसर्गस्य बहुलम् (3/2/87)

घञन्ते उत्तरपदे उपसर्गस्य बहुलं दीर्घः स्यात्। नीमेदः, नीवारः, प्रावारः, प्रासादः, प्राकारः। क्वचिद्वा — परिणामः, परीणामः। क्वचिन्न — प्रतापः, प्रभावः।

घञन्त उत्तरपद परे होने पर उपसर्ग का (स्वर) बहुलता से दीर्घ होता है।

नीमेदः

नि (अर्थात् निश्शेषेण) मेदनम् लौ. वि.
नि + मेद अ. वि.
ऊर्यादिनु ...... (425) सू. से नि की गति संज्ञा एवं धातु से पूर्व प्रयोग करने पर
गतिः (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
निमेद
घञ्युप ...... (499) सू. से उपसर्ग का (स्वर) दीर्घ
नीमेद
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

---

[1] तरतमरूपकल्पचेलड्ब्रुवगोत्रमतहत इति तरादिः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

नीमेद + सि

शेष जिनश्रितवत्

नीवारः

निवरणम् लौ. वि.

नि + वार अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से नि की गति संज्ञा एवं धातु से पूर्व प्रयोग करने पर

गतिः (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

निवार

शेष नीमेदवत्

प्रावारः

प्रवरणम् लौ. वि.

प्र + वार अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से प्र की गति संज्ञा एवं धातु से पूर्व प्रयोग करने पर

गतिः (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष नीमेदवत्

प्रासादः

प्रसदनम् लौ. वि.

प्र + साद अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से प्र की गति संज्ञा एवं धातु से पूर्व प्रयोग करने पर

गतिः (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

प्रसाद

शेष नीमेदवत्

प्राकारः

प्रकरणम् लौ. वि.

प्र + कार अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से प्र की गति संज्ञा एवं धातु से पूर्व प्रयोग करने पर

गतिः (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

प्रकार

शेष नीमेदवत्

कहीं-कहीं विकल्प से दीर्घ होता है—

परीणामः

परिणमनम् लौ. वि.

परि + नाम अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से परि की गति संज्ञा एवं धातु से पूर्व प्रयोग करने पर

गतिः (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

परिनम

अवकुप्वनुस्वारविसर्गजिह्वामूलीयोपध्मानीयैरन्तरेऽपि (121) सू. से न को ण

परिणम

घञ्युप ...... (499) सू. से विकल्प से उपसर्ग का इकार दीर्घ

परीणाम

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

परीणाम + सि

शेष जिनश्रितवत्

जहां इकार दीर्घ नहीं होगा वहां—

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

परिणामः

शेष प्रक्रिया परीणामवत्

कहीं-कहीं पर दीर्घ नहीं होता है —

प्रतापः

प्रतनम् लौ. वि.

प्र + ताप अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से प्र की गति संज्ञा एवं धातु से पूर्व प्रयोग करने पर

गतिः (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

प्रताप

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

प्रताप + सि

शेष जिनश्रितवत्

प्रभावः

प्रभवनम् लौ. वि.

प्र + भाव अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से प्र की गति संज्ञा एवं धातु से पूर्व प्रयोग करने पर

गतिः (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

प्रभाव

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

प्रभाव + सि

शेष जिनश्रितवत्

500. एकादशषोडशषोडन्षोढाषड्ढाः (3/2/94)

एते कृतदीर्घत्वादयो निपात्यन्ते। एकोत्तरा दश, एकं च दश च वा एकादश, षोडश। एवं षड् दन्ता अस्य षोडन्, षड्भिः प्रकारैः षोढा षड्ढा वा।

जिनमें दीर्घत्व आदि कर दिया है ऐसे ये (एकादश, षोडश, षोडन्, षोढा, षड्ढा) निपातन से सिद्ध होते हैं।

एकादश

एकोत्तरा दश लौ. वि.

एकोत्तर + जस् + दशन् + जस् अ. वि.

विशेषणं ...... (441) सू. से विकल्प से समास

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

एकोत्तर दशन्

शाक ...... (444) सू. से मध्यम पद (उत्तर) का लोप एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा

एक दशन्

संख्या समासे (भिक्षु. 3/1/189) सू. से एक का प्राक् निपात

एकदशन्

एकादश ...... (500) सू. से क में स्थित अकार का आकार

एकादशन्

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

एकादशन् + जस्

जश्शसोर्डतिष्णो लुक् (156) सू. से जस् का लुक्

एकादशन्

नाम्नो ...... (135) सू. से नकार का लोप करने पर एकादश रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एकादश

एकं च दश च लौ. वि.

एक + सि + दशन् + जस् अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

एकदशन्

संख्या समासे (भिक्षु. 3/1/189) सू. से एक का प्राक् निपात

एकदशन्

एकादश ...... (500) सू. से क में स्थित अकार का दीर्घ

एकादशन्

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

एकादशन् + जस्

शेष एकादशवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां विगह ही रह जाएगा।

षोडश

षट् च दश च लौ. वि.

षष् + जस् + दशन् + जस् अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

षष् दशन्

संख्या ...... (भिक्षु. 3/1/189) सू. से षष् का प्राक् निपात

षष्दशन्

एकादश ...... (500) सू. से ष् का उकार एवं दकार का डकार

षउडशन्

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का उकार के साथ ओकार

षोडशन्

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

षोडशन् + जस्

शेष एकादशवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

षोडन्

षड् दन्ता अस्य लौ. वि.

षष् + जस् + दन्त + जस् अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

षष् दन्त

सर्वादिश्च ...... (467) सू. से षष् का प्राक् निपात

षष्दन्त

एकादश ...... (500) सू. से ष् का उ , दन्त का दतृ एवं दतृ के द् का ड्

षउडतृ

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार को उकार के साथ ओकार

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

षोडतृ , ऋकार अनुबन्ध

षोडत्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

षोडत् + सि

पुंस्त्रियोः ...... (133) सू. से सि प्रत्यय की थुट् संज्ञा

मिदन्त्यस्वरात्परः (195) सू. की सहायता से

उदृदितो नुम् (249) सू. से अन्तिम स्वर से परे नुम् का आगम

षोडनुम्त् + सि, मकार अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ

षोडन्त् + सि

हसेपः ...... (183) सू. से सि प्रत्यय का लोप

संयोगस्य (206) सू. से त् का लोप करने पर षोडन् रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

षोढा

षड्भिः प्रकारैः लौ. वि.

संख्याया धा (706) सू. से धा प्रत्यय

षष् + भिस् + धा अ. वि.

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

षष् धा

एकादश ...... (500) सू. से ष् का उ एवं ध् का ढ्

षउढा

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का उकार के साथ ओकार

षोढा

अधण्तस्वाद्येनान्तः (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

षोढा + सि

अव्ययस्य (294) सू. से सि प्रत्यय का लोप करने पर षोढा रूप सिद्ध हुआ।

षड्ढा

षड्भिः प्रकारैः लौ. वि.

संख्याया ...... (706) सू. से धा प्रत्यय

षष् + भिस् + धा अ. वि.

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

षष्धा

नाम ...... (131) सू. से षष् की पद संज्ञा

झसा ...... (59) सू. से ष् का ड्

षड्धा

ष्टुभिः ष्टुः (65) सू. से ध् का ढ्

षड्ढा

अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

षड्ढा + सि

शेष षोढावत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

501. द्वित्र्यष्टानां द्वात्रयोऽष्टाः प्राक् शतादनशीति बहुव्रीहौ (3/2/95)

द्व्यादीनां द्वादय आदेशाः स्युः प्राक् शतात् संख्यायामुत्तरपदे अशीति बहुव्रीहिसमासविषयं चोत्तरपदं वर्जयित्वा। द्वाभ्यामधिका दश, द्वौ च दश चेति वा द्वादश। एवं त्रयोदश, अष्टादश। प्राक् शतादिति किम् — द्विशतम्। अनशीति बहुव्रीहाविति किम् — द्व्यशीतिः, द्वौ वा त्रयो वा द्वित्राः।

शत से पहले-पहले द्वि, त्रि एवं अष्टन् को (क्रमशः) द्वा, त्रयस् एवं अष्टा आदेश होते हैं संख्यावाची उत्तरपद में होने पर (किन्तु) उत्तरपद में अशीति एवं बहुव्रीहिसमास के विषय को छोड़कर।

द्वादश

द्वाभ्यामधिका दश लौ. वि.

द्वि + भ्याम् + अधिक + जस् + दशन् + जस् अ. वि.

विशेषण ...... (441) सू. से विकल्प से समास

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

द्वि अधिक दशन्

शाक ...... (444) सू. से मध्यम पद (अधिक) का लोप एवं तत्पुरुष और कर्मधारयसमास संज्ञा

द्विदशन्

संख्या ...... (भिक्षु. 3/1/189) सू. से द्वि का प्राक् निपात

द्विदशन्

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

द्विदशन् + जस्

शेष एकादशवत्

पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

द्वादश

द्वौ च दश च लौ. वि.

द्वि + औ + दशन् + जस् अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

द्वि दशन्

संख्या ...... (भिक्षु. 3/1/189) सू. से द्वि का प्राक् निपात

द्विदशन्

द्वित्र्यष्टानां ...... (501) सू. से द्वि को द्वा आदेश द्वादशन्

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

द्वादशन् + जस्

शेष एकादशवत्

पक्ष में — जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

त्रयोदश

त्रयश्च दश च लौ. वि.

त्रि + जस् + दशन् + जस् अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

त्रि दशन्

संख्या ...... (भिक्षु. 3/1/189) सू. से त्रि का प्राक् निपात

त्रिदशन्

द्वित्र्यष्टानां ...... (501) सू. से त्रि का त्रयस्

त्रयस्दशन्

स्रोर्वि ...... (89) सू. से सकार का विसर्ग

त्रयःदशन्

हबे (85) सू. से विसर्ग का उकार

त्रयउदशन्

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार को उकार के साथ ओकार

त्रयोदशन्

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

त्रयोदशन् + जस्

शेष एकादशवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

अष्टादश

अष्ट च दश च लौ. वि.

अष्टन् + जस् + दशन् + जस् अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अष्टन् दशन्

संख्या ...... (भिक्षु. 3/1/189) सू. अष्टन् का प्राक् निपात

अष्टन्दशन्

द्वित्र्यष्टानां ...... (501) सू. से अष्टन् का अष्टा

अष्टादशन्

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

अष्टादशन् + जस्

शेष एकादशवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

सौ से पहले-पहले ऐसा क्यों? द्विशतम् (एक सौ दो) यह संख्या सौ से बाद की है अतः द्वि शब्द को द्वित्र्यष्टानां ......(501) सू. से द्वा नहीं होगा।

द्विशतम्

द्वौ च शतं च लौ वि.

द्वि + औ + शत + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

द्वि शत

संख्या ...... (भिक्षु. 3/1/189) सू. से द्वि का प्राक् निपात

द्विशत

द्वन्द्वः संख्या विंशत्यादिना संख्यायाम् (भिक्षु. 3/1/146) सू. से एकत्व

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

द्विशत + सि

शेष मासविकलवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

उत्तरपद में अशीति न हो ऐसा क्यों ? द्वयशीतिः इस उदाहरण में अशीति उत्तरपद में है अतः द्वित्र्यष्टानां ...... (501) सू. से द्वि का द्वा नहीं होगा।

द्वयशीतिः

द्वौ च अशीतिः च लौ. वि.

द्वि + औ + अशीति + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

द्वि अशीति

संख्या ...... (भिक्षु. 3/1/189) सू. से द्वि का प्राक् निपात

द्विअशीति

इवर्णादीनां ...... (29) सू. से इकार का यकार

द्व्यअशीति

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर द्वयशीति

द्वन्द्वः संख्या विंशत्यादिना संख्यायाम् (भिक्षु. 3/1/146) सू. से एकत्व

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

द्वयशीति + सि

शेष जिनश्रितवत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

उत्तरपद बहुव्रीहिसमास का विषय न हो ऐसा क्यों? द्वित्राः में बहुव्रीहिसमास होने से द्वि का द्वा नहीं होगा।

द्वित्राः

द्वौ वा त्रयः वा लौ. वि.

द्वि + औ + त्रि + जस् अ. वि.

सुज्वार्थे संख्या संख्येये संख्यया बहुव्रीहिः (भिक्षु. 3/1/125) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

द्वि त्रि

संख्या ...... (भिक्षु. 3/1/189) सू. द्वि का प्राक् निपात

द्वित्रि

संख्याया बहुव्रीहेः (भिक्षु. 8/3/70) सू. से समासान्त ड प्रत्यय

द्वित्रि + ड , ड् अनुबन्ध

द्वित्रि + अ

तदन्तं पदम् (23) सू. से द्वि एवं त्रि की पद संज्ञा की प्राप्ति किन्तु

वृत्त्यन्तः (405) सू. से अन्तिम की पदसंज्ञा का निषेध

इवर्णा ...... (451) सू. से इकार का लोप

द्वित्र् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर द्वित्र

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

द्वित्र + जस्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष घटशङ्खपटवत्

502. चत्वारिंशदादौ वा (3/2/96)

द्वित्र्यष्टानां प्राक्शताच्चत्वारिंशदादौ संख्यायामुत्तरपदे यथासंख्यं द्वा, त्रयस् , अष्टा इत्येते आदेशा वा भवन्ति अनशीतिबहुव्रीहौ। द्वाचत्वारिंशत्, द्विचत्वारिंशत्, त्रयश्चत्वारिंशत्, त्रिचत्वारिंशत्, अष्टाचत्वारिंशत्, अष्टचत्वारिंशत्।

सौ से पहले-पहले द्वि, त्रि एवं अष्टन् को क्रमशः द्वा, त्रयस् एवं अष्टा आदेश विकल्प से होते हैं चत्वारिंशत् आदि संख्या उत्तरपद में होने पर किन्तु अशीति एवं बहुव्रीहिसमास के विषय को छोड़कर।

द्वाचत्वारिंशत्

द्वौ च चत्वारिंशत् च लौ. वि.

द्वि + औ + चत्वारिंशत् + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

द्वि चत्वारिंशत्

संख्या ...... (भिक्षु. 3/1/189) से द्वि का प्राक् निपात

द्विचत्वारिंशत्

चत्वारिंशदादौ वा (502) सू. से द्वि को विकल्प से द्वा आदेश

द्वाचत्वारिंशत्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

द्वाचत्वारिंशत् + सि

हसेपः ...... (183) सू. से सि प्रत्यय का लोप करने पर द्वाचत्वारिंशत् रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में—जहां चत्वा ...... (502) सू. से द्वि को द्वा आदेश नहीं होगा वहां—

द्विचत्वारिंशत्

शेष प्रक्रिया द्वाचत्वारिंशत्वत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

त्रयश्चत्वारिंशत्

त्रयः च चत्वारिंशत् च लौ. वि.

त्रि + जस् + चत्वारिंशत् + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

त्रि चत्वारिंशत्

संख्या ...... (भिक्षु. 3/1/189) सू. से त्रि का प्राक् निपात

त्रिचत्वारिंशत्

चत्वा ...... (502) सू. से विकल्प से त्रि को त्रयस् आदेश

त्रयस्चत्वारिंशत्

स्रोर्वि ...... (89) सू. से सकार का विसर्ग

त्रयःचत्वारिंशत्

विसर्गस्य सश्छते (82) सू. से विसर्ग का सकार

त्रयस्चत्वारिंशत्

स्तोः श्चुभिः श्चुः (63) सू. से सकार का शकार

त्रयश्चत्वारिंशत्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

त्रयश्चत्वारिंशत् + सि

शेष द्वाचत्वारिंशत्वत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में—जहां चत्वा ...... (502) सू. से त्रि को त्रयस् आदेश नहीं होगा वहां—

त्रिचत्वारिंशत्

शेष प्रक्रिया द्विचत्वारिंशत्वत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

अष्टाचत्वारिंशत्

अष्टौ अथवा अष्ट च चत्वारिंशत् च लौ. वि.

अष्टन् + जस् + चत्वारिंशत् + सि अ. वि.

चार्थे ...... (481) सू. से विकल्प से समास एवं द्वन्द्वसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अष्टन् चत्वारिंशत्

संख्या ...... (भिक्षु. 3/1/189) सू. से अष्टन् का प्राक् निपात

अष्टन्चत्वारिंशत्

चत्वा ...... (502) सू. से विकल्प से अष्टन् को अष्टा आदेश

अष्टाचत्वारिंशत्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अष्टाचत्वारिंशत् + सि

शेष द्वाचत्वारिंशत्वत्

पक्ष में—जहां पर चत्वा ...... (502) सू. से अष्टन् को अष्टा आदेश नहीं होगा वहां—

अष्टचत्वारिंशत्

अष्टन्चत्वारिंशत् तक पूर्ववत् प्रक्रिया

नाम्नो ...... (135) सू. से नकार का लोप

अष्टचत्वारिंशत्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अष्टचत्वारिंशत् + सि

शेष द्वाचत्वारिंशत्वत्

पक्ष में—जहां समास नहीं होगा वहां विग्रह ही रह जाएगा।

503. खित्यनव्ययस्वरान्तारुषां मुम् ह्रस्वश्च (3/2/139)

अव्ययवर्जितस्वरान्तस्य अरुषश्च मुमागमः स्यात् यथाप्राप्तह्रस्वश्च खिदन्ते परे। कालिंमन्या, हरिणिंमन्या, मेघंकरः, प्रियंवदः, अरुंतुदः।

अव्ययवर्जित स्वरान्त और अरुष् को मुम् का आगम होता है और यथाप्राप्त (अर्थात् जहां दीर्घान्त हो) को ह्रस्व होता है खिदन्त (कृदन्त) परे होने पर।

कालिंमन्या

कालीमात्मानं मन्यते लौ. वि.

काली + अम् + मन्य अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

काली मन्य

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से काली को पूर्व में रखने पर

कालीमन्य

मिदन्त्यस्वरात्परः (195) सू. की सहायता से

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

खित्यनव्यय ...... (503) सू. से अन्तिम स्वर से परे मुम् का आगम एवं ह्रस्व
कालिमुम्मन्य, म् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
मोऽनुस्वार ...... (77) सू. से मकार का अनुस्वार
कालिंमन्य
आबतः ...... (395) सू. से आप् प्रत्यय
कालिंमन्य + आप्, प् अनुबन्ध
समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ
कालिंमन्या
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
कालिंमन्या + सि
शेष घटमृत्तिकावत्

हरिणिंमन्या

हरिणीमात्मानं मन्यते लौ. वि.
हरिणी + अम् + मन्य अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष कालिंमन्यावत्

मेघंकरः

मेघं करोति लौ. वि.
मेघ + अम् + कर अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
मेघ कर
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से मेघ को पूर्व में रखने पर
मेघकर
मिदन्त्य ...... (195) सू. की सहायता से
खित्यनव्यय ...... (195) सू. से मुम् का आगम
मेघमुम्कर, म् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
मेघम्कर
मोऽनुस्वार ...... (77) सू. से मकार का अनुस्वार
मेघंकर
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
मेघंकर + सि
शेष जिनश्रितवत्

प्रियंवदः

प्रियं वदति लौ. वि.
प्रिय + अम् + वद अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष मेघंकरवत्

अरुंतुदः

अरुः तुदति लौ. वि.
अरुष् + अम् + तुद अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अरुष् तुद
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अरुष् को पूर्व में रखने पर
अरुष्तुद्
मिदन्त्य ...... (195) सू. की सहायता से
खित्यनव्यय ...... (503) सू. से अन्तिम स्वर से परे मुम् का आगम
अरुमुम्ष्तुद, म् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
अरुम्ष्तुद
संयोगस्य (206) सू. से ष् का लोप
अरुम्तुद
मोऽनुस्वार .... (77) सू. से मकार का अनुस्वार
अरुंतुद
प्र. वि. के ए. वि. की विवक्षा में सि प्रत्यय
अरुंतुद + सि
शेष जिनश्रितवत्

504. कृत्येऽवश्यमो लोपः (3/2/147)

कृत्यप्रत्ययान्ते परे अवश्यमो लोपः स्यात्। अवश्यकार्यं स्तुत्यं देयं कर्तव्यं करणीयं वा। कृत्ये इति किम्—अवश्यंलावकः।

कृत्य[1] प्रत्ययान्त परे होने पर अवश्यम् (के म्) का लोप होता है।

अवश्यंकार्यम्

अवश्यं क्रियेत लौ. वि.
अवश्यम् + कार्य अ. वि.
नाम ...... (393) सू. से समास
कृत्ये ...... (504) सू. से अवश्यम् के मकार का लोप
अवश्य कार्य
वर्णों को मिलाने पर अवश्यकार्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
अवश्यकार्य + सि
शेष मासविकलवत्

अवश्यस्तुत्यम्

अवश्यं स्तूयेत लौ. वि.
अवश्यम् + स्तुत्य अ. वि.
नाम ...... (393) सू. से समास
शेष अवश्यकार्यवत्

अवश्यदेयम्

अवश्यं दीयेत लौ. वि.
अवश्यम् + देय अ. वि.
नाम ...... (393) सू. से समास
शेष अवश्यकार्यवत्

---

[1] कृत्य प्रत्यय पांच हैं—तव्य, अनीय, य, क्यप् ध्यण्।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अवश्यकर्त्तव्यम्

अवश्यं क्रियेत लौ. वि.

अवश्यम् + कर्त्तव्य अ. वि.

नाम ...... (393) सू. से समास

शेष अवश्यकार्यवत्

अवश्यकरणीयम्

अवश्यं क्रियेत लौ. वि.

अवश्यम् + करणीय अ. वि.

नाम ...... (393) सू. से समास

शेष अवश्यकार्यवत्

कृत्यप्रत्ययान्त परे हो ऐसा क्यों? अवश्यंलावक:। लावक: लूनश् धातु के साथ णक प्रत्यय योजित करने पर बना है। णक प्रत्यय कृत्य के अन्तर्गत नहीं है। अत: अवश्यम् के मकार का लोप नहीं होगा।

अवश्यंलावक:

अवश्यं लुनाति लौ. वि.

अवश्यम् + लावक अ. वि.

नाम ...... (393) सू. से समास

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर अवश्यम्लावक

मोऽनुस्वार ...... (77) सू. से मकार का अनुस्वार करने पर अवश्यंलावक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अवश्यंलावक + सि

शेष जिनश्रितवत्

505. समो हिततत्योर्वा (3/2/148)

हिते तते च उत्तरपदे परे सम्शब्दस्यान्तस्य लोपो वा भवति। सहितम्, संहितम्, सततम्, सन्ततम्।

सम् शब्द के अन्त का लोप विकल्प से होता है उत्तरपद में हित एवं तत परे होने पर।

सहितम्

सन्धीयते स्म लौ. वि.

सम् + हित अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से सम् की गति संज्ञा एवं धातु से पूर्व प्रयोग करने पर

गति: (426) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से सम् को पूर्व में रखने पर

सम्हित

समो ...... (505) सू. से विकल्प से सम् के मकार का लोप

सहित

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

सहित + सि

शेष मासविकलवत्

पक्ष में—जहां समो ...... (505) सू. से मकार का लोप नहीं होगा वहां—

संहितम्

प्रथमोक्तं प्राक् (396) सूत्र तक सहितवत् प्रक्रिया

सम्हित

हशसेऽनुस्वार: (80) सू. से मकार का अनुस्वार

संहित

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

संहित + सि

शेष मासविकलवत्

सततम्

सन्तन्यते स्म लौ. वि.

सम् + तत अ. वि.

ऊर्याद्यनु ...... (425) सू. से सम् की गति संज्ञा एवं धातु से पूर्व प्रयोग करने पर

गतिः (426) सूत्र से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से सम् को पूर्व में रखने पर

समो ...... (505) सू. से विकल्प से सम् के मकार का लोप

सतत

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

सतत + सि

शेष मासविकलवत्

पक्ष में—जहां समो ...... (505) सू. से मकार का लोप नहीं होगा वहां—

सन्ततम्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. तक सततवत् प्रक्रिया

सम्तत

मोऽनुस्वार ...... (77) सू. से मकार का नकार

सन्तत

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

सन्तत + सि

शेष मासविकलवत्

506. काममनसोस्तुमश्च (3/2/149)

तुम्प्रत्ययान्तस्य सम्शब्दस्य चान्तस्य लोपो भवति काममनसोरुत्तरपदयोः परयोः। कर्तुकामः, हर्तुमनाः, सकामः, समनाः।

तुम् प्रत्ययान्त और सम् शब्द के अन्त का लोप होता है काम और मनस् (शब्द) उत्तरपद में परे होने पर।

कर्तुकामः

कर्तुं कामोऽस्य सः लौ. वि.

कर्तुम् + काम + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कर्तुम् + काम

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से कर्तुम् को पूर्व में रखने पर

कर्तुम्काम

काम ...... (506) सू. से मकार का लोप

कर्तुकाम

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

कर्तुकाम + सि

शेष जिनश्रितवत्

हर्तुमनाः

हर्तुं मनोऽस्य सः लौ. वि.

हर्तुम् + मनस् + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (462) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

हर्तुम् मनस्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से हर्तुम् को पूर्व में रखने पर

हर्तुम्मनस्

काम ...... (506) सू. से मकार का लोप

हर्तुमनस्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

हर्तुमनस् + सि

अत्वसोरभ्वादे: सौ (251) सू. से उपधा को दीर्घ

हर्तुमनास् + सि

हसेप: ...... (183) सू. से सि प्रत्यय का लोप

हर्तुमनास्

स्रोर्वि ...... (89) सू. से स् का विसर्ग करने पर हर्तुमना: रूप सिद्ध हुआ।

सकाम:

सम् अर्थात् सम्यक् कामोऽस्य स: लौ. वि.

सम् + काम + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष कर्तुकामवत्

समना:

सम् अर्थात् सम्यग् मनोऽस्य स: लौ. वि.

सम् + मनस् + सि अ. वि.

तुल्यार्थं ...... (460) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

शेष हर्तुमना:वत्

507. अन्यस्य दुगीयकारके (3/2/155)

ईयप्रत्यये कारकशब्दे च परे अन्यस्य दुगागम: स्यात्। अन्यस्य कारक:—अन्यत्कारक:।

ईय प्रत्यय और कारक शब्द परे होने पर अन्य (शब्द) को दुक् का आगम हो जाता है।

अन्यत्कारक:

अन्यस्य कारक: लौ. वि.

अन्य + ङस् + कारक + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अन्य कारक

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अन्य को पूर्व में रखने पर

अन्यकारक

आद्यन्तौ टि्कतौ (70) सू. की सहायता से

अन्यस्य ...... (507) सू. से अन्य को दुक् का आगम

अन्यदुक्कारक, क् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ

अन्यद्कारक

खसे चपा झथानाम् (72) सू. से द् का त्

अन्यत्कारक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अन्यत्कारक + सि

शेष जिनश्रितवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

508. अर्थे वा (3/2/157)

अषष्ठ्यन्तस्य अतृतीयान्तस्य च अन्यशब्दस्य अर्थशब्दे परे दुगागमो वा भवति। अन्यदर्थः, अन्यार्थः।

षष्ठ्यन्तवर्जित और तृतीयान्तवर्जित अन्य शब्द को दुक् का आगम विकल्प से होता है अर्थ शब्द परे होने पर।

अन्यदर्थः

अन्यः चासौ अर्थः च लौ. वि.
अन्य + सि + अर्थ + सि अ. वि.
विशेषणं ...... (441) सू. से समास एवं कर्मधारय और तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अन्य अर्थ
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अन्य को पूर्व में रखने पर
अन्यअर्थ
आद्यन्तौ ...... (70) सू. की सहायता से
अर्थे ...... (508) सू. से अन्य को विकल्प से दुक् का आगम
अन्यदुक्अर्थ, क् अनुबन्ध , उकार उच्चारणार्थ
अन्यद्अर्थ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर अन्यदर्थ
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
अन्यदर्थ + सि
शेष जिनश्रितवत्
पक्ष में—जहां अर्थे ...... (508) सू. से दुक् का आगम नहीं होगा वहां—

अन्यार्थः

अन्यः चासौ अर्थः च लौ. वि. से लेकर अन्यअर्थ तक पूर्ववत् प्रक्रिया
समानानां ...... (36) सू. से अकार को अकार के साथ दीर्घ
अन्यार्थ
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
अन्यार्थ + सि
शेष जिनश्रितवत्

509. दृग्दृश्दृक्षेषु (3/2/133)

दृगादिषु परेषु समानस्य सः स्यात्। सदृक्, सदृशः, सदृक्षः।

दृग्, दृश्, और दृक्ष परे होने पर समान का स होता है।

सदृक्

समान इव दृश्यते लौ. वि.
समान + सि + दृश् अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
समान दृश्
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से समान को पूर्व में रखने पर
समानदृश्
दृग् ...... (509) सू. से समान को स आदेश
सदृश्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सदृश् + सि

हसेपः ...... (183) सू. से सि प्रत्यय का लोप

सदृश्

दिश्दृश्स्पृश्मृश्दधृषुष्णिहस्रजृत्विजां गः (252) सू. से श् का ग्

सदृग्

झसा ...... (59) सू. से ग् का क् करने पर सदृक् रूप सिद्ध हुआ।

सदृशः

समान इव दृश्यते लौ. वि.

समान + सि + दृश अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा से प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय तक सदृक्वत् प्रक्रिया

सदृश + सि

शेष जिनश्रितवत्

सदृक्षः

समान इव दृश्यते लौ. वि.

समान + सि + दृक्ष अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष सदृशवत्

510. अन्यत्यदादेराः (3/2/134)

अन्यस्य त्यदादेश्च आकारादेशः स्यात् दृगादिषु परेषु। अन्यादृक्, अन्यादृशः, अन्यादृक्षः। एवं तादृक्, यादृक्, त्वादृक्, मादृक्, भवादृक्। अदसोऽनेनात्वे मादुवर्णोऽनु इति दीर्घ ऊकारे च। अमूदृक्।

अन्य एवं त्यद् आदि (के अन्त) को आकार आदेश होता है दृग् आदि परे होने पर।

अन्यादृक्

अन्य इव दृश्यते लौ. वि.

अन्य + सि + दृश् अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अन्य दृश्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अन्य को पूर्व में रखने पर

अन्यदृश्

षष्ठ्यान्त्यस्य (46) सू. की सहायता से

अन्य ...... (510) सू. से अन्तिम अ का आ

अन्यादृश्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अन्यादृश् + सि

शेष सदृक्वत्

अन्यादृशः

अन्य इव दृश्यते लौ. वि.

अन्य + सि + दृश अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा से प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय तक अन्यादृक्वत् प्रक्रिया

अन्यादृश + सि

शेष जिनश्रितवत्

अन्यादृक्षः

अन्य इव दृश्यते लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अन्य + सि + दृक्ष अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष अन्यादृशवत्

तादृक्

सः इव दृश्यते लौ. वि.
तद् + सि + दृश् अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
तद् दृश्
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से तद् को पूर्व में रखने पर
तद्दृश्
षष्ठ्यान्त्यस्य (46) सू. की सहायता से
अन्य ...... (511) सू. से अन्तिम द् का आ
तआदृश्
समानानां ...... (36) सू. से अकार के आकार के साथ दीर्घ
तादृश्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
तादृश् + सि
शेष सदृक्वत्

तादृशः

सः इव दृश्यते लौ. वि.
तद् + सि + दृश अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा से प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय तक तादृक्वत् प्रक्रिया
तादृश + सि
शेष जिनश्रितवत्

तादृक्षः

सः इव दृश्यते लौ. वि.
तद् + सि + दृक्ष अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष तादृशवत्

यादृक्

य इव दृश्यते लौ. वि.
यद् + सि + दृश् अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष तादृक्वत्

यादृशः

यः इव दृश्यते लौ. वि.
यद् + सि + दृश अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष तादृशवत्

यादृक्षः

यः इव दृश्यते लौ. वि.
यद् + सि + दृक्ष अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष तादृशवत्

त्वादृक्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

त्वम् इव दृश्यते लौ. वि.
युष्मद् + सि + दृश् अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
युष्मद् दृश्
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से युष्मद् को पूर्व में रखने पर
युष्मद्दृश्
त्वमौ प्रत्ययोत्तरपदे चैकत्वे (275) सू. से युष्म् को त्व आदेश
त्वअद्दृश्
अदेतोरपदान्तेऽतः (102) सू. से अकार का लोप
त्व्अद्दृश्
षष्ठ्यान्त्यस्य (46) सू. की सहायता से
अन्य ...... (510) सू. से अन्तिम द् का आ
त्व्अआदृश्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर
त्वआदृश्
समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ
त्वादृश्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
त्वादृश् + सि
शेष सदृक्वत्

त्वादृशः

त्वम् इव दृश्यते लौ. वि.
युष्मद् + सि + दृश अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा से प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय तक त्वादृक्वत् प्रक्रिया
त्वादृश + सि
शेष जिनश्रितवत्

त्वादृक्षः

त्वम् इव दृश्यते लौ. वि.
युष्मद् + सि दृक्ष अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष त्वादृशवत्

मादृक्

अहम् इव दृश्यते लौ. वि.
अस्मद् + सि + दृश् अ. वि
सम्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अस्मद् दृश्
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अस्मद् को पूर्व में रखने पर
अस्मद्दृश
त्वमौ ...... (275) सू. से अस्म् को म आदेश
मअद्दृश्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अदेतो ...... (102) सू. से लेकर प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय तक त्वादृक्वत् प्रक्रिया

मादृश् + सि

शेष सदृक्वत्

मादृशः

अहम् इव दृश्यते लौ. वि.

अस्मद् + सि + दृक्ष अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष त्वादृशवत्

मादृक्षः

अहम् इव दृश्यते लौ. वि.

अस्मद् + सि + दृश अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष त्वादृशवत्

भवादृक्

भवान् इव दृश्यते लौ. वि.

भवतु + सि + दृश् अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

भवतु + दृश्, उकार उच्चारणार्थ

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से भवत् को पूर्व में रखने पर

भवत्दृश्

षष्ठ्यान्त्यस्य (46) सू. की सहायता से

अन्य ...... (510) सू. से अन्तिम त् का आ

भवआदृश्

समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ

भवादृश्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

भवादृश् + सि

शेष सदृक्वत्

भवादृशः

भवान् इव दृश्यते लौ. वि.

भवतु + सि + दृश अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा से प्र. वि. के ए. वि. की विवक्षा में सि प्रत्यय तक भवादृक्वत् प्रक्रिया

भवादृश + सि

शेष जिनश्रितवत्

भवादृक्षः

भवान् इव दृश्यते लौ. वि.

भवतु + सि + दृक्ष अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष भवादृशवत्

अमूदृक्

असौ इव दृश्यते लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अदस् + सि + दृश् अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अदस् दृश्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से अदस् को पूर्व में रखने पर

अदस्दृश

षष्ठ्या ...... (46) सू. की सहायता से

अन्य ...... (510) सू. से अन्तिम स् का आ

अदआदृश्

समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ

अदादृश्

दो मोऽवर्णस्य (259) सू. से दकार का मकार

अमादृश्

मादुवर्णोऽनु (248) सू. से आकार का ऊकार

अमूदृश्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अमूदृश् + सि

शेष सदृक्वत्

अमूदृशः

असौ इव दृश्यते लौ. वि.

अदस् + सि + दृश अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा से प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय तक अमूदृक्वत् प्रक्रिया

अमूदृश + सि

शेष जिनश्रितवत्

अमूदृक्षः

असौ इव दृश्यते लौ. वि.

अदस् + सि + दृक्ष अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

शेष अमूदृशवत्

511. किमिदमोः कीशीशौ (3/2/135)

अनयोर्दृगादिषु परेषु कीशीशौ स्तः। कीदृक्, कीदृशः, कीदृक्षः। ईदृक्, ईदृशः, ईदृक्षः।

इन (किम् एवं इदम्) को (क्रमशः) कीश् एवं ईश् आदेश होते हैं दृग् आदि परे होने पर।

कीदृक्

कः इव दृश्यते लौ. वि.

किम् + सि + दृश् अ. वि.

सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

किम् दृश्

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से किम् को पूर्व में रखने पर

किम्दृश्

शिदनेकवर्णः सर्वस्य (47) सू. की सहायता से

किमिदमोः ...... (511) सू. से सम्पूर्ण किम् को कीश् आदेश

कीश्दृश्, श् अनुबन्ध

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कीदृश्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
कीदृश् + सि
शेष सदृक्वत्

कीदृशः

कः इव दृश्यते लौ. वि.
किम् + सि + दृश अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा से प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय तक कीदृक्वत् प्रक्रिया
कीदृश + सि
शेष जिनश्रितवत्

कीदृक्षः

कः इव दृश्यते लौ. वि.
किम् + सि + दृक्ष अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष कीदृशवत्

ईदृक्

अयम् इव दृश्यते लौ. वि.
इदम् + सि + दृश् अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय तक कीदृक्वत् प्रक्रिया
ईदृश् + सि
शेष सदृक्वत्

ईदृशः

अयम् इव दृश्यते लौ. वि.
इदम् + सि + दृश अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा से प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय तक कीदृक्वत् प्रक्रिया
ईदृश + सि
शेष जिनश्रितवत्

ईदृक्षः

अयम् इव दृश्यते लौ. वि.
इदम् + सि + दृक्ष अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
शेष ईदृशवत्

512. तस्करादयश्चोरादिषु (3/2/159)

एते चोरादिष्वर्थेषु निपात्यन्ते। तस्करश्चोरः, वृहस्पतिर्देवता। अन्यत्र तत्करः, वृहत्पतिः।

तस्कर आदि शब्द चोर आदि अर्थों में निपातन से सिद्ध होते हैं।

तस्करः (चोरः)

तत् करोति लौ. वि.
तद् + अम् + कर अ. वि.
सप्तम्युक्तं ...... (424) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
तद् कर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से तद् को पूर्व में रखने पर

तद्कर

खसे ...... (72) सू. से द् का त्

तत्कर

तस्करादय ...... (512) सू. से निपातन से तकार का सकार

तस्कर

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

तस्कर + सि

शेष जिनश्रितवत्

जहां तस्कर का अर्थ चोर नहीं होगा वहां—

तस्करादय ...... (512) सू. से तकार का सकार नहीं होगा। अतः

तत्करः

शेष सम्पूर्ण प्रक्रिया तस्करवत्

वृहस्पतिः (देवता)

वृहतां पतिः लौ. वि.

वृहत् + आम् + पति + सि अ. वि.

षष्ठ्य ...... (414) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

वृहत् पति

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से बृहत् को पूर्व में रखने पर

वृहत्पति

तस्करादय ...... (512) सू. से निपातन से त् का स्

वृहस्पति

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

वृहस्पति + सि

शेष जिनश्रितवत्

जहां वृहस्पति का अर्थ देवता नहीं होगा वहां—

तस्करादय ...... (512) सू. से त् का स् नहीं होगा। अतः

वृहत्पतिः

शेष सम्पूर्ण प्रक्रिया बृहस्पतिवत्।

513. पृषोदरादयः (3/2/158)

पृषोदरादयः शब्दा निपातनात् सिध्यन्ति। पृषदुदरे अस्य—पृषोदरः, जीवनस्य मूतः—जीमूतः, वारिणो वाहकः—बलाहकः, मह्यां रौतीति मयूरः, हिनस्तीति सिंहः, भ्रमन् रौतीति भ्रमरः।

पृषोदर आदि शब्द निपातन से सिद्ध होते हैं।

पृषोदरः

पृषद् उदरे अस्य सः लौ. वि.

पृषत् + सि + उदर + ङि अ. वि.

हंसगमना ...... (464) सू. से समास एवं बहुव्रीहिसमास संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पृषत् उदर

प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से पृषत् को पूर्व में रखने पर

पृषत्उदर

पृषोदरा ...... (513) सू. से निपातन से तकार का लोप

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पृषउदर
अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का उकार के साथ ओकार
पृषोदर
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पृषोदर + सि
शेष जिनश्रितवत्

जीमूतः

जीवनस्य मूतः लौ. वि.
जीवन + ङस् + मूत + सि अ. वि.
षष्ठ्य ...... (414) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
जीवन मूत
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से जीवन को पूर्व में रखने पर
जीवनमूत
पृषोदरा ...... (513) सू. से निपातन से वन का लोप
जीमूत
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
जीमूत + सि
शेष जिनश्रितवत्

बलाहकः

वारिणो वाहकः लौ. वि.
वारि + ङस् + वाहक + सि अ. वि.
कृति (415) सू. से समास एवं तत्पुरुषसमास संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
वारि वाहक
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से वारि को पूर्व में रखने पर
वारिवाहक
पृषोदरा ...... (513) सू. से निपातन से वारि के स्थान पर व एवं वाहक के व् के स्थान पर ल्
बलाहक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
बलाहक + सि
शेष जिनश्रितवत्

मयूरः

मह्यां रौति लौ. वि.
मही + ङि + र अ. वि.
नाम ...... (395) सू. से समास
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
मही र
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से मही को पूर्व में रखने पर
महीर
पृषोदरा ...... (513) सू. से निपातन से मही को मयू आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मयूर
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
मयूर + सि
शेष जिनश्रितवत्

सिंहः

हिनस्ति इति लौ. वि.
हिंस एक नाम है
पृषोदरा ...... (513) सू. से ह एवं स का परस्पर स्थान परिवर्तन होने पर सिंह
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
सिंह + सि
शेष जिनश्रितवत्

भ्रमरः

भ्रमन् रौति लौ. वि.
भ्रमत् + सि + र अ. वि.
नाम ...... (393) सू. से समास
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
भ्रमत् र
प्रथमोक्तं ...... (396) सू. से भ्रमत् को पूर्व में रखने पर
भ्रमत्र
पृषोदरा ...... (513) सू. से त् का लोप
भ्रमर
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
भ्रमर + सि
शेष जिनश्रितवत्

वर्णागमो वर्णविपर्ययश्च, द्वौ चापरौ वर्णविकारनाशौ।
धातोस्तदर्थातिशयेन योगस्तदुच्यते पञ्चविधं निरुक्तम् ॥1॥

वर्णागमाद् भवेद्धंसः, सिंहो वर्णविपर्ययात्।
गूढोत्मा वर्णविकृते-र्वर्णनाशात् पृषोदरः ॥2॥

वर्णनाशविकाराभ्यां, धातोरतिशयेन यः।
योगस्तदुच्यते प्राज्ञै-र्मयूरभ्रमरादिषु ॥3॥

विद्वानों ने निरुक्त को पांच प्रकार का कहा है—1. वर्णागम 2. वर्णविपर्यय 3. वर्णविकार 4. वर्णनाश 5. धातु का अपने प्रसिद्ध अर्थ से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होना[1] (अर्थात् धातु का अर्थ विस्तार)।

(1) वर्ण के आगम से; जैसे—हसति इति हंसः। यहां हस् धातु में अनुस्वार का आगम हो गया।

(2) वर्ण के विपर्यय (अर्थात् स्थान परिवर्तन) से; जैसे—हिनस्ति इति सिंहः। यहां हिंसः में ह और स का परस्पर स्थान परिवर्तन हो गया।

---

[1] धातोस्तदर्थातिशयेन योगः।
यस्य धातोर्योऽर्थः प्रसिद्धः, तस्मादर्थान्तरेण योगस्तदर्थातिशयेन योगः।
जिस धातु का जो अर्थ प्रसिद्ध है उस प्रसिद्ध अर्थ से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होना तदर्थातिशयेन योगः है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(3) वर्ण के विकार से; जैसे — गूढ + आत्मा त्र गूढोत्मा। यहां विकार के कारण आत्मा के आ का उ हो गया। तत्पश्चात् सन्धिकार्य होने पर गूढोत्मा बना।

(4) वर्ण के नाश से; जैसे — पृषदुदरे यस्य सः पृषोदरः। यहां पर द् का नाश होने पर सन्धिकार्य हुआ है।

(5) वर्णनाश एवं वर्णविकार से (तथा उसमें) धातु का अपने प्रसिद्ध अर्थ से भिन्न अर्थ में प्रयुक्त होना; जैसे — मयूरः, भ्रमरः आदि में। मह्यां रौतीति मयूरः। यहां मही शब्द में ही का विकार यू हुआ तथा रु धातु का सामान्य अर्थ है शब्द करना किन्तु यहां रमण करने अर्थ में प्रयुक्त हुई है। भ्रमन् रौतीति भ्रमरः। यहां मूल शब्द भ्रमत् के त् का नाश हुआ तथा यहां भी रु धातु रमण करने अर्थ में प्रयुक्त हुई है।

इति समासेषु समासाश्रयविधिः

समासों में समासाश्रयविधि समाप्त।

इति समासप्रकरणम्

समास प्रकरण समाप्त।

❑❑❑

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

परिशिष्ट

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

परिशिष्ट ८

समास प्रकरण के सूत्रों की अकारादिवर्णानुक्रमणिका

400 अकालेऽव्ययीभावे।
443 अच्वेस्तुल्यार्थजातीययोः।
458 अतोऽह्नस्य।
433 अत्यादयः क्रान्ताद्यर्थे द्वितीयया।
448 अधिकं च तद्धितोत्तरपदसमाहारेषु।
404 अनः।
397 अनतो लुक्।
510 अन्यत्यदादेराः।
507 अन्यस्य दुगीयकारके।
434 अन्यार्थे स्त्रीप्रत्ययगोरन्त्यस्याऽक्वि-
पोऽनंशिसमासेयोबहुव्रीहौ।
422 अन् स्वरे।
496 अमूर्धमस्तकात्स्वाङ्गादकामे।
486 अर्चितम्।
508 अर्थे वा।
439 अर्धं समेंऽशे वा।
485 अल्पस्वरम्।
429 अल्पे।
435 अवादयः क्रुष्टाद्यर्थे तृतीयया।
394 अव्ययं कारकसमीपसमृद्ध्य-
संप्रत्यर्थाभावाऽत्ययाऽसंपत्ति-
ख्यातिपश्चाद्योग्यतावीप्सापदार्था-
नतिवृत्तिसादृश्यसदृशयौगपद्या-
नुपूर्व्यसंपत्तिसाकल्यान्तेषु पूर्वार्थे।
398 अव्ययीभावस्यातोऽमपञ्चम्याः।
456 अह्नः।
493 आत्मनः पूरणे।
491 आ द्वन्द्वे।
483 इदुदन्तमसखि।
451 इवर्णावर्णस्य।
498 ईपः।
479 ईबादीदूतां के।
446 उपमानानि सामान्यैः।
447 उपमेयानि व्याघ्रादिभिः।
473 उपसर्गात्।
408 ऊनार्थपूर्वादिभिः।
425 ऊर्याद्यनुकरणोपसर्गच्विडाचो
गतिर्धातोः प्राक् च।
478 ऋन्नित्यदितः।
500 एकादशषोडशषोडन्षोढाषड्ढाः।
409 कर्तृसाधने कृता।
431 कवश्चोष्णे।
418 काकादिभिः क्षेपे।
506 काममनसोस्तुमश्च।
453 किं क्षेपे।
511 किमिदमोः कीशीशौ।
427 कुः पापाल्पयोर्नित्यम्।
445 कुत्सितानि कुत्सनैरपापाद्यैः।
415 कृति।
504 कृत्येऽवश्यमो लोपः।
428 कोः कत्तत्पुरुषे।
503 खित्यनव्ययस्वरान्तारुषां

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मुम् ह्रस्वश्च।
426 गतिः।
499 घञ्युपसर्गस्य बहुलम्।
411 चतुर्थी प्रकृत्या।
502 चत्वारिंशदादौ वा।
481 चार्थे द्वन्द्वः सहोक्तौ।
403 जराया जरश्च।
475 जायाया जानिः।
497 तत्पुरुषे कृति।
512 तस्करादयश्चोरादिषु।
410 तुम्क्त्वाक्तवतुभिः।
460 तुल्यार्थं चानेकञ्च।
465 तेन सहः।
509 दृग्दृश्दृक्षेषु।
482 द्वन्द्वे लघ्वक्षरमेकम्।
501 द्वित्र्यष्टानां द्वात्रयोऽष्टाः
प्राक् शतादनशीतिबहुव्रीहौ।
472 द्विपदाद्धर्मादन्।
480 न कपि।
454 न किमः क्षेपे।
423 नखादयः।
421 नञत्।
455 नञस्तत्पुरुषात्।
420 नञ्तत्पुरुषः।
474 नसस्य।
393 नाम नाम्नैकार्थ्ये समासो बहुलम्।
489 नित्यवैरिणाम्।
437 निरादयो गताद्यर्थे पञ्चम्या।
469 नेन्द्वादिभ्यः।
406 नोऽपदस्य तद्धिते।
413 पञ्चमी भयादिभिः।
494 परात्मभ्यां चतुर्थ्याः।
436 पर्यादयो ग्लानाद्यर्थे चतुर्थ्या।
442 पुंवत् कर्मधारये।
463 पुंवद्भाषितपुंस्कादनूङः
स्त्रियास्तुल्यार्थे स्त्रियाम्।
492 पुत्रे।
430 पुरुषे वा।
416 पूरणशतृशानाव्ययतृप्तार्थैः।
438 पूर्वापराधरोत्तरमभिन्नेनांशिना।
513 पृषोदरादयः।
396 प्रथमोक्तं प्राक्।
470 प्रहरणेभ्यः।
432 प्रादयो गताद्यर्थे प्रथमया।
487 मासर्तुभ्रातृनक्षत्राण्यानुपूर्व्येण।
495 मूर्खे देवानांप्रियः।
401 यथाऽसादृश्ये।
452 राज्ञोऽस्त्रियाम्।
488 वर्णाः।
399 वा तृतीयासप्तम्योः।
490 विरोधिनामद्रव्याणाम्।
441 विशेषणं विशेष्येण तुल्यार्थे कर्मधारयश्च।
462 विशेषणम्।
405 वृत्त्यन्तः।
402 शरदादेरव्ययीभावात्।
444 शाकपार्थिवादीनां
मध्यमपदलोपश्च।
461 शेषे।
407 श्रितादिभिः।
414 षष्ठ्ययत्नाच्छेषे।
449 संख्यापूर्वो द्विगुश्च।
450 सखेष्टः।
417 सप्तमी शौण्डादिभिः।
468 सप्तम्यन्तम्।
424 सप्तम्युक्तं कृता।
365 समासप्रत्यययोः।
505 समो हितततयोर्वा।
459 सर्वांशसंख्यातपुण्य-
वर्षादीर्घाच्च रात्रेः।
457 सर्वांशसंख्याव्ययात्।
467 सर्वादिश्च बहुव्रीहौ।
466 सहस्य सो वा बहुव्रीहौ।
440 सायाह्नादयः।
419 सिंहादिभिः पूजायाम्।
Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

476 सुहृद्दुर्हृदौ मित्रामित्रयोः।
477 स्त्रियामिनः।
484 स्वराद्यदन्तम्।
471 स्वाङ्गादीपो जातेश्चामानिनी।
464 हंसगमनादयः।
412 हितादिभिः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समास–प्रकरण में प्रयुक्त समास–प्रकरण के अतिरिक्त सूत्रों की अकारादिवर्णानुक्रमणिका

725 अतमादेरीषदसमाप्ते कल्पदेश्यदेशीयाः।
103 अतो जस्भ्यांये।
191 अतोऽम्।
251 अत्वसोरभ्वादेः सौ।
102 अदेतोरपदान्तेऽतः।
18 अन्त्यस्वरादिष्टिः।
121 अवकुप्वनुस्वारविसर्गजिह्वामूलीयोपध्मानीयैरन्तरेऽपि।
38 अवर्णस्येवर्णादावेदोदरलः।
294 अव्ययस्य।
70 आद्यन्तौ ट्किताै।
172 आपः।
295 आबतः स्त्रियाम्।
140 इदुतोऽस्त्रेरौरीदूत्।
223 इन्हन्पूषन्नर्यम्णां सौ च।
29 इवर्णादीनां स्वरे यवरलाः।
253 इसुस्सजुषाम्।
192 ईरौः।
33 एदैतोरयायौ।
149 ऐः सख्युरितोऽशिधौ।
34 ओदौतोरवावौ।
41 ओदौतोरौत्।
72 खसे चपा झथानाम्।
110 ङसिराद्।
245 चजोः कगौ।
73 चपाच्छश्छोऽमे वा।
156 जस्शसोर्डतिष्णो लुक्।
59 झसा जबाः।
106 टेनः।
146 ङिति टेः।
23 तदन्तं पदम्।
162 तृस्वसृनप्तृनेष्टृत्वष्टृक्षतृहोतृपोतृप्रशास्तृणामार्।
275 त्वमौ प्रत्ययोत्तरपदे चैकत्वे।
167 थुटि।
252 दिश्दृश्स्पृश्मृश्दधृषुष्णिहस्रजृत्विजां गः।
259 दो मोऽवर्णस्य।
715 द्वयोर्विभज्ये च तरः।
568 द्विगोरनपत्ये यस्वरादेर्लुगद्विः।
198 नपुंसके।
131 नाम सिदयहसे।
135 नाम्नो नोऽनहन्ः।
133 पुंस्त्रियोः स्यमौजस्।
594 भवे।
195 मिदन्त्यस्वरात्परः।
617 मूल्यैः क्रीते।
77 मोऽनुस्वारयमौ हसे सवर्णौ।
91 रः।
111 वावसाने।
82 विसर्गस्य सश्छते।
519 वृद्धिः स्वराणामादेर्ञ्णिति तद्धिते।
179 शराज्भ्राज्यज्सृज्मृज्भ्रस्ज्व्रश्च्परिव्राजां षः।
47 शिदनेकवर्णः सर्वस्य।
65 ष्टुभिः ष्टुः।
706 संख्याया धा।
206 संयोगस्य।
567 संस्कृते भक्ष्ये।
36 समानानां सवर्णे दीर्घः सह।
104 समानादमः।
63 स्तोः श्चुभिः श्चुः।
89 स्रोर्विसर्गः।
75 स्वरात्।
85 हबे।
80 हशसेऽनुस्वारः।
183 हसेपः सेर्लोपः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समास–प्रकरण में प्रयुक्त भिक्षुशब्दानुशासनम् के सूत्रों की अकारादिवर्णानुक्रमणिका

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
1/1/50	अधण्तस्वाद्येनान्तः।
3/1/72	गुणवृद्ध्यादिषु वा।
3/1/146	द्वन्द्वः संख्या विंशत्यादिना संख्यायाम्।
3/1/175	धर्मार्थादिषु वा।
3/1/171	न जायापत्यादिषु।
3/1/180	न नरनारायणादिषु।
3/1/184	न पाण्डुधृतराष्ट्रादिषु।
3/1/186	न पुष्यपुनर्वस्वादिषु।
3/1/174	न शूद्रार्यादिषु।
2/2/8	निर्दुर्बहिराविःप्रादुश्चतुराम्।
3/1/177	नोदूखलमूसलादिषु वा।
3/1/185	भीमसेनार्जुनादिषु वा।
3/1/166	राजदन्तादिषु।
3/1/183	वसन्तग्रीष्मादिषु।
3/1/178	समीरणाग्न्यादिषु वा।
8/3/70	संख्याया बहुव्रीहेः।
3/1/189	संख्या समासे।
3/1/125	सुज्वार्थे संख्या विंशत्यादिना संख्यायाम्।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

परिशिष्ट ५

कालुकौमुदी के समासप्रकरणगत पदों की अकारादिवर्णानुक्रमणिका

अ

अक्षशौण्ड: 417
अग्निसमीरणौ 488
अतिखट्व: 434
अतिगङ्ग: 434
अतिनिद्रम् 399
अतिमाल: 434
अतिरात्र: 459
अतिहिमम् 399
अधरकाय: 438
अधिकधनप्रिय: 449
अधिकषाष्टिक: 448
अधिकुमारि 397
अधिस्त्रि 397
अनज: 422
अनन्त: 422
अनश्व: 422
अनुजिनम् 399
अनुज्येष्ठम् 400
अनुरूपम् 399
अन्यत्कारक: 507
अन्यदर्थ: 508
अन्यादृक् 510
अन्यादृक्ष: 510
अन्यादृश: 510
अन्यार्थ: 508
अन्वर्थम् 435
अपरकाय: 438
अपररात्र: 459
अपशाख: 437
अब्राह्मण: 420
अमूदृक् 510
अमूदृक्ष: 510
अमूदृश: 510
अराजा 455
अरुन्तुद: 503
अर्जुनभीमसेनौ 488
अर्थधर्मौ 488
अर्धपिप्पली 439
अलंकुमारि: 436
अवकोकिलम् 435
अवश्यकरणीयम् 504
अवश्यकर्तव्यम् 504
अवश्यकार्यम् 504
अवश्यदेयम् 504
अवश्यस्तुत्यम् 504
अश्वखरौ 484
अश्वमहिषम् 489
अष्टचत्वारिंशत् 502
अष्टाचत्वरिंशत् 502
अष्टादश 501
असखा 455
असत्यम् 421
असाधु: 421
अहिंसा 421
अहिदष्ट: 409
अहिनकुलम् 489

आ

आत्मकृतम् 409
आत्मनाचतुर्थ: 493
आत्मनाषष्ठ: 493
आत्मनेपदम् 494
आरूढबहुवानर: 463
आरूढवानर: 461

इ

इतिभिक्षु 399
इन्दुमौलि: 469
इन्द्रचन्द्रौ 484

ई

ईदृक् 511
ईदृक्ष: 511
ईदृश: 511

उ

उच्चैर्मुख: 463
उच्छृंखल: 437
उत्कुलम् 437
उत्तमाह: 456
उत्तरकाय: 438
उदरमणि: 588, 496
उपकुम्भम् 398, 399
उपकुम्भात् 398
उपकुम्भे 399
उपकुम्भेन 399
उपजरसम् 403
उपतक्षम् 406
उपत्यदम् 401
उपराजम् 406
उपशरदम् 401
उपहृतबलि: 461
उरसिलोमा 468
उलूखलमूसले 488
उष्ट्रमुख: 464

ऊ

ऊढरथ: 461

ए

एकशाटी 442
एकादश 500

क

कण्ठेकाल: 468, 496
कदन्नम् 428
कदश्व: 428
कदुष्णम् 431
कर्णेजप: 497
कर्तुकाम: 506
कलिगौतम: 419
कल्याणधर्मा 472
कवोष्णम् 431
कापुरुष: 430
कामक्रोधौ 490
कामधुरम् 429
कालिंमन्या 503
किंराज: 454
किंराजा 454
किंसख: 454
किंसखा 454
कीदृक् 511
कीदृक्ष: 511
कीदृश: 511
कुण्डलहिरण्यम् 411
कुपुरुष: 430
कुब्राह्मण: 427
कुमारिकल्पा 498
कुम्भकार: 424
कृत्तिकारोहिण्यौ 487
कोष्णम् 431
क्षत्रियभीरु: 445
क्षुद्रतापस: 445

ग

गणधरोक्ति: 415
गुणवृद्धी 488
गूढोत्मा 513
गोक्षीरम् 414
गौरितरा 498
ग्रामगत: 407
ग्रामनिर्गत: 413
ग्रामार्ध: 439

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ग्रीष्मवसन्तौ 488
घ
घटमृत्तिका 411
घटशङ्खपटा: 482
घनश्याम: 446
च
चक्रपाणि: 470
चक्रमुक्त: 413
चतुर्ह्रस्व: 467
चन्द्रमुखीभार्य: 471
चन्द्रमुखभार्या 442
चन्द्रवदना 464
चित्रगु: 463
ज
जंपती 488
जायापती 488
जिनश्रित: 407
जीमूत: 513
त
तत्कर: 512
तस्कर: 512
तादृक् 510
तादृक्ष: 510
तादृश: 510
तिलमाषौ 482
तीर्थकाक: 418
तीर्थवायस: 418
तीर्थश्वा 418
त्रयश्चत्वारिंशत् 502
त्रयोदश 501
त्रिचत्वारिंशत् 502
त्वादृक् 510
त्वादृक्ष: 510
त्वादृश: 510
द
दंपती 488
दण्डपाणि: 470
दर्शनीयभार्य: 563
दीर्घकेशमानिनी 471
दीर्घकेशीभार्य: 471
दीर्घरात्र: 459
दुर्यवनम् 399
दुर्हृत् 476
दुष्टामात्य: 445
देवदैत्यौ 486
देवप्रिय: 495
देवब्राह्मण: 444
देवराज: 452
देवानांप्रिय: 495
द्वाचत्वारिंशत् 502
द्वादश 501
द्विचत्वारिंशत् 502
द्वित्रा: 501
द्विरात्र: 459
द्विशतम् 501
द्व्यशीति: 501
ध
धनुर्हस्त: 470
धर्माथौं 488
धवखदिरपलाशम् 481
धवखदिरौ 485
धान्यार्थ: 408
न
नकुल: 423
नक्र: 423
नक्षत्रम् 423
नख: 423
नखभिन्न: 409
नग: 423
नग्न: 423
नपुंसक: 423
नरकगामी 407
नरकपतित: 407
नरनारायणौ 488
नाक: 423
निर्णसम् 474
निर्मक्षिकम् 399
निष्कौशाम्बि: 437
नीचैर्मुख: 463
नीमेद: 499
नीलोत्पलम् 441
नीवार: 499
प
पञ्चकपाल: 449
पञ्चग्रामधन: 449
पञ्चदीर्घ: 467
पञ्चपात्रम् 449
पञ्चसख: 451
पटशङ्खघटा: 482
पटुगुप्तौ 483
पटुभार्य: 463
पतिसुतौ 483
पद्महस्त: 469
परमस्वधर्म: 472
परमाह: 456
परशुच्छिन्न: 409
परस्मैपदम् 494
परिणाम: 499
परीणाम: 499
पर्यध्ययन: 436
पलाशशातन: 415
पाण्डुधृतराष्ट्रौ 488
पापवैयाकरण: 445
पितापुत्रौ 492
पुण्यपुनर्वसू 488
पुण्यरात्र: 459
पुत्रपती 488
पुरुषव्याघ्र: 447
पुरुषसिंह: 447
पूर्वकाय: 438
पूर्वरात्र: 459
पूर्वराष्ट्रप्रिय: 449
पूर्वाह्ण: 458
पृषोदर: 513
पौर्वशाल: 448
प्रणसम् 474
प्रताप: 499
प्रतिजरसम् 403
प्रतिपक्ष: 432
प्रत्यक्ष: 434
प्रत्यक्षम् 399
प्रत्यात्मम् 406
प्रभाव: 499
प्रहार: 426
प्राकार: 499
प्राचार्य: 432
प्रावार: 499
प्रियंवद: 503
फ
फाल्गुनचैत्रौ 487
ब
बलाहक: 513
बहुकर्तृक: 478
बहुकुमारीक: 480
बहुदण्डिका 477
बहुस्वामिका 477
बृहत्पति: 512
बृहस्पति: 512
ब्राह्मणक्षत्रियौ 488
ब्राह्मणभार्या 442
ब्राह्मणीभार्य: 471
भ
भवादृक् 510
भवादृक्ष: 510
भवादृश: 510
भार्यापती 488
भीतशत्रु: 461
भीमसेनार्जुनौ 488
भूतबलि: 412
भ्रमर: 513
म
मध्यरात्र: 440
मध्याह्न: 440
मयूर: 513
मस्तकशिख: 496
महद्भूत: 443

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

महापुरुषः 443
महादेवः 443
महाराजः 452
महाराज्ञी 452
महावीरः 443
महासखः 451
मातापितरौ 486, 491
मातापुत्रौ 492
मादृक् 510
मादृक्षः 510
मादृशः 510
मार्जारमूषकम् 489
मासपूर्वः 408
मासविकलम् 408
मासोनम् 408
मुखकामः 496
मुनिधूर्तः 445
मूर्धशिखः 496
मृगचपला 446
मेघंकरः 503

य

यथावृद्धम् 401
यथाशक्ति 399
यादृक् 510
यादृक्षः 510
यादृशः 510
युवजानिः 475
यूपदारु 411

र

रक्तकम्बलः 441
रक्तलता 442
रणव्याघ्रः 419
राजपुरुषः 414
राजसखः 451

ल

लाभालाभम् 490
लाभालाभौ 490

व

वज्रपाणिः 470
वर्षारात्रः 459
वसन्तग्रीष्मौ 488
वागर्थौ 485
वाग्निपुणः 408
विट्शूद्रौ 488
विपक्षः 432
विश्वमित्रः 467
विहारः 426
वीरपुरुषः 463
वृकभीतिः 413
वृद्धिगुणौ 488
वृषस्कन्धः 464
वैयाकरणखसूचिः 445
व्यर्थम् 435
व्याघ्रः 426

श

शरलावः 424
शशिशेखरः 469
शाकपार्थिवः 444
शिरःशेखरः 417
शिरसिशिखः 496
शीतोष्णे 490
शूद्राभार्यः 471
शूद्रार्यौ 488
शोभनभार्यः 463
श्राद्धसुखम् 412

ष

षड्ढा 500
षोडन् 500
षोडश 500
षोढा 500

स

संख्यातरात्रः 459
संसारातीतः 407
संहितम् 505
सकामः 506
सक्षत्रम् 400
सचक्रम् 400
सततम् 505
सतृणम् 400
सदृक् 509
सदृक्षः 509
सदृशः 509
सधनः 466
सन्ततम् 505
सपिण्डैषणम् 400
सपुत्रः 466
समक्षम् 435
समदः 466
समनाः 506
समरसिंहः 419
समर्थः 432
समीरणाग्नी 488
सर्वरात्रः 459
सर्वशुक्लः 467
सर्वाह्णः 458
सव्रतम् 400
सशीलम् 400
सहधनः 466
सहपुत्रः 466
सहमदः 466
सहितम् 505
साधुहितम् 412
सायाह्नः 440
सिंहः 513
सिद्धसेनकृतिः 415
सुखदुःखम् 490
सुखदुःखे 490
सुतसखायौ 483
सुधर्मा 472
सुमद्रम् 399
सुहृत् 476
सुहृदयः 476
स्तम्बेरमः 497

ह

हंसगमना 464
हरिणिंमन्या 503
हर्तुमनाः 506
हस्तकटकः 417
होतापोतारौ 491
हेमन्तवसन्तौ 487

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

परिशिष्ट vv

समास-प्रकरण की संक्षिप्त झांकी

सूत्र	समस्त पद	समास विग्रह	समास का नाम	समास करने वाला सूत्र
397	अधिस्त्रि	स्त्रीषु इति	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	अधिकुमारि	कुमार्यामिति	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
398	उपकुम्भम्	कुम्भस्य समीपम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	उपकुम्भात्	कुम्भस्य समीपम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
399	उपकुम्भम्	कुम्भस्य समीपम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	उपकुम्भेन	कुम्भस्य समीपम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	उपकुम्भम्	कुम्भस्य समीपम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	उपकुम्भे	कुम्भस्य समीपम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	सुमद्रम्	मद्राणां समृद्धिः	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	अतिनिद्रम्	निद्रा सम्प्रति न युज्यते	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	निर्मक्षिकम्	मक्षिकाणामभावः	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	अतिहिमम्	हिमस्य अत्ययः	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	दुर्यवनम्	यवनानामसंपत्तिः	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	इतिभिक्षु	भिक्षोः ख्यातिः	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	अनुजिनम्	जिनस्य पश्चात्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	अनुरूपम्	रूपस्य योग्यम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	प्रत्यर्थम्	अर्थमर्थं प्रति	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	यथाशक्ति	शक्तिमनतिक्रम्य	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
400	सशीलम्	शीलस्य सादृश्यम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	सव्रतम्	व्रतेन सदृशम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	सचक्रम्	चक्रेण युगपत्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	अनुज्येष्ठम्	ज्येष्ठस्यानुपूर्व्येण (अर्थात् अनुक्रमेण)	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	सक्षत्रम्	क्षत्राणां संपत्तिः	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	सतृणम् अभ्यवहरति	तृणमपरित्यज्य अभ्यवहरति	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	सपिण्डैषणम्	पिण्डैषणायाः पर्यन्तम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
401	यथावृद्धम्	ये ये वृद्धाः	अव्ययीभाव	यथा ... (401)
402	उपशरदम्	शरदः समीपम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	उपत्यदम्	त्यदः समीपम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
403	उपजरसम्	जरसः समीपम् अथवा जरायाः समीपम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	प्रतिजरसम्	जरसं जरसं प्रति अथवा जरां जरां प्रति	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
406	उपराजम्	राज्ञः समीपम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	उपतक्षम्	तक्ष्णः समीपम्	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
	प्रत्यात्मम्	आत्मानमात्मनं प्रति	अव्ययीभाव	अव्ययं ... (394)
407	जिनश्रितः	जिनं श्रितः	तत्पुरुष	श्रितादिभिः (407)
	संसारातीतः	संसारम् अतीतः	तत्पुरुष	श्रितादिभिः (407)
	नरकपतितः	नरकं पतितः	तत्पुरुष	श्रितादिभिः (407)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	ग्रामगतः	ग्रामं गतः	तत्पुरुष	श्रितादिभिः (407)
	नरकगामी	नरकं गामी	तत्पुरुष	श्रितादिभिः (407)
408	मासोनम्	मासेन ऊनम्	तत्पुरुष	ऊनार्थ ... (408)
	मासविकलम्	मासेन विकलम्	तत्पुरुष	ऊनार्थ ... (408)
	मासपूर्वः	मासेन पूर्वः	तत्पुरुष	ऊनार्थ ... (408)
	वाग्निपुणः	वाचा निपुणः	तत्पुरुष	ऊनार्थ ... (408)
	धान्यार्थः	धान्येन अर्थः	तत्पुरुष	ऊनार्थ ... (408)
409	आत्मकृतम्	आत्मना कृतम्	तत्पुरुष	कर्तृ ... (409)
	अहिदष्टः	अहिना दष्टः	तत्पुरुष	कर्तृ ... (409)
	नखभिन्नः	नखेन अथवा नखैः भिन्नः	तत्पुरुष	कर्तृ ... (409)
	परशुच्छिन्नः	परशुना छिन्नः	तत्पुरुष	कर्तृ ... (409)
411	घटमृत्तिका	घटाय मृत्तिका	तत्पुरुष	चतुर्थी ... (411)
	कुण्डलहिरण्यम्	कुण्डलाय हिरण्यम्	तत्पुरुष	चतुर्थी ... (411)
	यूपदारु	यूपाय दारु	तत्पुरुष	चतुर्थी ... (411)
412	साधुहितम्	साधुभ्यो हितम्	तत्पुरुष	हितादिभिः ... (412)
	श्राद्धसुखम्	श्राद्धाय सुखम्	तत्पुरुष	हितादिभिः ... (412)
	भूतबलिः	भूताय बलिः	तत्पुरुष	हितादिभिः ... (412)
413	व्याघ्रभयम्	व्याघ्राद् भयम्	तत्पुरुष	पञ्चमी ... (413)
	ग्रामनिर्गतः	ग्रामाद् निर्गतः	तत्पुरुष	पञ्चमी ... (413)
	वृकभीतिः	वृकाद् भीतिः	तत्पुरुष	पञ्चमी ... (413)
	चक्रमुक्तः	चक्रात् मुक्तः	तत्पुरुष	पञ्चमी ... (413)
414	राजपुरुषः	राज्ञः पुरुषः	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
	गोक्षीरम्	गवां क्षीरम्	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
415	सिद्धसेनकृतिः	सिद्धसेनस्य कृतिः	तत्पुरुष	कृति (415)
	गणधरोक्तिः	गणधरस्य उक्तिः	तत्पुरुष	कृति (415)
	पलाशशातनः	पलाशस्य शातनः	तत्पुरुष	कृति (415)
417	अक्षशौण्डः	अक्षेषु शौण्डः	तत्पुरुष	सप्तमी ... (417)
	शिरःशेखरः	शिरसि शेखरः	तत्पुरुष	सप्तमी ... (417)
	हस्तकटकः	हस्ते कटकः	तत्पुरुष	सप्तमी ... (417)
418	तीर्थकाकः	तीर्थे काक इव	तत्पुरुष	काकादिभिः .. (418)
	तीर्थवायसः	तीर्थे वायस इव	तत्पुरुष	काकादिभिः .. (418)
	तीर्थश्वा	तीर्थे श्वा इव	तत्पुरुष	काकादिभिः .. (418)
419	समरसिंहः	समरे सिंह इव	तत्पुरुष	सिंहादिभिः ... (419)
	रणव्याघ्रः	रणे व्याघ्र इव	तत्पुरुष	सिंहादिभिः ... (419)
	कलिगौतमः	कलौ गौतम इव	तत्पुरुष	सिंहादिभिः ... (419)
421	अब्राह्मणः	न ब्राह्मणः	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	असाधुः	न साधुः	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	अहिंसा	न हिंसा	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	असत्यम्	न सत्यम्	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
422	अनश्वः	न अश्वः	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	अनजः	न अजः	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	अनन्तः	न अन्तः	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
423	नखः	नास्य खं विद्यते	तत्पुरुष	नञ् ... (420)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	नगः	न गच्छतीति	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	नकुलः	नास्य कुलं विद्यते	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	नपुंसकः	न पुमान् न स्त्री	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	नक्षत्रम्	न क्षीयते अथवा न क्षरति	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	नक्रः	न क्रामति अथवा न क्रीणाति	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	नाकः	नास्मिन्नकं (अर्थात् दुःखं) अस्ति	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	नग्नः	न विद्यन्ते ग्नाः (अर्थात् श्रियः छन्दांसि वा) अस्य	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
424	कुम्भकारः	कुम्भं करोति	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	शरलावः	शरान् लुनाति	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
426	विहारः	विहरणम्	तत्पुरुष	गतिः (426)
	प्रहारः	प्रहरणम्	तत्पुरुष	गतिः (426)
	व्याघ्रः	विविधमाजिघ्रति	तत्पुरुष	गतिः (426)
427	कुब्राह्मणः	कुत्सितः ब्राह्मणः	तत्पुरुष	कुः ... (427)
428	कदन्नम्	कुत्सितम् अन्नम्	तत्पुरुष	कुः ... (427)
	कदश्वः	कुत्सितः अश्वः	तत्पुरुष	कुः ... (427)
429	कामधुरम्	ईषन्मधुरम्	तत्पुरुष	कुः ... (427)
430	कापुरुषः	कुत्सितः पुरुषः	तत्पुरुष	कुः ... (427)
	कुपुरुषः	कुत्सितः पुरुषः	तत्पुरुष	कुः ... (427)
431	कवोष्णम्	ईषदुष्णम्	तत्पुरुष	कुः ... (427)
	कोष्णम्	ईषदुष्णम्	तत्पुरुष	कुः ... (427)
	कदुष्णम्	ईषदुष्णम्	तत्पुरुष	कुः ... (427)
432	प्राचार्यः	प्रगतः आचार्यः	तत्पुरुष	प्रादयो ... (432)
	समर्थः	संगतोऽर्थः	तत्पुरुष	प्रादयो ... (432)
	विपक्षः	विरुद्धः पक्षः	तत्पुरुष	प्रादयो ... (432)
	प्रतिपक्षः	प्रत्यर्थी पक्षः	तत्पुरुष	प्रादयो ... (432)
434	अतिखट्वः	अतिक्रान्तः खट्वाम्	तत्पुरुष	अत्यादयः ... (433)
	अतिमालः	अतिक्रान्तः मालाम्	तत्पुरुष	अत्यादयः ... (433)
	अतिगङ्गः	अतिक्रान्तः गङ्गाम्	तत्पुरुष	अत्यादयः ... (433)
	प्रत्यक्षः	प्रतिगतोऽक्षम्	तत्पुरुष	अत्यादयः ... (433)
435	अवकोकिलम्	अवक्रुष्टं कोकिलया	तत्पुरुष	अवादयः ... (435)
	अन्वर्थम्	अनुगतमर्थेन	तत्पुरुष	अवादयः ... (435)
	समक्षम्	संगतमक्षेण	तत्पुरुष	अवादयः ... (435)
	व्यर्थम्	वियुक्तमर्थेन	तत्पुरुष	अवादयः ... (435)
436	पर्यध्ययनः	परिग्लानोऽध्ययनाय	तत्पुरुष	पर्यादयो ... (436)
	अलंकुमारिः	अलं कुमार्यै	तत्पुरुष	पर्यादयो ... (436)
437	निष्कौशाम्बिः	निर्गतः कौशाम्ब्याः	तत्पुरुष	निरादयो ... (437)
	अपशाखः	अपगतः शाखायाः	तत्पुरुष	निरादयो ... (437)
	उत्कुलम्	उत्क्रान्तं कुलात्	तत्पुरुष	निरादयो ... (437)
	उच्छृंखलः	उत्क्रान्तः शृंखलायाः	तत्पुरुष	निरादयो ... (437)
438	पूर्वकायः	पूर्वः कायस्य	तत्पुरुष	पूर्वापरा ... (438)
	अपरकायः	अपरः कायस्य	तत्पुरुष	पूर्वापरा ... (438)
	अधरकायः	अधरः कायस्य	तत्पुरुष	पूर्वापरा ... (438)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	उत्तरकाय:	उत्तर: कायस्य	तत्पुरुष	पूर्वापरा ... (438)
439	अर्धपिप्पली	अर्धं पिप्पल्या:	तत्पुरुष	अर्धं ... (439)
	पिप्पल्यर्धम्	पिप्पल्या: अर्धम्	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
	ग्रामार्ध:	ग्रामस्य अर्ध:	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
440	सायाह्न:	सायमह्न:	तत्पुरुष	साया ... (440)
	मध्याह्न:	मध्यमह्न:	तत्पुरुष	साया ... (440)
	मध्यरात्र:	मध्यं रात्रे:	तत्पुरुष	साया ... (440)
441	नीलोत्पलम्	नीलं च तद् उत्पलं च अथवा नीलम् उत्पलम्	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	रक्तकम्बल:	रक्तश्चासौ कम्बलश्च अथवा रक्त: कम्बल:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
442	एकशाटी	एका चासौ शाटी च अथवा एका शाटी	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	रक्तलता	रक्ता चासौ लता च अथवा रक्ता लता	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	ब्राह्मणभार्या	ब्राह्मणी चासौ भार्या च अथवा ब्राह्मणी भार्या	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	चन्द्रमुखभार्या	चन्द्रमुखी चासौ भार्या च अथवा चन्द्रमुखी भार्या	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
443	महावीर:	महान् चासौ वीरश्च अथवा महान् वीर:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	महापुरुष:	महान् चासौ पुरुषश्च अथवा महान् पुरुष:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	महादेव:	महान् चासौ देवश्च अथवा महान् देव:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	महद्भूत:	अमहान्महान्भूत:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
444	शाकप्रियपार्थिव:	शाक: प्रिय: यस्य स: शाकप्रिय:	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
		शाकप्रिय: चासौ पार्थिव: च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	देवपूजक:	देवानां पूजक:	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
		देवपूजको ब्राह्मण:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
445	मुनिधूर्त:	मुनिश्चासौ धूर्तश्च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	कुत्सितानि ... (445)
	क्षत्रियभीरु:	क्षत्रियश्चासौ भीरुश्च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	कुत्सितानि ... (445)
	वैयाकरणखसूचि:	वैयाकरणश्चासौ खसूचिश्च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	कुत्सितानि ... (445)
	पापवैयाकरण:	पापश्चासौ वैयाकरणश्च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	दुष्टामात्य:	दुष्टश्चासौ अमात्यश्च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	क्षुद्रतापस:	क्षुद्रश्चासौ तापसश्च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
446	घनश्याम:	घन इव श्याम:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	उपमानानि ... (446)
	मृगचपला	मृग इव चपला	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	उपमानानि ... (446)
447	पुरुषव्याघ्र:	पुरुष: व्याघ्र इव	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	उपमेयानि ... (447)
	पुरुषसिंह:	पुरुष: सिंह इव	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	उपमेयानि ... (447)
	पुरुषवृषभ:	पुरुष: वृषभ इव	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	उपमेयानि ... (447)
448	अधिकषाष्टिक:	अधिकया षष्ट्या क्रीत:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	अधिकं च ... (448)
	पौर्वशाल:	पूर्वस्यां शालायां भव:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	अधिकं च ... (448)
449	पञ्चकपाल:	पञ्चसु कपालेषु संस्कृत:	तत्पुरुष, कर्मधारय एवं द्विगु	अधिकं च ... (448) संख्यापूर्वो ... (449)
	अधिकधनप्रिय:	अधिकं धनं प्रियं यस्य स:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	अधिकं च ... (448)
	पूर्वराष्ट्रप्रिय:	पूर्वं राष्ट्रं प्रियं यस्य स:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	अधिकं च ... (448)
	पञ्चग्रामधन:	पञ्च ग्रामा: धनं यस्य स:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	अधिकं च ... (448)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

			द्विगु	संख्यापूर्वो ... (449)
	पञ्चपात्रम्	पञ्चानां पात्राणां समाहार:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय द्विगु	अधिकं च ... (448) संख्यापूर्वो ... (449)
	पञ्चसख:	पञ्चानां सखीनां समाहार:	तत्पुरुष, कर्मधारय एवं द्विगु	अधिकं च ... (448) संख्यापूर्वो ... (449)
451	राजसख:	राजा चासौ सखा च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	राजसख:	राज्ञां सखा	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
	महासख:	महान् चासौ सखा च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	महासख:	महतां सखा	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
	पञ्चसख:	पञ्चानां सखीनां समाहार:	तत्पुरुष, कर्मधारय एवं द्विगु	अधिकं च ... (448) संख्यापूर्वो ... (449)
452	देवराज:	देवश्चासौ राजा च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	देवराज:	देवानां राजा	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
	महाराज:	महान् चासौ राजा च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	महाराज:	महतां राजा	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
	महाराज्ञी	महती चासौ राज्ञी च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	महाराज्ञी	महतां राज्ञी	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
454	किंराजा	को राजा	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	किं क्षेपे (453)
	किंसखा	क: सखा	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	किं क्षेपे (453)
	किंराज:	केषां राजा	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
	किंसख:	केषां सखा	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
455	अराजा	न राजा	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
	असखा	न सखा	तत्पुरुष	नञ् ... (420)
456	परमाह:	परमञ्च तदहश्च अथवा परममह:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	उत्तमाह:	उत्तमञ्च तदहश्च अथवा उत्तममह:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
458	सर्वाह्ण:	सर्वञ्च तदहश्च अथवा सर्वमह:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	पूर्वाह्ण:	पूर्वमह्न:	तत्पुरुष	पूर्वापरा ... (438)
459	सर्वरात्र:	सर्वा चासौ रात्रि: च अथवा सर्वा रात्रि:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	पूर्वरात्र:	पूर्वं रात्रे:	तत्पुरुष	पूर्वापरा ... (438)
	अपररात्र:	अपरं रात्रे:	तत्पुरुष	पूर्वापरा ... (438)
	संख्यातरात्र:	संख्याता चासौ रात्रि: च अथवा संख्याता रात्रि:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	पुण्यरात्र:	पुण्या चासौ रात्रि: च अथवा पुण्या रात्रि:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	वर्षारात्र:	वर्षाणां रात्रि:	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
	दीर्घरात्र:	दीर्घा चासौ रात्रि: च अथवा दीर्घा रात्रि:	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	द्विरात्र:	द्वयो: रात्र्यो: समाहार:	तत्पुरुष, कर्मधारय एवं द्विगु	अधिकं च ... (448) संख्यापूर्वो ... (449)
	अतिरात्र:	अतिक्रान्त: रात्रिम्	तत्पुरुष	अत्यादय: ... (433)
461	आरूढवानर:	आरूढो वानरो यम्	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	ऊढरथ:	ऊढो रथो येन स:	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	उपहतबलि:	उपहतो बलिर्यस्मै स:	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	भीतशत्रु:	भीता: शत्रवो यस्मात् स:	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
463	चित्रगु:	चित्रा: गावो यस्य स:	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	दर्शनीयभार्यः	दर्शनीया भार्या यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	पटुभार्यः	पट्वी भार्या यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	शोभनभार्यः	शोभना भार्या यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	वीरपुरुषः	वीराः पुरुषाः सन्ति यस्मिन्	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	आरूढबहुवानरः	आरूढा बहवो वानराः यमिति	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	उच्चैर्मुखः	उच्चैर्मुखमस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	नीचैर्मुखः	नीचैर्मुखमस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
464	हंसगमना	हंसस्य गमनमिव गमनं यस्याः सा	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	चन्द्रवदना	चन्द्रस्य वदनमिव वदनं यस्याः सा	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	उष्ट्रमुखः	उष्ट्रस्य मुखमिव मुखं यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	वृषस्कन्धः	वृषस्य स्कन्ध इव स्कन्धो यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
466	सहपुत्रः, सपुत्रः	सह पुत्रेण	बहुव्रीहि	तेन ... (465)
	सहधनः, सधनः	सह धनेन	बहुव्रीहि	तेन ... (465)
	सहमदः, समदः	सह मदेन	बहुव्रीहि	तेन ... (465)
467	सर्वशुक्लः	सर्वं शुक्लं यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	विश्वमित्रः	विश्वं मित्रं यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	चतुर्ह्रस्वः	चत्वारः ह्रस्वा सन्ति यस्मिन्	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	पञ्चदीर्घः	पञ्च दीर्घा सन्ति यस्मिन्	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
468	कण्ठेकालः	कण्ठे कालो यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	उदरेमणिः	उदरे मणिः यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	उरसिलोमा	उरसि लोमानि यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
469	इन्दुमौलिः	इन्दुर्मौलौ यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	शशिशेखरः	शशी शेखरे यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	पद्महस्तः	पद्मं हस्ते यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
470	दण्डपाणिः	दण्डः पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	चक्रपाणिः	चक्रं पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	वज्रपाणिः	वज्रं पाणौ यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	धनुर्हस्तः	धनुः हस्ते यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
471	चन्द्रमुखीभार्यः	चन्द्रमुखी भार्या यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	दीर्घकेशीभार्यः	दीर्घकेशी भार्या यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	ब्राह्मणीभार्यः	ब्राह्मणी भार्या यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	शूद्राभार्यः	शूद्रा भार्या यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	दीर्घकेशमानिनी	दीर्घकेशीमात्मानं मन्यते या सा	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
472	सुधर्मा	सु (शोभनः) धर्मः यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	कल्याणधर्मा	कल्याणः धर्मः यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	परमस्वधर्मः	परमः स्वः धर्मः यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
474	प्रणसम्	प्रगता नासिका यस्य तत्	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	निर्णसम्	निर्गता नासिका यस्य तत्	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
475	युवजानिः	युवतिः जाया यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
476	सुहृन्मित्रम्	सु (शोभनं) हृदयं यस्य सः	बहुव्रहि	तुल्यार्थं ... (460)
	दुर्हृदमित्रः	दुः (दुष्टं) हृदयं यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	सुहृदयः मुनिः	सु (शोभनं) हृदयं यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
477	बहुदण्डिका सेना	बहवः दण्डिनो यस्यां सा	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University) Ladnun

	बहुस्वामिका पुरी	बहवः स्वामिनः यस्यां सा	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
478	बहुकर्तृकः	बहवः कर्त्तारः यस्मिन् सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
480	बहुकुमारीकः	बहव्यः कुमार्यः यस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
482	तिलमाषौ	तिलश्च माषश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	घटशङ्खपटाः	घटश्च शङ्खश्च पटश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	पटशङ्खघटाः	घटश्च शङ्खश्च पटश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
483	पतिसुतौ	पतिश्च सुतश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	पटुगुप्तौ	पटुश्च गुप्तश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	सुतसुखायौ	सुतश्च सखा च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
484	अश्वखरौ	अश्वश्च खरश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	इन्द्रचन्द्रौ	इन्द्रश्च चन्द्रश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
485	धवखदिरौ	धवश्च खदिरश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	वागर्थौ	वाक् च अर्थश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
486	देवदैत्यौ	देवश्च दैत्यश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	मातापितरौ	माता च पिता च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
487	फाल्गुनचैत्रौ	फाल्गुनश्च चैत्रश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	हेमन्तवसन्तौ	हेमन्तश्च वसन्तश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	बलदेववासुदेवौ	बलदेवश्च वासुदेवश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	कृत्तिकारोहिण्यौ	कृत्तिका च रोहिणी च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
488	ब्राह्मणक्षत्रियौ	ब्राह्मणश्च क्षत्रियश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	विट्शूद्रौ	विट् च शूद्रश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	गुणवृद्धी	गुणश्च वृद्धिश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	वृद्धिगुणौ	गुणश्च वृद्धिश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	धर्मार्थौ	धर्मश्च अर्थश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	अर्थधर्मौ	धर्मश्च अर्थश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	समीरणाग्नी	समीरणश्च अग्निश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	अग्निसमीरणौ	समीरणश्च अग्निश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	वसन्तग्रीष्मौ	वसन्तश्च ग्रीष्मश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	ग्रीष्मवसन्तौ	वसन्तश्च ग्रीष्मश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	भीमसेनार्जुनौ	भीमसेनश्च अर्जुनश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	अर्जुनभीमसेनौ	भीमसेनश्च अर्जुनश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	जायापती/जंपती/दंपती	जाया च पतिश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	भार्यापती	भार्या च पतिश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	पुत्रपती	पुत्रश्च पतिश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	शूद्रार्यौ	शूद्रश्च आर्यश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	उलूखलमूसले	उलूखलञ्च मूसलञ्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	नरनारायणौ	नरश्च नारायणश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	पाण्डुधृतराष्ट्रौ	पाण्डुश्च धृतराष्ट्रश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	पुष्यपुनर्वसू	पुष्यश्च पुनर्वसुश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
489	अहिनकुलम्	अहिश्च नकुलश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	अश्वमहिषम्	अश्वश्च महिषश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	मार्जारमूषकम्	मार्जारश्च मूषकश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
490	सुखदुःखम्	सुखञ्च दुःखञ्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	सुखदुःखे	सुखञ्च दुःखञ्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	लाभालाभम्	लाभश्च अलाभश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	लाभालाभौ	लाभश्च अलाभश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	कामक्रोधौ	कामश्च क्रोधश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	शीतोष्णे	शीतञ्च उष्णञ्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
491	होतापोतारौ	होता च पोता च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	मातापितरौ	माता च पिता च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
492	मातापुत्रौ	माता च पुत्रश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	पितापुत्रौ	पिता च पुत्रश्च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
493	आत्मनाचतुर्थः	आत्मना चतुर्थः	तत्पुरुष	ऊनार्थ ... (408)
	आत्मनाषष्ठः	आत्मना षष्ठः	तत्पुरुष	ऊनार्थ ... (408)
494	परस्मैपदम्	परस्मै पदम्	तत्पुरुष	हितादिभिः ... (412)
	आत्मनेपदम्	आत्मने पदम्	तत्पुरुष	हितादिभिः ... (412)
495	देवप्रियः	देवानां प्रियः	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
496	कण्ठेकाल	कण्ठे कालः यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	उदरेमणिः	उदरे मणिः यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	शिरसिशिखः	शिरसि शिखा यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	मूर्धशिखः	मूर्धनि शिखा यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	मस्तकशिखः	मस्तके शिखा यस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	मुखकामः	मुखे कामोऽस्य सः	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
497	स्तम्बेरमः	स्तम्बे रमते इति	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	कर्णेजपः	कर्णे जपति इति	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
498	गौरितरा	इयमनयोः अतिशयेन गौरी	×	×
	कुमारिकल्पा	ईषदसमाप्ता कुमारी	×	×
499	नीमेदः	नि (अर्थात् निश्शेषेण) मेदनम्	तत्पुरुष	गतिः (426)
	नीवारः	निवरणम्	तत्पुरुष	गतिः (426)
	प्रावारः	प्रवरणम्	तत्पुरुष	गतिः (426)
	प्रासादः	प्रसदनम्	तत्पुरुष	गतिः (426)
	प्राकारः	प्रकरणम्	तत्पुरुष	गतिः (426)
	परीणामः	परिणमनम्	तत्पुरुष	गतिः (426)
	परिणामः	परिणमनम्	तत्पुरुष	गतिः (426)
	प्रतापः	प्रतपनम्	तत्पुरुष	गतिः (426)
	प्रभावः	प्रभवनम्	तत्पुरुष	गतिः (426)
500	एकादश	एकोत्तरा दश	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	शाक ... (444)
	एकादश	एकं च दश च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	षोडश	षट् च दश च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	षोडन्	षड् दन्ता अस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	षोढा	षड्भिः प्रकारैः	×	×
	षड्ढा	षड्भिः प्रकारैः	×	×
501	द्वादश	द्वाभ्यामधिका दश	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	द्वादश	द्वौ च दश च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	त्रयोदश	त्रयश्च दश च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	अष्टादश	अष्टौ अथवा अष्ट च दश च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	द्विशतम्	द्वौ च शतं च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	द्व्यशीतिः	द्वौ च अशीतिः च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	द्वित्राः	द्वौ वा त्रयः वा	बहुव्रीहि	सुज्वार्थे ...(भिक्षु. 3/1/25)
502	द्वाचत्वारिंशत्	द्वौ च चत्वारिंशत् च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	द्विचत्वारिंशत्	द्वौ च चत्वारिंशत् च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	त्रयश्चत्वारिंशत्	त्रयः च चत्वारिंशत् च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	त्रिचत्वारिंशत्	त्रयः च चत्वारिंशत् च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	अष्टाचत्वारिंशत्	अष्टौ अथवा अष्ट च चत्वारिंशत् च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
	अष्टचत्वारिंशत्	अष्टौ अथवा अष्ट च चत्वारिंशत् च	द्वन्द्व	चार्थे ... (481)
503	कालिंमन्या	कालीमात्मानं मन्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	हरिणिंमन्या	हरिणीमात्मानं मन्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	मेघंकरः	मेघं करोति	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	प्रियंवदः	प्रियं वदति	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	अरुंतुदः	अरुः तुदति	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
504	अवश्यकार्यम्	अवश्यं क्रियेत	केवल	नाम ... (393)
	अवश्यस्तुत्यम्	अवश्यं स्तूयेत	केवल	नाम ... (393)
	अवश्यदेयम्	अवश्यं दीयेत	केवल	नाम ... (393)
	अवश्यकर्त्तव्यम्	अवश्यं क्रियेत	केवल	नाम ... (393)
	अवश्यकरणीयम्	अवश्यं क्रियेत	केवल	नाम ... (393)
	अवश्यं लावकः	अवश्यं लुनाति	केवल	नाम ... (393)
505	सहितम्	सन्धीयते स्म	तत्पुरुष	गतिः (425)
	संहितम्	सन्धीयते स्म	तत्पुरुष	गतिः (425)
	सततम्	सन्तन्यते स्म	तत्पुरुष	गतिः (425)
	सन्ततम्	सन्तन्यते स्म	तत्पुरुष	गतिः (425)
506	कर्तुकामः	कर्तुं कामोऽस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	हर्तुमनाः	हर्तुं मनोऽस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	सकामः	सम् अर्थात् सम्यक् कामोऽस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
	समनाः	सम् अर्थात् सम्यग्मनोऽस्य सः	बहुव्रीहि	तुल्यार्थं ... (460)
507	अन्यत्कारकः	अन्यस्य कारकः	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
508	अन्यदर्थः	अन्यश्चासौ अर्थः च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
	अन्यार्थः	अन्यश्चासौ अर्थः च	तत्पुरुष एवं कर्मधारय	विशेषणं ... (441)
509	सदृक्	समानः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	सदृशः	समानः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	सदृक्षः	समानः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
510	अन्यादृक्	अन्यः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	अन्यादृशः	अन्यः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	अन्यादृक्षः	अन्यः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	तादृक्	सः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	तादृशः	सः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	तादृक्षः	सः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	यादृक्	यः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	यादृशः	यः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	यादृक्षः	यः इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	त्वादृक्	त्वम् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	त्वादृश:	त्वम् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	त्वादृक्ष:	त्वम् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	मादृक्	अहम् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	मादृश:	अहम् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	मादृक्ष:	अहम् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	भवादृक्	भवान् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	भवादृश:	भवान् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	भवादृक्ष:	भवान् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	अमूदृक्	असौ इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	अमूदृश:	असौ इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	अमूदृक्ष:	असौ इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
511	कीदृक्	क: इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	कीदृश:	क: इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	कीदृक्ष:	क: इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	ईदृक्	अयम् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	ईदृश:	अयम् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	ईदृक्ष:	अयम् इव दृश्यते	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
512	तस्कर:	तत् करोति	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	तत्कर:	तत् करोति	तत्पुरुष	सप्तम्युक्तं ... (424)
	बृहस्पति:	बृहतां पति:	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
	बृहत्पति:	बृहतां पति:	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
513	पृषोदर:	पृषद् उदरे अस्य स:	बहुव्रीहि	हंसगमना ... (464)
	जीमूत:	जीवनस्य मूत:	तत्पुरुष	षष्ठ्य ... (414)
	बलाहक:	वारिणो वाहक:	तत्पुरुष	कृति (415)
	मयूर:	मह्यां रौति	केवल	नाम ... (393)
	भ्रमर:	भ्रमन् रौति	केवल	नाम ... (393)

इति समास-प्रकरणम्
समास-प्रकरण समाप्त हुआ।

✧✧✧

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जैन विश्व भारती संस्थान

(मान्य विश्वविद्यालय)

लाडनूं – 341 306

मुनि श्री चौथमल जी कृत

कालु – कौमुदी

हिन्दी अनुवाद एवं साधनिका

समणी चिन्मयप्रज्ञा

बी. ए. द्वितीय वर्ष

तद्धित प्रकरण एवं द्विरुक्त प्रक्रिया

(514 सूत्र से 751 सूत्र तक)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भूमिका

तद्धित प्रकरण भारतीय इतिहास का स्वर्णिम पृष्ठ है क्योंकि इसमें अनेकों प्राचीन व्यक्तियों, राजाओं, कुलों, जनपदों, नगरों, ग्रामों, नदियों, पर्वतों आदि का स्थान–स्थान पर उल्लेख मिलता है। इसके अतिरिक्त इसमें नानाविध व्यवसायों, सामाजिक रीति–रिवाजों, ललित कलाओं, शिल्पों तथा विविध प्रकार के भक्ष्य पदार्थों का भी पर्याप्त वर्णन पाया जाता है। भारत के इतिहास को जानने के लिए यह प्रकरण जितना उपयोगी सिद्ध होता है वैसा दूसरा कोई नहीं। पाश्चात्त्य लेखकों का भी यह प्रकरण सदा से उपजीव्य रहा है इसी प्रकरण से सम्बद्ध गणों में आज भी सैकड़ों व्यक्तियों एवं स्थानों का उल्लेख पाया जाता है जिनका वर्णन अन्यत्र इतिहास के किसी ग्रन्थ में नहीं पाया जाता। तद्धित की विशेषता है कि इसमें एक ही प्रत्यय को विविध प्रकार से प्रस्तुत किया गया है। जैसे अ प्रत्यय को अण्, अञ्, ण आदि रूपों में प्रस्तुत किया गया है।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि में जिन प्रत्ययों को जोड़कर कुछ और भी अर्थ निकाला जाता है उन प्रत्ययों को तद्धित प्रत्यय कहा जाता है। अथवा तद्धित का अर्थ है— 'तेभ्यः प्रयोगेभ्यः हिताः इति तद्धिताः।' ऐसे प्रत्यय जो भिन्न–भिन्न प्रयोगों के काम आ सके। जैसे शिव + अण् = शैवः। यहां अण् प्रत्यय सन्तान, देवता, शिव को लक्ष्य कर बनाये गए ग्रन्थ आदि अर्थों में प्रयुक्त हुआ है।

तद्धित प्रकरण में नौ अधिकार हैं — अपत्य, रक्ताद्यर्थ, शेष, इकण्, यादि प्रत्यय, भावकर्मार्थ, क्षेत्राद्यर्थक, मत्वर्थीय एवं स्वार्थिक।

प्रस्तुत कार्य का अत्यावश्यक संक्षिप्त विवरण

- **सर्वप्रथम कुछ बड़े एवं गहरे काले अक्षरों में दिए गए सूत्र हैं। उनसे पूर्व दी गई संख्या कालुकौमुदी की सूत्रसंख्या है तथा अन्त में कोष्ठक में दी गई संख्या भिक्षुशब्दानुशासनम् की है।**
- सूत्र के तत्काल बाद उसकी संस्कृत वृत्ति है।
- वृत्ति के पश्चात् हिन्दी में सूत्र का अनुवाद है। जहां कहीं सूत्र का अर्थ स्पष्ट करना था वहां उस सूत्र से सम्बन्धित रूपसिद्धियों के पश्चात् रेखांकित पङ्क्तियों में स्पष्ट किया गया है।
- अनुवाद के पश्चात् उन–उन सूत्रों से सम्बन्धित रूपसिद्धियां हैं।
- यत्र–तत्र आवश्यकता अनुसार संक्षिप्त टिप्पण भी दिए गए हैं।
- कोष्ठक का प्रयोग दो प्रयोजन से किया गया है —

  (क) शब्द के स्पष्टीकरण के लिए। ऐसे कोष्ठक का प्रारम्भ अर्थात् से किया गया है। जैसे 516 वें सूत्र में अपत्य (अर्थात् सन्तान) ....।

  (ख) वाक्यपूर्ति के लिए। जैसे 518वें सूत्र में षष्ठी अन्त (नाम) से ....।
- रूपसिद्धि में विविध प्रकारों का उपयोग किया है —

  (क) कुछ रूपों की सिद्धि पूरी की गई है जैसे भानवः, दाशरथिः, शैवः आदि।

  ¼[k½ dqN :iksa esa vykSfdd foxzg ds ckn fdl :i dh flf) fdldh rjg gksxh mldk mYys[k gSA ,slh :iflf);ksa dk izkjEHk vykSfdd foxzg ds ckn rf)rk% lw= ls djuk gSA tSls lw= 520 esa izkS"B% :i esa 'kSoor~ mYys[k gSA bldk vFkZ gS 'kSo% :i dks fl) djus ds fy, ftu&ftu lw=ksa dks dke esa fy;k x;k gS mUgha lw=ksa dk iz;ksx izkS"B% :i dh flf) esa djuk gSA

  (ग) तद्धित प्रत्यय जोड़ने के बाद यदि कोई शब्द अव्यय बन जाता है तब उदाहरण के लिए कुछ शब्दों की सिद्धि पूरी की है तत्पश्चात् अव्यय बनने वालों की सिद्धि अव्यय संज्ञा तक की है। उन्हें प्रथमा विभक्ति के एकवचन की विवक्षा में सि प्रत्यय से प्रारम्भ करना है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

¼?k½ ftu :iksa dh flf) ,d ckj dj nh gSA ;fn ogh :i vU; lw=ksa esa vk;k gS rks mls iwoZor~ dgdj NksM+ fn;k gSA

- प्रस्तुत कार्य में तीन परिशिष्ट हैं—

izFke ifjf'k"V esa rf)r izdj.k] rf)r izdj.k esa iz;qä rf)r ds vfrfjDr dkyqdkSeqnh ,oa fHk{kq'kCnkuq'kklue~ ds lw=ksa dh vdkjkfn o.kksZa dh vuqØef.kdk gSA

- दूसरे परिशिष्ट में तद्धित प्रकरण में सिद्ध किए गए रूपों की अकारादि वर्णों की अनुक्रमणिका है। उनके सामने किस सूत्र में उसकी सिद्धि है उस सूत्र की संख्या का उल्लेख है।
- तीसरे परिशिष्ट में सम्पूर्ण तद्धित प्रकरण की संक्षिप्त झांकी है। सर्वप्रथम जिस सूत्र में वह पद आया है उस सूत्र की संख्या है। तत्पश्चात् क्रमशः पद, उसका विग्रह, प्रकृति (अर्थात् मूलशब्द)—प्रत्यय एवं प्रत्यय करने वाला सूत्र संख्या के साथ दिया है।

तद्धित रूपसिद्धियों के सामान्य नियम

- इत् का अर्थ है अनुबन्ध
- ञित् एवं णित् प्रत्यय परे होने पर शब्द के आदि स्वर को वृद्धिः स्वराणामादेर्ञ्णिति तद्धिते (519) सूत्र से वृद्धि होगी।
- डित् प्रत्यय परे होने पर शब्द के टिसंज्ञक वर्णों का डिति टेः (146) सूत्र से लोप होगा।
- असित् स्वरादि प्रत्यय परे होने पर—
  (क) शब्द के अन्तिम अवर्ण एवं इवर्ण का इवर्णावर्णस्य (451) सूत्र से लोप होगा।
  (ख) शब्द के उवर्ण को उवर्णस्यास्वयंभुवोऽव् (517) सूत्र से अव् होगा।
  (ग) नकारान्त शब्दों के टि संज्ञक वर्णों का नोऽपदस्य तद्धिते (406) सूत्र से लोप होगा।
- हसादि प्रत्यय परे होने पर —
  (क) शब्द के अन्तिम न् का लोप नाम्नो नोऽनह्नः (135) सूत्र से होगा।
  (ख) शब्द के अन्तिम स् का विसर्ग स्रोर्विसर्गः (89) सूत्र से होगा।

(ग) शब्द के अन्तिम झस को जब झसा जबाः (59) सूत्र से होगा।

(घ) शब्द के अन्तिम झथ को चप खसे चपाः झथानाम् (72) सूत्र से होगा।

(ड़) टित् प्रत्यय परे होने पर स्त्रीलिंग में मुख्यात् ...... (306) सूत्र से ईप् प्रत्यय होगा।

रूपसिद्धि की सामान्य प्रक्रिया

1. सिद्ध होने वाला रूप सबसे ऊपर लिखें।
2. लौकिक विग्रह
3. प्रत्यय करने वाला सूत्र
4. अलौकिक विग्रह
5. प्रत्यय की तद्धित संज्ञा तद्धिताः (514) सूत्र से।
6. विभक्ति का लुक् समासप्रत्यययोः (395) सूत्र से।
7. नियमानुसार वृद्धि आदि कार्य
8. वृद्धि आदि कार्य करके तद्धित प्रत्ययान्त बनने के बाद प्रथमा विभक्ति में रूप सिद्ध कर लें।

यदि कोई भी शब्द व्यञ्जनान्त हो तो उसे आगे वाले वर्ण के साथ स्वरहीनं परेण संयोज्यम् इस न्याय से मिला दें। यदि शब्द स्वरान्त हो तो उसे वर्णों को मिलाने पर लिखकर मिला दें।

नोट :

(क) परीक्षा में एक बार सूत्र अवश्य ही पूरा लिखें। तत्पश्चात् बार—बार प्रयुक्त होने वाले सूत्र का संकेत देकर ...... कर दें।
(ख) रूपसिद्धि पूरी करें।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

निवेदन

(क) प्रस्तुत कार्य को अधिक उपयोगी बनाने के लिए सुझाव सादर आमन्त्रित हैं।
(ख) प्रस्तुत कार्य के सम्बन्ध में आपके विचार अवश्य प्रेषित करें।

संकेत–सूची

अ. वि.	अलौकिक विग्रह
ए. व.	एक वचन
च. वि.	चतुर्थी विभक्ति
तृ. वि.	तृतीया विभक्ति
प. वि.	पञ्चमी विभक्ति
प्र. वि.	प्रथमा विभक्ति
ब. व.	बहु वचन
भिक्षु.	भिक्षुशब्दानुशासन
लौ. वि.	लौकिक विग्रह
विभ.	विभक्ति
ष. वि.	षष्ठी विभक्ति
स. वि.	सप्तमी विभक्ति
सू.	सूत्र

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तद्धित प्रकरण के सूत्र

514. तद्धिताः।
515. प्राग्दीव्यतेरण्।
516. तस्यापत्ये।
517. उवर्णस्यास्वयंभुवोऽव्।
518. अत इञ्।
519. वृद्धिः स्वराणामादेर्ञ्णिति तद्धिते।
520. शिवादेरण्।
521. ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यः।
522. कन्यायाः कनीनश्च।
523. गोत्रे बिदादेः पौत्रादौ।
524. गर्गादिर्यञ्।
525. यञञोऽश्यापर्णान्तगोपवनादेः।
526. नडादिभ्य आयनण्।
527. द्विस्वरादनद्याः।
528. क्षुद्राभ्यो वा।
529. स्वसुरीयः।
530. भ्रातुर्व्यश्च।
531. श्वशुराद्यः।
532. राज्ञो जातौ।
533. अनोऽट्ये ये।
534. क्षत्रादियः।
535. मनोर्याणौ षुक् च।
536. इतोऽनिञः।
537. कुलादीनः।
538. दुष्कुलादेयण्।
539. प्राग्वतोऽग्निकलेरेयण्।
540. स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ।
541. गोः स्वरे यः।
542. येऽयकि।
543. तेन रक्ते रागात्।
544. तस्य समूहे।
545. गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्य-
राजपुत्रवत्साजमनुष्यवृद्धादकञ्।
546. तद्धितेऽनाति यस्वरे।
547. राजन्यमनुष्ययूनामके।
548. कवचिहस्त्यचित्ताच्चेकण्।
549. धेनोरनञः।
550. ऋवर्णोवर्णेसुर्दोर्भ्य इकस्येतः।
551. अश्वादीयो वा।
552. ग्रामजनबन्धुगजसहायेभ्यस्तल्।
553. विकारे।
554. पितृमातृभ्यां व्यडुलौ भ्रातरि।
555. पित्रोर्डामहट्।
556. गोः पुरीषे।
557. पुरुषात् कृतहितवधविकारसमूहेष्वेयञ्।
558. निष्फले तिलात् पिञ्जपेजौ।
559. सास्य देवता।
560. ऋतुवायुपित्रुषसो यः।
561. ऋतो रस्तद्धिते ये।
562. तद्वेत्त्यधीते।
563. संधिय्वोरैडौट् च।
564. न्यायादेरिकण्।
565. तेन छन्ने रथे।
566. अणि।
567. संस्कृते भक्ष्ये।
568. द्विगोरनपत्ये यस्वरादेर्लुगद्विः।
569. शेषे।
570. राष्ट्रादियः।
571. ग्रामादीनञ् च।
572. नद्यादेरेयण्।
573. क्वामेहत्रतसस्त्यप्।
574. दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यण्।
575. णोऽरण्यात्।
576. भवतोरिकणीयसौ।
577. तोऽशश्वदकस्मात्।
578. परजनराज्ञोऽकीयः।
579. संज्ञावृद्धं वा।
580. त्यदादिः।
581. वृद्धादीयः।
582. गहादिभ्यः।
583. वा युष्मदस्मदोऽञीनञौ
युष्माकास्माकौ च।
584. तवकममकावेकत्वे।
585. अन्तादिमध्यान्मः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

586. पश्चादग्रान्तादिमः ।
587. अनाराच्छश्वत्पृथगोऽव्ययस्य ।
588. वर्षाकालेभ्य इकण् ।
589. ऋतुनक्षत्रसंध्यादेरण् ।
590. तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्रेऽणि ।
591. तत्र जाते ।
592. कृतलब्धक्रीतसंभूतेषु ।
593. कुशले ।
594. भवे ।
595. दिगादेर्यः ।
596. शरीरावयवात् ।
597. दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यहेरेयण् ।
598. मध्याह्निनण्णेया मुम् चास्य ।
599. ईयो मत्वर्थजिह्वामूलाङ्गुलिभ्यश्च ।
600. वर्गान्तात् ।
601. प्रभवति ।
602. अधिकृत्य कृते ग्रन्थे ।
603. तेन प्रोक्ते ।
604. कृते ।
605. तस्येदम् ।
606. इकण् ।
607. तेन दीव्यतिखनतिजयतिजितेषु ।
608. संस्कृते ।
609. तरति ।
610. नौद्विस्वरादिकः ।
611. चरति ।
612. पर्पादेरिकट् ।
613. पक्षिमत्स्यमृगाख्येभ्यो हन्ति ।
614. धर्माधर्माभ्यां चरति ।
615. निकटादिषु वसति ।
616. सतीर्थ्यः ।
617. मूल्यैः क्रीते ।
618. अर्हति ।
619. शोभते ।
620. तत्र साधौ ।
621. पर्षदो ण्यणौ ।
622. कथादेरिकण् ।
623. तस्मै हिते ।
624. शरीरावयवाद्यः ।
625. अजाविभ्यां थ्यः ।
626. मानिक्यङ्कच्तस्त्रतरतमचरट्–
कल्पदेश्यरूपपाशथ्येथट्थट्तिथट्प्लुक्षु ।
627. तस्यार्हे क्रियायां वत् ।
628. स्यादेरिवे ।
629. तत्र ।
630. तस्य ।
631. भावे त्वतलौ ।
632. पृथ्वादेरिमन् वा ।
633. पृथुमृदुभृशकृशदृढपरिवृढस्य ऋतो रः ।
634. टेः ।
635. प्रियस्थिरस्फिरोरुगुरुबहुलतृप्रदीर्घह्रस्व–
वृद्धवृन्दारकाणामिमन्यपि
प्रस्थस्फवरगरबंहत्रपद्राघह्रसवर्षवृन्दाः ।
636. नैकस्वरस्य ।
637. भूर्लोपश्चेवर्णस्य ।
638. वर्णदृढादिभ्यष्ट्यण् च ।
639. पतिराजान्तगुणाङ्गराजादिभ्यः
कर्मणि च ।
640. सखिदूतवणिग्भ्यो यः ।
641. युवादेरण् ।
642. लघुपूर्वाद् य्वृवर्णात् ।
643. ऋत्विग्भ्य ईयः ।
644. ब्रह्मणस्त्वः ।
645. क्षेत्रे शाकटशाकिनौ ।
646. तेन वित्ते चञ्चुचणौ ।
647. अवेः संघातविस्तारयोः कटपटौ ।
648. तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतः ।
649. प्रमाणान्मात्रट् ।
650. ऊर्ध्वं दघ्नड्द्वयसटौ ।
651. इदं किमोऽतुरियृकियृ चास्य ।
652. यत्तदेतदो डावट् च ।
653. यत्तत्किमः संख्याया डतिर्वा ।
654. अवयवात्तयट् ।
655. Ðस्वान्नामिनस्ते ।
656. द्वित्रिभ्यामयड् वा ।
657. संख्यापूरणे डट् ।
658. विंशत्यादेर्वा तमट् ।
659. विंशतेस्तेर्डिति ।
660. नो मट् ।
661. द्वेस्तीयः ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

662. त्रेस्तृ च।
663. चतुरो येयौ चलोपश्च।
664. षट्कतिकतिपयाच्च थट्।
665. थटि।
666. तदस्यास्मिन्नस्तीति मतुः।
667. मावर्णान्तोपधाद्वतुः।
668. नस्ते मत्वर्थे।
669. झपात्।
670. अस्तपोमायामेधास्रजो विन् वा।
671. नावादेरिकः।
672. शिखादिभ्य इन्।
673. व्रीह्यादिभ्यस्तौ।
674. अतोऽनेकस्वरात्।
675. न द्रव्यादिभ्यः।
676. वातातीसारपिशाचानां कुक् च।
677. सुखादेः।
678. वाच आलाटौ।
679. दन्तादुन्नतात्।
680. कृपाहृदयाद्वालुः।
681. स्वामिन्नीशे।
682. विनयादिभ्य इकण्।
683. प्रज्ञादिभ्यः।
684. भेषजादिभ्यो यण्।
685. चतुर्वर्णादिभ्यष्ट्यण्।
686. देवात्तल्।
687. मृदस्तिकः।
688. वर्णाव्ययात् स्वरूपे कारः।
689. रादेफो वा।
690. नामरूपभागेभ्यो धेयः।
691. मर्तादिभ्यो यः।
692. नवादीनतनत्नञ्च नू चास्य।
693. प्रकारे जातीयः।
694. जातीयदेशीययोः।
695. भूतपूर्वे चरट्।
696. अहीयरुहोऽपादाने।
697. किमद्व्यादिसर्वाद्यवैपुल्यबहोस्तस्।
698. इतोऽतः कुतः।
699. तसादिः स्यादिवत्।
700. सप्तम्याः।
701. कुत्रात्रक्वकुहेह।
702. किमन्यैकसर्वयत्तदः काले दा।
703. सदाऽधुनेदानींतदानीमेतर्हि।
704. प्रकारे था।
705. कथमित्थम्।
706. संख्याया धा।
707. डत्यतुसंख्यावत्।
708. विचाले च।
709. वैकाद् ध्यमुञ्।
710. द्वित्रेर्धमुञेधौ।
711. वारे कृत्वस्।
712. द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्।
713. एकात् सकृच्चास्य।
714. प्रकृष्टे तमः।
715. द्वयोर्विभज्ये च तरः।
716. त्यादिकिमेदव्ययेभ्यस्ताभ्यामामद्रव्ये।
717. गुणाङ्गादिष्ठेयसू तदर्थे वा।
718. बहोर्णीष्ठे भूय्।
719. प्रशस्यस्य श्रः।
720. वृद्धस्य च ज्यः।
721. ज्यायान्।
722. युवाल्पयोः कन् वा।
723. स्थूलदूरयुवक्षिप्रक्षुद्राणां यलादेर्नामिनो गुणश्च।
724. त्यादेश्च प्रशंसायां रूपः।
725. अतमादेरीषदसमाप्ते कल्पदेश्यदेशीयाः।
726. नाम्नः प्राग् बहुर्वा।
727. पाशः क्षेपे।
728. बह्वल्पार्थात् कारकादिष्टानिष्टे शस्।
729. प्रकृते मयट्।
730. अस्मिन्।
731. अभूततद्भावे कृभ्वस्तिभ्यां कर्मकर्तृभ्यां च्विः।
732. ईश्च्वाववर्णस्याऽनव्ययस्य।
733. वेर्लोपः।
734. च्वियग्यङ्क्यादादियक्येषु।
735. कात्स्न्र्ये साद्वा।
736. सात्सुगोः।
737. प्राग्यावात् कच्।
738. कुत्सिताल्पाज्ञातेषु।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

739. Đस्वे ।
740. त्यादिसर्वादेरक् प्राक् टेः ।
741. युष्मदस्मदोरनोत्सभादेः स्यादेः ।
742. वैकाद् द्वयोर्निर्धार्ये डतरः ।
743. यत्तत्किमन्येभ्यः ।
744. बहूनां प्रश्ने डतमश्च वा ।
745. यावादिभ्यः कः ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

द्विरुक्त प्रक्रिया के सूत्र

746. भृशाभीक्ष्ण्यसातत्यवीप्सासु द्विः प्राक् तमादेः
747. सम्भ्रमे यावद्बोधम्
748. अधोऽध्युपरि सामीप्ये
749. आधिक्यानुपूर्व्ये
750. प्रोपोत्सम: पादपूरणे
751. द्वन्द्वं वा

विषयानुक्रम

क्रमाङ्क	विषय	पृष्ठ
1	अपत्याधिकारः	1–15
2	रक्ताद्यर्थाधिकारः	16–31
3	शेषाधिकारः	32–56
4	इकणधिकारः	57–63
5	यादिप्रत्ययाधिकारः	64–67
6	भावकर्मार्थाः	68–89
7	क्षेत्राद्यर्थकाः	90–104
8	मत्वर्थीयाः	105–117
9	स्वार्थिकाः	118–170
10	द्विरुक्तप्रक्रिया	171–174
11	परिशिष्ट I	175–180
12	परिशिष्ट II	181–185
13	परिशिष्ट III	186–208

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ तद्धित-प्रकरणम्

अब तद्धित प्रकरण प्रारम्भ हो रहा है।

तद्धितेषु अपत्याधिकारः

तद्धितों में अपत्य अधिकार।

514. तद्धिताः। (6/2/1)

इतो वक्ष्यमाणाः प्रत्ययास्तद्धितसंज्ञकाः स्युः।

यहां (6.2.1) से आगे कहे जाने वाले प्रत्यय तद्धित संज्ञक होते हैं।

515. प्राग्दीव्यतेरण्। (6/2/14)

तेन दीव्यतीत्यतः प्राग् अण् अधिक्रियते।

तेन दीव्यतिखनतिजयतिजितेषु (सू. 607) से पूर्व अण् का अधिकार है।

516. तस्यापत्ये। (6/2/31)

षष्ठ्यन्तान्नाम्नोऽपत्येऽर्थे अणादयः प्रत्ययाः स्युः।

षष्ठी अन्त नाम से अपत्य (अर्थात् संतान) अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होते हैं।

517. उवर्णस्यास्वयंभुवोऽव्। (8/4/69)

स्वयंभूवर्जितस्योवर्णान्तस्य अपदस्य तद्धिते परे अव् स्यात्। भानवः।

स्वयंभू (शब्द) को छोड़कर अपद उवर्णान्त को अव् हो जाता है तद्धित परे होने पर।

भानवः

भानोः अपत्यम् लौ. वि.
तस्यापत्ये (516) सू. से अण् प्रत्यय
भानु + ङस् + अण् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से अण् प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समासप्रत्यययोः (395) सू. से विभ. का लुक्
भानु + अण्, ण् अनुबन्ध
उवर्णस्यास्वयंभुवोऽव् (517) सू. से उ को अव्
भान् + अव् + अ
स्वरहीनं परेण संयोज्यम्[1] न्याय से वर्णों को मिलाने पर भानव
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
भानव + सि, इकार उच्चारणार्थ
वर्णों को मिलाने पर भानवस्
स्रोर्विसर्गः (89) सू. से स् का विसर्ग करने पर भानवः रूप सिद्ध हुआ।

518. अत इञ्। (6/2/34)

अदन्तात् षष्ठ्यन्तादपत्यार्थे इञ् स्यात्।

अदन्त (अर्थात् जिस शब्द के अन्त में अ है) षष्ठी अन्त (नाम) से अपत्य अर्थ में इञ् (प्रत्यय) होता है।

519. वृद्धिः स्वराणामादेर्ञ्णिति तद्धिते। (8/4/1)

स्वराणां मध्ये आदिस्वरस्य वृद्धिः स्यात् ञिति णिति च तद्धिते परे। दाशरथिः।

स्वरों में आदि स्वर की वृद्धि हो जाती है ञित् अथवा णित् तद्धित परे होने पर।

---

1 स्वररहित व्यञ्जन आगे वाले (वर्ण) के साथ मिल जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

दाशरथिः

दशरथस्य अपत्यम् लौ. वि.

तस्यापत्ये (516) सू. से अण् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

अत इञ् (517) सू. से इञ् प्रत्यय

दशरथ + ङस् + इञ् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

दशरथ + इञ्, ञ् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

दाशरथ + इ

इवर्णावर्णस्य (451) सू. से अकार का लोप

दाशरथ् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर दाशरथि

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

दाशरथि + सि, इकार उच्चारणार्थ

वर्णों को मिलाने पर दाशरथिस्

स्रोर्वि ...... (89) सू. से स् का विसर्ग करने पर दाशरथिः रूप सिद्ध हुआ।

520. शिवादेरण्। (6/2/42)

शिवादिभ्यः षष्ठ्यन्तेभ्योऽपत्येऽर्थे अण् प्रत्ययो भवति। (इञादेरपवादः) शैवः, प्रौष्ठः।

शिवादि (गणपठित) षष्ठी अन्त (शब्दों से) अपत्य अर्थ में अण् (प्रत्यय) होता है। (यह सूत्र इञ् आदि प्रत्ययों का अपवाद है।)

शैवः

शिवस्य अपत्यम् लौ. वि.

तस्यापत्ये (516) सू. से अण् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर

अत ...... (518) सू. से इञ् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर

शिवादे ...... (520) सू. से अण् प्रत्यय

शिव + ङस् + अण् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

शिव + अण्, ण् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

शैव + अ

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

शैव् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर शैव

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

शैव + सि, इकार उच्चारणार्थ

वर्णों को मिलाने पर शैवस्

स्रोर्वि ...... (89) सू. से स् का विसर्ग करने पर शैवः रूप सिद्ध हुआ।

प्रौष्ठः

प्रौष्ठस्य अपत्यम् लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तस्यापत्ये (516) सू. से अण् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
अत ...... (518) सू. से इञ् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
शिवादे ...... (520) सू. से अण् प्रत्यय
प्रौष्ठ + ङस् + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

521. ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यः।[1] (6/2/44)

ऋष्यादिवाचिभ्योऽपत्ये अण् स्यात्। वाशिष्ठः, श्वाफल्कः, वासुदेवः, नाकुलः।

ऋषि, अन्धक, वृष्णि, कुरु वाची शब्दों से अपत्य अर्थ में अण् (प्रत्यय) होता है।

वाशिष्ठः

वशिष्ठस्य अपत्यम् लौ. वि.
अत ...... (518) सू. से इञ् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
ऋष्यन्धक ...... (521) सू. से अण् प्रत्यय
वशिष्ठ + ङस् + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

श्वाफल्कः

श्वफल्कस्य अपत्यम् लौ. वि.
अत ...... (518) सू. से इञ् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
ऋष्यन्धक ...... (521) सू. से अण् प्रत्यय
श्वफल्क + ङस् + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

वासुदेवः

वसुदेवस्य अपत्यम् लौ. वि.
अत ...... (518) सू. से इञ् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
ऋष्यन्धक ...... (521) सू. से अण् प्रत्यय
वसुदेव + ङस् + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

नाकुलः

नकुलस्य अपत्यम् लौ. वि.
अत...... (518) सू. से इञ् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
ऋष्यन्धक ...... (521) सू. से अण् प्रत्यय
नकुल + ङस् + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

522. कन्यायाः कनीनश्च। (6/2/46)

कन्याशब्दादपत्येऽर्थे अण् प्रत्ययो भवति तत्सन्नियोगे चास्य कनीनादेशः। कन्याया अपत्यम्— कानीनः, व्यासः कर्णो वा।

कन्या शब्द से अपत्य अर्थ में अण् प्रत्यय होता है और उस (अण् प्रत्यय) के योग में कन्या के स्थान पर कनीन आदेश होता है।

कानीनः

कन्याया अपत्यम् लौ. वि.
कन्याया ...... (522) सू. से अण् प्रत्यय

[1] ऋषयो लौकिका वशिष्ठादयः। अन्धकाः वृष्णयः कुरवश्च प्रसिद्धाः वंशाख्याः क्षत्रियाः।
वशिष्ठ आदि लोक में प्रसिद्ध ऋषि हैं। अन्धक, वृष्णि और कुरु ये प्रसिद्ध क्षत्रिय वंश हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कन्या + ङस् + अण् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कन्या + अण्

कन्याया ...... (522) सू. से कन्या के स्थान पर कनीन आदेश

कनीन + अण्, ण् अनुबन्ध

शेष शैववत्

523. गोत्रे बिदादेः पौत्रादौ। (6/2/56)

बिदादिभ्यो गोत्रे पौत्रादावपत्ये अञ् स्यात्। बिदस्य पौत्राद्यपत्यम्—बैदः, काश्यपः।

बिदादि (गणपठित शब्दों) से गोत्रसंज्ञक[1] पौत्रादि अपत्य में अञ् (प्रत्यय) होता है।

बैदः

बिदस्य पौत्राद्यपत्यम् लौ. वि.

गोत्रे बिदादेः ...... (523) सू. से अञ् प्रत्यय

बिद + ङस् + अञ् अ. वि.

शेष शैववत्

काश्यपः

कश्यपस्य पौत्राद्यपत्यम् लौ. वि.

गोत्रे बिदादेः ...... (523) सू. से अञ् प्रत्यय

कश्यप + ङस् + अञ् अ. वि.

शेष शैववत्

524. गर्गादिर्यञ्। (6/2/57)

गर्गादिभ्यः षष्ठ्यन्तेभ्यः गोत्रे पौत्रादावपत्येऽर्थे यञ् प्रत्ययो भवति। गर्गस्य पौत्राद्यपत्यम्—गार्ग्यः, वात्स्यः।

षष्ठी अन्त गर्गादि (गणपठित शब्दों) से गोत्रसंज्ञक पौत्रादि अपत्य अर्थ में यञ् प्रत्यय होता है।

गार्ग्यः

गर्गस्य पौत्राद्यपत्यम् लौ. वि.

गर्गादि ...... (524) सू. से यञ् प्रत्यय

गर्ग + ङस् + यञ् अ. वि.

शेष शैववत्

वात्स्यः

वत्सस्य पौत्राद्यपत्यम् लौ. वि.

गर्गादि ...... (524) सू. से यञ् प्रत्यय

वत्स + ङस् + यञ् अ. वि.

शेष शैववत्

525. यञञोऽश्यापर्णान्तगोपवनादेः। (6/2/136)

गोत्रेऽर्थे बहुत्वे वर्तमानयोः यञ्, अञ् इत्येतयोर्लुक् स्यात् अस्त्रियां न तु श्यापर्णान्तगोपवनादिभ्यः। गर्गाः, बिदाः। गोपवनादिर्बिदाद्यन्तर्गणस्तद्वर्जनात्रेह — गौपवनाः, श्यापर्णाः। अस्त्रियामिति किम्—गार्ग्यः स्त्रियः।

---

1 विद्यार्थियों के लिए अभी इतना ही ज्ञातव्य है कि गोत्र पौत्र से प्रारंभ होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

गोत्र अर्थ में बहुवचन में रहे हुए यञ्, अञ् इन दोनों (प्रत्ययों) का लुक् होता है। स्त्रीलिंग में एवं गोपवन से लेकर श्यापर्ण तक के (शब्दों में लोप) नहीं होता।

गर्गाः

गर्गस्य पौत्रादीनि अपत्यानि लौ. वि.

गर्गादे ...... (524) सू. से यञ् प्रत्यय

गर्ग + ङस् + यञ् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से यञ् प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

गर्ग + यञ्, ञ् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

गार्ग + य

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

गार्ग् + यञ्

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर गार्ग्य

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

गार्ग्य + जस्

यञञो ...... (525) सू. से यञ् का लुक्

निमित्ताभावे नैमित्तिकस्याप्यभावः[1] इस न्याय से यञ् के निमित्त से होने वाली वृद्धि एवं अकारलोप का अभाव

गर्ग + जस्

अदेतोरपदान्तेऽतः (102) सू. से अकार के लोप की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

अतो जस्भ्यांये (103) सू. से अकार का आकार

गर्गा + जस्, ज् अनुबन्ध

गर्गा + अस्

समानानां सवर्णे दीर्घः सह (36) सू. से आ का अ के साथ दीर्घ करने पर गर्गास्

स्रोर्वि ...... (89) सू. से सकार का विसर्ग करने पर गर्गाः रूप सिद्ध हुआ।

बिदाः

बिदस्य पौत्रादीनि अपत्यानि लौ. वि.

गोत्रे बिदादेः ...... (523) सू. से अञ् प्रत्यय

बिद + ङस् + अञ् अ. वि.

शेष गर्गावत्

<u>गोपवनादि बिदादि का अन्तर्गण है उसे छोड़ देने से उसमें (अञ् का) लुक् नहीं होता।</u>

गौपवनाः

गोपवनस्य पौत्रादीनि अपत्यानि लौ. वि.

गोत्रे बिदादेः ......(523) सू. से अञ् प्रत्यय

गोपवन + ङस् + अञ् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

गोपवन् + अञ्, ञ् अनुबन्ध

---

1 निमित्त (कारण) का अभाव होने पर नैमित्तिक (कार्य) का भी अभाव हो जाता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

गौपवन + अ

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

गौपवन् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर गौपवन

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

गौपवन + जस्, ज् अनुबन्ध

गौपवन + अस्

अदेतो ...... (102) सू. से अकार के लोप की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

अतो ...... (103) सू. से अकार का आकार

गौपवना + अस्

समानानां ...... (36) सू. से आकार का अकार के साथ दीर्घ

गौपवनास्

स्रोर्वि ...... (89) सू. से सकार का विसर्ग करने पर गौपवनाः रूप सिद्ध हुआ।

श्यापर्णाः

श्यापर्णस्य पौत्रादीनि अपत्यानि लौ. वि.

गोत्रे बिदादेः ...... (523) सू. से अञ् प्रत्यय

श्यापर्ण + ङस् + अञ् अ. वि.

शेष गौपवनवत्

स्त्रीलिंग को क्यों छोड़ा? स्त्रीलिंग को छोड़ देने से उसमें यञ् का लुक् नहीं होता।

गार्ग्यः स्त्रियः

गर्गस्य पौत्रादीनि अपत्यानि स्त्रियः लौ. वि.

गर्गादे ...... (524) सू. से यञ् प्रत्यय

गर्ग + ङस् + यञ् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से यञ् प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

गर्ग + यञ्, ञ् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

गार्ग + य

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

गार्ग् + य

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर गार्ग्य

गौरादिभ्यः (308) सू. से ईप् प्रत्यय

गार्ग्य + ईप्

ईप्यतः (307) सू. से अकार का लोप

गार्ग्य् + ईप्, प् अनुबन्ध

हसात्तद्धितस्य (310) सू. से य् का लोप

गार्ग् + ई

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर गार्गी

प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

गार्गी + जस्, ज् अनुबन्ध

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

इवर्णादीनां स्वरे यवरला: (29) सू. से ई को य्
गार्ग्य् + अस्
स्वरहीनं ...... इस न्याय से वर्णों को मिलाने पर गार्ग्यस्
स्रोर्वि ...... (89) सू. से सकार का विसर्ग करने पर गार्ग्य: रूप सिद्ध हुआ।

526. नडादिभ्य आयनण्। (6/2/68)

नडादिभ्य: षष्ठ्यन्तेभ्यो गोत्रे पौत्रादावपत्येऽर्थे आयनण् प्रत्ययो भवति। नाडायन:, चारायण:। (सर्वत्र अनन्तरापत्ये तु इञेव) बैदि:, गार्गि:, नाडि:।

षष्ठी अन्त नडादि (गणपठित शब्दों) से गोत्रसंज्ञक पौत्रादि अपत्य अर्थ में आयनण् प्रत्यय होता है।

नाडायन:

नडस्य पौत्राद्यपत्यम् लौ. वि.
नडादिभ्य ...... (526) सू. से आयनण् प्रत्यय
नड + ङस् + आयनण् अ. वि.
शेष शैववत्

चारायण:

चरस्य पौत्राद्यपत्यम् लौ. वि.
नडादिभ्य ...... (526) सू. से आयनण् प्रत्यय
चर + ङस् + आयनण् अ. वि.
तद्धिता: (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
चर + आयनण्, ण् अनुबन्ध
वृद्धि: ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
चार + आयन
इवर्णा ...... (451) सू. से अ का लोप
चार् + आयन
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर चारायन
अवकुप्वनुस्वारविसर्गजिह्वामूलीयोपध्मानीयैरन्तरेऽपि (121) सू. से न् का ण् चारायण
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
चारायण + सि
शेष शैववत्
सर्वत्र अनन्तरापत्य (अर्थात् स्वयं के बाद होने वाली सन्तान अर्थ) में इञ् ही होता है।

बैदि:

बिदस्य अपत्यम् लौ. वि.
तस्यापत्ये (516) सू. से अण् की प्राप्ति उसे रोककर
अत ...... (518) सू. से इञ् प्रत्यय
बिद + ङस् + इञ् अ. वि.
शेष दाशरथिवत्

गार्गि:

गर्गस्य अपत्यम् लौ. वि.
तस्यापत्ये (516) सू. से अण् की प्राप्ति उसे रोककर
अत ...... (518) सू. से इञ् प्रत्यय
गर्ग + ङस् + इञ् अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष दाशरथिवत्

नाडि:

नडस्य अपत्यम् लौ. वि.
तस्यापत्ये (516) सू. से अण् की प्राप्ति उसे रोककर
अत ...... (518) सू. से इञ् प्रत्यय
नड + ङस् + इञ् अ. वि.
शेष दाशरथिवत्

527. द्विस्वरादनद्या: । (6/2/89)

द्विस्वरात् स्त्रीप्रत्ययान्तादनद्यर्थादपत्ये एयण् स्यात् । दात्तेय:, गौप्तेय: । अनद्या इति किम्— सैप्र: ।

नदीवाची शब्दों को छोड़कर दो स्वर वाले स्त्रीप्रत्ययान्त शब्दों से अपत्य (अर्थ) में एयण् (प्रत्यय) होता है।

दात्तेय:

दत्ताया: अपत्यम् लौ. वि.
द्विस्वरा ...... (527) सू. से एयण् प्रत्यय
दत्ता + ङस् + एयण्
शेष शैववत्

गौप्तेय:

गुप्ताया: अपत्यम् लौ. वि.
द्विस्वरा ...... (527) सू. से एयण् प्रत्यय
गुप्ता + ङस् + एयण् अ. वि.
शेष शैववत्
नदीवाची शब्दों को क्यों छोड़ा? सिप्रा नदीवाची है इससे एयण् प्रत्यय नहीं होगा अत: —

सैप्र:

सिप्राया: अपत्यम् लौ. वि.
तस्यापत्ये (516) सू. से अण् प्रत्यय
सिप्रा + ङस् + अण् अ. लौ.
शेष शैववत्

528. क्षुद्राभ्यो वा । (6/2/104)

अङ्गहीना: शीलहीना वा स्त्रिय: क्षुद्रा: । ताभ्योऽपत्ये एरण् वा स्यात् । पक्षे पूर्वेण एयण् — काणेर:, काणेय:, दासेर:, दासेय: ।

अङ्गहीना और शीलहीना स्त्रियां क्षुद्रा हैं। उनसे अपत्य (अर्थ) में एरण् (प्रत्यय) विकल्प से होता है। (पक्ष में पूर्व सू. 527 से एयण् प्रत्यय होता है।)

काणेर:

काणाया: अपत्यम् लौ. वि.
द्विस्वरा ...... (527) सू. से एयण् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
क्षुद्राभ्यो वा (528) सू. से विकल्प से एरण् प्रत्यय
काणा + ङस् + एरण् अ. वि.
शेष शैववत्
पक्ष में — जहां एरण् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

काणेय:

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

काणाया: अपत्यम् लौ. वि.

द्विस्वरा ...... (527) सू. से एयण् प्रत्यय

काणा + ङस् + एयण् अ. वि.

शेष शैववत्

दासेरः

दास्या: अपत्यम् लौ. वि.

द्विस्वरा ...... (527) सू. से एयण् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर

क्षुद्राभ्यो वा (528) सू. से विकल्प से एरण् प्रत्यय

दासी + ङस् + एरण् अ. वि.

शेष शैववत्

पक्ष में — जहां एरण् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

दासेयः

दास्या: अपत्यम् लौ. वि.

द्विस्वरा ...... (527) सू. से एयण् प्रत्यय

दासी + ङस् + एयण् अ. वि.

शेष शैववत्

529. स्वसुरीयः। (6/2/106)

स्वसृशब्दादपत्येऽर्थे ईयः प्रत्ययो भवति। स्वस्रीयः।

स्वसृ शब्द से अपत्य अर्थ में ईय प्रत्यय होता है।

स्वस्रीयः

स्वसुः अपत्यम् लौ. वि.

स्वसु ...... (529) सू. से ईय प्रत्यय

स्वसृ + ङस् + ईय अ. वि.

तद्धिता: (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

स्वसृ + ईय

इवर्णादीनां स्वरे यवरला: (29) सू. से ऋ का र्

स्वस्र् + ईय

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर स्वस्रीय

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

स्वस्रीय + सि

शेष शैववत्

530. भ्रातुर्व्यश्च। (6/2/107)

भ्रातृशब्दादपत्येऽर्थे व्यः चकारात् ईयश्च प्रत्ययो भवति। भ्रातृव्यः, भ्रात्रीयः।

भ्रातृ शब्द से अपत्य अर्थ में व्य तथा (सूत्र में दिए गए) चकार से ईय प्रत्यय होता है।

भ्रातृव्यः

भ्रातुः अपत्यम् लौ. वि.

भ्रातु ...... (530) सू. से व्य प्रत्यय

भ्रातृ + ङस् + व्य अ. वि.

तद्धिता: (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

भ्रातृ + व्य

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वर्णों को मिलाने पर भ्रातृव्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
भ्रातृव्य + सि
शेष शैववत्

भ्रात्रीयः

भ्रातुः अपत्यम् लौ. वि.
भ्रातु ...... (530) सू. से ईय प्रत्यय
भ्रातृ + ङस् + ईय अ. वि.
शेष स्वस्रीयवत्

531. श्वशुराद्यः। (6/2/114)

श्वशुरशब्दादपत्येऽर्थे यः प्रत्ययो भवति। श्वशुर्यः।

श्वशुर शब्द से अपत्य अर्थ में य प्रत्यय होता है।

श्वशुर्यः

श्वशुरस्य अपत्यम् लौ. वि.
श्वशु ...... (531) सू. से य प्रत्यय
श्वशुर + ङस् + य अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
श्वशुर + य
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
श्वशुर् + य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर श्वशुर्‍य
जलतुम्बिका[1] इस न्याय से रेफ का ऊर्ध्वगमन करने पर श्वशुर्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
श्वशुर्य + सि
शेष शैववत्

532. राज्ञो जातौ। (6/2/115)

राजन्शब्दादपत्येऽर्थे यः स्याज्जातौ।

राजन् शब्द से अपत्य अर्थ में य प्रत्यय होता है जाति प्रकट होने पर।

533. अनोऽट्ये ये। (8/4/52)

अन्नन्तस्य टेर्लोपो न स्यात् ट्यवर्जिते ये परे। राजन्यः। अन्यत्र राजनः।

अन् अन्त की टि का लोप नहीं होता है ट्यवर्जित य (प्रत्यय) परे होने पर।

राजन्यः

राज्ञः अपत्यं जातिः लौ. वि.
राज्ञो ...... (532) सू. से य प्रत्यय
राजन् + ङस् + य अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
राजन् + य

1 जैसे खाली तुम्बी पानी के ऊपर तैरती है वैसे ही स्वर रहित रकार ऊपर चला जाता है ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अन्त्यस्वरादिष्टिः (18) सू. से अन् की टि संज्ञा
नोऽपदस्य तद्धिते (406) सू. से टिसंज्ञक वर्णों के लोप की प्राप्ति किन्तु
अनो ...... (533) सू. से निषेध
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर राजन्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
राजन्य + सि
शेष शैववत्
जहां जाति प्रकट नहीं होगी वहां —

राजनः

राज्ञः अपत्यम् लौ. वि.
तस्या ...... (516) सू. से अण् प्रत्यय
राजन् + ङस् + अण् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से अण् प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
राजन् + अण्, ण् अनुबन्ध
अन्त्यस्वरा ...... (18) सू. से अन् की टि संज्ञा
नोऽपदस्य ...... (406) सू. से टि संज्ञक वर्णों के लोप की प्राप्ति किन्तु
अणि (566) सू. से निषेध कर देने पर
राजन् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर राजन
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
राजन + सि
शेष शैववत्

534. क्षत्रादियः। (6/2/116)

क्षत्रशब्दादपत्येऽर्थे इयः प्रत्ययो भवति जातौ गम्यमानायाम्। क्षत्रियो जातिश्चेत्। क्षात्रिरन्यः।

क्षत्र शब्द से अपत्य अर्थ में इय प्रत्यय होता है जाति प्रकट होने पर।

क्षत्रियः

क्षत्रस्य अपत्यं जातिः लौ. वि.
क्षत्रादियः (534) सू. से इय प्रत्यय
क्षत्र + ङस् + इय अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
क्षत्र + इय
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
क्षत्र् + इय
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर क्षत्रिय
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
क्षत्रिय + सि
शेष शैववत्
जहां जाति प्रकट नहीं होगी वहां —

क्षात्रिः

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

क्षत्रस्य अपत्यम् लौ. वि.
तस्यापत्ये (516) सू. से अण् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
अत ...... (518) सू. से इञ् प्रत्यय
क्षत्र + ङस् + इञ् अ. वि.
शेष शैववत्

535. मनोर्याणौ षुक् च। (6/2/117)

मनुशब्दादपत्ये याणौ स्तः अस्य षुगागमश्च जातौ। मनुष्यः, मानुषः। जाताविति किम् — मानवः।

मनु शब्द से अपत्य अर्थ में य एवं अण् (प्रत्यय) हो जाते हैं और मनु शब्द को षुक् का आगम हो जाता है जाति प्रकट होने पर।

मनुष्यः

मनोः अपत्यं जातिः लौ. वि.
मनो ...... (535) सू. से य प्रत्यय
मनु + ङस् + य अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
मनु + य
आद्यन्तौ ट्कितौ (70) सू. की सहायता से
मनो ...... (535) सू. से मनु के अंत में षुक् का आगम
मनु + षुक् + य, क् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
मनु + ष् + य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर मनुष्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
मनुष्य + सि
शेष शैववत्

मानुषः

मनोः अपत्यं जातिः लौ. वि.
मनो ...... (535) सू. से अण् प्रत्यय
मनु + ङस् + अण् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
मनु + अण्
आद्यन्तौ ...... (70) सू. की सहायता से
मनो ...... (535) सू. से मनु के अंत में षुक् का आगम
मनु + षुक् + अण्, क् एवं ण् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
मानु + ष् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर मानुष
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
मानुष + सि
शेष शैववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जाति प्रकट हो ऐसा क्यों ? जहां जाति प्रकट नहीं होगी वहां —

मानवः

मनोः अपत्यम् लौ. वि.

तस्या ...... (516) सू. से अण् प्रत्यय

मनु + ङस् + अण् अ. वि.

शेष भानववत्

536. इतोऽनिञः। (6/2/90)

इञन्तवर्जितात् द्विस्वरादिदन्तात् अपत्ये एयण् स्यात्। नाभेयः, आहेयः। इत इति किम्— दाक्षिः।

इञ् अन्त को छोड़कर दो स्वर वाले इदन्त (शब्द) से अपत्य अर्थ में एयण् (प्रत्यय) हो जाता है।

नाभेयः

नाभेः अपत्यम् लौ. वि.

इतो ...... (536) सू. से एयण् प्रत्यय

नाभि + ङस् + एयण् अ. वि.

शेष शैववत्

आहेयः

अहेः अपत्यम् लौ. वि.

इतो ...... (536) सू. से एयण् प्रत्यय

अहि + ङस् + एयण् अ. वि.

शेष शैववत्

इदन्त से एयण् प्रत्यय होता है ऐसा क्यों ? दाक्षिः में दक्ष शब्द अकारान्त है अतः एयण् प्रत्यय नहीं होगा।

दाक्षिः

दक्षस्य अपत्यम् लौ. वि.

तस्यापत्ये (516) सू. से अण् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर

अत ...... (518) सू. से इञ् प्रत्यय

दक्ष + ङस् + इञ् अ. वि.

शेष दाशरथिवत्

537. कुलादीनः। (6/2/119)

कुलादपत्ये ईनः स्यात्। कुलीनः, राजकुलीनः।

कुल (शब्द) से अपत्य अर्थ में ईन (प्रत्यय) होता है।

कुलीनः

कुलस्य अपत्यम् लौ. वि.

कुला ...... (537) सू. से ईन प्रत्यय

कुल + ङस् + ईन अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

कुल + ईन

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कुल् + ईन

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर कुलीन

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

कुलीन + सि

शेष शैववत्

राजकुलीनः

राजकुलस्य अपत्यम् लौ. वि.

कुला ...... (537) सू. से ईन प्रत्यय

राजकुल + ङस् + ईन अ. वि.

शेष कुलीनवत्

538. दुष्कुलादेयण्। (6/2/122)

अस्मादपत्ये एयण् वा स्यात्। पक्षे ईनः। दौष्कुलेयः, दुष्कुलीनः।

दुष्कुल (शब्द) से अपत्य (अर्थ) में एयण् (प्रत्यय) विकल्प से होता है । (पक्ष में ईन प्रत्यय होता है।)

दौष्कुलेयः

दुष्कुलस्य अपत्यम् लौ. वि.

कुला ...... (537) सू. से ईन प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

दुष्कुला ...... (538) सू. से विकल्प से एयण् प्रत्यय

दुष्कुल + ङस् + एयण् अ. वि.

शेष शैववत्

पक्ष में — जहां एयण् प्रत्यय नहीं होगा वहां—

दुष्कुलीनः

दुष्कुलस्य अपत्यम् लौ. वि.

कुला ...... (537) सू. से ईन प्रत्यय

दुष्कुल + ङस् + ईन अ. वि.

शेष कुलीनवत्

539. प्राग्वतोऽग्निकलेरेयण्। (6/2/27)

वतः प्राग् येऽर्थास्तेषु अग्निकलिभ्यामेयण् स्यात्। अग्नेरपत्यम्—आग्नेयः, कालेयः।

(तस्यार्हे क्रियायां वत् (627) सूत्र से किए जाने वाले) वत् प्रत्यय से पूर्व जो अर्थ हैं उनमें अग्नि एवं कलि (इन दो शब्दों) से एयण् (प्रत्यय) होता है।

आग्नेयः

अग्नेः अपत्यम् लौ. वि.

प्राग्वतो ...... (539) सू. से एयण् प्रत्यय

अग्नि + ङस् + एयण् अ. वि.

शेष शैववत्

कालेयः

कलेः अपत्यम् लौ. वि.

प्राग्वतो ...... (539) सू. से एयण् प्रत्यय

कलि + ङस् + एयण् अ. वि.

शेष शैववत्

540. स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ। (6/2/28)

प्राग्वतोऽर्थे आभ्यां नञ्स्नञौ स्तः। स्त्रिया अपत्यम्—स्त्रैणः, पौंस्नः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

(627 सू. से किए जाने वाले) वत् प्रत्यय से पूर्व वाले अर्थों में स्त्री (शब्द) से नञ् तथा पुंस् (शब्द) से स्नञ् (प्रत्यय) होते हैं।

स्त्रैण:

स्त्रियाः अपत्यम् लौ. वि.
स्त्री ...... (540) सू. से नञ् प्रत्यय
स्त्री + ङस् + नञ् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
स्त्री + नञ्, ञ् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
स्त्रै + न
वर्णों को मिलाने पर स्त्रैन
अवकु ...... (121) सू. से न् को ण् स्त्रैण
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
स्त्रैण + सि
शेष शैववत्

पौंस्न:

पुंसः अपत्यम् लौ. वि.
स्त्री ...... (540) सू. से स्नञ् प्रत्यय
पुंस् + ङस् + स्नञ् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
पुंस् + स्नञ्, ञ् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
पौंस् + स्न
नाम ...... (131) सू. से पुंस् की पद संज्ञा
संयोगस्य (206) सू. से पूर्व स् का लोप
पौं + स्न
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पौंस्न
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पौंस्न + सि
शेष शैववत्

541. गोः स्वरे यः। (6/2/30)

गोशब्दात् स्वरादितद्धितप्रसङ्गे यः स्यात्।

गो शब्द से स्वरादि तद्धित के प्रसंग में (अर्थात् जहां कहीं भी गो शब्द से स्वरादि तद्धित प्रत्यय होगा वहां) य (प्रत्यय) होता है।

542. येऽयकि। (1/2/5)

यग्वर्जिते ये प्रत्यये परे ओकारौकारयोः अव्, आव् इत्यादेशौ स्तः। गोरपत्यम्—गव्यः।

यक् (य) वर्जित य प्रत्यय परे होने पर ओकार और औकार को क्रमशः अव् एवं आव् आदेश होते हैं।

गव्य:

गोरपत्यम् लौ. वि.
गोः ...... (541) सू. से य प्रत्यय
गो + ङस् + य अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
गो + य
ये ...... (542) सू. से ओ को अव्
गव् + य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर गव्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
गव्य + सि
शेष शैववत्

इति अपत्याधिकारः।
अपत्याधिकार समाप्त।

अथ रक्ताद्यर्थाधिकारः
अब रक्तादि अर्थाधिकार प्रारम्भ हो रहा है।

543. तेन रक्ते रागात्। (6/3/1)

रज्यतेऽनेनेति रागः। तृतीयान्तात् रागवाचिनो रक्तेऽर्थे अणादयः स्युः। कुसुम्भेन रक्तम्—कौसुम्भम्, हारिद्रम्, कौङ्कुमम्। रागादिति किम्—देवदत्तेन रक्तम्।

जिस (वस्तु) से रंगा जाए वह राग है। तृतीयान्त रागवाची (शब्दों) से रंगने अर्थ में अण् आदि प्रत्यय होते हैं।

कौसुम्भम्

कुसुम्भेन रक्तम् लौ. वि.
तेन ...... (543) सू. से अण् प्रत्यय
कुसुम्भ + टा + अण् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
कुसुम्भ + अण्, ण् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
कौसुम्भ + अ
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
कौसुम्भ् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर कौसुम्भ
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
कौसुम्भ + सि
अतोऽम् (191) सू. से सि प्रत्यय को अम्
कौसुम्भ + अम्
समानादमः (104) सू. से अम् के अकार का लोप

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कौसुम्भ + म्

वर्णों को मिलाने पर कौसुम्भम् रूप सिद्ध हुआ।

हारिद्रम्

हरिद्रया रक्तम् लौ. वि.

तेन ...... (543) सू. से अण् प्रत्यय

हरिद्रा + टा + अण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

कौङ्कुमम्

कुङ्कुमेन रक्तम् लौ. वि.

तेन ...... (543) सू. से अण् प्रत्यय

कुङ्कुम + टा + अण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

रागवाची (शब्दों) से (अण् आदि प्रत्यय होते हैं) ऐसा क्यों?

देवदत्तेन रक्तम्। यहां देवदत्त रागवाची नहीं अपितु रंगने वाला (कर्त्ता) है अतः अण् प्रत्यय नहीं होगा।

544. तस्य समूहे। (6/3/10)

षष्ठ्यन्तात् समूहेऽर्थे अणादयः स्युः। काकानां समूहः—काकम्, बाकम्, शौकम्, यौवतम्, स्त्रैणम्, पौंस्नम्, गव्यम्।

षष्ठी अन्त से समूह अर्थ में अण् आदि (प्रत्यय) होते हैं।

काकम्

काकानां समूहः लौ. वि.

तस्य ...... (544) सू. से अण् प्रत्यय

काक + आम् + अण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

बाकम्

बकानां समूहः लौ. वि.

तस्य ...... (544) सू. से अण् प्रत्यय

बक + आम् + अण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

शौकम्

शुकानां समूहः लौ. वि.

तस्य ...... (544) सू. से अण् प्रत्यय

शुक + आम् + अण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

यौवतम्

युवतीनां समूहः लौ. वि.

तस्य ...... (544) सू. से अण् प्रत्यय

युवति + आम् + अण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्त्रैणम्

स्त्रीणां समूहः लौ. वि.
तस्य ...... (544) सू. से नञ् प्रत्यय
स्त्री + आम् + नञ् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
स्त्री + नञ् , ञ् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
स्त्रै + न
वर्णों को मिलाने पर स्त्रैन
अवकु ...... (121) सू. से न् को ण्
स्त्रैण
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
स्त्रैण + सि
शेष कौसुम्भवत्

पौंस्नम्

पुंसां समूहः लौ. वि.
तस्य ...... (544) सू. से स्नञ् प्रत्यय
पुंस् + आम् + स्नञ् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
पुंस् + स्नञ् , ञ् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
पौंस् + स्न
नाम सिदयहसे (131) सू. से पुंस् की पद संज्ञा
संयोगस्य (206) सू. से पूर्व स् का लोप
पौं + स्न
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पौंस्न
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पौंस्न + सि
शेष कौसुम्भवत्

गव्यम्

गवां समूहः लौ. वि.
तस्य ...... (544) सू. से य प्रत्यय
गो + आम् + य अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
गो + य
ये ...... (542) सू. से ओ को अव्
गव् + य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर गव्य

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्र. वि. के. ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

गव्य + सि

शेष कौसुम्भवत्

545. गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराजराजन्यराजपुत्रवत्साजमनुष्यवृद्धादकञ्। (6/3/13)

गोत्रप्रत्ययान्तात् उक्षादेश्च तस्य समूहे अकञ् स्यात्।

(षष्ठी अन्त) गोत्र प्रत्ययान्त से एवं उक्षन् आदि (शब्दों) से समूह (अर्थ) में अकञ् (प्रत्यय) होता है।

546. तद्धितेऽनाति यस्वरे। (8/4/78)

हसात्परस्याऽपत्ययकारस्य लोपः स्यात् यकारे आवर्जिते स्वरे च तद्धिते। गर्गाणां समूहः— गार्गकम्, औक्षकम्, औष्ट्रकम्, औरभ्रकम्, राजकम्।

हस से परे अपत्य (अर्थ) में रहे हुए यकार का लोप होता है तद्धित सम्बन्धित यकार (परे होने पर) एवं आ को छोड़कर स्वर परे होने पर।

गार्गकम्

गर्गाणां समूहः लौ. वि.

गोत्रो ...... (545) सू. से अकञ् प्रत्यय

गार्ग्य[1] + आम् + अकञ् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

गार्ग्य + अकञ्, ञ् अनुबन्ध

तद्धिते ...... (546) सू. से यकार (यञ्) का लोप

निमित्ताभावे ...... न्याय से यञ् का लोप होने से उसके निमित्त होने वाली वृद्धि एवं अकारलोप का अभाव

गर्ग + अक

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

गार्ग + अक

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

गार्ग् + अक

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर गार्गक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

गार्गक + सि

शेष कौसुम्भवत्

औक्षकम्

उक्षाणां समूहः लौ. वि.

गोत्रो ...... (545) सू. से अकञ् प्रत्यय

उक्षन् + आम् + अकञ् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

उक्षन् + अकञ्, ञ् अनुबंध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

---

1 गार्ग्य शब्द में गोत्रवाची गर्ग शब्द से अपत्य अर्थ में तद्धित का यञ् प्रत्यय हुआ है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

औक्षन् + अक
अन्त्य ...... (18) सू. से अन् की टि संज्ञा
नोऽपदस्य ...... (406) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप
औक्ष् + अक
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर औक्षक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
औक्षक + सि
शेष कौसुम्भवत्

औष्ट्रकम्
उष्ट्राणां समूहः लौ. वि.
गोत्रो ...... (545) सू. से अकञ् प्रत्यय
उष्ट्र + आम् + अकञ् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

औरभ्रकम्
उरभ्राणां समूहः लौ. वि.
गोत्रो ...... (545) सू. से अकञ् प्रत्यय
उरभ्र + आम् + अकञ् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

राजकम्
राज्ञां समूहः लौ. वि.
गोत्रो ...... (545) सू. से अकञ् प्रत्यय
राजन् + आम् + अकञ् अ. वि.
शेष औक्षकवत्

547. राजन्यमनुष्ययूनामके । (8/4/51)
एषां प्राप्तो लोपो न स्यात् अके परे । राजन्यकम् , राजपुत्रकम् , वात्सकम् , आजकम् , मानुष्यकम् , वार्धकम् ।
राजन्य, मनुष्य एवं युवन् के प्राप्त (होने वाला) लोप नहीं होता अक परे होने पर।

राजन्यकम्
राजन्यानां समूहः लौ. वि.
गोत्रो ...... (545) सू. से अकञ् प्रत्यय
राजन्य + आम् + अकञ् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
राजन्य + अकञ् , ञ् अनुबन्ध
तद्धिते ...... (546) सू. से य के लोप की प्राप्ति किन्तु
राजन्य ...... (547) सू. से निषेध
राजन्य + अक
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
राजन्य् + अक
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर राजन्यक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
राजन्यक + सि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष कौसुम्भवत्

राजपुत्रकम्

राजपुत्राणां समूहः लौ. वि.

गोत्रो ...... (545) से अकञ् प्रत्यय

राजपुत्र + आम् + अकञ् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

वात्सकम्

वत्सानां समूहः लौ. वि.

गोत्रो ...... (545) सू. से अकञ् प्रत्यय

वत्स + आम् + अकञ् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

आजकम्

अजानां समूहः लौ. वि.

गोत्रो ...... (545) सू. से अकञ् प्रत्यय

अज + आम् + अकञ् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

मानुष्यकम्

मनुष्याणां समूहः लौ. वि.

गोत्रो ...... (545) सू. से अकञ् प्रत्यय

मनुष्य + आम् + अकञ् अ. वि.

शेष राजन्यकवत्

वार्धकम्

वृद्धानां समूहः लौ. वि.

गोत्रो ...... (545) सू. से अकञ् प्रत्यय

वृद्ध + आम् + अकञ् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

वृद्ध + अकञ्, ञ् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

वार्द्ध + अक

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

वार्द्ध् + अक

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर वार्द्धक

झसानां झसे सवर्णे (39) सू. से विकल्प से द् का लोप

वार्धक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

वार्धक + सि

शेष कौसुम्भवत्

पक्ष में — जहां झसानां झसे ...... (39) सू. से द् का लोप नहीं होता वहां वार्द्धक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

वार्द्धक + सि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष कौसुम्भवत्

548. कवचिहस्त्यचित्ताच्चेकण्। (6/3/15)

कवचिन्, हस्तिन् इत्येताभ्यामचित्तवाचिभ्यः केदाराच्च समूहे इकण् स्यात्। कवचिनां समूहः— कावचिकम्, हास्तिकम्, आपूपिकम्, कैदारिकम्।

कवचिन्, हस्तिन् इन दोनों (शब्दों) से, अचित्तवाची एवं केदार (शब्द) से समूह अर्थ में इकण् (प्रत्यय) होता है।

कावचिकम्

कवचिनां समूहः लौ. वि.

कवचि ...... (548) सू. से इकण् प्रत्यय

कवचिन् + आम् + इकण् अ. वि.

शेष औक्षकवत्

हास्तिकम्

हस्तिनां समूहः लौ. वि.

कवचि ...... (548) सू. से इकण् प्रत्यय

हस्तिन् + आम् + इकण् अ. वि.

शेष औक्षकवत्

आपूपिकम्

अपूपानां समूहः लौ. वि.

कवचि ...... (548) सू. से इकण् प्रत्यय

अपूप + आम् + इकण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

कैदारिकम्

केदाराणां समूहः लौ. वि.

कवचि ...... (548) सू. से इकण् प्रत्यय

केदार + आम् + इकण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

549. धेनोरनञः। (6/3/16)

अनञ्पूर्वाद्धेनुशब्दात्समूहे इकण् स्यात्।

नञ् जिसके पूर्व में नहीं है ऐसे धेनु शब्द से समूह अर्थ में इकण् (प्रत्यय) होता है।

550. ऋवर्णोवर्णेसुर्दोर्भ्य इकस्येतः। (8/4/80)

ऋवर्ण, उवर्ण, इस्, उस् इत्येतदन्तात् दोष्शब्दाच्च परस्य इकस्येकारस्य लोपः स्यात्। धेनूनां समूहः— धैनुकम्।

ऋवर्णान्त, उवर्णान्त, इस् अन्त, उस् अन्त एवं दोष् शब्द से परे इक के इकार का लोप होता है।

धैनुकम्

धेनूनां समूहः लौ. वि.

धेनो ...... (549) सू. से इकण् प्रत्यय

धेनु + आम् + इकण् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

धेनु + इकण्, ण् अनुबन्ध

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वृद्धिः ......(519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
धैनु + इक
ऋवर्णो ...... (550) सू. से इक के इकार का लोप
धैनु + क
वर्णों को मिलाने पर धैनुक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
धैनुक + सि
शेष कौसुम्भवत्

551. अश्वादीयो वा। (6/3/20)

षष्ठ्यन्तात् अश्वशब्दात् समूहेऽर्थे ईयः प्रत्ययो वा भवति। (पक्षेऽण्) अश्वीयः, आश्वम्।

षष्ठी अन्त अश्व शब्द से समूह अर्थ में ईय प्रत्यय विकल्प से होता है। (पक्ष में अण् प्रत्यय होता है।)

अश्वीयः

अश्वानां समूहः लौ. वि.
अश्वा ...... (551) सू. से विकल्प से ईय प्रत्यय
अश्व + आम् + ईय अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ......(395) सू. से विभ. का लुक्
अश्व + ईय
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
अश्व् + ईय
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर अश्वीय
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
अश्वीय + सि
शेष शैववत्
पक्ष में—जहां पर ईय प्रत्यय नहीं होगा वहां—

आश्वम्

अश्वानां समूहः लौ. वि.
तस्य ...... (544) सू. से अण् प्रत्यय
अश्व + आम् + अण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

552. ग्रामजनबन्धुगजसहायेभ्यस्तल्। (6/3/29)

एभ्यः समूहेऽर्थे तल् प्रत्ययो भवति। ग्रामता, जनता, बन्धुता, गजता, सहायता। (लित्वात् स्त्रीत्वम्[1]।)

इन (ग्राम, जन, बन्धु, गज, सहाय शब्दों) से समूह अर्थ में तल् प्रत्यय होता है।

ग्रामता

ग्रामाणां समूहः लौ. वि.
ग्राम ...... (552) सू. से तल् प्रत्यय

---
1 ल् अनुबन्ध जाने वाला प्रत्यय जिस शब्द के अन्त जुड़ता है वह शब्द स्त्रीलिंग होता है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ग्राम + आम् + तल् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से तल् प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

ग्राम + तल्, ल् अनुबन्ध

वर्णों को मिलाने पर ग्रामत

आबतः स्त्रियाम् (295) सू. से आप् प्रत्यय

ग्रामत + आप्, प् अनुबन्ध

समानानां ...... (36) सू. से अ को आ के साथ मिलाकर दीर्घ ग्रामता

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

ग्रामता + सि

आपः (172) सू. से सि प्रत्यय का लोप करने पर ग्रामता रूप सिद्ध हुआ।

जनता

जनानां समूहः लौ. वि.

ग्राम ...... (552) सू. से तल् प्रत्यय

जन + आम् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

बन्धुता

बन्धूनां समूहः लौ. वि.

ग्राम ...... (552) सू. से तल् प्रत्यय

बन्धु + आम् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

गजता

गजानां समूहः लौ. वि.

ग्राम ...... (552) सू. से तल् प्रत्यय

गज + आम् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

सहायता

सहायानां समूहः लौ. वि.

ग्राम ...... (552) सू. से तल् प्रत्यय

सहाय + आम् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

553. विकारे। (6/3/33)

षष्ठ्यन्तात् विकारेऽर्थे यथाविहितः प्रत्ययः स्यात्। सुवर्णस्य विकारः—सौवर्णं कुण्डलम्।

षष्ठी अन्त से विकार अर्थ में यथविहित (जैसा विधान किया है वैसा) प्रत्यय होता है।

सौवर्णं कुण्डलम्

सुवर्णस्य विकारः लौ. वि.

विकारे (553) सू. से अण् प्रत्यय

सुवर्ण + ङस् + अण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

554. पितृमातृभ्यां व्यडुलौ भ्रातरि। (6/3/30)

आभ्यां भ्रात्रर्थे व्यडुलौ स्तः। पितुर्भ्राता—पितृव्यः, मातुर्भ्राता—मातुलः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पितृ एवं मातृ (शब्द) से भ्राता (अर्थात् भाई) अर्थ में (क्रमशः) व्य एवं डुल प्रत्यय होते हैं।

पितृव्यः

पितुर्भ्राता लौ. वि.
पितृ ...... (554) सू. से व्य प्रत्यय
पितृ + ङस् + व्य अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

मातुलः

मातुर्भ्राता लौ. वि.
पितृ ...... (554) सू. से डुल प्रत्यय
मातृ + ङस् + डुल अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से डुल प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
मातृ + डुल , ड् अनुबन्ध
मातृ + उल
अन्त्य ...... (18) सू. से ऋ की टि संज्ञा
डिति टेः (146) सू. से टिसंज्ञक वर्ण का लोप
मात् + उल
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर मातुल
प्र. वि. के ए. वि. की विवक्षा में सि प्रत्यय
मातुल + सि
शेष शैववत्

555. पित्रोर्डामहट्। (6/3/31)

आभ्यां पितृमात्रोरर्थयोर्डामहट् स्यात्। पितुः पिता माता वा — पितामहः, पितामही, मातुः पिता माता वा — मातामहः, मातामही।

पितृ एवं मातृ (शब्द) से (इनके) पिता एवं माता अर्थ में डामहट् (प्रत्यय) होता है।

पितामहः

पितुः पिता लौ. वि.
पित्रो ...... (555) सू. से डामहट् प्रत्यय
पितृ + ङस् + डामहट् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
पितृ + डामहट्, ड् एवं ट् अनुबन्ध
पितृ + आमह
अन्त्य ...... (18) सू. से ऋकार की टि संज्ञा
डिति टेः (146) सू. से टिसंज्ञक वर्ण का लोप
पित् + आमह
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पितामह
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पितामह + सि
शेष शैववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पितामही

पितुः माता लौ. वि.

पितामह तक पूर्ववत् प्रक्रिया

मुख्यात् षिट्टिदणञ्नञ्स्नञेयेकणीकण्क्वरपः (306) सू. से ईप् प्रत्यय

पितामह + ईप्, प् अनुबन्ध

ईप्यतः (307) सू. से अकार का लोप

पितामह् + ई

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर

पितामही

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पितामही + सि

हसेपः सेर्लोपः (183) सू. से सि का लोप करने पर पितामही रूप सिद्ध हुआ।

मातामहः

मातुः पिता लौ. वि.

पित्रो ...... (555) सू. से डामहट् प्रत्यय

मातृ + ङस् + डामहट् अ. वि.

शेष पितामहवत्

मातामही

मातुः माता लौ. वि.

पित्रो ...... (555) सू. से डामहट् प्रत्यय

मातृ + ङस् + डामहट् अ. वि.

शेष पितामहीवत्

556. गोः पुरीषे। (6/3/52)

गोशब्दात् पुरीषेऽर्थे मयट् स्यात्। गोः पुरीषम् — गोमयम्।

गो शब्द से पुरीष (अर्थात् मल, विष्ठा) अर्थ में मयट् (प्रत्यय) होता है।

गोमयम्

गोः पुरीषम् लौ. वि.

गोः ...... (556) सू. से मयट् प्रत्यय

गो + ङस् + मयट् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

गो + मयट्, ट् अनुबन्ध

वर्णों को मिलाने पर गोमय

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

गोमय + सि

शेष कौसुम्भवत्

557. पुरुषात् कृतहितवधविकारसमूहेष्वेयञ्। (6/3/64)

पुरुषशब्दात् कृते, हिते, वधे, विकारे, समूहे चार्थे एयञ् प्रत्ययो भवति। पुरुषेण कृतः— पौरुषेयो ग्रन्थः, पुरुषाय हितम्— पौरुषेयं पथ्यम्, पुरुषाणां वधः, विकारः, समूहो वा— पौरुषेयः।

पुरुष शब्द से कृत, हित, वध, विकार और समूह अर्थ में एयञ् प्रत्यय होता है।

पौरुषेयः ग्रन्थः

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पुरुषेण कृतः लौ. वि.
पुरुषात् ...... (557) सू. से एयञ् प्रत्यय
पुरुष + टा + एयञ् अ. वि.
शेष शैववत्

पौरुषेयं पथ्यम्

पुरुषाय हितम् लौ. वि.
पुरुषात् ...... (557) सू. से एयञ् प्रत्यय
पुरुष + ङे + एयञ् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

पौरुषेयः

पुरुषाणां वधः, विकारः, समूहो वा लौ. वि.
पुरुषात् ...... (557) सू. से एयञ् प्रत्यय
पुरुष + आम् + एयञ् अ. वि.
शेष शैववत्

558. निष्फले तिलात् पिञ्जपेजौ। (6/3/65)

तिलशब्दात् निष्फलेऽर्थे वर्तमानात् पिञ्ज, पेज इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः। निष्फलस्तिलः — तिलपिञ्जः, तिलपेजः।

निष्फल अर्थ में रहे हुए तिल शब्द से पिञ्ज एवं पेज ये दो प्रत्यय होते हैं।

तिलपिञ्जः

निष्फलस्तिलः लौ. वि.
निष्फले ...... (558) सू. से पिञ्ज प्रत्यय
तिल + सि + पिञ्ज अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

तिलपेजः

निष्फलस्तिलः लौ. वि.
निष्फले ...... (558) सू. से पेज प्रत्यय
तिल + सि + पेज अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

559. सास्य देवता। (6/3/66)

प्रथमान्तात् षष्ठ्यर्थे यथाविहितः प्रत्ययः स्यात् यत्प्रथमान्तं देवता चेत् स्यात्। जिनो देवताऽस्य स जैनः। एवं शैवः, बौद्धः, आग्नेयः।

प्रथमान्त से षष्ठी अर्थ में यथाविहित (जैसा विधान किया है वैसा) प्रत्यय होता है जो प्रथमान्त है यदि (वह) देवता हो।

जैनः

जिनो देवताऽस्य सः लौ. वि.
सास्य ...... (559) सू. से अण् प्रत्यय
जिन + सि + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

शैवः

शिवो देवताऽस्य सः लौ. वि.
सास्य ...... (559) सू. से अण् प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शिव + सि + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

बौद्धः

बुद्धो देवताऽस्य सः लौ. वि.

सास्य ...... (559) सू. से अण् प्रत्यय

बुद्ध + सि + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

आग्नेयः

अग्निः देवताऽस्य सः लौ. वि.

सास्य ...... (559) सू. से एयण् प्रत्यय

अग्नि + सि + एयण् अ. वि.

शेष शैववत्

560. ऋतुवायुपित्रुषसो यः। (6/3/73)

ऋतु, वायु, पितृ, उषस् — इत्येतेभ्यः शब्देभ्यः सास्य देवतेत्यर्थे यः प्रत्ययो भवति। अणोऽपवादः। ऋतुर्देवता अस्य — ऋतव्यम्, वायव्यम्, पित्र्यम्, उषस्यम्।

प्रथमान्त देवतावाची ऋतु, वायु, पितृ, उषस् इन शब्दों से षष्ठी अर्थ में य प्रत्यय होता है। (यह सूत्र अण् का अपवाद है।)

ऋतव्यम्

ऋतुः देवताऽस्य तत् लौ. वि.

सास्य ...... (559) सू. से अण् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

ऋतु ...... (560) सू. से य प्रत्यय

ऋतु + सि + य अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

ऋतु + य

उवर्णस्या ...... (517) सू. से उकार को अव्

ऋत् + अव् + य

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर ऋतव्य

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

ऋतव्य + सि

शेष कौसुम्भवत्

वायव्यम्

वायुर्देवताऽस्य तत् लौ. वि.

सास्य ...... (559) सू. से अण् की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

ऋतु ...... (560) सू. से य प्रत्यय

वायु + सि + य अ. वि.

शेष ऋतव्यवत्

561. ऋतो रस्तद्धिते ये। (1/2/33)

ऋतो रेफादेशः स्यात् तद्धिते ये परे। पित्र्यम्, उषस्यम्।

ऋ को रेफ आदेश होता है तद्धित सम्बन्धित य परे होने पर।

पित्र्यम्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पिता देवताऽस्य तत् लौ. वि.
सास्य ...... (559) सू. से अण् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
ऋतु ...... (560) सू. से य प्रत्यय
पितृ + सि + य अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से य प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
पितृ + य
ऋतो ...... (561) सू. से ऋ को र्
पित् र् + य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पित्र्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पित्र्य + सि
शेष कौसुम्भवत्

उषस्यम्

उषाः देवताऽस्य तत् लौ. वि.
सास्य ...... (559) सू. से अण् की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
ऋतु ...... (560) सू. से य प्रत्यय
उषस् + सि + य अ. वि.
शेष गोमयवत्

562. तद्वेत्त्यधीते । (6/3/85)

द्वितीयान्तात् वेत्ति, अधीते इत्यर्थयोर्यथाविहितः प्रत्ययः स्यात् । सूत्रं वेत्त्यधीते वा — सौत्रः, वैयाकरणः ।

द्वितीया अन्त से वेत्ति (अर्थात् जानता है), अधीते (अर्थात् अध्ययन करता है) इन दो अर्थों में यथाविहित (जैसा विधान किया है वैसा) प्रत्यय होता है।

सौत्रः

सूत्रं वेत्त्यधीते वा लौ. वि.
तद्वेत्त्य ...... (562) सू. से अण् प्रत्यय
सूत्र + अम् + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

563. संधिय्वोरैडौट् च । (8/4/23)

संधिजाभ्यां यकारवकाराभ्यां परस्यादिस्वरस्य प्राप्ता वृद्धिर्न स्यात् किन्तु तयोः ऐट्, औट् इत्यागमौ स्तः । वैयाकरणः ।

संधि से उत्पन्न हुए यकार एवं वकार से परे आदि स्वर की (519 सू. से) प्राप्त वृद्धि नहीं होती किन्तु उन (यकार, वकार) को (क्रमशः) ऐट् एवं औट् ये दो आगम होते हैं।

वैयाकरणः

व्याकरणं वेत्त्यधीते वा लौ. वि.
तद्वेत्त्य ...... (562) सू. से अण् प्रत्यय
व्याकरण + अम् + अण् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से अण् प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
व्याकरण + अण्, ण् अनुबन्ध

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि की प्राप्ति किन्तु
संधिय्वो ...... (563) सू. से निषेध एवं
आद्यन्तौ ...... (70) सू. की सहायता से यकार को ऐट् का आगम
व् ऐट् याकरण + अ , ट् अनुबन्ध
व् ऐ याकरण + अ
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
व् ऐ याकरण् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर वैयाकरण
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
वैयाकरण + सि
शेष शैववत्

564. न्यायादेरिकण् । (6/3/86)

न्यायादिभ्यो द्वितीयान्तेभ्यो वेत्त्यधीते वेत्यर्थे इकण् प्रत्ययो भवति । नैयायिकः , नैमित्तिकः , मौहूर्त्तिकः ।

द्वितीयान्त न्याय आदि (शब्दों) से वेत्ति (अर्थात् जानता है) अथवा अधीते (अर्थात् अध्ययन करता है) अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है।

नैयायिकः

न्यायं वेत्त्यधीते वा लौ. वि.
न्यायादे ...... (564) सू. से इकण् प्रत्यय
न्याय + अम् + इकण् अ. वि.
शेष वैयाकरणवत्

नैमित्तिकः

निमित्तं वेत्त्यधीते वा लौ. वि.
न्यायादे ...... (564) सू. से इकण् प्रत्यय
निमित्त + अम् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

मौहूर्त्तिकः

मुहूर्त्तं वेत्त्यधीते वा लौ. वि.
न्यायादे ...... (564) सू. से इकण् प्रत्यय
मुहूर्त्त + अम् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

565. तेन छन्ने रथे । (6/3/99)

तृतीयान्तात् छन्ने रथेऽर्थे यथाविहितः प्रत्ययः स्यात् । वस्त्रेण छन्नो रथः— वास्त्रः , काम्बलः ।

तृतीयान्त से छन्न (अर्थात् ढके हुए) रथ अर्थ में यथाविहित (जैसा विधान किया है वैसा) प्रत्यय होता है।

वास्त्रः

वस्त्रेण छन्नो रथः लौ. वि.
तेन ...... (565) सू. से अण् प्रत्यय
वस्त्र + टा + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

काम्बलः

कम्बलेन छन्नो रथः लौ. वि.

तेन ...... (565) सू. से अण् प्रत्यय

कम्बल + टा + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

566. अणि। (8/4/53)

अन्नन्तस्य टेर्लोपो न स्यात् तद्धिते अणि परे। चर्मणा छन्नो रथः — चार्मणः।

अन् अन्त की टि का लोप नहीं होता है तद्धित सम्बन्धित अण् परे होने पर।

चार्मणः

चर्मणा छन्नो रथः लौ. वि.

तेन ...... (565) सू. से अण् प्रत्यय

चर्मन् + टा + अण् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से अण् प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

चर्मन् + अण्, ण् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

चार्मन् + अ

अन्त्य ...... (18) सू. से अन् की टि संज्ञा

नोऽपदस्य ...... (406) सू. से टिसंज्ञक वर्ण के लोप की प्राप्ति

अणि (566) सू. से निषेध

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर चार्मन

अवकु ...... (121) सू. से न् का ण् चार्मण

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

चार्मण + सि

शेष शैववत्

567. संस्कृते भक्ष्ये। (6/3/107)

सप्तम्यन्तात् संस्कृते भक्ष्ये अण् स्यात्।

सप्तमी अन्त से भक्ष्य (अर्थात् खाने योग्य पदार्थ) के संस्कृत (अर्थात् संस्कार किए हुए) अर्थ में अण् (प्रत्यय) होता है।

568. द्विगोरनपत्ये यस्वरादेर्लुगद्विः। (6/2/26)

अपत्यार्थादन्यस्मिन् प्राग् दीव्यतीयेऽर्थे उत्पन्नस्य द्विगोः परस्य यकारादेः स्वरादेश्च प्रत्ययस्य सकृल्लुग् भवति। पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः—पञ्चकपालः।

(तेन दीव्यति ...... 607) सू. से पूर्व अपत्य अर्थ से भिन्न अर्थ में होने वाले द्विगु (समास) से परे यकारादि एवं स्वरादि प्रत्यय का एक बार लुक् होता है।

पञ्चकपालः

पञ्चसु कपालेषु संस्कृतः लौ. वि.

पञ्चन् + सुप् + कपाल + सुप् अ. वि.

अधिकं च तद्धितोत्तरपदसमाहारेषु (448) सू. से समास एवं कर्मधारय समास संज्ञा

संख्यापूर्वो द्विगुश्च (449) सू. से द्विगुसमास संज्ञा भी करने पर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पञ्चन् + कपाल

नाम ...... (131) सू. से पञ्चन् की पद संज्ञा

नाम्नो नोऽनह्नः (135) सू. से न् का लोप

पञ्च + कपाल

वर्णों को मिलाने पर पञ्चकपाल

संस्कृते ...... (561) सू. से अण् प्रत्यय

पञ्चकपाल + अण्

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

पाञ्चकपाल + अण्

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

पाञ्चकपाल् + अण्

द्विगो ...... (568) सू. से अण् प्रत्यय का लुक्

निमित्ताभावे ...... न्याय से अण् प्रत्यय के निमित्त से होने वाली वृद्धि एवं अकारलोप का अभाव

पञ्चकपाल

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पञ्चकपाल + सि

शेष शैववत्

इति रक्ताद्यर्थाधिकारः।
रक्तादि अर्थाधिकार समाप्त।

अथ शेषाधिकारः

अब शेषाधिकार प्रारम्भ हो रहा है।

569. शेषे। (6/4/1)

उक्तादन्यः शेषः। अत ऊर्ध्वं यान् प्रत्ययान् वक्ष्यामस्ते शेषेऽर्थे वेदितव्याः।

कहे हुए से जो भिन्न है वह शेष है। यहां (6/4/1) से आगे जिन प्रत्ययों को कहेंगे वे शेष अर्थ में जान लेने चाहिए।

570. राष्ट्रादियः। (6/4/2)

राष्ट्रशब्दाच्छेषेऽर्थे इयः प्रत्ययो भवति। राष्ट्रियः।

राष्ट्र शब्द से शेष अर्थ में इय प्रत्यय होता है।

राष्ट्रियः

राष्ट्रे जातः, भवः, क्रीतः, कुशलो वा लौ. वि.

राष्ट्रादियः (570) सू. से इय प्रत्यय

राष्ट्र + ङि + इय अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष कुलीनवत्

571. ग्रामादीनञ् च। (6/4/5)

अस्माच्छेषेऽर्थे ईनञ् चाद्यश्च प्रत्ययौ स्तः। ग्रामीणः, ग्राम्यः।

इस (ग्राम शब्द) से शेष अर्थ में ईनञ् और (सूत्र में दिए गए) चकार से य प्रत्यय होते हैं।

ग्रामीणः

ग्रामे जातः, भवः, क्रीतः, कुशलो वा लौ. वि.
ग्रामा ...... (571) सू. से ईनञ् प्रत्यय
ग्राम + ङि + ईनञ् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
ग्राम + ईनञ् , ञ् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
ग्राम् + ईन
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर ग्रामीन
अवकु ...... (121) सू. से नकार को णकार ग्रामीण
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
ग्रामीण + सि
शेष शैववत्

ग्राम्यः

ग्रामे जातः, भवः, क्रीतः, कुशलो वा लौ. वि.
ग्रामा ...... (571) सू. से य प्रत्यय
ग्राम + ङि + य अ. वि.
शेष कुलीनवत्

572. नद्यादेरेयण्। (6/4/9)

नद्यादिभ्यः शब्देभ्यः शेषेऽर्थे एयण् प्रत्ययो भवति। नद्यां भवः, जातो वा — नादेयः, माहेयः।

नदी आदि शब्दों से शेष अर्थ में एयण् प्रत्यय होता है।

नादेयः

नद्यां जातः, भवः, क्रीतः, कुशलो वा लौ. वि.
नद्यादे ...... (572) सू. से एयण् प्रत्यय
नदी + ङि + एयण् अ. वि.
शेष शैववत्

माहेयः

मह्यां जातः, भवः , क्रीतः, कुशलो वा लौ. वि.
नद्यादे ...... (572) सू. से एयण् प्रत्यय
मही + ङि + एयण् अ. वि.
शेष शैववत्

573. क्वामेहत्रतसस्त्यप्। (6/4/15)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एभ्यः शेषेऽर्थे त्यप् स्यात् । क्वत्यः, अमात्यः, इहत्यः, कुत्रत्यः, यत्रत्यः, कुतस्त्यः, ततस्त्यः ।

इन (क्व, अमा, इह, त्र प्रत्ययान्त एवं तस् प्रत्ययान्त) से शेष अर्थ में त्यप् (प्रत्यय) होता है ।

क्वत्यः

क्व भवः जातो वा लौ. वि.
क्वामेह ...... (573) सू. से त्यप् प्रत्यय
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
क्व + त्यप्, प् अनुबन्ध
वर्णों को मिलाने पर क्वत्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
क्वत्य + सि
शेष शैववत्

अमात्यः

अमा भवः जातो वा लौ. वि.
क्वामेह ...... (573) सू. से त्यप् प्रत्यय
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
अमा + त्यप्, प् अनुबन्ध
शेष क्वत्यवत्

इहत्यः

इह भवः जातो वा लौ. वि.
क्वामेह ...... (573) सू. से त्यप् प्रत्यय
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
इह + त्यप्, प् अनुबन्ध
शेष क्वत्यवत्

कुत्रत्यः

कुत्र भवः जातो वा लौ. वि.
क्वामेह ...... (573) सू. से त्यप् प्रत्यय
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
कुत्र + त्यप्, प् अनुबन्ध
शेष क्वत्यवत्

यत्रत्यः

यत्र भवः जातो वा लौ. वि.
क्वामेह ...... (573) सू. से त्यप् प्रत्यय
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
यत्र + त्यप्, प् अनुबन्ध
शेष क्वत्यवत्

कुतस्त्यः

कुतः भवः जातो वा लौ. वि.
क्वामेह ...... (573) सू. से त्यप् प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

कुतस् + त्यप्, प् अनुबन्ध

नाम सिदयहसे (131) सू. से कुतस् की पद संज्ञा

स्रोर्वि ...... (89) सू. से स् का विसर्ग

कुतः + त्य

विसर्गस्य सश्छते (82) सू. से विसर्ग का सकार

कुतस् + त्य

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर

कुतस्त्य

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

कुतस्त्य + सि

शेष शैववत्

ततस्त्यः

ततः भवः जातो वा लौ. वि.

क्वामेह ...... (573) सू. से त्यप् प्रत्यय

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

ततस् + त्यप्, प् अनुबन्ध

शेष कुतस्त्यवत्

574. दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यण्। (6/4/10)

एभ्यः शेषेऽर्थे त्यण् प्रत्ययो भवति। दाक्षिणात्यः, पाश्चात्यः, पौरस्त्यः।

इन (दक्षिणा, पश्चात् और पुरस् अव्ययों) से शेष अर्थ में त्यण् प्रत्यय होता है।

दाक्षिणात्यः

दक्षिणा भवः जातो वा लौ. वि.

दक्षिणा ...... (574) सू. से त्यण् प्रत्यय

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

दक्षिणा + त्यण्, ण् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

दाक्षिणा + त्य

वर्णों को मिलाने पर दाक्षिणात्य

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

दाक्षिणात्य + सि

शेष शैववत्

पाश्चात्यः

पश्चाद् भवः जातो वा लौ. वि.

दक्षिणा ...... (514) सू. से त्यण् प्रत्यय

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

पश्चात् + त्यण्, ण् अनुबन्ध

शेष दाक्षिणात्यवत्

पौरस्त्यः

पुरः भवः जातो वा लौ. वि.

दक्षिणा ...... (574) सू. से त्यण् प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
पुरस् + त्यण्, ण् अनुबंध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
पौरस् + त्य
नाम ...... (131) सू. से पौरस् की पद संज्ञा
स्त्रोर्वि ...... (89) सू. से स् का विसर्ग
पौरः + त्य
विसर्गस्य सश्छते (82) सू. से विसर्ग का सकार
पौरस् + त्य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पौरस्त्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पौरस्त्य + सि
शेष शैववत्

575. णोऽरण्यात्। (6/4/21)

अरण्यशब्दाच्छेषेऽर्थे णः प्रत्ययो भवति। आरण्याः पशवः।

अरण्य शब्द से शेष अर्थ में ण प्रत्यय होता है।

आरण्याः पशवः

अरण्ये भवाः जाताः वा लौ. वि.
णो ...... (575) सू. से ण प्रत्यय
अरण्य + ङि + ण अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अरण्य + ण, ण् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
आरण्य + अ
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
आरण्य् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर आरण्य
प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय
आरण्य + जस्, ज् अनुबन्ध
आरण्य + अस्
अदेतो ...... (102) सू. से अकार के लोप की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अतो ...... (103) सू. से अकार का आकार
आरण्या + अस्
समानानां ...... (36) सू. से आकार का अकार के साथ दीर्घ
आरण्यास्
स्त्रोर्वि ...... (89) सू. से सकार का विसर्ग करने पर आरण्याः रूप सिद्ध हुआ।

576. भवतोरिकणीयसौ। (6/4/30)

भवत्शब्दात् शेषेऽर्थे इकणीयसौ स्तः।

भवत् शब्द से शेष अर्थ में इकण् एवं ईयस् प्रत्यय होते हैं।

577. तोऽशश्वदकस्मात्। (8/4/81)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शश्वदकस्माद्वर्जितात् तान्तात्परस्य इक इकारस्य लोपः स्यात् । भवतः इदम् — भावत्कम् , भवदीयम् । सकारो नाम सिदयहसे इति पदत्वार्थः ।

शश्वत् और अकस्मात् को छोड़कर तान्त से परे इक के इकार का लोप होता है। (ईयस् प्रत्यय का सकार नाम सिदयहसे (131) सू. से पूर्व नाम की पद संज्ञा करने के लिए है ।)

भावत्कम्

भवतः इदम् लौ. वि.
भवतो ...... (576) सू. से इकण् प्रत्यय
भवतु + ङस् + इकण् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
भवतु + इकण् , उकार एवं णकार अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
भावत् + इक
तोऽशश्वद ...... (577) सू. से इक के इकार का लोप
भावत् + क
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर भावत्क
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
भावत्क + सि
शेष कौसुम्भवत्

भवदीयम्

भवतः इदम् लौ. वि.
भवतो ...... (576) सू. से ईयस् प्रत्यय
भवतु + ङस् + ईयस् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
भवतु + ईयस् , उकार एवं स् अनुबन्ध
भवत् + ईय
नाम ...... (131) सू. से भवत् की पद संज्ञा
झसा जबाः (59) सू. से स् का द्
भवद् + ईय
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर भवदीय
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
भवदीय + सि
शेष कौसुम्भवत्

578. परजनराज्ञोऽकीयः । (6/4/31)

पर , जन , राजन् , इत्येतेभ्यः शेषेऽर्थेऽकीयः प्रत्ययो भवति । परकीयः , जनकीयः , राजकीयः ।

पर , जन एवं राजन् इनसे शेष अर्थ में अकीय प्रत्यय होता है।

परकीयः

परस्य अयम् लौ. वि.
पर ...... (578) सू. से अकीय प्रत्यय
पर + ङस् + अकीय अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष कुलीनवत्

जनकीय:

जनस्य अयम् लौ. वि.

पर ...... (578) सू. से अकीय प्रत्यय

जन + ङस् + अकीय अ. वि.

शेष कुलीनवत्

राजकीय:

राज्ञः अयम् लौ. वि.

पर ...... (578) सू. से अकीय प्रत्यय

राजन् + ङस् + अकीय अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

राजन् + अकीय

अन्त्य ...... (18) सू. से अन् की टि संज्ञा

नोऽपदस्य ...... (406) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप

राज् + अकीय

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर राजकीय

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

राजकीय + सि

शेष शैववत्

579. संज्ञावृद्धं वा। (6/2/9)

या संज्ञा व्यवहाराय नियुज्यते सा वृद्धसंज्ञा वा स्यात्।

जो संज्ञा व्यवहार के लिए प्रयुक्त होती है उसकी वृद्ध संज्ञा विकल्प से होती है।

580. त्यदादिः। (6/2/10)

त्यदादिगणो वृद्धसंज्ञः स्यात्।

त्यादिगण की वृद्ध संज्ञा होती है।

581. वृद्धादीयः। (6/4/32)

वृद्धसंज्ञकाच्छेषेऽर्थे ईयः स्यात्। चैत्रीयः, मैत्रीयः, तदीयः, यदीयः।

वृद्ध संज्ञक (शब्दों) से शेष अर्थ में ईय (प्रत्यय) होता है।

चैत्रीय:

चैत्रस्य अयम् लौ. वि.

संज्ञा ...... (579) सू. से विकल्प से चैत्र की वृद्ध संज्ञा

वृद्धा ...... (581) सू. से ईय प्रत्यय

चैत्र + ङस् + ईय अ. वि.

शेष कुलीनवत्

मैत्रीय:

मैत्रस्य अयम् लौ. वि.

संज्ञा ...... (579) सू. से विकल्प से मैत्र की वृद्ध संज्ञा

वृद्धा ...... (581) सू. से ईय प्रत्यय

मैत्र + ङस् + ईय अ. वि.

शेष कुलीनवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तदीयः

तस्य अयम् लौ. वि.
त्यदादिः (580) सू. से तद् की वृद्ध संज्ञा
वृद्धा ...... (581) सू. से ईय प्रत्यय
तद् + ङस् + ईय अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
तद् + ईय
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर तदीय
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
तदीय + सि
शेष शैववत्

यदीयः

यस्य अयम् लौ. वि.
त्यदादिः (580) सू. से यद् की वृद्ध संज्ञा
वृद्धा ...... (581) सू. से ईय प्रत्यय
यद् + ङस् + ईय अ. वि.
शेष तदीयवत्

582. गहादिभ्यः। (6/4/65)

गहादिभ्यो यथासंभवं देशवाचिभ्यः शेषेऽर्थे ईयः प्रत्ययो भवति। गहीयः। अन्यस्य दुगागमे अन्यदीयः, स्वकात्—स्वकीयः, देवकात्—देवकीयः।

देशवाची गहादि (गणपठित शब्दों) से यथासंभव शेष अर्थ में ईय प्रत्यय होता है।

गहीयः

गहस्य अयम् लौ. वि.
गहादिभ्यः (582) सू. से ईय प्रत्यय
गह + ङस् + ईय अ. वि.
शेष कुलीनवत्

अन्यदीयः

अन्यस्य अयम् लौ. वि.
गहादिभ्यः (582) सू. से ईय प्रत्यय
अन्य + ङस् + ईय अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अन्य + ईय
अन्यस्य दुगीयकारके (507) सू. से दुक् का आगम
अन्य + दुक् + ईय, क् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
अन्य + द् + ईय
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर अन्यदीय
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
अन्यदीय + सि
शेष शैववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्वकीय:

स्वकस्य अयम् लौ. वि.
गहादिभ्य: (582) सू. से ईय प्रत्यय
स्वक + ङस् + ईय अ. वि.
शेष कुलीनवत्

देवकीय:

देवकस्य अयम् लौ. वि.
गहादिभ्य: (582) सू. से ईय प्रत्यय
देवक + ङस् + ईय अ. वि.
शेष कुलीनवत्

583. वा युष्मदस्मदोऽञीनञौ युष्माकास्माकौ च। (6/4/69)

युष्मदस्मद्भ्यां शेषेऽर्थे अञीनञौ वा स्त:, अनयोर्युष्माक, अस्माक इत्यादेशौ च। युवयोर्युष्माकं वा इदम् — यौष्माकम्, यौष्माकीणम्। पक्षे युष्मदीयम्। आस्माकम्, आस्माकीनम्, अस्मदीयम्।

युष्मद् एवं अस्मद् (शब्द) से शेष अर्थ में अञ् एवं ईनञ् प्रत्यय विकल्प से होते हैं और इन दोनों (युष्मद्, अस्मद्) को क्रमश: युष्माक एवं अस्माक आदेश होते हैं।

यौष्माकम्

युवयोर्युष्माकं वा इदम् लौ. वि.
त्यदादि: (580) सू. से युष्मद् की वृद्ध संज्ञा
वृद्धादीय: (581) सू. से ईय प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
वा युष्मद ...... (583) सू. से विकल्प से अञ् प्रत्यय
युष्मद् + ओस् + अञ् अ. वि.
युष्मद् + आम् + अञ् अ. वि.
तद्धिता: (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
युष्मद् + अञ्
वा युष्मद ...... (583) सू. से युष्मद् के स्थान पर युष्माक आदेश
युष्माक + अञ्, ञ् अनुबन्ध
वृद्धि: ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
यौष्माक + अ
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
यौष्माक् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर यौष्माक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
यौष्माक + सि
शेष कौसुम्भवत्

यौष्माकीणम्

युवयो: युष्माकं वा इदम् लौ. वि.
त्यदादि: (580) सू. से युष्मद् की वृद्ध संज्ञा
वृद्धादीय: (581) सू. से ईय प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
वा युष्मद् ...... (583) सू. से विकल्प से ईनञ् प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

युष्मद् + ओस् + ईनञ् अ. वि.
युष्मद् + आम् + ईनञ् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
युष्मद् + ईनञ्
वा युष्मद ...... (583) सू. से युष्मद् के स्थान पर युष्माक आदेश
युष्माक + ईनञ्, ञ् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
यौष्माक + ईन
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
यौष्माक् + ईन
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर यौष्माकीन
अवकु ...... (121) सू. से न् को ण्
यौष्माकीण
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
यौष्माकीण + सि
शेष कौसुम्भवत्
पक्ष में— जहां पर अञ् एवं ईनञ् प्रत्यय नहीं होंगे वहां—

युष्मदीयम्

युवयोः युष्माकं वा इदम् लौ. वि.
त्यदादिः (580) सू. से युष्मद् की वृद्ध संज्ञा
वृद्धा ...... (581) सू. से ईय प्रत्यय
युष्मद् + ओस् + ईय अ. वि.
युष्मद् + आम् + ईय अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
युष्मद् + ईय
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर युष्मदीय
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
युष्मदीय + सि
शेष कौसुम्भवत्

आस्माकम्

आवयोः अस्माकं वा इदम् लौ. वि.
त्यदादिः (580) सू. से अस्मद् की वृद्ध संज्ञा
वृद्धादीयः (581) सू. से ईय प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
वा युष्मद ...... (583) सू. से विकल्प से अञ् प्रत्यय
अस्मद् + ओस् + अञ् अ. वि.
अस्मद् + आम् + अञ् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अस्मद् + अञ्
वा युष्मद् ...... (583) सू. से अस्मद् के स्थान पर अस्माक आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अस्माक + अञ् , ञ् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
आस्माक + अ
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
आस्माक् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर आस्माक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
आस्माक + सि
शेष कौसुम्भवत्

आस्माकीनम्

आवयोः अस्माकं वा इदम् लौ. वि.
त्यदादिः (580) सू. से ईय प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
वा युष्मद ...... (583) सू. से ईनञ् प्रत्यय
अस्मद् + ओस् + ईनञ् अ. वि.
अस्मद् + आम् + ईनञ् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अस्मद् + ईनञ्
वा युष्मद् ...... (583) सू. से अस्मद् के स्थान पर अस्माक आदेश
अस्माक + ईनञ् , ञ् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
आस्माक + ईन
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
आस्माक् + ईन
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर आस्माकीन
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
आस्माकीन + सि
शेष कौसुम्भवत्
पक्ष में — जहां पर अञ् एवं ईनञ् प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

अस्मदीयम्

आवयोः अस्माकं वा इदम् लौ. वि.
त्यदादिः (580) सू. से वृद्ध संज्ञा
वृद्धादीयः (581) सू. से ईय प्रत्यय
अस्मद् + ओस् + ईय अ. वि.
अस्मद् + आम् + ईय अ. वि.
शेष युष्मदीयवत्

584. तवकममकावेकत्वे । (6/4/70)

एकत्वे अञीनञौ वा स्तः अनयोस्तवकममकौ च । तावकम् , तावकीनम् । पक्षे — त्वदीयम् । मामकम् , मामकीनम् , मदीयम् ।

एक वचन में (युष्मद् और अस्मद् से) अञ् एवं ईनञ् प्रत्यय विकल्प से होते हैं और इनको (युष्मद् , अस्मद् को क्रमशः) तवक और ममक (आदेश होते हैं)।

तावकम्

तव इदम् लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तवक ...... (584) सू. से विकल्प से अञ् प्रत्यय

युष्मद् + ङस् + अञ् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

युष्मद् + अञ्

तवक ...... (584) सू. से युष्मद् के स्थान पर तवक आदेश

तवक + अञ्, ञ् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

तावक + अ

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

तावक् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर तावक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

तावक + सि

शेष कौसुम्भवत्

तावकीनम्

तव इदम् लौ. वि.

तवक ...... (584) सू. से विकल्प से ईनञ् प्रत्यय

युष्मद् + ङस् + ईनञ् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

युष्मद् + ईनञ्

तवक ...... (584) सू. से युष्मद् के स्थान पर तवक आदेश

तवक + ईनञ्, ञ् अनुबन्ध

शेष कौसुम्भवत्

पक्ष में—जहां पर अञ् एवं ईनञ् प्रत्यय नहीं होंगे वहां—

त्वदीयम्

तव इदम् लौ. वि.

त्यदादिः (580) सू. से युष्मद् की वृद्ध संज्ञा

वृद्धा ...... (581) सू. से ईय प्रत्यय

युष्मद् + ङस् + ईय अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

युष्मद् + सि

त्वमौ प्रत्ययोत्तरपदे चैकत्वे (275) सू. से युष्म् के स्थान पर त्व आदेश

त्व अद् + ईय

अदेतो ...... (102) सू. से अकार का लोप

त्व् अद् + ईय

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर त्वदीय

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

त्वदीय + सि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष कौसुम्भवत्

मामकम्

मम इदम् लौ. वि.

तवक ...... (584) सू. से विकल्प से अञ् प्रत्यय

अस्मद् + ङस् + अञ् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अस्मद् + अञ्

तवक ...... (584) सू. से अस्मद् के स्थान पर ममक आदेश

ममक + अञ्, ञ् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

तावक + अ

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

तावक् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर तावक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

तावक + सि

शेष कौसुम्भवत्

मामकीनम्

मम इदम् लौ. वि.

तवक ...... (584) सू. से विकल्प से ईनञ् प्रत्यय

अस्मद् + ङस् + ईनञ् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अस्मद् + ईनञ्

तवक ...... (584) सू. से अस्मद् के स्थान पर ममक आदेश

ममक + ईनञ्, ञ् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

मामक + ईन

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

मामक् + ईन

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर मामकीन

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

मामकीन + सि

शेष कौसुम्भवत्

पक्ष में — जहां पर अञ् एवं ईनञ् प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

मदीयम्

मम इदम् लौ. वि.

त्यदादिः (580) सू. से अस्मद् की वृद्ध संज्ञा

वृद्धादीयः (581) सू. से ईय प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अस्मद् + ङस् + ईय अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से ईय प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अस्मद् + ईय

त्वमौ ...... (275) सू. से अस्म् के स्थान पर म आदेश

म अद् + ईय

अदेतो ...... (102) सू. से अकार का लोप

म् अद् + ईय

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर मदीय

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

मदीय + सि

शेष कौसुम्भवत्

585. अन्तादिमध्यान्मः। (6/4/76)

अन्त, आदि, मध्य — इत्येतेभ्यः शेषेऽर्थे मः प्रत्ययो भवति। अन्तमः, आदिमः, मध्यमः।

अन्त, आदि एवं मध्य इन (शब्दों) से शेष अर्थ में म प्रत्यय होता है।

अन्तमः

अन्ते भवः लौ. वि.

अन्तादि ...... (585) सू. से म प्रत्यय

अन्त + ङि + म अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

आदिमः

आदौ भवः लौ. वि.

अन्तादि ...... (585) सू. से म प्रत्यय

आदि + ङि + म अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

मध्यमः

मध्ये भवः लौ. वि.

अन्तादि ...... (585) सू. से म प्रत्यय

मध्य + ङि + म अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

586. पश्चादग्रान्तादिमः। (6/4/78)

एभ्यः शेषेऽर्थे इमः स्यात्।

इन (पश्चात्, अग्र एवं अन्त) से शेष अर्थ में इम (प्रत्यय) होता है।

587. अनाराच्छश्वत्पृथगोऽव्ययस्य। (8/4/66)

आरादादिवर्जितस्य अव्ययस्य टेर्लोपः स्यात् तद्धिते परे। पश्चिमः, अग्रिमः, अन्तिमः।

आरात्, शश्वत और पृथक् (अव्ययों) को छोड़कर अव्यय की टि का लोप होता है तद्धित परे होने पर।

पश्चिमः

पश्चाद् भवः लौ. वि.

पश्चाद ...... (586) सू. से इम प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तद्धिताः (395) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
पश्चाद् + इम
अन्त्य ...... (18) सू. से आद् की टि संज्ञा
अनाराच् ...... (587) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप
पश्च् + इम
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पश्चिम
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पश्चिम + सि
शेष शैववत्

अग्रिमः

अग्रे भवः लौ. वि.
पश्चाद ...... (586) सू. से इम प्रत्यय
अग्र + ङि + इम अ. वि.
शेष कुलीनवत्

अन्तिमः

अन्ते भवः लौ. वि.
पश्चाद ...... (586) सू. से इम प्रत्यय
अन्त + ङि + इम अ. वि.
शेष कुलीनवत्

588. वर्षाकालेभ्य इकण्। (6/4/81)

वर्षाशब्दात् कालविशेषवाचिभ्यश्च शेषेऽर्थे इकण् प्रत्ययो भवति। वार्षिकः, मासिकः, सांवत्सरिकः, दैवसिकः।

वर्षा शब्द से और कालविशेषवाची (शब्दों) से शेष अर्थ में इकण् (प्रत्यय) होता है।

वार्षिकः

वर्षासु भवः लौ. वि.
वर्षा ...... (588) सू. से इकण् प्रत्यय
वर्षा + सुप् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

मासिकः

मासे भवः लौ. वि.
वर्षा ...... (588) सू. से इकण् प्रत्यय
मास + ङि + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

सांवत्सरिकः

संवत्सरे भवः लौ. वि.
वर्षा ...... (588) सू. से इकण् प्रत्यय
संवत्सर + ङि + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

दैवसिकः

दिवसे भवः लौ. वि.
वर्षा ...... (588) सू. से इकण् प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

दिवस + ङि + इकण् अ. वि.

शेष शैववत्

589. ऋतुनक्षत्रसंध्यादेरण्। (6/4/86)

एभ्यः शेषेऽर्थे अण् स्यात्। पूर्वापवादः। ग्रीष्मे भवः—ग्रैष्मः, वासन्तः।

इन (ऋतुवाची, नक्षत्रवाची और सन्ध्या शब्द) से शेष अर्थ में अण् (प्रत्यय) होता है। (यह सू. 588 सू. का अपवाद है।)

ग्रैष्मः

ग्रीष्मे भवः लौ. वि.

वर्षा ...... (588) सू. से इकण् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर

ऋतु ...... (589) सू. से अण् प्रत्यय

ग्रीष्म + ङि + अण्, अ. वि.

शेष शैववत्

590. तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्रेऽणि। (8/4/76)

नक्षत्रवाचिनोरनयोर्यस्य लोपः स्यात् अणि परे। तिष्ये भवः—तैषः, पौषः, सन्ध्यायां भवः—सान्ध्यः।

नक्षत्रवाची तिष्य एवं पुष्य के य का लोप होता है अण् परे होने पर।

तैषः

तिष्ये भवः लौ. वि.

वर्षा ...... (588) सू. से इकण् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर

ऋतु ...... (589) सू. से अण् प्रत्यय

तिष्य + ङि + अण् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

तिष्य + अण्, ण् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

तैष्य + अ

तिष्य ...... (590) सू. से य का लोप

तैष् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर तैष

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

तैष + सि

शेष शैववत्

पौषः

पुष्ये भवः लौ. वि.

वर्षा ...... (588) सू. से इकण् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर

ऋतु ...... (589) सू. से अण् प्रत्यय

पुष्य + ङि + अण् अ. वि.

शेष तैषवत्

सान्ध्यः

सन्ध्यायां भवः लौ. वि.

वर्षा ...... (588) सू. से इकण् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ऋतु ...... (589) सू. से अण् प्रत्यय

सन्ध्या + ङि + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

591. तत्र जाते। (7/1/1)

सप्तम्यन्ताज्जातेऽर्थे यथाविहितं प्रत्ययाः स्युः। स्रुघ्ने जातः—स्रौघ्नः, माथुरः, आग्नेयः, कालेयः, स्त्रैणः, पौंस्नः, राष्ट्रियः, ग्रामीणः, ग्राम्यः।

सप्तमी अन्त से जात अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

स्रौघ्नः

स्रुघ्ने जातः लौ. वि.

तत्र ...... (591) सू. से अण् प्रत्यय

स्रुघ्न + ङि + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

माथुरः

मथुरायां जातः लौ. वि.

तत्र ...... (591) सू. से अण् प्रत्यय

मथुरा + ङि + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

आग्नेयः

अग्नौ जातः लौ. वि.

तत्र ...... (591) सू. से एयण् प्रत्यय

अग्नि + ङि + एयण् अ. वि.

शेष शैववत्

कालेयः

कलौ जातः लौ. वि.

तत्र ...... (591) सू. से एयण् प्रत्यय

कलि + ङि + एयण् अ. वि.

शेष शैववत्

स्त्रैणः

स्त्रियां जातः लौ. वि.

तत्र ...... (591) सू. से नञ् प्रत्यय

स्त्री + ङि + नञ् अ. वि.

शेष पूर्ववत्

पौंस्नः

पुंसि जातः लौ. वि.

तत्र ...... (591) सू. से स्नञ् प्रत्यय

पुंस् + ङि + स्नञ् अ. वि.

शेष पूर्ववत्

राष्ट्रियः

राष्ट्रे जातः लौ. वि.

तत्र ...... (591) सू. से इय प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

राष्ट्र + ङि + इय अ. वि.

शेष कुलीनवत्

ग्रामीणः

ग्रामे जातः लौ. वि.

तत्र ...... (591) सू. से ईनञ् प्रत्यय

ग्राम + ङि + ईनञ् अ. वि.

शेष कुलीनवत्

ग्राम्यः

ग्रामे जातः लौ. वि.

तत्र ...... (591) सू. से य प्रत्यय

ग्राम + ङि + य अ. वि.

शेष पूर्ववत्

592. कृतलब्धक्रीतसंभूतेषु । (7/1/17)

सप्तम्यन्तात् कृतादिष्वर्थेषु यथाविहिताः प्रत्ययाः स्युः। स्रुघ्ने कृतो, लब्धः, क्रीतः, संभूतो वा — स्रौघ्न इत्यादि ।

सप्तमी अन्त से कृत, लब्ध, क्रीत और संभूत अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

स्रौघ्नः

स्रुघ्ने कृतः, लब्धः, क्रीतः, संभूतो वा लौ. वि.

कृत ...... (592) सू. से अण् प्रत्यय

स्रुघ्न + ङि + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

593. कुशले । (7/1/18)

सप्तम्यन्तात् कुशलेऽर्थे यथाविहितं प्रत्ययाः स्युः। स्रुघ्ने कुशलः — स्रौघ्नः, माथुरः ।

सप्तमी अन्त से कुशल अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

स्रौघ्नः

स्रुघ्ने कुशलः लौ. वि.

कुशले (593) सू. से अण् प्रत्यय

स्रुघ्न + ङि + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

माथुरः

मथुरायां कुशलः लौ. वि.

कुशले (593) सू. से अण् प्रत्यय

मथुरा + ङि + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

594. भवे । (7/3/31)

सप्तम्यन्तान्नाम्नो भवेऽर्थे यथाविहितं प्रत्ययाः स्युः। स्रौघ्नः, माथुरः ।

सप्तमी अन्त नाम से भव अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

स्रौघ्नः

स्रुघ्ने भवः लौ. वि.

भवे (594) सू. से अण् प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्रुघ्न + ङि + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

माथुरः

मथुरायां भवः लौ. वि.

भवे (594) सू. से अण् प्रत्यय

मथुरा + ङि + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

595. दिगादेर्यः। (7/1/32)

दिगादिभ्यः सप्तम्यन्तेभ्यो भवेऽर्थे यः प्रत्ययो भवति। दिश्यः, वर्ग्यः, आद्यः, अन्त्यः।

सप्तमी अन्त दिगादि (शब्दों) से भव अर्थ में य प्रत्यय होता है।

दिश्यः

दिशि भवः लौ. वि.

दिगादे ...... (595) सू. से य प्रत्यय

दिश् + ङि + य अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

दिश् + य

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर दिश्य

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

दिश्य + सि

शेष शैववत्

वर्ग्यः

वर्गे भवः लौ. वि.

दिगादे ...... (595) सू. से य प्रत्यय

वर्ग + ङि + य अ. वि.

शेष कुलीनवत्

आद्यः

आदौ भवः लौ. वि.

दिगादे ...... (595) सू. से य प्रत्यय

आदि + ङि + य अ. वि.

शेष कुलीनवत्

अन्त्यः

अन्ते भवः लौ. वि.

दिगादे ...... (595) सू. से य प्रत्यय

अन्त + ङि + य अ. वि.

शेष कुलीनवत्

596. शरीरावयवात्। (7/1/33)

शरीरावयववाचिनः सप्तम्यन्तान्नाम्नो भवेऽर्थे यः प्रत्ययो भवति। दन्ते भवः—दन्त्यः, कर्ण्यः, ओष्ठ्यः, मुख्यः, मूर्धन्यः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सप्तमी अन्त शरीर के अवयववाची नाम से भव अर्थ में य प्रत्यय होता है।

दन्त्यः

दन्ते भवः लौ. वि.
शरीरा ...... (596) सू. से य प्रत्यय
दन्त + ङि + य अ. वि.
शेष कुलीनवत्

कर्ण्यः

कर्णे भवः लौ. वि.
शरीरा ...... (596) सू. से य प्रत्यय
कर्ण + ङि + य अ. वि.
शेष कुलीनवत्

ओष्ठ्यः

ओष्ठे भवः लौ. वि.
शरीरा ...... (596) सू. से य प्रत्यय
ओष्ठ + ङि + य अ. वि.
शेष कुलीनवत्

मुख्यः

मुखे भवः लौ. वि.
शरीरा ...... (596) सू. से य प्रत्यय
मुख + ङि + य अ. वि.
शेष कुलीनवत्

मूर्धन्यः

मूर्धनि भवः लौ. वि.
शरीरा ...... (596) सू. से य प्रत्यय
मूर्धन् + ङि + य अ. वि.
शेष राजन्यवत्

597. दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यहेरेयण्। (7/1/35)

एभ्यः सप्तम्यन्तेभ्यो भवेऽर्थे एयण् प्रत्ययो भवति। दार्तेयं जलम्, कौक्षेयो व्याधिः, कालशेयं तक्रम्, वास्तेयं मूत्रम्, आहेयं विषम्।

सप्तमी अन्त इन (दृति, कुक्षि, कलशि, वसति और अहि शब्दों) से भव अर्थ में एयण् प्रत्यय होता है।

दार्तेयं जलम्

दृतौ भवः लौ. वि.
दृति ...... (597) सू. से एयण् प्रत्यय
दृति + ङि + एयण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

कौक्षेयो व्याधिः

कुक्षौ भवः लौ. वि.
दृति ...... (597) सू. एयण् प्रत्यय
कुक्षि + ङि + एयण् अ. वि.
शेष शैववत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कालशेयं तक्रम्

कलशौ कलश्यां वा भवः लौ. वि.

दृति ...... (597) सू. से एयण् प्रत्यय

कलशि + ङि + एयण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

वास्तेयं मूत्रम्

वस्तौ भवः लौ. वि.

दृति ...... (597) सू. से एयण् प्रत्यय

वस्ति + ङि + एयण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

आहेयं विषम्

अहौ भवः लौ. वि.

दृति ...... (597) सू. से एयण् प्रत्यय

अहि + ङि + एयण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

598. मध्याद्दिनण्णेया मुम् चास्य। (7/1/48)

अस्मात् भवेऽर्थे दिनण्, ण, ईय, इत्येते प्रत्ययाः स्युः, अस्य मुमागमश्च। मध्ये भवः— माध्यन्दिनः, माध्यमः, मध्यमीयः।

मध्य शब्द से भव अर्थ में दिनण्, ण और ईय ये प्रत्यय होते हैं और इस (मध्य शब्द) को मुम् का आगम होता है।

माध्यन्दिनः

मध्ये भवः लौ. वि.

मध्याद् ...... (598) सू. से दिनण् प्रत्यय

मध्य + ङि + दिनण् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

मध्य + दिनण्, ण् अनुबन्ध

मिदन्त्यस्वरात्परः (195) सू. की सहायता से

मध्याद् ...... (598) सू. से मध्य शब्द को मुम् आगम

मध्य मुम् + दिन, म् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ

मध्य म् + दिन

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

माध्य म् + दिन

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर माध्यम्दिन

मोऽनुस्वारयमौ हसे सवर्णौ (77) सू. से मकार का नकार

माध्यन्दिन

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

माध्यन्दिन + सि

शेष शैववत्

माध्यमः

मध्ये भवः लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मध्याद् ...... (598) सू. से ण प्रत्यय

मध्य + ङि + ण अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ......(395) सू. से विभ. का लुक्

मध्य + ण

मिदन्त्य ...... (195) सू. की सहायता से

मध्याद् ...... (598) सू. से मध्य शब्द को मुम् आगम

मध्य + मुम् + ण , ण् तथा म् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ

मध्य म् + अ

वृद्धिः ...... (519) सू. से अदि स्वर की वृद्धि

माध्य म् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर माध्यम

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

माध्यम + सि

शेष शैववत्

मध्यमीयः

मध्ये भवः लौ. वि.

मध्याद् ...... (598) सू. से ईय प्रत्यय

मध्य + ङि + ईय अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

मध्य + ईय

मिदन्त्य ...... (195) सू. की सहायता से

मध्याद् ...... (598) सू. से मध्य शब्द को मुम् आगम

मध्य मुम् + ईय, म् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ

मध्य म् + ईय

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर मध्यमीय

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

मध्यमीय + सि

शेष शैववत्

599. ईयो मत्वर्थजिह्वामूलाङ्गुलिभ्यश्च। (7/1/49)

एभ्यो मध्यशब्दाच्च भवेऽर्थे ईयः स्यात्। मत्वर्थीयः, जिह्वामूलीयः, अङ्गुलीयः, मध्यीयः।

इन (मत्वर्थ, जिह्वामूल और अङ्गुलि शब्दों) से एवं मध्य शब्द से भव अर्थ में ईय प्रत्यय होता है।

मत्वर्थीयः

मत्वर्थे भवः लौ. वि.

ईयो ...... (599) सू. से ईय प्रत्यय

मत्वर्थ + ङि + ईय अ. वि.

शेष कुलीनवत्

जिह्वामूलीयः

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

जिह्वामूले भवः लौ. वि.
ईयो ...... (599) सू. से ईय प्रत्यय
जिह्वामूल + ङि + ईय अ. वि.
शेष कुलीनवत्

अङ्गुलीयः

अङ्गुल्यां भवः लौ. वि.
ईयो ...... (599) सू. से ईय प्रत्यय
अङ्गुलि + ङि + ईय अ. वि.
शेष कुलीनवत्

मध्यीयः

मध्ये भवः लौ. वि.
ईयो ...... (599) सू. से ईय प्रत्यय
मध्य + ङि + ईय अ. वि.
शेष कुलीनवत्

600. वर्गान्तात्। (7/1/50)

सप्तम्यन्तात् वर्गशब्दान्ताद् भवेऽर्थे ईयः प्रत्ययो भवति। कवर्गीयः, पवर्गीयः।

सप्तमी अन्त वर्ग शब्दान्त से भव अर्थ में ईय प्रत्यय होता है।

कवर्गीयः

कवर्गे भवः लौ. वि.
वर्गान्तात् (600) सू. से ईय प्रत्यय
कवर्ग + ङि + ईय अ. वि.
शेष कुलीनवत्

पवर्गीयः

पवर्गे भवः लौ. वि.
वर्गान्तात् (600) सू. से ईय प्रत्यय
पवर्ग + ङि + ईय अ. वि.
शेष कुलीनवत्

601. प्रभवति। (7/1/69)

पञ्चम्यन्तात् प्रभवतीत्यर्थे यथाविहितं प्रत्ययाः स्युः। हिमवतः प्रभवतीति हैमवती गंगा।

पञ्चमी अन्त से प्रभवति (अर्थात् उत्पन्न होता है) अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

हैमवती गंगा

हिमवतः प्रभवति लौ. वि.
प्रभवति (601) सू. से अण् प्रत्यय
हिमवत् + ङसि + अण् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
हिमवत् + अण्, ण् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
हैमवत् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर हैमवत्
मुख्यात् ...... (307) सू. से ईप् प्रत्यय
हैमवत + ईप्, प् अनुबन्ध

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ईप्यतः (307) सू. से अकार का लोप
हैमवत् + ई
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर हैमवती
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
हैमवती + सि
शेष पितामहीवत्

602. अधिकृत्य कृते ग्रन्थे। (7/1/74)

द्वितीयान्तात् अधिकृत्य कृते ग्रंथेऽर्थे यथाविहितं प्रत्ययाः स्युः। सुभद्रामधिकृत्य कृतो ग्रन्थः — सौभद्रः, सौतारः, भाद्रः।

द्वितीयान्त से अधिकृत्य कृत ग्रन्थ (अर्थात् विषय को लेकर बनाया गया ग्रन्थ) अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

सौभद्रः

सुभद्रामधिकृत्य कृतो ग्रन्थः लौ. वि.
अधिकृत्य ...... (602) सू. से अण् प्रत्यय
सुभद्रा + अम् + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

सौतारः

सुतारामधिकृत्य कृतो ग्रन्थः लौ. वि.
अधिकृत्य ...... (602) सू. से अण् प्रत्यय
सुतारा + अम् + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

भाद्रः

भद्रामधिकृत्य कृतो ग्रन्थः लौ. वि.
अधिकृत्य ...... (602) सू. से अण् प्रत्यय
भद्रा + अम् + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

603. तेन प्रोक्ते। (7/1/91)

तृतीयान्तात् प्रोक्तेऽर्थे यथाविहितं प्रत्ययाः स्युः। गणधरेण प्रोक्तम् — गाणधरं द्वादशाङ्गम्।

तृतीयान्त से प्रोक्त (अर्थात् कहा हुआ) अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

गाणधरं द्वादशाङ्गम्

गणधरेण प्रोक्तम् लौ. वि.
तेन ...... (604) सू. से अण् प्रत्यय
गणधर + टा + अण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

604. कृते। (7/1/106)

तृतीयान्तात् कृतेऽर्थे यथाविहितं प्रत्ययाः स्युः। शिवेन कृतो ग्रंथः — शैवः, सिद्धसेनीयः स्तवः, इष्टकाभिः कृतः प्रासादः — ऐष्टकः।

तृतीया अन्त से कृत (अर्थात् बनाए गए) अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

शैवः

शिवेन कृतो ग्रन्थः लौ. वि.
कृते (604) सू. से अण् प्रत्यय
शिव + टा + अण् अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष पूर्ववत्

सिद्धसेनीयः स्तवः

सिद्धसेनेन कृतः स्तवः लौ. वि.

कृते (604) सू. से ईय प्रत्यय

सिद्धसेन + टा + ईय अ. वि.

शेष कुलीनवत्

ऐष्टकः

इष्काभिः कृतः प्रासादः लौ. वि.

कृते (604) सू. से अण् प्रत्यय

इष्टका + भिस् + अण् अ. वि.

शेष शैववत्

605. तस्येदम्। (7/1/112)

षष्ठ्यन्तादिदमर्थे यथाविहितं प्रत्ययाः स्युः। भैक्षवम्, स्रौघ्नम्, माथुरम्, आग्नेयम्, स्त्रैणम्, पौंस्नम्, गव्यम्, नादेयम्, स्वस्येदम्— सौवम्, दैवम्।

षष्ठी अन्त से इदम् (अर्थात् यह) अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

भैक्षवम्

भिक्षोः इदम् लौ. वि.

तस्येदम् (605) सू. से अण् प्रत्यय

भिक्षु + ङस् + अण् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

भिक्षु + अण्, ण् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

भैक्षु + अ

उवर्ण ...... (517) सू. से उ का अव्

भैक्ष् अव् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर भैक्षव

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

भैक्षव + सि

शेष कौसुम्भवत्

स्रौघ्नम्

स्रुघ्नस्य इदम् लौ. वि.

तस्येदम् (605) सू. से अण् प्रत्यय

स्रुघ्न + ङस् + अण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

माथुरम्

मथुरायाः इदम् लौ. वि.

तस्येदम् (605) सू. से अण् प्रत्यय

मथुरा + ङस् + अण् अ. वि.

आग्नेयम्

अग्नेः इदम् लौ. वि.

तस्येदम् (605) सू. से एयण् प्रत्यय

अग्नि + ङस् + एयण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्त्रैणम्

स्त्रियाः इदम् लौ. वि.
तस्येदम् (605) सू. से नञ् प्रत्यय
स्त्री + ङस् + नञ् अ. वि.
शेष पूर्ववत्

पौंस्नम्

पुंसः इदम् लौ. वि.
तस्येदम् (605) सू. से स्नञ् प्रत्यय
पुंस् + ङस् + स्नञ् अ. वि.
शेष पूर्ववत्

गव्यम्

गोः इदम् लौ. वि.
तस्येदम् (605) सू. से य प्रत्यय
गो + ङस् + य अ. वि.
शेष पूर्ववत्

नादेयम्

नद्याः इदम् लौ. वि.
तस्येदम् (605) सू. से एयण् प्रत्यय
नदी + ङस् + एयण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

सौवम्

स्वस्येदम् लौ. वि.
तस्येदम् (605) सू. से अण् प्रत्यय
स्व + ङस् + अण् अ. वि.
तद्धिताः (395) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
स्व + अण्, ण् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि की प्राप्ति
संधि ...... (563) सू. से वृद्धि का निषेध एवं व को औट् का आगम
स् औट् व + अ, ट् अनुबन्ध
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
स् औ व् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर सौव
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
सौव + सि
शेष कौसुम्भवत्

दैवम्

देवस्य इदम् लौ. वि.
तस्येदम् (605) सू. से अण् प्रत्यय
देव + ङस् + अण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

इति शेषाधिकारः ।
शेषाधिकार समाप्त ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ इकणधिकार:

अब इकण् अधिकार प्रारम्भ हो रहा है।

606. इकण्। (7/2/1)

इत इकणधिकारो वेदितव्य:।

यहां (7.2.1) से आगे इकण् का अधिकार जान लेना चाहिए।

607. तेन दीव्यतिखनतिजयतिजितेषु। (7/2/2)

तृतीयान्ताद्दीव्यत्यादिष्वर्थेषु इकण् स्यात्। अक्षैर्दीव्यति[1] — आक्षिक:, कुद्दालेन खनति — कौद्दालिक:, अक्षैर्जयति — आक्षिक:, अक्षैर्जितम् — आक्षिकम्।

तृतीया अन्त से दीव्यति (अर्थात् जूआ खेलने वाला), खनति (अर्थात् खोदने वाला) जयति (अर्थात् जीतने वाला) और जित (अर्थात् जीता हुआ) अर्थों में इकण् (प्रत्यय) होता है।

आक्षिक:

अक्षैर्दीव्यति लौ. वि.
तेन ...... (607) सू. से इकण् प्रत्यय
अक्ष + भिस् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

कौद्दालिक:

कुद्दालेन खनति लौ. वि.
तेन ...... (607) सू. से इकण् प्रत्यय
कुद्दाल + टा + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

आक्षिक:

अक्षैर्जयति लौ. वि.
तेन ...... (607) सू. से इकण् प्रत्यय
अक्ष + भिस् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

आक्षिकम्

अक्षैर्जितम् लौ. वि.
तेन ...... (607) सू. से इकण् प्रत्यय
अक्ष + भिस् + इकण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

608. संस्कृते। (7/2/8)

तृतीयान्तात् संस्कृतेऽर्थे इकण् प्रत्ययो भवति। दध्ना संस्कृतम् — दाधिकम्।

तृतीया अन्त से संस्कृत[2] (संस्कार किया हुआ) अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है।

दाधिकम्

---

1 दीव्यति, खनति और जयति अर्थों में संख्या, काल और पुरुष विवक्षित नहीं है केवल कर्तृकारक ही विवक्षित है। इसी प्रकार जितम् में केवल कर्मकारक की ही विवक्षा है भूतकाल आदि की नहीं। अत: अक्षैरदीव्यत्, अक्षैर्देविष्यति आदि अन्य कालों में तथा अक्षैर्दीव्यसि, अक्षैर्दीव्यामि आदि अन्य पुरुषों और अक्षैर्दीव्यत:, अक्षैर्दीव्यन्ति आदि अन्य वचनों में भी इकण् प्रत्यय होकर 'आक्षिक:' बन जाता है। इसी प्रकार आगे तरति, चरति आदि में भी समझ लेना चाहिए।

2 सतो गुणाधानं संस्कार:।
किसी पदार्थ के गुणाधान करने — उसे उत्कृष्ट बनाने को 'संस्कृत करना' कहते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

दध्ना संस्कृतम् लौ. वि.

संस्कृते (608) सू. से इकण् प्रत्यय

दधि + टा + इकण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

609. तरति। (7/2/10)

तृतीयान्तात् तरत्यर्थे इकण् प्रत्ययो भवति। गोपुच्छेन तरति — गौपुच्छिकः, औडुपिकः।

तृतीया अन्त से तरति (अर्थात् तैरने वाला) अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है।

गौपुच्छिकः

गोपुच्छेन तरति लौ. वि.

तरति (609) सू. से इकण् प्रत्यय

गोपुच्छ + टा + इकण् अ. वि.

शेष शैववत्

औडुपिकः

उडुपेन तरति लौ. वि.

तरति (609) सू. से इकण् प्रत्यय

उडुप + टा + इकण् अ. वि.

शेष शैववत्

610. नौद्विस्वरादिकः। (7/2/11)

तृतीयान्तात् नौशब्दाद् द्विस्वराच्च नाम्नः तरत्यर्थे इक प्रत्ययो भवति। नाविकः, बाहुकः।

तृतीया अन्त नौ शब्द एवं दो स्वर वाले नाम से तरति (अर्थात् तैरने वाला) अर्थ में इक प्रत्यय होता है।

नाविकः

नावा तरति लौ. वि.

नौ ...... (610) सू. से इक प्रत्यय

नौ + टा + इक अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से इक प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नौ + इक

ओदौतोरवावौ (34) सू. से औ को आव्

नाव् + इक

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर नाविक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

नाविक + सि

शेष शैववत्

बाहुकः

बाहुभ्यां तरति लौ. वि.

नौ ...... (610) सू. से इक प्रत्यय

बाहु + भ्याम् + इक अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से इक प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

बाहु + इक

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ऋवर्णो ...... (550) सू. से इक के इकार का लोप

बाहु + क , वर्णों को मिलाने पर बाहुक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

बाहुक + सि

शेष शैववत्

611. चरति । (7/2/12)

तृतीयान्ताच्चरत्यर्थे इकण् प्रत्ययो भवति । हस्तिना चरति — हास्तिकः , शाकटिकः ।

तृतीया अन्त से चरति (अर्थात् जाने वाला अथवा खाने वाला) अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है ।

हास्तिकः

हस्तिना चरति लौ. वि.

चरति (611) सू. से इकण् प्रत्यय

हस्तिन् + टा + इकण् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

हस्तिन् + इकण् , ण् अनुबन्ध

अन्त्य ...... (18) सू. से इन् की टि संज्ञा

नोऽपदस्य ...... (406) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप

हास्त् + इक

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर हास्तिक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

हास्तिक + सि

शेष शैववत्

शाकटिकः

शकटेन चरति लौ. वि.

चरति (611) सू. से इकण् प्रत्यय

शकट + टा + इकण् अ. वि.

शेष शैववत्

612. पर्पादेरिकट् । (7/2/13)

तृतीयान्तेभ्यः पर्पादिभ्यः शब्देभ्यः चरत्यर्थे इकट् प्रत्ययो भवति । पर्पेण चरति — पर्पिकः , पर्पिकी , अश्विकः , रथिकः ।

तृतीयान्त पर्प[1] आदि शब्दों से चरति (अर्थात् चलने वाला) अर्थ में इकट् प्रत्यय होता है ।

पर्पिकः

पर्पेण चरति लौ. वि.

पर्पादे ...... (612) सू. से इकट् प्रत्यय

पर्प + टा + इकट् अ. वि.

शेष कुलीनवत्

---

1 येन पीठेन पङ्गवश्चरन्ति स पर्पः ।
जिस एक पहिये की गाड़ी के सहारे से पङ्गु चलते हैं वह पर्प है ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पर्पिकी

पर्पेण चरति स्त्रीः लौ. वि.

पर्पादे ...... (612) सू. से इकट् प्रत्यय

पर्प + टा + इकट् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पर्प + इकट्, ट् अनुबन्ध

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

पर्प् + इक

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पर्पिक

मुख्यात् ...... (306) सू. से ईप् प्रत्यय

पर्पिक + ईप्

ईप्यतः (307) सू. से अकार का लोप

पर्पिक् + ईप् , प् अनुबन्ध

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर

पर्पिकी

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पर्पिकी + सि

हसेपः सेर्लोपः (183) सू. से ईप् का लोप करने पर पर्पिकी रूप सिद्ध हुआ।

अश्विकः

अश्वेन चरति लौ. वि.

पर्पादे ...... (612) सू. से इकट् प्रत्यय

अश्व + टा + इकट् अ. वि.

शेष कुलीनवत्

रथिकः

रथेन चरति लौ. वि.

पर्पादे ...... (612) सू. से इकट् प्रत्यय

रथ + टा + इकट् अ. वि.

शेष कुलीनवत्

613. पक्षिमत्स्यमृगाख्येभ्यो हन्ति। (7/2/38)

आख्यशब्देन स्वरूपस्य पर्यायाणां विशेषाणां च ग्रहणम्। द्वितीयान्तेभ्यः पक्ष्यादिवाचिभ्यो हन्तीत्यर्थे इकण् स्यात्। पक्षिणो हन्ति — पाक्षिकः, शाकुनिकः, मात्स्यिकः, मैनिकः, मार्गिकः, हारिणिकः।

(आख्य शब्द से स्वरूप (अर्थात् मूल शब्द का) और विशेष पर्यायों (अर्थात् पर्यायवाची) का ग्रहण किया गया है।) द्वितीया अन्त वाले पक्षि, मत्स्य और मृग वाची (शब्दों) से हन्ति (अर्थात् मारने वाला) अर्थ में इकण् (प्रत्यय) होता है।

पाक्षिकः

पक्षिणो हन्ति लौ. वि.

पक्षि ...... (613) सू. से इकण् प्रत्यय

पक्षिन् + शस् + इकण् अ. वि.

शेष हास्तिकवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शाकुनिक:

शकुनीन् हन्ति लौ. वि.
पक्षि ...... (613) सू. से इकण् प्रत्यय
शकुनि + शस् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

मात्स्यिक:

मत्स्यान् हन्ति लौ. वि.
पक्षि ...... (613) सू. से इकण् प्रत्यय
मत्स्य + शस् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

मैनिक:

मीनान् हन्ति लौ. वि.
पक्षि ...... (613) सू. से इकण् प्रत्यय
मीन + शस् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

मार्गिक:

मृगान् हन्ति लौ. वि.
पक्षि ...... (613) सू. से इकण् प्रत्यय
मृग + शस् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

हारिणिक:

हरिणान् हन्ति लौ. वि.
पक्षि ...... (613) सू. से इकण् प्रत्यय
हरिण + शस् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

614. धर्माधर्माभ्यां चरति। (7/2/43)

धर्म, अधर्म — इत्येताभ्यां द्वितीयान्ताभ्यां चरत्यर्थे इकण् प्रत्ययो भवति। धर्मं चरति — धार्मिक:, आधर्मिक:।

द्वितीयान्त धर्म, अधर्म इन दोनों (शब्दों) से चरति (अर्थात् आचरण करने वाला) अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है।

धार्मिक:

धर्मं चरति लौ. वि.
धर्मा ...... (614) सू. से इकण् प्रत्यय
धर्म + अम् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

आधर्मिक:

अधर्मं चरति लौ. वि.
धर्मा ...... (614) सू. से इकण् प्रत्यय
अधर्म + अम् + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

615. निकटादिषु वसति। (7/2/82)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एभ्यः सप्तम्यन्तेभ्यो वसतीत्यर्थे इकण् स्यात् । निकटे वसति — नैकटिको भिक्षुः, वार्क्षमूलिकः, श्माशानिकः।

सप्तमी अन्त निकट आदि (शब्दों) से वसति (अर्थात् रहने वाला) अर्थ में इकण् (प्रत्यय) होता है।

नैकटिको भिक्षुः

निकटे वसति लौ. वि.

निकटा ...... (615) सू. से इकण् प्रत्यय

निकट + ङि + इकण् अ. वि.

शेष शैववत्

वार्क्षमूलिकः

वृक्षमूले वसति लौ. वि.

निकटा ...... (615) सू. से इकण् प्रत्यय

वृक्षमूल + ङि + इकण् अ. वि.

शेष शैववत्

श्माशानिकः

श्मशाने वसति लौ. वि.

निकटा ...... (615) सू. से इकण् प्रत्यय

श्मशान + ङि + इकण् अ. वि.

शेष शैववत्

616. सतीर्थ्यः। (7/2/83)

सप्तम्यन्तात् समानतीर्थशब्दात् वसतीत्यर्थे यः प्रत्ययो निपात्यते समानशब्दस्य च सभावः। समानतीर्थे वसतीति सतीर्थ्यः।

सप्तमी अन्त समानतीर्थ शब्द से वसति (अर्थात् रहने वाला) अर्थ में य प्रत्यय निपातन से होता है और समान शब्द को स (आदेश) होता है।

सतीर्थ्यः

समानतीर्थे वसति लौ. वि.

सतीर्थ्यः (616) सू. से निपातन से य प्रत्यय

समानतीर्थ + ङि + य अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

समानतीर्थ + य

सतीर्थ्यः (616) सू. से समान को स आदेश

सतीर्थ + य

इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप

सतीर्थ् + य

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर सतीर्थ्य

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

सतीर्थ्य + सि

शेष शैववत्

617. मूल्यैः क्रीते। (7/2/105)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तृतीयान्तान्मूल्यवाचिनः क्रीतेऽर्थे यथाविहितं प्रत्ययाः स्युः। प्रस्थेन क्रीतम् — प्रास्थिकम्, साप्ततिकम्।

तृतीयान्त मूल्यवाची (शब्दों) से क्रीत (अर्थात् खरीदा हुआ) अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होते हैं।

प्रास्थिकम्

प्रस्थेन क्रीतम् लौ. वि.

मूल्यैः ...... (617) सू. से इकण् प्रत्यय

प्रस्थ + टा + इकण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

साप्ततिकम्

सप्तत्या क्रीतम् लौ. वि.

मूल्यैः ...... (617) सू. से इकण् प्रत्यय

सप्तति + टा + इकण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

618. अर्हति। (7/2/132)

द्वितीयान्तादर्हतीत्यर्थे यथोक्तं प्रत्ययः स्यात्। छत्रमर्हति — छात्रिकः, चामरिकः, वास्त्रिकः।

द्वितीयान्त से अर्हति (अर्थात् प्राप्त करने के योग्य) अर्थ में यथोक्त (अर्थात् इकण्) प्रत्यय होता है।

छात्रिकः

छत्रमर्हति लौ. वि.

अर्हति (618) सू. से इकण् प्रत्यय

छत्र + अम् + इकण् अ. वि.

शेष शैववत्

चामरिकः

चमरमर्हति लौ. वि.

अर्हति (618) सू. से इकण् प्रत्यय

चमर + अम् + इकण् अ. वि.

शेष शैववत्

वास्त्रिकः

वस्त्रमर्हति लौ. वि.

अर्हति (618) सू. से इकण् प्रत्यय

वस्त्र + अम् + इकण् अ. वि.

शेष शैववत्

619. शोभते। (7/2/173)

तृतीयान्तात् शोभते इत्यर्थे इकण् स्यात्। आचार्येण शोभते — आचार्यिकः, शीलेन शोभते — शैलिकी सीता।

तृतीयान्त से शोभते (अर्थात् सुशोभित होने वाला) अर्थ में इकण् (प्रत्यय) होता है।

आचार्यिकः

आचार्येण शोभते लौ. वि.

शोभते (619) सू. से इकण् प्रत्यय

आचार्य + टा + इकण् अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष शैववत्

शैलिकी सीता

शीलेन शोभते लौ. वि.
शोभते (619) सू. से इकण् प्रत्यय
शील + टा + इकण् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
शील + इकण् , ण् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
शैल + इक
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
शैल् + इक
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर शैलिक
मुख्यात् ...... (306) सू. से ईप् प्रत्यय
शैलिक + ईप् , प् अनुबन्ध
ईप्यतः (307) सू. से अकार का लोप
शैलिक् + ई
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर शैलिकी
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
शैलिकी + सि
शेष पितामहीवत्

इति इकणधिकारः।
इकण् अधिकार समाप्त।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ यादिप्रत्ययाधिकारः

अब यादि प्रत्ययाधिकार प्रारम्भ हो रहा है।

620. तत्र साधौ। (7/3/15)

तत्रेति सप्तम्यन्तात् साधावर्थे यः स्यात्। कर्मणि साधुः—कर्मण्यः, सभायां सभ्यः।

तत्र अर्थात् सप्तमी अन्त से साधु (योग्य) अर्थ में य (प्रत्यय) होता है।

कर्मण्यः

कर्मणि साधुः लौ. वि.
तत्र साधौ (620) सू. से य प्रत्यय
कर्मन् + ङि + य अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अवकु ...... (121) सू. से न् का ण्
कर्मण् + य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर कर्मण्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
कर्मण्य + सि
शेष शैववत्

सभ्यः

सभायां साधुः लौ. वि.
तत्र ...... (620) सू. से य प्रत्यय
सभा + ङि + य अ. वि.
शेष कुलीनवत्

621. पर्षदो ण्यणौ। (7/3/18)

सप्तम्यन्तात् पर्षच्छब्दात् साधावर्थे ण्य, ण—इत्येतौ प्रत्ययौ स्तः। पर्षदि साधुः—पार्षद्यः, पार्षदः।

सप्तमी अन्त पर्षद् शब्द से साधु (अर्थात् योग्य) अर्थ में ण्य एवं ण ये दो प्रत्यय होते हैं।

पार्षद्यः

पर्षदि साधुः लौ. वि.
पर्षदो ...... (621) सू. से ण्य प्रत्यय
पर्षद् + ङि + ण्य अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पर्षद् + ण्य, ण् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
पार्षद् + य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पार्षद्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पार्षद्य + सि
शेष शैववत्

पार्षदः

पर्षदि साधुः लौ. वि.
पर्षदो ...... (621) सू. से ण प्रत्यय
पर्षद् + ङि + ण अ. वि.
शेष पार्षद्यवत्

622. कथादेरिकण्। (7/3/21)

कथादिभ्यस्तत्र साधावर्थे इकण् प्रत्ययो भवति। कथायां साधुः— काथिकः, वैकथिकः।

सप्तमी अन्त कथा आदि (शब्दों) से साधु (अर्थात् योग्य) अर्थ में इकण् प्रत्यय होता है।

काथिकः

कथायां साधुः लौ. वि.
कथादे ...... (622) सू. से इकण् प्रत्यय
कथा + ङि + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

वैकथिकः

विकथायां साधुः लौ. वि.
कथादे ...... (622) सू. से इकण् प्रत्यय
विकथा + ङि + इकण् अ. वि.
शेष शैववत्

623. तस्मै हिते। (7/3/35)

चतुर्थ्यन्तात् हितेऽर्थे ईयः स्यात्। वत्साय हितः— वत्सीयः, पित्रीयः, मात्रीयः, गव्यम्, स्वस्मै हितम्— स्वीयम्।

चतुर्थी अन्त से हित अर्थ में यथाविहित प्रत्यय होता है।

वत्सीयः

वत्साय हितः लौ. वि.
तस्मै ...... (623) सू. से ईय प्रत्यय
वत्स + ङे + ईय अ. वि.
शेष कुलीनवत्

पित्रीयः

पित्रे हितः लौ. वि.
तस्मै ...... (623) सू. से ईय प्रत्यय
पितृ + ङे + ईय अ. वि.
शेष स्वस्रीयवत्

मात्रीयः

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मात्रे हितः लौ. वि.
तस्मै ...... (623) सू. से ईय प्रत्यय
मातृ + ङे + ईय अ. वि.
शेष स्वस्रीयवत्

गव्यम्

गवे हितम् लौ. वि.
तस्मै ...... (623) सू. से य प्रत्यय
गो + ङे + य अ. वि.
शेष पूर्ववत्

स्वीयम्

स्वस्मै हितम् लौ. वि.
तस्मै ...... (623) सू. से ईय प्रत्यय
स्व + ङे + ईय अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
स्व + ईय
इवर्णा ...... (451) सू. से अकार का लोप
स्व् + ईय
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर स्वीय
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
स्वीय + सि
शेष कौसुम्भवत्

624. शरीरावयवाद्यः। (7/3/37)

चतुर्थ्यन्तेभ्यः शरीरावयववाचिभ्यः हितेऽर्थे यः प्रत्ययो भवति। दन्त्यम्, कर्ण्यम्।

चतुर्थी अन्त शरीर के अवयववाची (शब्दों) से हित अर्थ में य प्रत्यय होता है।

दन्त्यम्

दन्तेभ्यः हितम् लौ. वि.
शरीरा ...... (624) सू. से य प्रत्यय
दन्त + भ्यस् + य अ. वि.
शेष स्वीयवत्

कर्ण्यम्

कर्णाभ्यां हितम् लौ. वि.
शरीरा ...... (624) सू. से य प्रत्यय
कर्ण + भ्याम् + य अ. वि.
शेष स्वीयवत्

625. अजाविभ्यां थ्यः। (7/3/39)

चतुर्थ्यन्ताभ्याम् अज, अवि — इत्येताभ्यां हितेऽर्थे थ्यः प्रत्ययो भवति। अजेभ्यो हितम् — अजथ्यम्, अविथ्यम्। नामग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणात् अजाभ्यो हितमित्यत्र तु।

चतुर्थी अन्त अज एवं अवि इन दो (शब्दों) से हित अर्थ में थ्य प्रत्यय होता है।

अजथ्यम्

अजेभ्यो हितम् लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अजावि ...... (625) सू. से थ्य प्रत्यय

अज + भ्यस् + थ्य अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अज + थ्य

वर्णों को मिलाने पर अजथ्य

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अजथ्य + सि

शेष कौसुम्भवत्

अविथ्यम्

अविभ्यो हितम् लौ. वि.

अजावि ...... (625) सू. से थ्य प्रत्यय

अवि + भ्यस् + थ्य अ. वि.

शेष अजथ्यवत्

626. मानिक्यङ्कच्तस्त्रतरतमचरट्कल्पदेश्यरूपपाशथ्येथट्थट्तिथट्प्लुक्षु। (3/2/49)

मानिनि क्यङादि च परे भाषितपुंस्कादनूङः स्त्रियाः पुंवत् स्यात्। अजथ्यम्।

मानिन्, क्यङ्, कच्, तस्, त्र, तर, तम, चरट्, कल्प, देश्य, रूप, पाश, थ्य, इथट्, थट्, तिथट् और प्लुक् (प्रत्यय) परे होने पर ऊङ् (प्रत्ययान्त) को छोड़कर भाषितपुंस्क[1] स्त्रीलिंग को पुल्लिंगवत् हो जाता है।

अजथ्यम्[2]

अजाभ्यो हितम् लौ. वि.

अजावि ...... (625) सू. से थ्य प्रत्यय

अजा + भ्यस् + थ्य अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

अजा + थ्य

मानि ...... (626) सू. से पुंवद्भाव

अज + थ्य

वर्णों को मिलाने पर अजथ्य

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

अजथ्य + सि

शेष कौसुम्भवत्

इति यादिप्रत्ययाधिकारः ।

---

1 जिस निमित्त से शब्द पुल्लिंग में प्रयुक्त होता है उसी निमित्त से यदि वही शब्द नपुंसक लिंग अथवा स्त्रीलिंग में प्रयुक्त होता है तब वह भाषितपुंस्क कहलाता है।

2 नामग्रहणे लिङ्गविशिष्टस्यापि ग्रहणम्।
नाम का ग्रहण करने पर लिङ्गविशिष्ट का भी ग्रहण होता है। इसलिए सू. 624 में दिए गए अज नाम के साथ अजा का भी ग्रहण होगा तथा सू. 624 से अजा नाम से हित अर्थ में थ्य प्रत्यय हो जाएगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यादि प्रत्ययाधिकार समाप्त ।

अथ भावकर्मार्था:

अब भाव और कर्म अर्थ अधिकार प्रारम्भ हो रहा है।

627. तस्यार्हे क्रियायां वत्। (7/3/52)

षष्ठ्यन्तादर्हेऽर्थे वत् स्यात् अर्हं चेत् क्रिया स्यात्। साधोरर्हं साधुवत् वृत्तमस्य साधोः।

षष्ठी अन्त से अर्ह (अर्थात् योग्यता) अर्थ में वत् (प्रत्यय) होता है अगर वह योग्यता क्रिया (सम्बन्धी) हो।

साधुवत् वृत्तमस्य साधोः

साधोरर्हम् लौ. वि.

तस्यार्हे ...... (627) सू. से वत् प्रत्यय

साधु + ङस् + वत् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

साधु + वत्

वर्णों को मिलाने पर साधुवत्

च्विसात्त्राडाच्तसिशसिज्वदामः (भिक्षु. 1/1/51) सू. से वत् प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

साधुवत् + सि

अव्ययस्य (294) सू. से विभ. का लुक् करने पर साधुवत् रूप सिद्ध हुआ।

628. स्यादेरिवे। (7/3/53)

स्याद्यन्तादिवार्थे वत् स्यात् तच्चेत् सादृश्यक्रियाविषयः स्यात्। अश्ववद् धावति चैत्रः, देववत् पश्यति मुनिम्।

स्यादि अन्त से इव अर्थ में वत् (प्रत्यय) होता है यदि वह (स्यादि अन्त) सादृश्य क्रिया का विषय हो।

अश्ववद् धावति चैत्रः

अश्व इव धावति चैत्रः लौ. वि.

स्यादे ...... (628) सू. से वत् प्रत्यय

अश्व + सि + वत् अ. वि.

शेष साधुवत्वत्

देववत् पश्यति मुनिम्

देवम् इव पश्यति मुनिम् लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्यादे ...... (628) सू. से वत् प्रत्यय

देव + अम् + वत् + अ. वि.

शेष साधुवत्वत्

629. तत्र। (7/3/54)

सप्तम्यन्तादिवार्थे वत् स्यात्। मथुरायामिव — मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः।

सप्तमी अन्त से इव अर्थ में वत् (प्रत्यय) होता है।

मथुरावत् पाटलिपुत्रे प्रासादाः

मथुरायामिव लौ. वि.

तत्र (629) सू. से वत् प्रत्यय

मथुरा + ङि + वत् अ. वि.

शेष साधुवत्वत्

630. तस्य। (7/3/55)

षष्ठ्यन्तादिवार्थे वत् स्यात्। चैत्रस्येव — चैत्रवत् मैत्रस्य गावः।

षष्ठी अन्त से इव अर्थ में वत् (प्रत्यय) होता है।

चैत्रवत् मैत्रस्य गावः

चैत्रस्य इव लौ. वि.

तस्य (630) सू. से वत् प्रत्यय

चैत्र + ङस् + वत् अ. वि.

शेष साधुवत्वत्

631. भावे त्वतलौ। (7/3/56)

षष्ठ्यन्ताद् भावेऽर्थे त्वतलौ स्तः। गोशब्दस्य भावः — गोत्वम्, गोता, शुक्लत्वम्, शुक्लता, कारकत्वम्, कारकता, दण्डित्वम्, दण्डिता।

षष्ठी अन्त से भाव[1] अर्थ में त्व एवं तल् प्रत्यय होते हैं।

गोत्वम्

गोशब्दस्य भावः लौ. वि.

भावे ...... (631) सू. से त्व प्रत्यय

गो + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

गोता

गोशब्दस्य भावः लौ. वि.

भावे ...... (631) सू. से तल् प्रत्यय

गो + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

शुक्लत्वम्

शुक्लस्य भावः लौ. वि.

भावे ...... (631) सू. से त्व प्रत्यय

शुक्ल + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

---

1 शब्दस्यार्थे प्रवृत्तिहेतुर्गुणो भावः।

शब्द का अर्थ में प्रवृत्ति का कारणभूत गुण भाव है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शुक्लता

शुक्लस्य भावः लौ. वि.

भावे ...... (631) सू. से तल् प्रत्यय

शुक्ल + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

कारकत्वम्

कारकस्य भावः लौ. वि.

भावे ...... (631) सू. से त्व प्रत्यय

कारक + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

कारकता

कारकस्य भावः लौ. वि.

भावे ...... (631) सू. से तल् प्रत्यय

कारक + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

दण्डित्वम्

दण्डिनः भावः लौ. वि.

भावे ...... (631) सू. से त्व प्रत्यय

दण्डिन् + ङस् + त्व अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

दण्डिन् + त्व

नाम ...... (131) सू. से दण्डिन् की पद संज्ञा

नाम्नो ...... (135) सू. से न् का लोप

दण्डि + त्व

वर्णों को मिलाने पर दण्डित्व

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

दण्डित्व + सि

शेष गोमयवत्

दण्डिता

दण्डिनः भावः लौ. वि.

भावे ...... (631) सू. से तल् प्रत्यय

दण्डिन् + ङस् + तल् अ. वि.

तद्धिताः (54) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

दण्डिन् + तल्

नाम ...... (131) सू. से दण्डिन् की पद संज्ञा

नाम्नो ...... (135) सू. से न् का लोप

दण्डि + तल्, ल् अनुबन्ध

वर्णों को मिलाने पर दण्डित

आबतः ...... (295) सू. से आप् प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

दण्डित + आप् , प् अनुबन्ध

समानानां ...... (36) सू. से अ का आ के साथ दीर्घ

दण्डिता

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

दण्डिता + सि

शेष ग्रामतावत्

632. पृथ्वादेरिमन् वा। (7/3/59)

एभ्यो भावेऽर्थे इमन् वा स्यात्।

पृथु आदि (शब्दों) से भाव अर्थ में इमन् (प्रत्यय) विकल्प से होता है।

633. पृथुमृदुभृशकृशदृढपरिवृढस्य ऋतो रः। (8/4/49)

एषामृकारस्य रेफः स्यात् इमनि ञीष्ठेयस्सु च परेषु।

पृथु, मृदु, भृश, कृश, दृढ, परिवृढ के ऋकार का रेफ होता है इमन्, ञि, इष्ठ और ईयसु (प्रत्यय) परे होने पर।

634. टेः। (8/4/44)

टेर्लोपः स्यात् इमनि ञीष्ठेयस्सु च परेषु। पृथोर्भावः — प्रथिमा। पक्षे यथाप्राप्तं पृथुत्वम्, पृथुता। एवं म्रदिमा, मृदुत्वम्, मृदुता।

टि का लोप होता है ञि, इष्ठ और ईयसु (प्रत्यय) परे होने पर।

प्रथिमा

पृथोर्भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय

पृथु + ङस् + इमन् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पृथु + इमन्

पृथु ...... (633) सू. से ऋकार को रकार

प्रथु + इमन्

अन्त्य ...... (18) सू. से उकार की टि संज्ञा

टेः (634) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप

प्रथ् + इमन्

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर प्रथिमन्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

प्रथिमन् + सि

पुंस्त्रियोः स्यमौजस् (133) सू. से सि की थुट् संज्ञा

नोपधाया नुटि चाधौ दीर्घः (196) सू. से उपधा (अ) को दीर्घ

प्रथिमान् + सि

हसेपः ...... (183) सू. से सि का लोप

प्रथिमान्

नाम्नो ...... (135) सू. से नकार का लोप करने पर प्रथिमा रूप सिद्ध हुआ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पृथुत्वम्

पृथोर्भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय

पृथु + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

पृथुता

पृथोर्भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय

पृथु + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

पक्ष में—जहां पर इमन् प्रत्यय नहीं होगा वहां—

पार्थवम्

पृथोर्भावः लौ. वि.

लघु ...... (642) सू. से अण् प्रत्यय

पृथु + ङस् + अण् अ. वि.

शेष भैक्षववत्

म्रदिमा

मृदोर्भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय

मृदु + ङस् + इमन् अ. वि.

शेष प्रथिमावत्

मृदुत्वम्

मृदोर्भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय

मृदु + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

मृदुता

मृदोर्भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय

मृदु + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

पक्ष में—जहां इमन् प्रत्यय नहीं होगा वहां—

मार्दवम्

मृदोर्भावः लौ. वि.

लघु ...... (642) सू. से अण् प्रत्यय

मृदु + ङस् + अण् अ. वि.

शेष भैक्षववत्

635. प्रियस्थिरस्फिरोरुगुरुबहुलतृप्रदीर्घह्रस्ववृद्धवृन्दारकाणामिमन्यपि प्रस्थस्फवरगरबंहत्रपद्राघह्रसवर्षवृन्दाः। (8/4/38)

प्रियादीनां यथासंख्यं प्रादयः आदेशाः स्युः यथासंभवमिमनि ओष्ठेयस्सु च परेषु।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रिय को प्र, स्थिर को स्थ, स्फिर को स्फ, ऊरु को वर, गुरु को गर, बहुल को बंह, तृप्र को त्रप, दीर्घ को द्राघ, ह्रस्व को ह्रस, वृद्ध को वर्ष, वृन्दारक को वृन्द आदेश होते हैं यथासंभव इमन्, जि, इष्ठ और ईयसु (प्रत्यय) परे होने पर।

636. नैकस्वरस्य। (8/4/45)

एकस्वरस्य टेर्लोपो न स्यात् इमनादिषु परेषु। प्रेमा, स्थिरस्य स्थेमा, ऊरोर्वरिमा, गुरोर्गरिमा, बहुलस्य बंहिमा, तृप्रस्य त्रपिमा, दीर्घस्य द्राघिमा, ह्रस्वस्य ह्रसिमा, वृद्धस्य वर्षिमा, वृन्दारकस्य वृन्दिमा।

एक स्वर वाले (शब्द) की टि का लोप नहीं होता है इमन् आदि (प्रत्यय) परे होने पर।

प्रेमा

प्रियस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय
प्रिय + ङस् + इमन् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से इमन् प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
प्रिय + इमन्
प्रियस्थिर ...... (635) सू. से प्रिय को प्र आदेश
प्र + इमन्
अन्त्य ...... (18) सू. से अकार की टि संज्ञा
टेः (634) सू. से टिसंज्ञक वर्ण के लोप की प्राप्ति किन्तु
नैक ...... (636) सू. से निषेध कर देने पर
प्र + इमन्
अवर्णस्येवर्णादावेदोदरलः (38) सू. से अकार का इकार के साथ एकार प्रेमन्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
प्रेमन् + सि
शेष प्रथिमावत्

प्रियत्वम्

प्रियस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय
प्रिय + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

प्रियता

प्रियस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय
प्रिय + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

स्थेमा

स्थिरस्य भावः लौ. वि.
वर्ण ...... (638) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय
स्थिर + ङस् + इमन् अ. वि.
शेष प्रेमावत्

स्थिरत्वम्

स्थिरस्य भावः लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वर्ण ...... (638) सू. से त्व प्रत्यय
स्थिर + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

स्थिरता

स्थिरस्य भावः लौ. वि.
वर्ण ...... (638) सू. से तल् प्रत्यय
स्थिर + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्
पक्ष में—जहां इमन् प्रत्यय नहीं होगा वहां—

स्थैर्यम्

स्थिरस्य भावः लौ. वि.
वर्ण ...... (638) सू. से ट्यण् प्रत्यय
स्थिर + ङस् + ट्यण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

वरिमा

ऊरोर्भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय
ऊरु + ङस् + इमन् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
ऊरु + इमन्
प्रिय ...... (635) सू. से ऊरु को वर आदेश
वर + इमन् , अकार उच्चारणार्थ
वर् + इमन्
अन्त्य ...... (18) सू. से अर् की टि संज्ञा
टेः (634) सू. से टिसंज्ञक वर्ण के लोप की प्राप्ति किन्तु
नैक ...... (636) सू. से निषेध
वर् + इमन्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर वरिमन्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
वरिमन् + सि
शेष प्रेमावत्

ऊरुत्वम्

ऊरोर्भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय
ऊरु + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

ऊरुता

ऊरोर्भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय
ऊरु + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

गरिमा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

गुरोर्भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय
गुरु + ङस् + इमन् अ. वि.
शेष वरिमावत्

गुरुत्वम्

गुरोर्भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय
गुरु + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

गुरुता

गुरोर्भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय
गुरु + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्
पक्ष में—जहां इमन् प्रत्यय नहीं होगा वहां—

गौरवम्

गुरोर्भावः लौ. वि.
लघु ...... (632) सू. से अण् प्रत्यय
गुरु + ङस् + अण् अ. वि.
शेष भैक्षववत्

बंहिमा

बहुलस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय
बहुल + ङस् + इमन् अ. वि.
शेष वरिमावत्

बहुलत्वम्

बहुलस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय
बहुल + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

बहुलता

बहुलस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय
बहुल + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

त्रपिमा

तृप्रस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय
तृप्र + ङस् + इमन् अ. वि.
शेष वरिमावत्

तृप्रत्वम्

तृप्रस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय
तृप्र + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

तृप्रता

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तृप्रस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय
तृप्र + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

द्राघिमा

दीर्घस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय
दीर्घ + ङस् + इमन् अ. वि.
शेष वरिमावत्

दीर्घत्वम्

दीर्घस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय
दीर्घ + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

दीर्घता

दीर्घस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय
दीर्घ + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

ह्रसिमा

ह्रस्वस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय
ह्रस्व + ङस् + इमन् अ. वि.
शेष वरिमावत्

ह्रस्वत्वम्

ह्रस्वस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय
ह्रस्व + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

ह्रस्वता

ह्रस्वस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय
ह्रस्व + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

वर्षिमा

वृद्धस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय
वृद्ध + ङस् + इमन् अ. वि.
शेष वरिमावत्

वृद्धत्वम्

वृद्धस्य भावः लौ. वि.
पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय
वृद्ध + ङस् + त्व अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष गोमयवत्

वृद्धता

वृद्धस्य भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय

वृद्ध + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

वृन्दिमा

वृन्दारकस्य भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय

वृन्दारक + ङस् + इमन् अ. वि.

शेष वरिमावत्

वृन्दारकत्वम्

वृन्दारकस्य भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय

वृन्दारक + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

वृन्दारकता

वृन्दारकस्य भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय

वृन्दारक + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

637. भूर्लोपश्चेवर्णस्य। (8/4/41)

बहोरीयसौ इमनि च परे भूरादेशः स्यात् अनयोरिवर्णस्य लोपश्च। भूमा।

बहु को भू आदेश होता है ईयसु एवं इमन् (प्रत्यय) परे होने पर और इन दोनों (प्रत्ययों) के इवर्ण का लोप हो जाता है।

भूमा

बहोर्भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय

बहु + ङस् + इमन् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

बहु + इमन्

भूर्लोप ...... (637) सू. से बहु को भू आदेश एवं इमन् के इकार का लोप

भू + मन्

वर्णों को मिलाने पर भूमन्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

भूमन् + सि

शेष प्रेमावत्

बहुत्वम्

बहोर्भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से त्व प्रत्यय

बहु + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

बहुता

बहोर्भावः लौ. वि.

पृथ्वादे ...... (632) सू. से तल् प्रत्यय

बहु + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

पक्ष में—जहां इमन् प्रत्यय नहीं होगा वहां—

बाहवम्

बहोर्भावः लौ. वि.

लघु ...... (638) सू. से अण् प्रत्यय

बहु + ङस् + अण् अ. वि.

शेष भैक्षववत्

638. वर्णदृढादिभ्यष्ट्यण् च। (7/3/60)

वर्णवाचिभ्यो दृढादिभ्यश्च भावे ट्यण् इमन् च प्रत्ययौ वा स्याताम्। शौक्ल्यम्, शुक्लिमा, शुक्लत्वम्, शुक्लता, काार्ष्ण्यम्, कृष्णिमा, कृष्णत्वम्, कृष्णता, दार्ढ्यम्, द्रढिमा, दृढत्वम्, दृढता, वैमत्यम्, विमतिमा विमतित्वम्, विमतिता इत्यादि।

वर्ण (अर्थात् रंग) वाची एवं दृढादि (शब्दों) से भाव में ट्यण् एवं इमन् प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

शौक्ल्यम्

शुक्लस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से विकल्प से ट्यण् प्रत्यय

शुक्ल + ङस् + ट्यण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

शुक्लिमा

शुक्लस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय

शुक्ल + ङस् + इमन् अ. वि.

शेष प्रथिमावत्

शुक्लत्वम्

शुक्लस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से त्व प्रत्यय

शुक्ल + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

शुक्लता

शुक्लस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से तल् प्रत्यय

शुक्ल + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

कार्ष्ण्यम्

कृष्णस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से विकल्प से ट्यण् प्रत्यय

कृष्ण + ङस् + ट्यण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कृष्णिमा

कृष्णस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय

कृष्ण + ङस् + इमन् अ. वि.

शेष प्रथिमावत्

कृष्णत्वम्

कृष्णस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से त्व प्रत्यय

कृष्ण + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

कृष्णता

कृष्णस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से तल् प्रत्यय

कृष्ण + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

दार्ढ्यम्

दृढस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से विकल्प से ट्यण् प्रत्यय

दृढ + ङस् + ट्यण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

द्रढिमा

दृढस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय

दृढ़ + ङस् + इमन् अ. वि.

शेष प्रथिमावत्

दृढत्वम्

दृढस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से त्व प्रत्यय

दृढ + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

दृढता

दृढस्य भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से तल् प्रत्यय

दृढ + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

वैमत्यम्

विमतेः भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से विकल्प से ट्यण् प्रत्यय

विमति + ङस् + ट्यण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

विमतिमा

विमतेः भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से विकल्प से इमन् प्रत्यय

विमति + ङस् + इमन् अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष प्रथिमावत्

विमतित्वम्

विमतेः भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से त्व प्रत्यय

विमति + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

विमतिता

विमतेः भावः लौ. वि.

वर्ण ...... (638) सू. से तल् प्रत्यय

विमति + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

पक्ष में — जहां ट्यण् एवं इमन् प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

वैमतम्

विमतेः भावः लौ. वि.

लघु ...... (638) सू. से अण् प्रत्यय

विमति + ङस् + अण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

639. पतिराजान्तगुणाङ्गराजादिभ्यः कर्मणि च। (7/3/61)

एभ्यः कर्मणि भावे च ट्यण् स्यात्। अधिपतेः कर्म भावो वा — आधिपत्यम्, नारपत्यम्, आधिराज्यम्, यौवराज्यम्, मौढ्यम्, वैदुष्यम्, राज्यम्, काव्यम्, वाणिज्यम् इत्यादि।

पति अन्त वाले, राज अन्त वाले, गुणाङ्गवाची[1] एवं राज आदि (शब्दों) से कर्म एवं भाव में ट्यण् (प्रत्यय) होता है।

आधिपत्यम्

अधिपतेः कर्म भावो वा लौ. वि.

पतिराजान्त ...... (639) सू. से ट्यण् प्रत्यय

अधिपति + ङस् + ट्यण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

अधिपतित्वम्

अधिपतेः कर्म भावो वा लौ. वि.

पतिराजान्त ...... (639) सू. से त्व प्रत्यय

अधिपति + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

अधिपतिता

अधिपतेः कर्म भावो वा लौ. वि.

पतिराजान्त ...... (639) सू. से तल् प्रत्यय

अधिपति + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

नारपत्यम्

नरपतेः कर्म भावो वा लौ. वि.

पतिराजान्त ...... (639) सू. से ट्यण् प्रत्यय

---

1 द्रव्याश्रयी गुणः, गुणोऽङ्गं निमित्तं येषां प्रवृत्तौ ते गुणाङ्गाः।
गुण द्रव्य के आश्रित रहता है, जिनकी प्रवृत्ति में गुण अङ्ग अर्थात् निमित्त है वे गुणाङ्ग हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

नरपति + ङस् + ट्यण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

नरपतित्वम्

नरपतेः कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से त्व प्रत्यय
नरपति + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

नरपतिता

नरपतेः कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से तल् प्रत्यय
नरपति + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

अधिराज्यम्

अधिराजस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से ट्यण् प्रत्यय
अधिराज + ङस् + ट्यण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

अधिराजत्वम्

अधिराजस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से त्व प्रत्यय
अधिराज + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

अधिराजता

अधिराजस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से तल् प्रत्यय
अधिराज + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

यौवराज्यम्

युवराजस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से ट्यण् प्रत्यय
युवराज + ङस् + ट्यण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

युवराजत्वम्

युवराजस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से त्व प्रत्यय
युवराज + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

युवराजता

युवराजस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से तल् प्रत्यय
युवराज + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

मौढ्यम्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मूढस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से ट्यण् प्रत्यय
मूढ + ङस् + ट्यण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

मूढत्वम्

मूढस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से त्व प्रत्यय
मूढ + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

मूढता

मूढस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से तल् प्रत्यय
मूढ + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

वैदुष्यम्

विदुषः कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से ट्यण् प्रत्यय
विद्वसु + ङस् + ट्यण् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
विद्वसु + ट्यण्, उकार, ट् एवं ण् अनुबन्ध
विद्वस् + य
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
वैद्वस् + य
क्वस उष मतौ च (251) सू. से वस् (क्वसु) को उष् करने पर
वैद् + उष् + य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर वैदुष्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
वैदुष्य + सि
शेष कौसुम्भवत्

विद्वत्त्वम्

विदुषः कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से त्व प्रत्यय
विद्वसु + ङस् + त्व अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
विद्वसु + त्व, उकार अनुबन्ध
क्वस्स्रंस्ध्वंस्भ्रंसनडुहां दः (207) सू. से स् का द्
विद्वद् + त्व
खसे चपाः झथानाम् (72) सू. से द् का त्
विद्वत् + त्व
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर विद्वत्त्व
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
विद्वत्त्व + सि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष कौसुम्भवत्

विद्वत्ता

विदुषः कर्म भावो वा लौ. वि.

पतिराजान्त ...... (639) सू. से तल् प्रत्यय

विद्वसु + ङस् + तल् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

विद्वसु + तल्, उकार एवं ल् अनुबन्ध

क्वस्स्रंस् ...... (207) सू. से स् का द्

विद्वद् + त

खसे ...... (72) सू. से द् को त्

विद्वत् + त

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर विद्वत्त

आबतः ...... (295) सू. से आप् प्रत्यय

विद्वत्त + आप्, प् अनुबन्ध

समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ

विद्वत्ता

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

विद्वत्ता + सि

शेष ग्रामतावत्

राज्यम्

राज्ञः कर्म भावो वा लौ. वि.

पतिराजान्त ...... (639) सू. से ट्यण् प्रत्यय

राजन् + ङस् + ट्यण् अ. वि.

शेष हास्तिकवत्

राजत्वम्

राज्ञः कर्म भावो वा लौ. वि.

पतिराजान्त ...... (639) सू. से त्व प्रत्यय

राजन् + ङस् + त्व अ. वि.

शेष दण्डित्ववत्

राजता

राज्ञः कर्म भावो वा लौ. वि.

पतिराजान्त ...... (639) सू. से तल् प्रत्यय

राजन् + ङस् + तल् अ. वि.

शेष दण्डितावत्

काव्यम्

कवेः कर्म भावो वा लौ. वि.

पतिराजान्त ...... (639) सू. से ट्यण् प्रत्यय

कवि + ङस् + ट्यण् अ. वि.

शेष कौसुम्भवत्

कवित्वम्

कवेः कर्म भावो वा लौ. वि.

पतिराजान्त ...... (639) सू. से त्व प्रत्यय

कवि + ङस् + त्व अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष गोमयवत्

कविता

कवेः कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से तल् प्रत्यय
कवि + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

वाणिज्यम्

वणिजः कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से ट्यण् प्रत्यय
वणिज् + ङस् + ट्यण् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
वणिज् + ट्यण्
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
वाणिज् + ट्यण्, ट् एवं ण् अनुबन्ध
वाणिज् + य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर वाणिज्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
वाणिज्य + सि
शेष कौसुम्भवत्

वणिक्त्वम्

वणिजः कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से त्व प्रत्यय
वणिज् + ङस् + त्व अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
वणिज् + त्व
चजोः कगौ (245) सू. से ज् का ग्
वणिग् + त्व
खसे ...... (72) सू. से ग् का क्
वणिक् + त्व
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर
वणिक्त्व
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
वणिक्त्व + सि
शेष कौसुम्भवत्

वणिक्ता

वणिजः कर्म भावो वा लौ. वि.
पतिराजान्त ...... (639) सू. से तल् प्रत्यय
वणिज् + ङस् + तल् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
वणिज् + तल्, ल् अनुबन्ध
चजोः ...... (245) सू. से ज् का ग्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वणिग् + त

खसे ...... (72) सू. से ग् का क्

वणिक् + त

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर

वणिक्त

आबतः ...... (295) सू. से आप् प्रत्यय

वणिक्त + आप्, प् अनुबन्ध

समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ

वणिक्ता

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

वणिक्ता + सि

शेष ग्रामतावत्

640. सखिदूतवणिग्भ्यो यः। (7/3/64)

सखि, दूत, वणिज् — इत्येतेभ्यस्तस्य भावे कर्मणि च यः प्रत्ययो भवति। सख्युः कर्म भावो वा — सख्यम्, दूत्यम्, वणिज्यम्।

सखि, दूत एवं वणिज् इन (शब्दों) से उसके भाव एवं कर्म में य प्रत्यय होता है।

सख्यम्

सख्युः कर्म भावो वा लौ. वि.

सखि ...... (640) सू. से य प्रत्यय

सखि + ङस् + य अ. वि.

शेष स्वीयवत्

सखित्वम्

सख्युः कर्म भावो वा लौ. वि.

सखि ...... (640) सू. से त्व प्रत्यय

सखि + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

सखिता

सख्युः कर्म भावो वा लौ. वि.

सखि ...... (640) सू. से तल् प्रत्यय

सखि + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

दूत्यम्

दूतस्य कर्म भावो वा लौ. वि.

सखि ...... (640) सू. से य प्रत्यय

दूत + ङस् + य अ. वि.

शेष स्वीयवत्

दूतत्वम्

दूतस्य कर्म भावो वा लौ. वि.

सखि ...... (640) सू. से त्व प्रत्यय

दूत + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

दूतता

दूतस्य कर्म भावो वा लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सखि ...... (640) सू. से तल् प्रत्यय

दूत + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

वणिज्यम्

वणिजः कर्म भावो वा लौ. वि.

सखि ...... (640) सू. से य प्रत्यय

वणिज् + ङस् + य अ. वि.

शेष गोमयवत्

वणिक्त्वम्

वणिजः कर्म भावो वा लौ. वि.

सखि ...... (640) सू. से त्व प्रत्यय

वणिज् + ङस् + त्व अ. वि.

शेष पूर्ववत्

वणिक्ता

वणिजः कर्म भावो वा लौ. वि.

सखि ...... (640) सू. से तल् प्रत्यय

वणिज् + ङस् + तल् अ. वि.

शेष पूर्ववत्

641. युवादेरण्। (7/3/68)

युवादिभ्यः शब्देभ्यस्तस्य भावे कर्मणि च अण् प्रत्ययो भवति। यौवनम्, स्थाविरम्।

युवादि शब्दों से उसके भाव और कर्म में अण् प्रत्यय होता है।

यौवनम्

यूनः कर्म भावो वा लौ. वि.

युवादे ...... (641) सू. से अण् प्रत्यय

युवन् + ङस् + अण् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

युवन् + अण्, ण् अनुबन्ध

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

यौवन् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर यौवन

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

यौवन + सि

शेष कौसुम्भवत्

युवत्वम्

यूनः कर्म भावो वा लौ. वि.

युवादे ...... (641) सू. से त्व प्रत्यय

युवन् + ङस् + त्व अ. वि.

शेष दण्डित्ववत्

युवता

यूनः कर्म भावो वा लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

युवादे ...... (641) सू. से तल् प्रत्यय
युवन् + ङस् + तल् अ. वि.
शेष दण्डितावत्

स्थाविरम्

स्थविरस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
युवादेरण् (641) सू. से अण् प्रत्यय
स्थविर + ङस् + अण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

स्थविरत्वम्

स्थविरस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
युवादे ...... (641) सू. से त्व प्रत्यय
स्थविर + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

स्थविरता

स्थविरस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
युवादे ...... (641) सू. से तल् प्रत्यय
स्थविर + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

642. लघुपूर्वाद् य्वृवर्णात्। (7/3/72)

लघ्वक्षरपूर्वादिवर्णान्ताद् उवर्णान्ताद् ऋवर्णान्ताच्च कर्मणि भावे चाण् स्यात्। मुनेः कर्म भावो वा—मौनम्, पाटवम्, पैत्रम्। अधिकारत्वात् पक्षे सर्वत्र त्वतलौ।

लघु अक्षर पूर्व में है ऐसे इवर्णान्त, उवर्णान्त एवं ऋवर्णान्त से कर्म एवं भाव में अण् (प्रत्यय) होता है। (त्व एवं तल् प्रत्ययों का अधिकार होने से पक्ष में सर्वत्र त्व, तल् प्रत्यय भी हुए हैं।)

मौनम्

मुनेः कर्म भावो वा लौ. वि.
लघु ...... (642) सू. से अण् प्रत्यय
मुनि + ङस् + अण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

मुनित्वम्

मुनेः कर्म भावो वा लौ. वि.
लघु ...... (642) सू. से त्व प्रत्यय
मुनि + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

मुनिता

मुनेः कर्म भावो वा लौ. वि.
लघु ...... (642) सू. से तल् प्रत्यय
मुनि + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

पाटवम्

पटोः कर्म भावो वा लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

लघु ...... (642) सू. से अण् प्रत्यय

पटु + ङस् + अण् अ. वि.

शेष भैक्षववत्

पटुत्वम्

पटोः कर्म भावो वा लौ. वि.

लघु ...... (642) सू. से त्व प्रत्यय

पटु + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

पटुता

पटोः कर्म भावो वा लौ. वि.

लघु ...... (642) सू. से तल् प्रत्यय

पटु + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

पैत्रम्

पितुः कर्म भावो वा लौ. वि.

लघु ...... (642) सू. से अण् प्रत्यय

पितृ + ङस् + अण् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से अण् प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (519) सू. से विभ. का लुक्

पितृ + अण्

वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि

पैतृ + अण्, ण् अनुबन्ध

इवर्णा ...... (29) सू. से ऋ का र्

पैत्र् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पैत्र

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पैत्र + सि

शेष कौसुम्भवत्

पितृत्वम्

पितुः कर्म भावो लौ. वि.

लघु ...... (642) सू. से त्व प्रत्यय

पितृ + ङस् + त्व अ. वि.

शेष गोमयवत्

पितृता

पितुः कर्म भावो वा लौ. वि.

लघु ...... (642) सू. से तल् प्रत्यय

पितृ + ङस् + तल् अ. वि.

शेष ग्रामतावत्

643. ऋत्विग्भ्य ईयः। (7/3/77)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ऋत्विग्विशेषवाचिभ्यस्तस्य भावे कर्मणि च ईयः प्रत्ययो भवति। मैत्रावरुणस्य कर्म भावो वा — मैत्रावरुणीयम्।

ऋत्विक् विशेष (अर्थात् यजमान) वाची शब्दों से उसके भाव और कर्म में ईय प्रत्यय होता है।

मैत्रावरुणीयम्

मैत्रावरुणस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
ऋत्विग् ...... (643) सू. से ईय प्रत्यय
मैत्रावरुण + ङस् + ईय अ. वि.
शेष स्वीयवत्

मैत्रावरुणत्वम्

मैत्रावरुणस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
ऋत्विग् ...... (643) सू. से त्व प्रत्यय
मैत्रावरुण + ङस् + त्व अ. वि.
शेष गोमयवत्

मैत्रावरुणता

मैत्रावरुणस्य कर्म भावो वा लौ. वि.
ऋत्विग् ...... (643) सू. से तल् प्रत्यय
मैत्रावरुण + ङस् + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

644. ब्रह्मणस्त्वः। (7/3/78)

ऋत्विग्वाचिनो ब्रह्मन्शब्दात् तस्य भावे कर्मणि च त्वः प्रत्ययो भवति। पूर्वापवादः। ब्रह्मणो भावः कर्म वा — ब्रह्मत्वम्।

ऋत्विग् (अर्थात् यजमान) वाची ब्रह्मन् शब्द से उसके भाव और कर्म में त्व प्रत्यय होता है। (यह सू. 643 सू. का अपवाद है।)

ब्रह्मत्वम्

ब्रह्मणः कर्म भावो वा लौ. वि.
ऋत्विग् ...... (643) सू. से ईय की प्राप्ति उसे रोककर
ब्रह्मणस्त्वः (644) सू. से त्व प्रत्यय
ब्रह्मन् + ङस् + त्व अ. वि.
शेष दण्डित्ववत्

इति भावकर्मार्थाः ।
भाव एवं कर्म अर्थ अधिकार समाप्त ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ क्षेत्राद्यर्थका:

अब क्षेत्रादि अर्थक अधिकार प्रारम्भ हो रहा है।

645. क्षेत्रे[1] शाकटशाकिनौ। (7/3/79)

षष्ठ्यन्तात् क्षेत्रेऽर्थे शाकट, शाकिन — इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः। इक्षूणां क्षेत्रम् — इक्षुशाकटम् , इक्षुशाकिनम् , शाकशाकटम् , शाकशाकिनम् ।

षष्ठी अन्त से क्षेत्र अर्थ में शाकट और शाकिन ये दो प्रत्यय होते हैं।

इक्षुशाकटम्

इक्षूणां क्षेत्रम् लौ. वि.

क्षेत्रे ...... (645) सू. से शाकट प्रत्यय

इक्षु + आम् + शाकट अ. वि.

शेष गोमयवत्

इक्षुशाकिनम्

इक्षूणां क्षेत्रम् लौ. वि.

क्षेत्रे ...... (645) सू. से शाकिन प्रत्यय

इक्षु + आम् + शाकिन अ. वि.

शेष गोमयवत्

---

1 क्षेत्रं धान्यादीनामुत्पत्त्याधारभूमिः।

धान्य आदि के उत्पन्न होने की आधारभूमि को क्षेत्र कहते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शाकशाकटम्

शाकानां क्षेत्रम् लौ. वि.
क्षेत्रे ...... (645) सू. से शाकट प्रत्यय
शाक + आम् + शाकट अ. वि.
शेष गोमयवत्

शाकशाकिनम्

शाकानां क्षेत्रम् लौ. वि.
क्षेत्रे ...... (645) सू. से शाकिन प्रत्यय
शाक + आम् + शाकिन अ. वि.
शेष गोमयवत्

646. तेन वित्ते चञ्चुचणौ। (7/4/16)

तृतीयान्ताद्वित्तेऽर्थे चञ्चुचणौ स्तः। विद्यया वित्तो ज्ञातः — विद्याचञ्चुः, विद्याचणः।

तृतीया अन्त से वित्त (अर्थात् ज्ञात) अर्थ में चञ्चु एवं चण प्रत्यय होते हैं।

विद्याचञ्चुः

विद्यया वित्तः (ज्ञातः) लौ. वि.
तेन ...... (646) सू. से चञ्चु प्रत्यय
विद्या + टा + चञ्चु अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

विद्याचणः

विद्यया वित्तः (ज्ञातः) लौ. वि.
तेन ...... (646) सू. से चण प्रत्यय
विद्या + टा + चण अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

647. अवेः संघातविस्तारयोः कटपटौ। (7/4/25)

अविशब्दात् षष्ठ्यन्तात् संघाते विस्तारे चार्थे यथासंख्यं कट, पट — इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः। अवीनां संघातः — अविकटः, अवीनां विस्तारः — अविपटः।

षष्ठी अन्त अवि शब्द से संघात (अर्थात् समूह) एवं विस्तार (अर्थात् फैलाव) अर्थ में क्रमशः कट एवं पट ये दो प्रत्यय होते हैं।

अविकटः

अवीनां संघातः लौ. वि.
अवेः ...... (647) सू. से कट प्रत्यय
अवि + आम् + कट अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

अविपटः

अवीनां विस्तारः लौ. वि.
अवेः ...... (647) सू. से पट प्रत्यय
अवि + आम् + पट अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

648. तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतः। (7/4/31)

प्रथमान्तेभ्यस्तारकादिभ्यः षष्ठ्यर्थे इतः स्यात् तत् प्रथमान्तं सञ्जातं चेत् स्यात्। तारकाः सञ्जाता अस्य — तारकितं नभः, पुष्पितस्तरुः, बुभुक्षितः, पिपासितः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रथमा अन्त तारका आदि (शब्दों) से षष्ठी अर्थ में इत (प्रत्यय) होता है यदि वह प्रथमान्त (पदार्थ) सञ्जात (अर्थात् उत्पन्न हो गया) हो।

तारकितं नभः

तारकाः सञ्जाता अस्य लौ. वि.
तदस्य ...... (648) सू. से इत प्रत्यय
तारका + जस् + इत अ. वि.
शेष स्वीयवत्

पुष्पितस्तरुः

पुष्पाणि सञ्जातानि यस्य लौ. वि.
तदस्य ...... (648) सू. से इत प्रत्यय
पुष्प + जस् + इत अ. वि.
शेष कुलीनवत्

बुभुक्षितः

बुभुक्षा सञ्जाता अस्य लौ. वि.
तदस्य ...... (648) सू. से इत प्रत्यय
बुभुक्षा + सि + इत अ. वि.
शेष कुलीनवत्

पिपासितः

पिपासा सञ्जाता अस्य लौ. वि.
तदस्य ...... (648) सू. से इत प्रत्यय
पिपासा + सि + इत अ. वि.
शेष कुलीनवत्

649. प्रमाणान्मात्रट्। (7/4/33)

प्रथमान्तात् प्रमाणवाचिनः[1] षष्ठ्यर्थे मात्रट् स्यात्। जानुनी प्रमाणमस्य — जानुमात्रं जलम्, जानुमात्री परिखा, रज्जुमात्री भूमिः।

प्रथमा अन्त प्रमाणवाची (शब्दों) से षष्ठी अर्थ में मात्रट् (प्रत्यय) होता है।

जानुमात्रं जलम्

जानुनी प्रमाणमस्य लौ. वि.
प्रमाणान् ...... (649) सू. से मात्रट् प्रत्यय
जानु + औ + मात्रट् अ. वि.
शेष गोमयवत्

जानुमात्री परिखा

जानुनी प्रमाणमस्याः लौ. वि.
प्रमाणान् ...... (649) सू. से मात्रट् प्रत्यय
जानु + औ + मात्रट् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
जानु + मात्रट्, ट् अनुबन्ध

---

1 आयाममानं प्रमाणम्। तद् द्विविधं — ऊर्ध्वमानं तिर्यग्मानं च।
विस्तार को मापना प्रमाण है। वह दो प्रकार का है — (क) ऊंचाई में मापना (ख) लम्बाई-चौडाई में मापना।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वर्णों को मिलाने पर जानुमात्र
मुख्यात् ...... (306) सू. से ईप् प्रत्यय
जानुमात्र + ईप्, प् अनुबन्ध
ईप्यत: (307) सू. से अकार का लोप
जानुमात्् + ई
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर जानुमात्री
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
जानुमात्री + सि
शेष पितामहीवत्

रज्जुमात्री भूमिः

रज्जुः प्रमाणमस्याः लौ. वि.
प्रमाणान् ...... (649) सू. से मात्रट् प्रत्यय
रज्जु + सि + मात्रट् अ. वि.
शेष जानुमात्रीवत्

650. ऊर्ध्वं दघ्नड्द्वयसटौ। (7/4/35)

ऊर्ध्वप्रमाणवाचिनो दघ्नड्द्वयसटौ वा स्तः। ऊरुः प्रमाणमस्य — ऊरुदघ्नम्, ऊरुद्वयसम्, ऊरुमात्रं वा जलम्। ऊर्ध्वमिति किम् — रज्जुमात्री भूमिः।

ऊर्ध्व प्रमाणवाची शब्दों से दघ्नट् एवं द्वयसट् (प्रत्यय) विकल्प से होते हैं।

ऊरुदघ्नम् जलम्

ऊरुः प्रमाणमस्य लौ. वि.
प्रमाणान् ...... (649) सू. से मात्रट् प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
ऊर्ध्वं ...... (650) सू. से दघ्नट् प्रत्यय
ऊरु + सि + दघ्नट् अ. वि.
शेष गोमयवत्

ऊरुद्वयसम् जलम्

ऊरुः प्रमाणमस्य लौ. वि.
प्रमाणान् ...... (649) सू. से मात्रट् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
ऊर्ध्वं ...... (650) सू. से द्वयसट् प्रत्यय
ऊरु + सि + द्वयसट् अ. वि.
शेष गोमयवत्

पक्ष में — जहां पर दघ्नट् एवं द्वयसट् प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

ऊरुमात्रं जलम्

ऊरुः प्रमाणमस्य लौ. वि.
प्रमाणान् ...... (649) सू. से मात्रट् प्रत्यय
ऊरु + सि + मात्रट् अ. वि.
शेष गोमयवत्

ऊर्ध्वप्रमाणवाची (शब्दों) से दघ्नट् एवं द्वयसट् प्रत्यय होंगे ऐसा क्यों? रज्जुमात्री भूमिः। प्रस्तुत उदाहरण में रज्जु शब्द ऊर्ध्वप्रमाणवाची न होकर तिर्यग्प्रमाणवाची है अतः ऊर्ध्वं ...... (650) सू. से दघ्नट् एवं द्वयसट् प्रत्यय नहीं होंगे।

रज्जुमात्री भूमिः

रज्जुः प्रमाणमस्याः लौ. वि.
प्रमाणान् ...... (649) सू. से मात्रट् प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

रज्जु + सि + मात्रट् अ. वि.

शेष पूर्ववत्

651. इदं किमोऽतुरिय्किय् चास्य। (7/4/41)

आभ्यां मानवृत्तिभ्यां[1] मेयेऽर्थे अतुः स्यात् अनयोरिय्कियादेशौ च। इदं मानमस्य — इयान् पटः। किं मानमस्य — कियान् पटः।

मानवाची इदम् एवं किम् शब्द से मापने अर्थ में अतु (प्रत्यय) होता है और इन दोनों (इदम् एवं किम्) को (क्रमशः) इय् एवं किय् आदेश होते हैं।

इयान् पटः

इदं मानमस्य लौ. वि.

इदं ...... (651) सू. से अतु प्रत्यय

इदम् + सि + अतु अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

इदम् + अतु

इदं ...... (651) सू. से इदम् को इय् आदेश

इय् + अतु, उकार अनुबन्ध

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर इयत्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

इयत् + सि

अत्वसो ...... (251) सू. से उपधा को दीर्घ

इयात् + सि

पुंस्त्रियोः स्यमौजस् (133) सू. से सि की थुट् संज्ञा

मिदन्त्यस्वरात्परः (195) सू. की सहायता से

उदृदितो नुम् (249) सू. से नुम् का आगम

इयानुमत् + सि, म् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ

इयान्त् + सि

हसेपः ...... (183) सू. से सि का लोप इयान्त्

संयोगस्य (206) सू. से संयोग के अन्त का लोप करने पर इयान् रूप सिद्ध हुआ।

कियान् पटः

किं मानमस्य लौ. वि.

इदं ...... (651) सू. से अतु प्रत्यय

किम् + सि + अतु अ. वि.

शेष इयान्वत्

652. यत्तदेतदो डावट् च। (7/4/42)

---

1 चतुर्विधं मानं — प्रमाणं, परिमाणः, उन्मानः, संख्या च।

मापने के चार प्रकार हैं —

(क) प्रमाण — कपड़े आदि का मापना जैसे कियान् पटः, इयान् पटः।

(ख) परिमाण — धान्य आदि का मापना जैसे कियद्धान्यं, इयद्धान्यम्।

(ग) उन्मान — सोने आदि का मापना जैसे इयत्सुवर्णं, कियत्सुवर्णम्।

(घ) संख्या — गिनना जैसे इयन्तो गुणिनः, कियन्तो गुणिनः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एभ्यः प्रथमान्तेभ्यो मानवृत्तिभ्यः षष्ठ्यर्थे अतुः स्यात् तस्य च डावडागमः। यत्तदेतद्वा प्रमाणमस्य—यावान्, तावान्, एतावान् वा पटः।

प्रथमा अन्त मानवाची यद्, तद्, एतद् (शब्दों) से षष्ठी अर्थ में अतु (प्रत्यय) होता है और उस (अतु प्रत्यय) को डावट् का आगम होता है।

यावान् पटः

यत् प्रमाणमस्य लौ. वि.
यत्तदे ...... (652) सू. से अतु प्रत्यय
यद् + सि + अतु अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
यद् + अतु
आद्यन्तौ ...... (70) सू. की सहायता से
यत्तदे ...... (652) सू. से अतु को डावट् का आगम
यद् + डावट् + अतु
अन्त्य ...... (18) सू. से अद् की टि संज्ञा
डिति ...... (146) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप
य् + डावट् + अतु, ड्, ट् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
य् + आव् + अत्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर यावत्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
यावत् + सि
शेष इयान्वत्

तावान् पटः

तत् प्रमाणमस्य लौ. वि.
यत्तदे ...... (652) सू. से अतु प्रत्यय
तद् + सि + अतु अ. वि.
शेष यावान्वत्

एतावान् पटः

एतत् प्रमाणमस्य लौ. वि.
यत्तदे ...... (652) सू. से अतु प्रत्यय
एतद् + सि + अतु अ. वि.
शेष यावान्वत्

653. यत्तत्किमः संख्याया डतिर्वा। (7/4/43)

संख्यारूपमानवृत्तिभ्यो यदादिभ्यः प्रथमान्तेभ्यः षष्ठ्यर्थे डतिर्वा स्यात्। या, सा, का संख्या मानमेषाम्—यति, तति, कति। पक्षे यावन्तः, तावन्तः, कियन्तः।

प्रथमान्त संख्यारूप मानवाची यद्, तद्, किम् (शब्दों) से षष्ठी अर्थ में डति[1] (प्रत्यय) विकल्प से होता है।

यति

या संख्या मानमेषाम् लौ. वि.

---

1 डति प्रत्ययान्त शब्दों के रूप बहुवचन में चलते हैं।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यत्तदे ...... (652) सू. से अतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
यत्तत् ...... (653) सू. से विकल्प से डति प्रत्यय
यद् + सि + डति अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
यद् + डति, ड् अनुबन्ध
यद् + अति
अन्त्य ...... (18) सू. से अद् की टि संज्ञा
डिति ...... (146) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप
य् + अति
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर यति
प्र. वि. के ब. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय
यति + जस्
जस्शसोर्डतिष्णो लुक् (156) सू. से जस् का लुक् कर देने पर यति रूप सिद्ध हुआ।
पक्ष में—जहां डति प्रत्यय नहीं होगा वहां—

यावन्तः

या संख्या मानमेषाम् लौ. वि.
यत्तदे ...... (652) सू. से अतु प्रत्यय
यद् + सि + अतु अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
यद् + अतु
आद्यन्तौ ...... (70) सू. की सहायता से
यत्तदे ...... (652) सू. से अतु को डावट् का आगम
यद् + डावट् + अतु, ड्, ट् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
यद् + आव + अत्
अन्त्य ...... (18) सू. से अद् की टि संज्ञा
डिति ...... (146) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप
य् + आव् + अत्
अदेतो ...... (102) सू. से अकार का लोप
य् + आव् + अत्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर यावत्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय
यावत् + जस्
मिदन्त्य ...... (195) सू. की सहायता से
उदृदितो ...... (249) सू. से अंतिम स्वर से परे नुम् का आगम
यावनुमत् + जस्, म्, ज् अनुबन्ध एवं उकार उच्चारणार्थ
यावन्त् + अस्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर यावन्तस्
स्रोर्वि ...... (89) सू. से सकार का विसर्ग करने पर यावन्तः रूप सिद्ध हुआ।

तति

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सा संख्या मानमेषाम् लौ. वि.
यत्तदे ...... (652) सू. से अतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
यत्तत् ...... (653) सू. से विकल्प से डति प्रत्यय
तद् + सि + डति अ. वि.
शेष यतिवत्
पक्ष में— जहां डति प्रत्यय नहीं होगा वहां—

तावन्तः

सा संख्या मानमेषाम् लौ. वि.
यत्तदे ...... (652) सू. से अतु प्रत्यय
तद् + सि + अतु अ. वि.
शेष यावन्तवत्

कति

का संख्या मानमेषाम् लौ. वि.
इदं ...... (651) सू. से अतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
यत्तत् ...... (653) सू. से विकल्प से डति प्रत्यय
किम् + सि + डति अ. वि.
शेष यतिवत्
पक्ष में— जहां डति प्रत्यय नहीं होगा वहां—

कियन्तः

का संख्या मानमेषाम् लौ. वि.
यत्तदे ...... (652) सू. से अतु प्रत्यय
किम् + सि + अतु अ. वि.
शेष यावन्तवत्

654. अवयवात्तयट्। (7/4/44)

संख्यावाचिनः प्रथमान्तादवयवे वर्तमानात् षष्ठ्यर्थे तयट् स्यात्।

अवयव में रहे हुए प्रथमान्त संख्यावाची से षष्ठी अर्थ में तयट्[1] प्रत्यय होता है।

655. ह्रस्वान्नामिनस्ते। (2/2/36)

ह्रस्वान्नामिनः परस्य सस्य षः स्यात् तादौ तद्धिते। चत्वारोऽवयवा अस्य स चतुष्टयः, एवं पञ्चतयो यमः, दशतयो धर्मः, द्वादशतयः सिद्धान्तः।

ह्रस्व नामी से परे स् का ष् हो जाता है तादि (अर्थात् त् आदि में है जिसके ऐसे) तद्धित विषय में।

चतुष्टयः

चत्वारोऽवयवा अस्य सः लौ. वि.
अवयवा ...... (654) सू. से तयट् प्रत्यय
चतुर् + जस् + तयट् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
चतुर् + तयट्, ट् अनुबंध
नाम ...... (131) सू. से चतुर् नाम की पद संज्ञा

---

1 तयट्, अयट्, डट्, तमट्, मट् एवं थट् प्रत्ययों में ट् अनुबंध है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्रोर्वि ...... (89) सू. से र् का विसर्ग

चतुः + तय

विसर्गस्य ...... (82) सू. से विसर्ग का स्

चतुस् + तय

ह्रस्वा ...... (655) सू. से स् का ष्

चतुष् + तय

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर चतुष्तय

ष्टुभिः ष्टुः (65) सू. से त् का ट् करने पर चतुष्टय

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

चतुष्टय + सि

शेष शैववत्

पञ्चतयः यमः

पञ्च अवयवा अस्य सः लौ. वि.

अवयवा ...... (654) सू. से तयट् प्रत्यय

पञ्चन् + जस् + तयट् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पञ्चन् + तयट्, ट् अनुबन्ध

नाम ...... (131) सू. से पञ्चन् की पद संज्ञा

नाम्नो ...... (135) सू. से नकार का लोप

पञ्च + तय

वर्ण सम्मेलन करने पर पञ्चतय

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पञ्चतय + सि

शेष शैववत्

दशतयः धर्मः

दश अवयवा अस्य सः लौ. वि.

अवयवा ...... (654) सू. से तयट् प्रत्यय

दशन् + जस् + तयट् अ. वि.

शेष पञ्चतयवत्

द्वादशतयः सिद्धान्तः

द्वादश अवयवा अस्य सः लौ. वि.

अवयवा ...... (654) सू. से तयट् प्रत्यय

द्वादशन् + जस् + तयट् अ. वि.

शेष पञ्चतयवत्

656. द्वित्रिभ्यामयड् वा। (7/4/45)

द्वि, त्रि—इत्येताभ्याम् अवयववृत्तिभ्यां षष्ठ्यर्थे अयट् प्रत्ययो वा भवति। द्वौ अवयवौ— द्वयम्, द्वितयं वा तपः, त्रयम्, त्रितयं वा जगत्।

अवयव में रहे हुए द्वि एवं त्रि (शब्दों) से षष्ठी अर्थ में अयट् प्रत्यय विकल्प से होता है।

द्वयं तपः

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

द्वौ अवयवौ अस्य तत् लौ. वि.
अवयवा ...... (654) सू. से तयट् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
द्वित्रि ...... (656) सू. से विकल्प से अयट् प्रत्यय
द्वि + औ + अयट् अ. वि.
शेष स्वीयवत्
पक्ष में — जहां अयट् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

द्वितयं तपः

द्वौ अवयवौ अस्य तत् लौ. वि.
अवयवा ...... (654) सू. से तयट् प्रत्यय
द्वि + औ + तयट् अ. वि.
शेष गोमयवत्

त्रयं जगत्

त्रयः अवयवा अस्य तत् लौ. वि.
अवयवा ...... (654) सू. से तयट् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
द्वित्रि ...... (656) सू. से विकल्प से अयट् प्रत्यय
त्रि + जस् + अयट् अ. वि.
शेष स्वीयवत्
पक्ष में — जहां अयट् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

त्रितयं जगत्

त्रयः अवयवा अस्य तत् लौ. वि.
अवयवा ...... (654) सू. से तयट् प्रत्यय
त्रि + जस् + तयट् अ. वि.
शेष गोमयवत्

657. संख्यापूरणे डट्। (7/4/48)

संख्यावाचिनः संख्या पूर्यते येनेत्यर्थे डट् स्यात्। एकादशानां पूरणः — एकादशः, द्वादशः, त्रयोदशी, चतुर्दशी।

जिससे संख्या की पूर्ति की जाती है वह संख्यापूरण है। संख्यावाची (शब्दों) से संख्यापूरण अर्थ में डट् प्रत्यय होता है।

एकादशः

एकादशानां पूरणः लौ. वि.
संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय
एकादशन् + आम् + डट् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
एकादशन् + डट्, ड् एवं ट् अनुबन्ध
एकादशन् + अ
अन्त्य ...... (18) सू. से अन् की टि संज्ञा
डिति टेः (146) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप
एकादश् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर एकादश
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एकादश + सि
शेष शैववत्

द्वादशः

द्वादशानां पूरणः लौ. वि.
संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय
द्वादशन् + आम् + डट् अ. वि.
शेष एकादशवत्

त्रयोदशी

त्रयोदशानां पूरणी लौ. वि.
संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय
द्वादशन् + आम् + डट् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
त्रयोदशन् + डट्, ड् एवं ट् अनुबन्ध
अन्त्य ...... (18) सू. से अन् की टि संज्ञा
नो ...... (406) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप
त्रयोदश् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर त्रयोदश
मुख्यात् ...... (306) सू. से ईप् प्रत्यय
त्रयोदश + ईप्, प् अनुबन्ध
ईप्यतः (307) सू. से अकार का लोप
त्रयोदश् + ई
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर त्रयोदशी
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
त्रयोदशी + सि
शेष पितामहीवत्

चतुर्दशी

चतुर्दशानां पूरणी लौ. वि.
संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय
चतुर्दशन् + आम् + डट् अ. वि.
शेष त्रयोदशीवत्

658. विंशत्यादेर्वा तमट्। (7/4/49)

विंशत्यादे संख्यायाः संख्यापूरणे तमट् प्रत्ययो वा भवति। विंशतेः पूरणः— विंशतितमः। पक्षे डटि।

विंशति आदि संख्यावाची (शब्दों) से संख्यापूरण अर्थ में तमट् प्रत्यय विकल्प से होता है। (पक्ष में डट् प्रत्यय होता है।)

विंशतितमः

विंशतेः पूरणः लौ. वि.
संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
विंशत्या ...... (658) सू. से विकल्प से तमट् प्रत्यय
विंशति + ङस् + तमट् अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष भ्रातृव्यवत्

पक्ष में — जहां तमट् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

659. विंशतेस्तेर्डिति । (8/4/68)

विंशतेस्तेर्लोपः स्यात् डिति तद्धिते । विंशः, त्रिंशत्तमः, त्रिंशः ।

विंशति की ति का लोप होता है डित् तद्धित विषय में।

विंशः

विशतेः पूरणः लौ. वि.

संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय

विंशति + ङस् + डट् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

विंशति + डट्

विंशते ...... (659) सू. से ति का लोप

विंश + डट्, ड् एवं ट् अनुबन्ध

विंश + अ

अन्त्य ...... (18) सू. से अ की टि संज्ञा

डिति ...... (146) सू. से टिसंज्ञक वर्ण का लोप

विंश् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर विंश

प्र. वि. की ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

विंश + सि

शेष शैववत्

त्रिंशत्तमः

त्रिंशतः पूरणः लौ. वि.

संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

विंशत्या ...... (658) सू. से विकल्प से तमट् प्रत्यय

त्रिंशत् + ङस् + तमट् अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

पक्ष में — जहां तमट् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

त्रिंशः

त्रिंशतः पूरणः लौ. वि.

संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय

त्रिंशत् + ङस् + डट् अ. वि.

शेष मातुलवत्

660. नो मट् । (7/4/52)

असंख्यादेर्नान्तसंख्यायाः संख्यापूरणे मट् स्यात् । पञ्चमः, सप्तमः, अष्टमः, नवमः, दशमः । असंख्यादेरिति किम् — एकादशः, द्वादशः ।

संख्या जिसके आदि में नहीं है ऐसे नान्त संख्यावाची से संख्यापूरण (अर्थ) में मट् प्रत्यय होता है।

पञ्चमः

पञ्चानां पूरणः लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
नो ...... (660) सू. से मट् प्रत्यय
पञ्चन् + आम् + मट् अ. वि.
शेष पञ्चतयवत्

सप्तम:

सप्तानां पूरण: लौ. वि.
संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
नो ...... (660) सू. से मट् प्रत्यय
सप्तन् + आम् + मट् अ. वि.
शेष पञ्चतयवत्

अष्टम:

अष्टानां पूरण: लौ. वि.
संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
नो ...... (660) सू. से मट् प्रत्यय
अष्टन् + आम् + मट् अ. वि.
शेष पञ्चतयवत्

नवम:

नवानां पूरण: लौ. वि.
संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
नो ...... (660) सू. से मट् प्रत्यय
नवन् + आम् + मट् अ. वि.
शेष पञ्चतयवत्

दशम:

दशानां पूरण: लौ. वि.
संख्या ...... (657) सू. से डट् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
नो ...... (600) सू. से मट् प्रत्यय
दशन् + आम् + मट् अ. वि.
शेष पञ्चतयवत्

संख्या आदि में न हो ऐसा क्यों? एकादशन् तथा द्वाद्वशन् शब्दों में दशन् से पूर्व एक एवं द्वि संख्या जुड़ी हुई है अत: मट् प्रत्यय नहीं होगा। एकादश:, द्वादश: रूप 657 सू. में सिद्ध कर चुके हैं।

661. द्वेस्तीय:। (7/4/55)

द्विशब्दात् संख्यापूरणे तीय: प्रत्ययो भवति। द्वयो: पूरण:— द्वितीय:।

द्वि शब्द से संख्यापूरण अर्थ में तीय प्रत्यय होता है।

द्वितीय:

द्वयो: पूरण: लौ. वि.
द्वेस्तीय: (661) सू. से तीय प्रत्यय
द्वि + ओस् + तीय अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

662. त्रेस्तृ च। (7/4/56)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

त्रिशब्दात् संख्यापूरणे तीयः प्रत्ययो भवति तत्सन्नियोगे च त्रेस्तृ इत्ययमादेशो भवति। त्रयाणां पूरणः— तृतीयः।

त्रि शब्द से संख्यापूरण अर्थ में तीय प्रत्यय होता है और उसके योग में त्रि को तृ आदेश होता है।

तृतीयः

त्रयाणां पूरणः लौ. वि.
त्रेस्तृ च (662) सू. से तीय प्रत्यय
त्रि + आम् + तीय अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
त्रि + तीय
त्रे ...... (662) सू. से त्रि का तृ
तृ + तीय
वर्णों को मिलाने पर तृतीय
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
तृतीय + सि
शेष शैववत्

663. चतुरो येयौ चलोपश्च। (7/4/57)

चतुर् इत्यस्मात् संख्यापूरणे य, ईय — इत्येतौ प्रत्ययौ भवतः तत्सन्नियोगे च इत्येतस्य चलोपो भवति। तुर्यः, तुरीयः।

चतुर् (शब्द) से संख्यापूरण अर्थ में य एवं ईय ये दो प्रत्यय होते हैं और उसके योग में (चतुर् के) च को लोप होता है।

तुर्यः

चतुर्णां पूरणः लौ. वि.
चतुरो ...... (663) सू. से य प्रत्यय
चतुर + आम् + य अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
चतुर् + य
चतुरो ...... (663) सू. से च का लोप
तुर् + य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर तुर्य
जलतुम्बिका न्याय से रेफ का ऊर्ध्वगमन तुर्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
तुर्य + सि
शेष शैववत्

तुरीयः

चतुर्णां पूरणः लौ. वि.
चतुरो ...... (663) सू. से ईय प्रत्यय
चतुर् + आम् + ईय अ. वि.
शेष तुर्यवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

664. षट्कतिकतिपयाच्च थट्। (7/4/58)

एभ्यश्चतुर्शब्दाच्च संख्यापूरणे थट् स्यात्। नाम सिदयहसे इति पदत्वे प्राप्ते।

षट्, कति, कतिपय और चतुर् शब्द से संख्यापूरण अर्थ में थट् (प्रत्यय) होता है।

665. थटि। (1/1/28)

थटि परे पूर्वं नाम पदसंज्ञं न स्यात्। पदत्वाभावाज्जबो न। षष्ठः, षष्ठी, कतिथः, कतिपयथः, चतुर्थः, चतुर्थी, अत्र विसर्गो न।

थट् परे होने पर पूर्व नाम की पद संज्ञा नहीं होती है।

षष्ठः

षण्णां पूरणः लौ. वि.
षट् ...... (664) सू. से थट् प्रत्यय
षष् + आम् + थट् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
षष् + थट्, ट् अनुबन्ध
नाम ...... (131) सू. से षष् की पदसंज्ञा की प्राप्ति किन्तु
थटि (665) सू. से निषेध
षष् + थ
ष्टुभिः ...... (65) सू. से थ का ठ
षष् + ठ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर षष्ठ
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
षष्ठ + सि
शेष शैववत्

षष्ठी

षण्णां पूरणी लौ. वि.
षट् ...... (664) सू. से थट् प्रत्यय
षष् + आम् + थट् अ. वि.
षष्ठ तक पूर्ववत्
शेष पितामहीवत्

कतिथः

कतीनां पूरणः लौ. वि.
षट् ...... (664) सू. से थट् प्रत्यय
कति + आम् + थट् अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

कतिपयथः

कतिपयानां पूरणः लौ. वि.
षट् ...... (664) सू. से थट् प्रत्यय
कतिपय + आम् + थट् अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

चतुर्थः

चतुर्णां पूरणः लौ. वि.
षट् ...... (664) सू. से थट् प्रत्यय
चतुर् + आम् + थट् अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

चतुर् + थट्

नाम ...... (131) सू. से चतुर् की पद संज्ञा की प्राप्ति किन्तु
थटि (665) सू. से निषेध

चतुर् + थट्, ट् अनुबन्ध

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर चतुर्थ
जलतुम्बिका न्याय से रेफ का ऊर्ध्वगमन चतुर्थ
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

चतुर्थ + सि

शेष शैववत्

चतुर्थी

चतुर्णां पूरणी लौ. वि.
षट् ...... (664) सू. से थट् प्रत्यय

चतुर् + आम् + थट् अ. वि.

चतुर्थ तक पूर्ववत्

शेष पितामहीवत्

थटि (665) सू. के द्वारा पद संज्ञा का निषेध कर देने पर षष्ठः एवं षष्ठी इन दो पदों में झसा ...... (59) सू. से ष् का ड् नहीं हुआ। चतुर्थः एवं चतुर्थी पदों में स्रोर्वि ...... (89) सू. से र् का विसर्ग नहीं हुआ।

इति क्षेत्राद्यर्थकाः ।
क्षेत्रादि अर्थक अधिकार समाप्त ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ मत्वर्थीया:

अब मत्वर्थीय अधिकार प्रारम्भ हो रहा है।

666. तदस्यास्मिन्नस्तीति मतु:। (8/1/1)

प्रथमान्तात् षष्ठ्यर्थे सप्तम्यर्थे वा मतु: स्यात् प्रथमान्तं तच्चेदस्तीति स्यात्। गावोऽस्य सन्तीति गोमान्, तरवो यस्मिन् सन्तीति तरुमान्।

प्रथमा अन्त से षष्ठी अथवा सप्तमी अर्थ में मतु (प्रत्यय) होता है यदि वह प्रथमान्त (पदार्थ) अस्ति (अर्थात् विद्यमान) हो।

गोमान्

गावोऽस्य अस्मिन् वा सन्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय
गो + जस् + मतु अ. वि.
तद्धिता: (514) सू. से मतु प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
गो + मतु, उकार अनुबन्ध
वर्णों को मिलाने पर गोमत्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
गोमत् + सि
अत्वसो ...... (251) सू. से उपधा को दीर्घ
गोमात् + सि
पुंस्त्रियो: ...... (133) सू. से सि प्रत्यय की थुट् संज्ञा
मिदन्त्य ...... (195) सू. की सहायता से
उदृदितो ...... (249) सू. से नुम् का आगम
गोमानुमत् + सि, म् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
गोमान्त् + सि
हसेप: ...... (183) सू. से सि प्रत्यय का लोप
संयोगस्य (206) सू. से संयोग के अन्त (त्) का लोप करने पर गोमान् रूप सिद्ध हुआ।

तरुमान्

तरवो यस्य यस्मिन् वा सन्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय
तरु + जस् + मतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

667. मावर्णान्तोपधाद्वतु:। (8/1/2)

मान्तात् मोपधात् अवर्णान्तादवर्णोपधाच्चास्त्यर्थे वतु: स्यात्। किंवान्, लक्ष्मीवान्, ज्ञानवान्, विद्यावान्। यशस्—वत् इत्यत्र नाम सिदयेति पदत्वाद् विसर्गे प्राप्ते।

म् अन्त से, म् उपधा से, अवर्ण अन्त से एवं अवर्ण उपधा से अस्ति (अर्थात् विद्यमान) अर्थ में वतु (प्रत्यय) होता है।

किंवान्

किमस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
किम् + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

लक्ष्मीवान्

लक्ष्मीः अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय

लक्ष्मी + सि + वतु अ. वि.

शेष गोमान्वत्

ज्ञानवान्

ज्ञानमस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ......(667) सू. से वतु प्रत्यय

ज्ञान + सि + वतु अ. वि.

शेष गोमान्वत्

विद्यावान्

विद्या अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय

विद्या + सि + वतु अ. वि.

शेष गोमान्वत्

668. नस्ते मत्वर्थे। (1/1/26)

सान्तं तान्तञ्च नाम मत्वर्थे परे पदसंज्ञं न स्यात्। यशस्वान्, भास्वान्।

स् अन्त एवं त् अन्त वाले नाम की पद संज्ञा नहीं होती है मतु अर्थ (वाले प्रत्यय) परे होने पर।

यशस्वान्

यशः अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय

यशस् + सि + वतु अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

यशस् + वतु

नाम ...... (131) सू. से यशस् की पद संज्ञा की प्राप्ति किन्तु

न स्ते ...... (668) सू. से निषेध

यशस् + वतु, उकार अनुबन्ध

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर यशस्वत्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

यशस्वत् + सि

शेष गोमान्वत्

भास्वान्

भासः अस्य अस्मिन् वा सन्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भास् + जस् + वतु अ. वि.

शेष यशस्वान्वत्

668 सू. के द्वारा पद संज्ञा का निषेध करने से यशस्वान् एवं भास्वान् इन दोनों उदाहरणों में स्त्रोर्वि ...... (89) सू. से स् का विसर्ग नहीं हुआ।

669. झपात्। (8/1/3)

झपान्तादस्त्यर्थे वतुः स्यात्। तडित्वान्, मरुत्वान्। अत्रापि पदत्वप्रतिषेधाद् जबत्वं न।

झप अन्त से अस्ति (अर्थात् विद्यमान) अर्थ में वतु (प्रत्यय) होता है।

तडित्वान्

तडिद् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

झपात् (669) सू. से वतु प्रत्यय

तडित् + सि + वतु अ. वि.

शेष यशस्वान्वत्

मरुत्वान्

मरुद् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

झपात् (669) सू. से वतु प्रत्यय

मरुत् + सि + वतु अ. वि.

शेष यशस्वान्वत्

668 सू. के द्वारा पद संज्ञा का निषेध कर देने से तडित्वान् एवं मरुत्वान् इन दोनों उदाहरणों में झसा ...... (59) सू. से त् का द् नहीं हुआ।

670. अस्तपोमायामेधास्त्रजो विन् वा। (8/1/9)

असन्तेभ्यस्तपसादिभ्यश्च मत्वर्थे विन् वा स्यात्। यशस्वी, तपस्वी, मायावी, मेधावी, स्रग्वी। पक्षे यशस्वानित्यादि।

अस् अन्त, तपस्, माया, मेधा, स्रज् (शब्दों) से मतु अर्थ में विन् (प्रत्यय) विकल्प से होता है।

यशस्वी

यशः अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

अस्तपो ...... (670) सू. से विन् प्रत्यय

यशस् + सि + विन् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नाम ...... (131) सू. से यशस् की पद संज्ञा की प्राप्ति किन्तु

न स्ते ...... (668) सू. से पद संज्ञा का निषेध

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर यशस्विन्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

यशस्विन् + सि

इन्हन्पूषन्नर्यम्णां सौ च (223) सू. से उपधा को दीर्घ

यशस्वीन् + सि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

हसेप: ...... (183) सू. से सि प्रत्यय का लोप
नाम्नो ...... (135) सू. से नकार का लोप करने पर यशस्वी रूप सिद्ध हुआ।
पक्ष में — जहां विन् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

यशस्वान्

पूर्ववत्

तपस्वी

तप: अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अस्तपो ...... (670) सू. से विकल्प से विन् प्रत्यय
तपस् + सि + विन् अ. वि.
यशस्वीवत्
पक्ष में — जहां विन् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

तपस्वान्

तप: अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
तपस् + सि + वतु अ. वि.
शेष यशस्वान्वत्

मायावी

माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अस्तपो ...... (670) सू. से विन् प्रत्यय
माया + सि + विन् अ. वि.
तद्धिता: (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
माया + विन्
वर्णों को मिलाने पर मायाविन्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
मायाविन् + सि
शेष यशस्वीवत्
पक्ष में — जहां विन् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

मायावान्

माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
माया + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

मेधावी

मेधा अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अस्तपो ...... (670) सू. से विन् प्रत्यय
मेधा + सि + विन् अ. वि.
शेष यशस्वीवत्
पक्ष में — जहां विन् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

मेधावान्

मेधा अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
मेधा + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

स्रग्वी

स्रग् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अस्तपो ...... (670) सू. से विन् प्रत्यय
स्रज् + सि + विन् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
स्रज् + विन्
नाम ...... (131) सू. से स्रज् की पद संज्ञा
चजोः ...... (245) सू. से ज् का ग्
स्रग् + विन्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर स्रग्विन्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
स्रग्विन् + सि
शेष यशस्वीवत्
पक्ष में — जहां विन् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

स्रग्वान्

स्रग् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
स्रज् + सि + वतु अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
नाम ...... (131) सू. से स्रज् की पद संज्ञा
चजोः ...... (245) सू. से ज् को ग्
स्रग् + वतु, उकार अनुबन्ध
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर स्रग्वत्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
स्रग्वत् + सि
शेष गोमान्वत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

671. नावादेरिकः। (8/1/10)

इको वा स्यात्। नाविकः, नौमान्।

(नाव आदि शब्दों से) इक (प्रत्यय) विकल्प से होता है।

नाविकः

नौः अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

नावादे ...... (671) सू. से इक प्रत्यय

नौ + सि + इक अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

नौ + इक

ओदौतोरवावौ (34) सू. से औ को आव्

न् + आव् + इक

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर नाविक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

नाविक + सि

शेष शैववत्

पक्ष में—जहां इक प्रत्यय नहीं होगा वहां—

नौमान्

नौः अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

मावर्णा ...... (667) सू. से मतु प्रत्यय

नौ + सि + मतु अ. वि.

शेष गोमान्वत्

672. शिखादिभ्य इन्। (8/1/11)

इन् वा स्यात्। शिखी, शिखावान्, माली, मालावान्।

(शिखादि शब्दों से) इन् प्रत्यय विकल्प से होता है।

शिखी

शिखा अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

शिखादि ...... (672) सू. से विकल्प से इन् प्रत्यय

शिखा + सि + इन् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

शिखा + इन्

इवर्णा ...... (451) सू. से आकार का लोप

शिख् + इन्

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर शिखिन्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

शिखिन् + सि

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष यशस्वीवत्

पक्ष में — जहां पर इन प्रत्यय नहीं होगा वहां —

शिखावान्

शिखा अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय

शिखा + सि + वतु अ. वि.

शेष गोमान्वत्

माली

माला अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

शिखादि ...... (672) सू. से विकल्प से इन् प्रत्यय

माला + सि + इन् अ. वि.

शेष शिखीवत्

पक्ष में — जहां पर इन् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

मालावान्

माला अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय

माला + सि + वतु अ. वि.

शेष गोमान्वत्

673. व्रीह्यादिभ्यस्तौ। (8/1/12)

ताविति इकेनौ वा स्याताम्। व्रीहिकः, व्रीही, व्रीहिमान्, मायिकः, मायी, मायावान्।

(व्रीहि आदि शब्दों से) वे दोनों — इक, इन् (प्रत्यय) विकल्प से होते हैं।

व्रीहिकः

व्रीहयः अस्य अस्मिन् वा सन्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

व्रीह्यादि ...... (673) सू. से विकल्प से इक प्रत्यय

व्रीहि + जस् + इक अ. वि.

शेष कुलीनवत्

व्रीही

व्रीहयः अस्य अस्मिन् वा सन्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

व्रीह्यादि ...... (673) सू. से विकल्प से इन् प्रत्यय

व्रीहि + जस् + इन् अ. वि.

शेष शिखीवत्

पक्ष में — जहां इक एवं इन् प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

व्रीहिमान्

व्रीहयः अस्य अस्मिन् वा सन्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय

व्रीहि + जस् + मतु अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष गोमान्वत्

मायिक:

माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
व्रीह्यादि ...... (673) सू. से विकल्प से इक प्रत्यय
माया + सि + इक अ. वि.
शेष कुलीनवत्

मायी

माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
व्रीह्यादि ...... (673) सू. से इन् प्रत्यय
माया + सि + इन् अ. वि.
शेष शिखीवत्
पक्ष में — जहां इक एवं इन् प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

मायावान्

माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
माया + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

674. अतोऽनेकस्वरात्। (8/1/13)

अकारान्तादनेकस्वरात् मत्वर्थे इकेनौ वा स्तः। दण्डिक:, दण्डी, दण्डवान्, छत्रिक:, छत्री, छत्रवान्। अत इति किम् — मालावान्। अनेकस्वरादिति किम् — खवान्।

अनेक स्वर वाले अकारान्त (शब्दों) से मतु अर्थ में इक एवं इन् प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

दण्डिक:

दण्ड: अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अतो ...... (674) सू. से विकल्प से इक प्रत्यय
दण्ड + सि + इक अ. वि.
शेष कुलीनवत्

दण्डी

दण्ड: अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अतो ...... (674) सू. से विकल्प से इन् प्रत्यय
दण्ड + सि + इन् अ. वि.
शेष शिखीवत्
पक्ष में — जहां इक एवं इन् प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

दण्डवान्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

दण्ड: अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
दण्ड + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

छत्रिक:

छत्रम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अतो ...... (674) सू. से विकल्प से इक प्रत्यय
छत्र + सि + इक अ. वि.
शेष कुलीनवत्

छत्री

छत्रम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अत: ...... (674) सू. से विकल्प से इन् प्रत्यय
छत्र + सि + इन् अ. वि.
शेष शिखीवत्
पक्ष में — जहां पर इक एवं इन् प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

छत्रवान्

छत्रम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
छत्र + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्
अकारान्त से इक एवं इन् प्रत्यय होंगे ऐसा क्यों ?
माला शब्द आकारान्त होने के कारण इक एवं इन् प्रत्यय नहीं होंगे।

मालावान्

माला अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्तु किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
माला + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्
अनेक स्वर वाले शब्द से इक एवं इन् प्रत्यय होंगे ऐसा क्यों ?
ख शब्द एक स्वर वाला होने के कारण इक एवं इन् प्रत्यय नहीं होंगे।

खवान्

खम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
ख + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

675. न द्रव्यादिभ्य:। (8/4/18)

द्रव्यादिभ्यो मत्वर्थे इकेनौ न स्त:। द्रव्यवान्, धान्यवान्, पुण्यवान्।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

द्रव्य आदि शब्दों से मतु अर्थ में इक एवं इन् (प्रत्यय) नहीं होते हैं।

द्रव्यवान्

द्रव्यम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अतोऽनेक ...... (674) सू. से विकल्प से इक एवं इन् प्रत्ययों की प्राप्ति किन्तु
न ...... (675) सू. से निषेध
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
द्रव्य + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

धान्यवान्

धान्यम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अतो ...... (674) सू. से विकल्प से इक एवं इन् प्रत्ययों की प्राप्ति
न ...... (675) सू. से निषेध
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
धान्य + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

पुण्यवान्

पुण्यम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
अतो ...... (674) सू. से विकल्प से इक एवं इन् प्रत्ययों की प्राप्ति
न ...... (675) सू. से निषेध
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
पुण्य + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

676. वातातीसारपिशाचानां कुक् च। (8/1/28)

एभ्यो मत्वर्थे इन् स्यात् एषां कुगागमश्च। वातकी, अतिसारकी, पिशाचकी।

इन (वात, अतीसार एवं पिशाच) से मतु अर्थ में इन् (प्रत्यय) होता है और इन (शब्दों) को कुक् का आगम होता है।

वातकी

वातः अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
वाता ...... (676) सू. से इन् प्रत्यय
वात + सि + इन् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
वात + इन्
आद्यन्तौ ...... (70) सू. की सहायता से
वाता ...... (676) सू. से कुक् का आगम
वात + कुक् + इन्, क् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
वात + क् + इन्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर वातकिन्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वातकिन् + सि
शेष शिखीवत्

अतिसारकी

अतिसारः अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
वाता ...... (676) सू. से इन् प्रत्यय
अतिसार + सि + इन् अ. वि.
शेष वातकीवत्

पिशाचकी

पिशाचः अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
वाता ...... (676) सू. से इन् प्रत्यय
पिशाच + सि + इन् अ. वि.
शेष वातकीवत्

677. सुखादेः। (8/1/30)

सुखादिभ्यो मत्वर्थे इन्नेव स्यात्। सुखी, दुःखी।

सुखादि (शब्दों) से मतु अर्थ में इन् (प्रत्यय) ही होता है।

सुखी

सुखम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
सुखादेः (667) सू. से इन् प्रत्यय
सुख + सि + इन् अ. वि.
शेष शिखीवत्

दुःखी

दुःखम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
सुखादेः (667) सू. से इन् प्रत्यय
दुःख + सि + इन् अ. वि.
शेष शिखीवत्

678. वाच आलाटौ। (8/1/46)

वाचो मत्वर्थे आलाटौ स्तः क्षेपे। वाचालः, वाचाटः।

वाच् शब्द से मतु अर्थ में आल एवं आट (प्रत्यय) होते हैं निन्दा प्रकट होने पर।

वाचालः

वाग् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
वाच ...... (678) सू. से आल प्रत्यय
वाच् + सि + आल अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वाच् + आल

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर वाचाल

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

वाचाल + सि

शेष शैववत्

वाचाटः

वाग् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

वाच ...... (678) सू. से आट प्रत्यय

वाच् + सि + आट अ. वि.

शेष वाचालवत्

679. दन्तादुन्नतात् । (8/1/59)

अस्मात् डुरः स्यात् मत्वर्थे । उन्नता दन्ता अस्य — दन्तुरः । अन्यत्र दन्तवान् ।

ऊंचे दांत वाला अर्थ होने से इस (दन्त) शब्द से डुर प्रत्यय होता है मतु अर्थ में ।

दन्तुरः

उन्नता दन्ता अस्य सन्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से डुर प्रत्यय

दन्त + जस् + डुर अ. वि.

शेष मातुलवत्

जहां ऊंचे दांत वाला अर्थ नहीं होगा वहां—

दन्तवान्

दन्ता अस्य सन्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय

दन्त + जस् + वतु अ. वि.

शेष गोमान्वत्

680. कृपाहृदयाद्वालुः । (8/1/74)

कृपा, हृदय — इत्येताभ्यां मत्वर्थे आलुः प्रत्ययो वा भवति । कृपालुः, हृदयालुः । पक्षे कृपावान्, हृदयवानित्यादि ।

कृपा एवं हृदय — इन दो (शब्दों) से मतु अर्थ में आलु प्रत्यय विकल्प से होता है ।

कृपालुः

कृपा अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

कृपा ...... (680) सू. से विकल्प से आलु प्रत्यय

कृपा + सि + आलु अ. वि.

शेष कुलीनवत्

पक्ष में — जहां पर आलु प्रत्यय नहीं होगा वहां —

कृपावान्

कृपा अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.

तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कृपा + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

हृदयालुः

हृदयम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
कृपा ...... (680) सू. से विकल्प से आलु प्रत्यय
हृदय + सि + आलु अ. वि.
शेष कुलीनवत्
पक्ष में — जहां आलु प्रत्यय नहीं होगा वहां —

हृदयवान्

हृदयम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
हृदय + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

681. स्वामिन्नीशे । (8/1/80)

स्वशब्दान्मत्वर्थे ईशे वाच्ये मिन्प्रत्यये दीर्घादेशे च स्वामिन्निति निपात्यते । स्वामी ईशश्चेत् । अन्यत्र स्ववान् ।

स्व शब्द से मतु अर्थ में ईश प्रकट होने पर मिन् प्रत्यय और दीर्घादेश करने पर स्वामिन् यह निपात से सिद्ध होता है ।

स्वामी (ईशः)

स्वम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
स्वामि ...... (681) सू. से मिन् प्रत्यय
स्व + सि + मिन् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
स्व + मिन्
स्वामि ...... (681) सू. से अकार को दीर्घ
स्वा + मिन्
वर्णों को मिलाने पर स्वामिन्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
स्वामिन् + सि
शेष शिखीवत्
जहां पर ईश अर्थ नहीं होगा वहां —

स्ववान् (धनवान्)

स्वम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति लौ. वि.
तदस्या ...... (666) सू. से मतु प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
मावर्णा ...... (667) सू. से वतु प्रत्यय
स्व + सि + वतु अ. वि.
शेष गोमान्वत्

इति मत्वर्थीयाः ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मत्वर्थीय अधिकार समाप्त ।

अथ स्वार्थिकाः

अब स्वार्थिक अधिकार प्रारम्भ हो रहा है।

682. विनयादिभ्य इकण्। (7/4/84)

एभ्यः इकण् स्वार्थे स्यात्। विनय एव वैनयिकम्, सामयिकम्।

विनयादि (गणपठित शब्दों) से स्वार्थ में इकण् (प्रत्यय) होता है।

वैनयिकम्

विनय एव लौ. वि.
विनयादिभ्य ...... (682) सू. से इकण् प्रत्यय
विनय + सि + इकण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

सामयिकम्

समय एव लौ. वि.
विनयादिभ्य ...... (682) सू. से इकण् प्रत्यय
समय + सि + इकण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

683. प्रज्ञादिभ्यः। (7/4/88)

एभ्यः स्वार्थे अण् स्यात्। प्रज्ञ एव प्राज्ञः, वणिगेव वाणिजः।

प्रज्ञा आदि (गणपठित शब्दों) से स्वार्थ में अण् (प्रत्यय) होता है।

प्राज्ञः

प्रज्ञ एव लौ. वि.
प्रज्ञादिभ्यः (683) सू. से अण् प्रत्यय
प्रज्ञ + सि + अण् अ. वि.
शेष शैववत्

वाणिजः

वणिगेव लौ. वि.
प्रज्ञादिभ्यः (683) सू. से अण् प्रत्यय
वणिज् + सि + अण् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
वणिज् + अण्, ण् अनुबन्ध
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
वाणिज् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर वाणिज
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
वाणिज + सि
शेष शैववत्

684. भेषजादिभ्यो यण्। (7/4/94)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भेषजादिभ्यः शब्देभ्यः स्वार्थे यण् प्रत्ययो भवति। भेषजमेव भैषज्यम्, आनन्त्यम्।
भेषज आदि (गणपठित शब्दों) से स्वार्थ में यण् प्रत्यय होता है।

भैषज्यम्
भेषजमेव लौ. वि.
भेषजादिभ्यो ...... (684) सू. से यण् प्रत्यय
भेषज + सि + यण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

आनन्त्यम्
अनन्त एव लौ. वि.
भेषजादिभ्यो ...... (684) सू. से यण् प्रत्यय
अनन्त + सि + यण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

685. चतुर्वर्णादिभ्यष्ट्यण्। (7/4/95)

चतुर्वर्णादिभ्यः शब्देभ्यः स्वार्थे ट्यण् प्रत्ययो भवति। चातुर्वर्ण्यम्, सामीप्यम्, माणिक्यम्।
चतुर्वर्ण आदि (गणपठित शब्दों) से स्वार्थ में ट्यण् प्रत्यय होता है।

चातुर्वर्ण्यम्
चतुर्वर्ण एव लौ. वि.
चतुर्वर्णा ...... (685) सू. से ट्यण् प्रत्यय
चतुर्वर्ण + सि + ट्यण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

सामीप्यम्
समीपमेव लौ. वि.
चतुर्वर्णा ...... (685) सू. से ट्यण् प्रत्यय
समीप + सि + ट्यण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

माणिक्यम्
मणिक एव लौ. वि.
चतुर्वर्णा ...... (685) सू. से ट्यण् प्रत्यय
मणिक + सि + ट्यण् अ. वि.
शेष कौसुम्भवत्

686. देवात्तल्। (7/4/96)

देवशब्दात् स्वार्थे तल् प्रत्ययो भवति। देव एव देवता।
देव शब्द से स्वार्थ में तल् प्रत्यय होता है।

देवता
देव एव लौ. वि.
देवा ...... (686) सू. से तल् प्रत्यय
देव + सि + तल् अ. वि.
शेष ग्रामतावत्

687. मृदस्तिकः। (7/4/97)

मृच्छब्दात् स्वार्थे तिकः प्रत्ययो भवति। मृदेव मृत्तिका।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मृद् शब्द से स्वार्थ में तिक प्रत्यय होता है।

मृत्तिका

मृदेव लौ. वि.

मृद ...... (687) सू. से तिक प्रत्यय

मृद् + सि + तिक अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

मृद् + तिक

खसे ...... (72) सू. से द् का त्

मृत् + तिक

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर मृत्तिक

आबतः ...... (293) सू. से आप् प्रत्यय

मृत्तिक + आप्, प् अनुबंध

समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ

मृत्तिका

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

मृत्तिका + सि

शेष ग्रामतावत्

688. वर्णाव्ययात् स्वरूपे कारः। (7/4/99)

एभ्यः स्वरूपार्थवृत्तिभ्यः कारः स्यात्। अकारः, ककारः, ओङ्कारः, नमस्कारः, चकारः।

स्वरूप[1] ही जिनका अर्थ है ऐसे वर्णों से एवं अव्ययवाची (शब्दों) से कार (प्रत्यय) होता है।

अकारः

अ एव लौ. वि.

वर्णा ...... (688) सू. से कार प्रत्यय

अ + सि + कार अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

ककारः

क एव लौ. वि.

वर्णा ...... (688) सू. से कार प्रत्यय

क + सि + कार अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

ओङ्कारः

ओमेव लौ. वि.

वर्णा ...... (688) सू. से कार प्रत्यय

ओम् + कार

नाम ...... (131) सू. से ओम् की पद संज्ञा

---

[1] अ आदि वर्णों का अर्थ यदि वर्णमाला का प्रथम अक्षर आदि होगा तभी कार प्रत्यय होगा। यदि अ आदि वर्णों का अर्थ विष्णु आदि होगा तब कार प्रत्यय नहीं होगा।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मोऽनुस्वार ...... (77) सू. से मकार का ङकार
ओङ् + कार
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर ओङ्कार
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
ओङ्कार + सि
शेष शैववत्

नमस्कारः

नमः एव लौ. वि.
वर्णा ...... (688) सू. से कार प्रत्यय
नमस् + कार
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर नमस्कार
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
नमस्कार + सि
शेष शैववत्

चकारः

च एव लौ. वि.
वर्णा ...... (688) सू. से कार प्रत्यय
च + सि + कार अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

689. रादेफो वा । (7/4/100)

रशब्दात् स्वार्थे एफः प्रत्ययो वा भवति । रेफः, पक्षे रकारः ।

र शब्द से स्वार्थ में एफ प्रत्यय विकल्प से होता है ।

रेफः

र एव लौ. वि.
वर्णा ...... (688) सू. से कार प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
रादेफो वा (689) सू. से विकल्प से एफ प्रत्यय
र + सि + एफ अ. वि.
शेष कुलीनवत्
पक्ष में— जहां पर एफ प्रत्यय नहीं होगा वहां—

रकारः

र एव लौ. वि.
वर्णा ...... (688) सू. से कार प्रत्यय
र + सि + कार अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

690. नामरूपभागेभ्यो धेयः । (7/4/101)

नामन्, रूप, भाग — इत्येतेभ्यः स्वार्थे धेयः प्रत्ययो भवति । नामधेयम्, रूपधेयम्, भागधेयम् ।

नामन्, रूप एवं भाग इन (शब्दों) से स्वार्थ में धेय प्रत्यय होता है ।

नामधेयम्

नाम एव लौ. वि.
नाम ...... (690) सू. से धेय प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

नामन् + सि + धेय अ. वि.
शेष दण्डित्ववत्

रूपधेयम्

रूपमेव लौ. वि.
नाम ...... (690) सू. से धेय प्रत्यय
रूप + सि + धेय अ. वि.
शेष गोमयवत्

भागधेयम्

भाग एव लौ. वि.
नाम ...... (690) सू. से धेय प्रत्यय
भाग + सि + धेय अ. वि.
शेष गोमयवत्

691. मर्तादिभ्यो यः। (7/4/102)

मर्तादिभ्यः शब्देभ्यः स्वार्थे य प्रत्ययो भवति। मर्त एव मर्त्यः, सूर्यः।

मर्त आदि शब्दों से स्वार्थ में य प्रत्यय होता है।

मर्त्यः

मर्त एव लौ. वि.
मर्तादि ...... (691) सू. से य प्रत्यय
मर्त + सि + य अ. वि.
शेष कुलीनवत्

सूर्यः

सूर एव लौ. वि.
मर्तादि ...... (691) सू. से य प्रत्यय
सूर + सि + य अ. वि.
शेष कुलीनवत्

692. नवादीनतनत्नञ्च नू चास्य। (7/4/103)

नवात् स्वार्थे ईन, तन, त्न, य इत्येते प्रत्ययाः स्युः नवस्य नू इत्यादेशश्च। नवीनम्, नूतनम्, नूत्नम्, नव्यम्।

नव शब्द से स्वार्थ में ईन, तन, त्न एवं य ये प्रत्यय होते हैं और नव शब्द को नू आदेश (होता है।)

नवीनम्

नवमेव लौ. वि.
नवा ...... (692) सू. से ईन प्रत्यय
नव + सि + ईन अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
नव + ईन
नवा ...... (692) सू. से नव को नू आदेश
नू + ईन
उवर्ण ...... (517) सू. से ऊ का अव्
न् अव् + ईन
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर नवीन

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
नवीन + सि
शेष कौसुम्भवत्

नूतनम्

नवमेव लौ. वि.
नवा ...... (692) सू. से तन प्रत्यय
नव + सि + तन अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
नव + तन
नवा ...... (692) सू. से नव को नू आदेश
नू + तन
वर्णों को मिलाने पर नूतन
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
नूतन + सि
शेष कौसुम्भवत्

नूत्नम्

नवमेव लौ. वि.
नवा ...... (692) सू. से त्न प्रत्यय
नव + सि + त्न अ. वि.
शेष नूतनवत्

नव्यम्

नवमेव लौ. वि.
नवा ...... (692) सू. से य प्रत्यय
नव + सि + य अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
नव + य
नवा ...... (692) सू. से नव को नू आदेश
नू + य
उवर्ण ...... (517) सू. से ऊकार का अव्
न् अव् + य
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर नव्य
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
नव्य + सि
शेष कौसुम्भवत्

693. प्रकारे जातीयः। (8/1/92)

प्रथमान्तात् षष्ठ्यर्थे जातीयः स्यात् तत्प्रथमान्तं प्रकारश्चेत् स्यात्। पटुः प्रकारोऽस्य — पटुजातीयः, मृदुजातीयः।

प्रथमा अन्त से षष्ठी अर्थ में जातीय (प्रत्यय) होता है यदि वह प्रथमान्त प्रकार (अर्थात् भेद) हो।

पटुजातीयः

पटुः प्रकारोऽस्य लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रकारे ...... (693) सू. से जातीय प्रत्यय
पटु + सि + जातीय अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

मृदुजातीयः

मृदुः प्रकारोऽस्य लौ. वि.
प्रकारे ...... (693) सू. से जातीय प्रत्यय
मृदु + सि + जातीय अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

694. जातीयदेशीययोः। (3/2/62)

भाषितपुंस्कादनूङः स्त्रियाः पुंवत् स्यादनयोः परयोः। पट्वी प्रकारोऽस्याः — पटुजातीया।

भाषितपुंस्क ऊङ्वर्जित स्त्रीलिंग (शब्द) का पुंवत् होता है जातीय और देशीय प्रत्यय परे होने पर।

पटुजातीया

पट्वी प्रकारोऽस्याः लौ. वि.
प्रकारे ...... (694) सू. से जातीय प्रत्यय
पट्वी + सि + जातीय अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
पट्वी + जातीय
जातीय ...... (694) सू. से पुंवद्भाव
पटु + जातीय
वर्णों को मिलाने पर पटुजातीय
आबतः ...... (36) सू. से आप् प्रत्यय
पटुजातीय + आप्, प् अनुबन्ध
समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ
पटुजातीया
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पटुजातीया + सि
आपः (172) सू. से सि प्रत्यय का लोप करने पर पटुजातीया रूप सिद्ध हुआ।

695. भूतपूर्वे चरट्। (8/1/95)

भूतपूर्वे वर्तमानान्नाम्नः चरट् प्रत्ययो भवति स्वार्थे। भूतपूर्व आढ्यः — आढ्यचरः, आढ्यचरी।

भूतपूर्व अर्थ में रहे हुए नाम से चरट् प्रत्यय होता है स्वार्थ में।

आढ्यचरः

भूतपूर्व आढ्यः लौ. वि.
भूतपूर्वे ...... (695) सू. से चरट् प्रत्यय
आढ्य + सि + चरट् अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

आढ्यचरी

भूतपूर्वा आढ्या लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भूतपूर्वे ...... (695) सू. से चरट् प्रत्यय
आढ्या + सि + चरट् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
आढ्या + चरट्
मानि ...... (626) सू. से पुंवद्भाव
आढ्य + चरट्, ट् अनुबन्ध
वर्णों को मिलाने पर आढ्यचर
मुख्यात् ...... (306) सू. से ईप् प्रत्यय
आढ्यचर + ईप्, प् अनुबन्ध
ईप्यतः (307) सू. से अकार का लोप
आढ्यचर् + ई
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर आढ्यचरी
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
आढ्यचरी + सि
हसेपः ...... (183) सू. से सि का लोप करने पर आढ्यचरी रूप सिद्ध हुआ।

696. अहीयरुहोऽपादाने। (8/1/105)

अपादाने विहितपञ्चम्यन्तात् तसुः स्यात् तदपादानं हीयरुहोः सम्बन्धि न चेत्। ग्रामत आगच्छति, चोरतो बिभेति। अहीयरुहोरिति किम्—सार्थाद्धीनः, पर्वतादवरोहति।

अपादान में की गई पञ्चमी (विभक्ति) अन्त से तसु प्रत्यय होता है अगर वह अपादान हीन (अर्थात् रहित) तथा अवरोह से सम्बन्धित न हो।

ग्रामतः आगच्छति

ग्रामात् लौ. वि.
अहीय ...... (696) सू. से तसु प्रत्यय
ग्राम + ङसि + तसु अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
ग्राम + तसु, उकार उच्चारणार्थ
वर्णों को मिलाने पर ग्रामतस्
अधण्तस्वाद्येनान्तः (भिक्षु.1/1/50) सू. से तसु प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
ग्रामतस् + सि
अव्ययस्य (294) सू. से विभ. का लुक्
ग्रामतस्
स्रोर्वि ...... (89) सू. से स् का विसर्ग करने पर ग्रामतः रूप सिद्ध हुआ।

चोरतो बिभेति

चोरात् लौ. वि.
अहीय ...... (696) सू. से तसु प्रत्यय
चोर + ङसि + तसु अ. वि.
शेष ग्रामतःवत्

हीन (अर्थात् रहित) और अवरोह को क्यों छोड़ा? सार्थाद्धीनः (समूह से हीन) तथा पर्वतादवरोहति (पर्वत से अवरोह अर्थात् उतरता है) में क्रमशः हीन तथा अवरोह है अतः अपादान में पञ्चमी अन्त होते हुए भी तसु प्रत्यय नहीं होगा।

697. किमद्व्यादिसर्वाद्यवैपुल्यबहोस्तस्। (8/1/106)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एभ्यः पञ्चम्यन्तेभ्यस्तस् स्यात् ।

पञ्चमी अन्त इन (किम्, द्वि आदि वर्जित सर्वादि एवं अवैपुल्यवाची बहु शब्द) से तस् प्रत्यय होता है ।

698. इतोऽतः कुतः । (8/1/107)

एते तसन्ता निपात्याः । निपातनात् कुतः । सर्वस्मादिति — सर्वतः, विश्वतः ।

ये (इतः, अतः एवं कुतः) तस् प्रत्ययान्त (शब्द) निपातन से सिद्ध होते हैं ।

कुतः

कस्मात् लौ. वि.
किम ...... (697) सू. से तस् प्रत्यय
किम् + ङसि + तस् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
किम् + तस्
इतो ...... (698) सू. से किम् को कु आदेश
कु + तस्
वर्णों को मिलाने पर कुतस्
अधण् ...... (भिक्षु.1/1/50) सू. से तस् प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
कुतस् + सि
शेष ग्रामतःवत्

सर्वतः

सर्वस्मात् लौ. वि.
किम ...... (697) सू. से तस् प्रत्यय
सर्व + ङसि + तस् अ. वि.
शेष ग्रामतःवत्

विश्वतः

विश्वस्मात् लौ. वि.
किम ...... (697) सू. से तस् प्रत्यय
विश्व + ङसि + तस् अ. वि.
शेष ग्रामतःवत्

699. तसादिः स्यादिवत् । (8/1/121)

तसादयः थापर्यन्ताः प्रत्ययाः स्यादिवत् स्युः । स्यादित्वाट्टेरत्वम् । तस्मादिति — ततः, यतः, अस्मात्—इतः, एतस्मात्—अतः, बहुभ्यः—बहुतः । बहोर्वैपुल्यप्रतिषेधः किम्—बहोः सूपात् ।

तस् से था[1] तक प्रत्यय स्यादिवत् होते हैं । (तसादि प्रत्ययों के स्यादिवत् हो जाने से शब्द के टि संज्ञक वर्णों को सू. 154 से अकार हो जाता है ।)

ततः

तस्मात् लौ. वि.
किम ...... (697) सू. से तस् प्रत्यय
तद् + ङसि + तस् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

---

[1] तस्, त्र, दा, एद्युस्, धुस्, र्हि, था ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तद् + तस्

तसादिः ...... (699) सू. से तस् को स्यादिवत्

अन्त्य ...... (18) सू. से अद् की टि संज्ञा

आद्वेष्टेरः (154) सू. से टिसंज्ञक वर्णों के स्थान में अकार आदेश

त + तस्

वर्णों को मिलाने पर ततस्

अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से तस् की अव्यय संज्ञा

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

ततस् + सि

शेष ग्रामतःवत्

यतः

यस्मात् लौ. वि.

किम ...... (697) सू. से तस् प्रत्यय

यद् + ङसि + तस् अ. वि.

शेष ततःवत्

इतः

अस्मात् लौ. वि.

किम ...... (697) सू. से तस् प्रत्यय

इदम् + ङसि + तस् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

इदम् + तस्

इतो ...... (698) सू. से निपातन से इदम् को इ आदेश

इ + तस्

वर्णों को मिलाने पर इतस्

अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से तस् प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

शेष ग्रामतःवत्

अतः

एतस्मात् लौ. वि.

किम ...... (697) सू. से तस् प्रत्यय

एतद् + ङसि + तस् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

एतद् + तस्

इतो ...... (698) सू. से निपातन से एतद् को अ आदेश

अ + तस्

वर्णों को मिलाने पर अतस्

अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से तस् प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

शेष ग्रामतःवत्

बहुतः

बहुभ्यः लौ. वि.

किम ...... (697) सू. से तस् प्रत्यय

बहु + भ्यस् + तस् अ. वि.

शेष ग्रामतःवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वैपुल्यवाची बहु शब्द का प्रतिषेध क्यों किया ? बहोः सूपात् ।

प्रस्तुत उदाहरण में बहु शब्द वैपुल्यवाची (अर्थात् तोल-माप वाचक) है अतः तस् प्रत्यय नहीं हुआ ।

बहुतः पद में बहु शब्द संख्यावाचक था इसलिए तस् प्रत्यय हो गया ।

700. सप्तम्याः । (8/1/110)

किमादिभ्यः सप्तम्यन्तेभ्यस्त्रः स्यात् ।

सप्तमी अन्त किम् आदि (शब्दों) से त्र (प्रत्यय) होता है ।

701. कुत्रात्रक्वकुहेह । (8/1/111)

एते त्रान्ता निपात्याः । कस्मिन्—कुत्र, क्व, सर्वस्मिन्—सर्वत्र, तत्र, यत्र, एतस्मिन्—अत्र, अस्मिन्—इह ।

ये (कुत्र, अत्र, क्व, कुह एवं इह) त्र प्रत्ययान्त निपातन से सिद्ध होते हैं ।

कुत्र

कस्मिन् लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय
किम् + ङि + त्र अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
किम् + त्र
कुत्रात्र ...... (701) सू. से निपातन से किम् को कु आदेश
कु + त्र
वर्णों को मिलाने पर कुत्र
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से त्र प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
कुत्र + सि
अव्ययस्य (294) सू. से सि प्रत्यय का लोप करने पर कुत्र रूप सिद्ध हुआ ।

क्व

कस्मिन् लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय
किम् + ङि + त्र अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
किम् + त्र
कुत्रात्र ...... (701) सू. से निपातन से किम् को कु आदेश एवं त्र को अ आदेश
कु + अ
इवर्णा ...... (29) सू. से उ को व्
क्व् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर क्व
अधण् ...... (भिक्षु.1/1/50) सू. से त्र (अ) प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष कुत्रवत्

कुह

कस्मिन् लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय
किम् + ङि + त्र अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
किम् + त्र
कुत्रात्र ...... (701) सू. से निपातन से किम् को कु आदेश एवं त्र को ह आदेश
कुह
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से त्र (ह) की अव्यय संज्ञा
शेष कुत्रवत्

सर्वत्र

सर्वस्मिन् लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय
सर्व + ङि + त्र अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
सर्व + त्र
वर्णों को मिलाने पर सर्वत्र
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से त्र प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
सर्वत्र + सि
अव्ययस्य (294) सू. से सि प्रत्यय का लुक् करने पर सर्वत्र रूप सिद्ध हुआ।

तत्र

तस्मिन् लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय
तद् + ङि + त्र अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
तद् + त्र
तसादिः ...... (699) सू. से त्र प्रत्यय को स्यादिवत्
अन्त्य ...... (18) सू. से अद् की टि संज्ञा
आद्वे ...... (154) सू. से टिसंज्ञक वर्णों के स्थान में अकार आदेश
त + त्र
वर्णों को मिलाने पर तत्र
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से त्र की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

यत्र

यस्मिन् लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय
यद् + ङि + त्र अ. वि.
शेष तत्रवत्

अत्र

एतस्मिन् लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय
एतद् + ङि + त्र अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एतद् + त्र
कुत्रात्र ...... (701) सू. से निपातन से एतद् के स्थान में अ आदेश
अ + त्र
वर्णों को मिलाने पर अत्र
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से त्र प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

इह

अस्मिन् लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय
इदम् + ङि + त्र अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
इदम् + त्र
कुत्रात्र ...... (701) सू. से निपातन से इदम् के स्थान में इ आदेश तथा त्र के स्थान पर ह आदेश
इ + ह
वर्णों को मिलाने पर इह
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से त्र (ह) प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

702. किमन्यैकसर्वयत्तदः काले दा। (8/1/112)

कालेऽर्थे एते निपात्याः। सर्वस्मिन् काले — सदा, अस्मिन् काले — अधुना, इदानीम्, एतर्हि, तस्मिन् काले — तदानीम्।

सप्तमी अन्त इन (किम्, अन्य, एक, सर्व, यद्, तद्) से काल अर्थ में दा प्रत्यय होता है।

कदा

कस्मिन् काले लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
किमन्यैक ...... (702) सू. से दा प्रत्यय
किम् + ङि + दा अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
किम् + दा
तसादिः ...... (699) सू. से दा प्रत्यय को स्यादिवत्
किमः कः (230) सू. से किम् को क आदेश
क + दा
वर्णों को मिलाने पर कदा
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से दा प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

अन्यदा

अन्यस्मिन् काले लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
किमन्यैक ...... (702) सू. से दा प्रत्यय
अन्य + ङि + दा अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अन्य + दा
वर्णों को मिलाने पर अन्यदा
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से दा प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

एकदा

एकस्मिन् काले लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
किमन्यैक ...... (702) सू. से दा प्रत्यय
एक + ङि + दा अ. वि.
शेष सर्वत्र

सर्वदा

सर्वस्मिन् काले लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
किमन्यैक ...... (700) सू. से दा प्रत्यय
सर्व + ङि + दा अ. वि.
शेष सर्वत्र

यदा

यस्मिन् काले लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
किमन्यैक ...... (702) सू. से दा प्रत्यय
यद् + ङि + दा अ. वि.
शेष तत्रवत्

तदा

तस्मिन् काले लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
किमन्यैक ...... (702) सू. से दा प्रत्यय
तद् + ङि + दा अ. वि.
शेष तत्रवत्

703. सदाऽधुनेदानींतदानीमेतर्हि । (8/1/113)

कालेऽर्थे एते निपात्याः । सर्वस्मिन् काले — सदा , अस्मिन् काले — अधुना , इदानीम् , एतर्हि , तस्मिन् काले — तदानीम् ।

काल अर्थ में ये (सदा, अधुना, इदानीं, तदानीं, एतर्हि) निपातन से सिद्ध होते हैं।

सदा

सर्वस्मिन् काले लौ. वि.
सप्तम्याः (700) सू. से त्र प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
किमन्यैक ...... (702) सू. से दा प्रत्यय
सर्व + ङि + दा अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
सर्व + दा
सदा ...... (703) सू. से निपातन से सर्व को स आदेश
स + दा
वर्णों को मिलाने पर सदा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से दा प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

अधुना

अस्मिन् काले लौ. वि.
सदा ...... (703) सू. से निपातन से धुना प्रत्यय
इदम् + सि + धुना अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
इदम् + धुना
सदा ...... (703) सू. से इदम् को अ आदेश
अ + धुना
वर्णों को मिलाने पर अधुना
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

इदानीम्

अस्मिन् काले लौ. वि.
सदा ...... (703) सू. से निपातन से दानीम् प्रत्यय
इदम् + ङि + दानीम् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
इदम् + दानीम्
सदा ...... (703) सू. से इदम् को इकार आदेश
इ + दानीम्
वर्णों के मिलाने पर इदानीम्
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

एतर्हि

अस्मिन् काले लौ. वि.
सदा ...... (703) सू. से निपातन से र्हि प्रत्यय
इदम् + ङि + र्हि अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
इदम् + र्हि
सदा ...... (703) सू. से इदम् को एत आदेश
एत + र्हि
वर्णों को मिलाने पर एतर्हि
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

तदानीम्

तस्मिन् काले लौ. वि.
सदा ...... (703) सू. से निपातन से दानीम् प्रत्यय
तद् + ङि + दानीम् अ. वि.
तसादिः ...... (699) सू. से प्रत्यय को स्यादिवत्
अन्त्य ...... (18) सू. से अद् की टि संज्ञा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

आद्वे ...... (154) सू. से टिसंज्ञक वर्णों को अकार

त + दानीम्

वर्णों को मिलाने पर तदानीम्

अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

शेष सर्वत्रवत्

704. प्रकारे था। (8/1/119)

प्रकारे वर्तमानात् किमद्व्यादिसर्वाद्यवैपुल्यबहोः था प्रत्ययो भवति। सर्वेण प्रकारेण — सर्वथा, यथा, तथा, अन्यथा।

प्रकार (अर्थात् भेद) अर्थ में रहे हुए किम्, द्वि आदि वर्जित सर्वादि एवं अवैपुल्यवाची बहु शब्द से था प्रत्यय होता है।

सर्वथा

सर्वेण प्रकारेण लौ. वि.

प्रकारे ...... (704) सू. से था प्रत्यय

सर्व + टा + था अ. वि.

शेष सर्वत्रवत्

यथा

येन प्रकारेण लौ. वि.

प्रकारे ...... (704) सू. से था प्रत्यय

यद् + टा + था अ. वि.

शेष तत्रवत्

तथा

तेन प्रकारेण लौ. वि.

प्रकारे ...... (704) सू. से था प्रत्यय

तद् + टा + था अ. वि.

शेष तत्रवत्

अन्यथा

अन्येन प्रकारेण लौ. वि.

प्रकारे ...... (704) सू. से था प्रत्यय

अन्य + टा + था अ. वि.

शेष सर्वत्रवत्

705. कथमित्थम्। (8/1/120)

एतौ प्रकारे निपात्येते। केन प्रकारेण — कथम्, अनेन प्रकारेण — इत्थम्।

ये दोनों (कथम् एवं इत्थम्) प्रकार अर्थ में निपातन से सिद्ध होते हैं।

कथम्

केन प्रकारेण लौ. वि.

प्रकारे ...... (704) सू. से था प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

कथ ...... (705) सू. से निपातन से थम् प्रत्यय

किम् + टा + थम् अ. वि.

शेष कदावत्

इत्थम्

अनेन एतेन वा प्रकारेण लौ. वि.

प्रकारे ...... (704) सू. से था प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कथ ...... (705) सू. से निपातन से थम् प्रत्यय

इदम्/एतद् + टा + थम्

तद्धिताः (54) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

इदम्/एतद् + थम्

कथ ...... (705) सू. से इदम्/एतद् को इद् आदेश

इद् + थम्

वर्णों को मिलाने पर इद्थम्

खसे ...... (72) सू. से द् का त्

इत्थम्

अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

शेष सर्वत्रवत्

706. संख्याया धा। (8/1/122)

संख्यायाः प्रकारेऽर्थे धा स्यात्। एकधा, द्विधा, त्रिधा, पञ्चधा, षोढा।

संख्यावाची शब्दों से प्रकार अर्थ में धा प्रत्यय होता है।

एकधा

एकेन प्रकारेण लौ. वि.

संख्याया ...... (706) सू. से धा प्रत्यय

एक + टा + धा अ. वि.

शेष सर्वत्रवत्

द्विधा

द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम् लौ. वि.

संख्याया ...... (706) सू. से धा प्रत्यय

द्वि + भ्याम् + धा अ. वि.

शेष सर्वत्रवत्

त्रिधा

त्रिभिः प्रकारैः लौ. वि.

संख्याया ...... (706) सू. से धा प्रत्यय

त्रि + भिस् + धा अ. वि.

शेष सर्वत्रवत्

पञ्चधा

पञ्चभिः प्रकारैः लौ. वि.

संख्याया ...... (706) सू. से धा प्रत्यय

पञ्चन् + भिस् + धा अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पञ्चन् + धा

नाम ...... (131) सू. से पञ्चन् की पद संज्ञा

नाम्नो ...... (135) सू. से नकार का लोप

पञ्च + धा

वर्णों को मिलाने पर पञ्चधा

अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

शेष सर्वत्रवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

षोढा

षड्भिः प्रकारैः लौ. वि.
संख्याया ...... (706) सू. से धा प्रत्यय
षष् + भिस् + धा अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
षष् + धा
एकादशषोडशषोडन्षोढाषड्ढाः (500) सू. से षष् के अंतिम ष् को उ तथा धा प्रत्यय के ध् को ढ्
षउ + ढा
अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अ का उ के साथ ओ
षो + ढा
वर्णों को मिलाने पर षोढा
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से ढा (धा) प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

707. डत्यतुसंख्यावत्। (1/1/57)

डत्यन्तमत्वन्तञ्च नाम संख्यावत् स्यात्। कतिधा, कियद्धा, यतिधा, यावद्धा।

डति प्रत्ययान्त एवं अतु प्रत्ययान्त नाम संख्यावत् हो जाता है।

कतिधा

कतिभिः प्रकारैः लौ. वि.
डत्यतु ...... (707) सू. से कति नाम को संख्यावत्
संख्याया ...... (706) सू. से धा प्रत्यय
कति + भिस् + धा अ. वि.
शेष सर्वत्रवत्

कियद्धा

कियद्भिः प्रकारैः लौ. वि.
डत्यतु ...... (707) सू. से कियतु नाम को संख्यावत्
संख्याया ...... (706) सू. से धा प्रत्यय
कियतु + भिस् + धा अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
कियतु + धा, उकार अनुबन्ध
कियत् + धा
नाम ...... (131) सू. से कियत् की पद संज्ञा
झसा ...... (59) सू. से त् का द्
कियद् + धा
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर कियद्धा
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

यतिधा

यतिभिः प्रकारैः लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

डत्यतु ...... (707) सू. से यति नाम को संख्यावत्
संख्याया ...... (706) सू. से धा प्रत्यय
यति + भिस् + धा अ. वि.
शेष सर्वत्रवत्

यावद्धा

यावद्भि: प्रकारै: लौ. वि.
डत्यतु ...... (707) सू. से यावतु नाम को संख्यावत्
संख्याया ...... (706) सू. से धा प्रत्यय
यावतु + भिस् + धा अ. वि.
शेष कियद्धावत्

708. विचाले च। (8/1/123)

द्रव्यस्य संख्यान्तरापादनं विचालस्तत्र प्रकारे च संख्याया धा स्यात्। एकं राशिं पञ्चधा कुरु।

द्रव्य का अन्य संख्या को प्राप्त करना विचाल कहलाता है। विचाल (अर्थ) में एवं प्रकार (अर्थ) में संख्यावाची (शब्दों) से धा प्रत्यय होता है।

विचाल अर्थ में—

एकं राशिं पञ्चधा कुरु

एकं राशिं पञ्च कुरु लौ. वि.
विचाले च (708) सू. से धा प्रत्यय
पञ्चन् + शस् + धा अ. वि.
तद्धिता: (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
पञ्चन् + धा
नाम ...... (131) सू. से पञ्चन् की पद संज्ञा
नाम्नो ...... (135) सू. से नकार का लोप
पञ्च + धा
वर्णों को मिलाने पर पञ्चधा
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

प्रकार अर्थ में—

पञ्चधा

पञ्चभि: प्रकारै: लौ. वि.
विचाले च (708) सू. से धा प्रत्यय
पञ्चन् + भिस् + धा अ. वि.
शेष पूर्ववत्

709. वैकाद् ध्यमुञ्। (8/1/124)

एकशब्दात् प्रकारे विचाले च ध्यमुञ् वा स्यात्। एकेन प्रकारेण — ऐकध्यमेकधा वा भुङ्क्ते। अनेकमेकं करोति — ऐकध्यमेकधा वा करोति।

एक शब्द से प्रकार (अर्थ) में और विचाल अर्थ में ध्यमुञ् (प्रत्यय) विकल्प से होता है।

ऐकध्यम्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

एकेन प्रकारेण लौ. वि.
वैकाद् ...... (709) सू. से विकल्प से ध्यमुञ् प्रत्यय
एक + टा + ध्यमुञ् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. विभ. का लुक्
एक + ध्यमुञ्, ञ् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
वृद्धिः ...... (519) सू. से आदि स्वर की वृद्धि
ऐक + ध्यम्
वर्णों को मिलाने पर ऐकध्यम्
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्
पक्ष में — जहां पर ध्यमुञ् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

एकधा

एकेन प्रकारेण लौ. वि.
विचाले च (708) सू. से धा प्रत्यय
एक + टा + धा अ. वि.
शेष सर्वत्रवत्

ऐकध्यम्

अनेकमेकं करोति लौ. वि.
वैकाद् ...... (709) सू. से विकल्प से ध्यमुञ् प्रत्यय
एक + अम् + ध्यमुञ् अ. वि.
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — जहां पर ध्यमुञ् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

एकधा

अनेकमेकं करोति लौ. वि.
विचाले च (708) सू. से धा प्रत्यय
एक + अम् + धा अ. वि.
शेष सर्वत्रवत्

710. द्वित्रेर्धमुञेधौ । (8/1/125)

आभ्यां प्रकारे विचाले च धमुञेधौ वा स्तः। द्वैधम्, त्रैधम्, द्वेधा, त्रेधा। पक्षे — द्विधा, त्रिधा।

इन (द्वि एवं त्रि) शब्दों से प्रकार एवं विचाल (अर्थ) में धमुञ् एवं एधा (प्रत्यय) विकल्प से होते हैं।

द्वैधम्

द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम् लौ. वि.
द्वि ...... (710) सू. से विकल्प से धमुञ् प्रत्यय
द्वि + भ्याम् + धमुञ् अ. वि.
शेष ऐकध्यम्वत्

द्वेधा

द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम् लौ. वि.
द्वि ...... (710) सू. से विकल्प से एधा प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

द्वि + भ्याम् + एधा अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
द्वि + एधा
इवर्णा ...... (451) सू. से इकार का लोप
द्व् + एधा
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर द्वेधा
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से धा प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्
पक्ष में — जहां पर धमुञ् एवं एधा प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

द्विधा

द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम् लौ. वि.
विचाले च (708) सू. से धा प्रत्यय
द्वि + भ्याम् + धा अ. वि.
शेष सर्वत्रवत्

द्वैधम्

एकं राशिं द्वौ करोति लौ. वि.
द्वि ...... (710) सू. से विकल्प से धमुञ् प्रत्यय
द्वि + औ + धमुञ् अ. वि.
शेष पूर्ववत्

द्वेधा

एकं राशिं द्वौ करोति लौ. वि.
द्वि ...... (710) सू. से विकल्प से एधा प्रत्यय
द्वि + औ + एधा अ. वि.
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — जहां पर धमुञ् एवं एधा प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

द्विधा

एकं राशिं द्वौ करोति लौ. वि.
विचाले च (708) सू. से धा प्रत्यय
द्वि + औ + धा अ. वि.
शेष पूर्ववत्

त्रैधम्

त्रिभिः प्रकारैः लौ. वि.
द्वि ...... (710) सू. से विकल्प से धमुञ् प्रत्यय
त्रि + भिस् + धमुञ् अ. वि.
शेष ऐकध्यम्वत्

त्रेधा

त्रिभिः प्रकारैः लौ. वि.
द्वि ...... (710) सू. से विकल्प से एधा प्रत्यय
त्रि + भिस् + एधा अ. वि.
शेष द्वेधावत्
पक्ष में — जहां पर धमुञ् एवं एधा प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

त्रिधा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

त्रिभिः प्रकारैः लौ. वि.
विचाले च (708) सू. से धा प्रत्यय
त्रि + भिस् + धा अ. वि.
शेष सर्वत्रवत्

त्रैधम्

एकं राशिं त्रीन् करोति लौ. वि.
द्वि ...... (710) सू. से विकल्प से धमुञ् प्रत्यय
त्रि + शस् + धमुञ् अ. वि.
शेष ऐकध्यम्वत्

त्रेधा

एकं राशिं त्रीन् करोति लौ. वि.
द्वि ...... (710) सू. से विकल्प से एधा प्रत्यय
त्रि + शस् + एधा अ. वि.
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — जहां पर धमुञ् एवं एधा प्रत्यय नहीं होंगे वहां —

त्रिधा

एकं राशिं त्रीन् करोति लौ. वि.
विचाले च (708) सू. से धा प्रत्यय
त्रि + शस् + धा अ. वि.
शेष पूर्ववत्

711. वारे कृत्वस्। (8/1/127)

संख्याया वारे कृत्वस् स्यात्। पञ्चवारं भुङ्क्ते — पञ्चकृत्वो भुङ्क्ते। एवं षट्कृत्वः, सप्तकृत्वः।

संख्यावाची (शब्दों) से वार अर्थ में कृत्वस् प्रत्यय होता है।

पञ्चकृत्वः भुङ्क्ते

पञ्च वारा अस्य/पञ्चवारम् लौ. वि.
वारे ...... (711) सू. से कृत्वस् प्रत्यय
पञ्चन् + जस् + कृत्वस् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
पञ्चन् + कृत्वस्
नाम ...... (131) सू. से पञ्चन् की पद संज्ञा
नाम्नो ...... (135) सू. से नकार का लोप
पञ्च + कृत्वस्
वर्णों को मिलाने पर पञ्चकृत्वस्
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष ग्रामतःवत्

षट्कृत्वः

षड् वारा अस्य/षड्वारम् लौ. वि.
वारे ...... (711) सू. से कृत्वस् प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

षष् + शस् + कृत्वस् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
षष् + कृत्वस्
नाम ...... (131) सू. से षष् की पद संज्ञा
झसा ...... (59) सू. से ष् का ड्
षड् + कृत्वस्
खसे ...... (72) सू. से ड् का ट्
षट् + कृत्वस्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर षट्कृत्वस्
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष ग्रामतःवत्

सप्तकृत्वः

सप्त वारा अस्य/सप्तवारम् लौ. वि.
वारे ...... (711) सू. से कृत्वस् प्रत्यय
सप्तन् + जस् + कृत्वस् अ. वि.
शेष पञ्चकृत्वःवत्

712. द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच् । (8/1/128)

द्वि, त्रि, चतुर्—इत्येतेभ्यः संख्याशब्देभ्यो वारे सुच् प्रत्ययो भवति। द्विवारमिति—द्विर्भुङ्क्ते, त्रिर्भुङ्क्ते, चतुर्भुङ्क्ते।

संख्यावाची द्वि, त्रि एवं चतुर् शब्द से वार अर्थ में सुच् प्रत्यय होता है।

द्विः भुङ्क्ते

द्वौ वारौ अस्य/द्विवारम् लौ. वि.
वारे ...... (711) सू. से कृत्वस् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
द्वि ...... (712) सू. से सुच् प्रत्यय
द्वि + औ + सुच् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
द्वि + सुच्, च् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
द्वि + स्
वर्णों को मिलाने पर द्विस्
अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष ग्रामतःवत्

त्रिः भुङ्क्ते

त्रयः वारा अस्य/त्रिवारम् लौ. वि.
वारे ...... (711) सू. से कृत्वस् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
द्वि ...... (712) सू. से सुच् प्रत्यय
त्रि + जस् + सुच् अ. वि.
शेष द्विःवत्

चतुः भुङ्क्ते

चत्वारो वारा अस्य/चतुर्वारम् लौ. वि.
वारे ...... (711) सू. से कृत्वस् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

द्वि ...... (712) सू. से सुच् प्रत्यय

चतुर् + जस् + सुच् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

चतुर् + सुच्, च् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर चतुर्स्

अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

चतुर्स् + सि

अव्ययस्य (294) सू. से सि प्रत्यय का लुक्

संयोगस्य (206) सू. से सकार का लोप

चतुर्

स्रोर्वि .... (89) सू. से र् का विसर्ग करने पर चतुः रूप सिद्ध हुआ।

713. एकात् सकृच्चास्य। (8/1/129)

वारे सुच् स्यात् अस्य च सकृदादेशः। एकवारमिति — सकृद् भुङ्क्ते।

(एक शब्द से) वार अर्थ में सुच् (प्रत्यय) होता है और एक शब्द को सकृत् आदेश होता है।

सकृत् भुङ्क्ते

एक वारः अस्य/एकवारम् लौ. वि.

एकात् ...... (713) सू. से सुच् प्रत्यय

एक + सि + सुच् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

एक + सुच्

एकात् ...... (713) सू. से एक के स्थान पर सकृत् आदेश

सकृत + सुच्, च् अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ

वर्णों को मिलाने पर सकृत्स्

अधण् ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

शेष चतुःवत्

714. प्रकृष्टे तमः। (8/2/1)

नाम्नः प्रकृष्टेऽर्थे तमः स्यात्। अयमेषां प्रकृष्टः शुक्लः — शुक्लतमः, साधकतमः, कारकतमः।

नाम से प्रकृष्ट अर्थ में तम (प्रत्यय) होता है।

शुक्लतमः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा शुक्लः लौ. वि.

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय

शुक्ल + सि + तम अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

साधकतमः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा साधकः लौ. वि.

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

साधक + सि + तम अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

कारकतमः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा कारकः लौ. वि.

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय

कारक + सि + तम अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

715. द्वयोर्विभज्ये च तरः। (8/2/2)

द्वयोः प्रकृष्टे विभज्ये प्रकृष्टे च नाम्नस्तरः स्यात्। अयमनयोः प्रकृष्टः पटुः — पटुतरः, पाचकतरः, सांकाश्यकेभ्यः पाटलिपुत्रकाः आढ्यतराः, अभिरूपतराः।

दो (पदार्थों) में से (एक पदार्थ की गुण एवं क्रिया के आधार पर अपेक्षाकृत) प्रकृष्टता में तथा विभज्य (अर्थात् जिन्हें पृथक् करना है) की प्रकृष्टता में तर प्रत्यय होता है।

पटुतरः

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा पटुः लौ. वि.

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय

पटु + सि + तर अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

पाचकतरः

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा पाचकः लौ. वि.

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय

पाचक + सि + तर अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

आढ्यतराः

सांकाश्यकेभ्यः पाटलिपुत्रकाः प्रकृष्टाः अतिशयेन वा आढ्याः लौ. वि.

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय

आढ्य + जस् + तर अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

आढ्य + तर

वर्णों को मिलाने पर आढ्य + तर

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में जस् प्रत्यय

आढ्यतर + जस्

शेष आरण्यवत्

अभिरूपतराः

सांकाश्यकेभ्यः पाटलिपुत्रकाः प्रकृष्टाः अतिशयेन वा अभिरूपाः लौ. वि.

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय

अभिरूप + जस् + तर अ. वि.

शेष आरण्यवत्

716. त्यादिकिमेदव्ययेभ्यस्ताभ्यामामद्रव्ये। (8/2/4)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

त्याद्यन्त, किम्, एदन्त, अव्यय इत्येतेभ्यः पराभ्यां तमतराभ्यामाम् स्यात् अद्रव्ये। पचतितमाम्, पचतितराम्, किन्तमाम्, किन्तराम्, अग्रेतमाम्, अग्रेतराम्, उच्चैस्तमाम्, उच्चैस्तराम्। एभ्य इति किम् — शीघ्रतरं गच्छति। अद्रव्य इति किम् — किन्तरं दारु।

त्यादि अन्त, किम्, एदन्त और अव्यय (शब्दों) से परे तम एवं तर (प्रत्ययों) से आम् (प्रत्यय) होता है द्रव्यवाची (शब्द) को छोड़कर।

पचतितमाम्

अयमेषां प्रकृष्टं अतिशयेन वा पचति लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय
पचति + तम
वर्णों को मिलाने पर पचतितम
त्यादि ...... (716) सू. से आम् प्रत्यय
पचतितम + आम्
समानानां ...... (36) सू. से अकार को आकार के साथ दीर्घ
पचतितमाम्
च्विसात्त्राडाच्तसिशसिज्वदामः (भिक्षु. 1/1/51) सू. से प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष सर्वत्रवत्

पचतितराम्

अयमनयोः प्रकृष्टं अतिशयेन वा पचति लौ. वि.
द्वयो....... (715) सू. से तर प्रत्यय
पचति + तर
वर्णो को मिलाने पर पचतितर
त्यादि ...... (716) सू. से आम् प्रत्यय
पचतितर + आम्
शेष पचतितमाम्वत्

किन्तमाम्

इदमेषां प्रकृष्टं अतिशयेन वा किम् लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय
किम् + सि + तम अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
किम् + तम
म्नां ...... (79) सू. से म् का न्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर
किन्तम
त्यादि ...... (716) सू. से आम् प्रत्यय
किन्तम + आम्
शेष पचतितमाम्वत्

किन्तराम्

इदमनयोः प्रकृष्टं अतिशयेन वा किम् लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय
किम् + सि + तर अ. वि.
शेष किन्तमाम्वत्

अग्रेतमाम्

अयमेषां प्रकृष्टं अतिशयेन वा अग्रे लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय
अग्रे + तम
वर्णों को मिलाने पर अग्रेतम
त्यादि ...... (716) सू. से आम् प्रत्यय
अग्रेतम + आम्
शेष पचतितमाम्वत्

अग्रेतराम्

अयमनयोः प्रकृष्टं अतिशयेन वा अग्रे लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय
अग्रे + तर
वर्णों को मिलाने पर अग्रेतर
त्यादि ...... (716) सू. से आम् प्रत्यय
अग्रेतर + आम्
शेष पचतितमाम्वत्

उच्चैस्तमाम्

अयमेषां प्रकृष्टं अतिशयेन वा उच्चैः लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय
उच्चैस् + तम
नाम ...... (131) सू. से उच्चैस् की पद संज्ञा
स्रोर्वि ..... (89) सू. से सकार का विसर्ग
उच्चैः + तम
विसर्गस्य ...... (82) सू. से विसर्ग का सकार
उच्चैस् + तम
स्वर .... न्याय से वर्णों को मिलाने पर उच्चैस्तम
त्यादि ...... (716) सू. से आम् प्रत्यय
उच्चैस्तम + आम्
शेष पचतितमाम्वत्

उच्चैस्तराम्

अयमनयोः प्रकृष्टं अतिशयेन वा उच्चैः लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय
उच्चैस् + तर
नाम ...... (131) सू. से उच्चैस् की पद संज्ञा
स्रोर्वि ...... (89) सू. से सकार का विसर्ग
उच्चैः + तर
विसर्ग ...... (82) सू. से विसर्ग का सकार
उच्चैस् + तर
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर उच्चैस्तर
त्यादि ...... (716) सू. से आम् प्रत्यय
उच्चैस्तर + आम्
शेष पचतितमाम्वत्

इन (त्याद्यन्त, किम्, एदन्त एवं अव्यय) से परे तम्, तर प्रत्यय से आम् प्रत्यय होगा ऐसा क्यों ?

शीघ्रतरं गच्छति

अयमनयोः शीघ्रं गच्छति लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय

शीघ्र + अम् + तर अ. वि.

शेष गोमयवत्

शीघ्र शब्द त्याद्यन्त, किम्, एदन्त एवं अव्यय में किसी के अन्तर्गत नहीं है अतः त्यादि ..... (716) सू. से आम् प्रत्यय नहीं हुआ। द्रव्यवाची को क्यों छोड़ा ? किन्तरं दारु उदाहरण में किन्तर शब्द (द्रव्यवाची) दारु का विशेषण है अतः त्यादि ...... (716) सू. से आम् प्रत्यय नहीं होगा।

किन्तरं दारु

इदमनयोः प्रकृष्टं अतिशयेन वा किम् लौ. वि.

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय

किम् + सि + तर अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से तर प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

किम् + तर

म्नां ...... (79) सू. से म् का न्

किन् + तर

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर किन्तर

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

किन्तर + सि

शेष कौसुम्भवत्

717. गुणाङ्गादिष्ठेयसू तदर्थे वा। (8/2/5)

गुणाङ्गे वर्तमानात् तमतरार्थे इष्ठेयसू प्रत्ययौ वा स्तः। तमार्थे इष्ठः, पटिष्ठः, पटुतमः। तरार्थे ईयसुः—पटीयान्, पटुतरः।

xq.kk³~x e— jgs gq, ¼ÓCnk—½ ls re ,oa rj vFkZ e— ¼Øe'k%½ b"B ,oa Ã;lq çR;; fodYi ls gksrs g® A

पटिष्ठः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा पटुः लौ. वि.

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर

गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से इष्ठ प्रत्यय

पटु + सि + इष्ठ अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

पटु + इष्ठ

अन्त्य ...... (18) सू. से उकार की टि संज्ञा

टेः ...... (634) सू. से टिसंज्ञक वर्ण का लोप

पट् + इष्ठ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पटिष्ठ

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

पटिष्ठ + सि

शेष शैववत्

पक्ष में—जहां पर इष्ठ प्रत्यय नहीं होगा वहां—

पटुतमः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा पटुः लौ. वि.

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पटु + सि + तम अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

पटीयान्

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा पटुः लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर की प्राप्ति उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय
पटु + सि + ईयसु अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
पटु + ईयसु, उकार अनुबन्ध
अन्त्य ...... (18) सू. से उकार की टि संज्ञा
टेः (634) सू. से टि संज्ञक वर्ण का लोप
पट् + ईयस्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पटीयस् + सि
पुंस्त्रियोः ...... (133) सू. से सि प्रत्यय की थुट् संज्ञा
मिदन्त्य ...... (195) सू. की सहायता से
उदृदितो ...... (249) सू. से अन्तिम स्वर से परे नुम् का आगम
पटीयनुम्स् + सि, मकार अनुबन्ध, उकार उच्चारणार्थ
पटीयन्स् + सि
न्स्महतः (250) सू. से न्स् की उपधा को दीर्घ
पटीयान्स् + सि
हसेपः ...... (183) सू. से सि प्रत्यय का लोप
संयोगस्य (206) सू. से सकार का लोप करने पर पटीयान् रूप सिद्ध हुआ।
पक्ष में — जहां पर ईयसु प्रत्यय नहीं होगा वहां —

पटुतरः

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा पटुः लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय
पटु + सि + तर अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

718. बहोर्णीष्ठे भूय्। (8/1/40)

बहोर्णीष्ठयोः परयोः भूय् इत्यादेशः स्यात्। भूयिष्ठः। ईयसौ — भूयान्।

बहु को भूय् आदेश होता है ञि एवं इष्ठ (प्रत्यय) परे होने पर।

भूयिष्ठः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा बहुः लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से इष्ठ प्रत्यय
बहु + सि + इष्ठ अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
बहु + इष्ठ
बहो ...... (718) सू. से बहु को भूय् आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

भूय् + इष्ठ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर भूयिष्ठ
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
भूयिष्ठ + सि
शेष शैववत्
पक्ष में—जहां पर इष्ठ प्रत्यय नहीं होगा वहां—

बहुतमः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा बहुः लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय
बहु + सि + तम अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

भूयान्

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा बहुः लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय
बहु + सि + ईयसु अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
बहु + ईयसु, उकार अनुबन्ध
भू ...... (637) सू. से बहु को भू आदेश एवं ईयसु के ईकार का लोप
भू + यस्
वर्णों को मिलाने पर भूयस्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
भूयस् + सि
शेष पटीयान्वत्
पक्ष में—जहां पर ईयसु प्रत्यय नहीं होगा वहां—

बहुतरः

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा बहुः लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय
बहु + सि + तर अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

719. प्रशस्यस्य श्रः। (8/4/34)

प्रशस्यशब्दस्य श्रादेशः स्यात् ञीष्ठेयस्सु परतः। श्रेष्ठः, श्रेयान्।

प्रशस्य शब्द को श्र आदेश होता है ञि, इष्ठ और ईयसु (प्रत्यय) परे होने पर।

श्रेष्ठः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा प्रशस्यः लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
गुणाङ्गा...... (717) सू. से विकल्प से इष्ठ प्रत्यय
प्रशस्य + सि + इष्ठ अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
प्रशस्य + इष्ठ
प्रशस्यस्य ...... (719) सू. से प्रशस्य को श्र आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

श्र + इष्ठ

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का इकार के साथ एकार श्रेष्ठ

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

शेष शैववत्

पक्ष में — जहां पर इष्ठ प्रत्यय नहीं होगा वहां —

प्रशस्यतमः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा प्रशस्यः लौ. वि.

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय

प्रशस्य + सि + तम अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

श्रेयान्

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा प्रशस्यः लौ. वि.

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय

प्रशस्य + सि + ईयसु अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

प्रशस्य + ईयसु, उकार अनुबन्ध

प्रशस्यस्य ...... (719) सू. से प्रशस्य को श्र आदेश

श्र + ईयस्

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का ईकार के साथ एकार

श्रेयस्

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

श्रेयस् + सि

शेष पटीयान्वत्

पक्ष में — जहां पर ईयसु प्रत्यय नहीं होगा वहां —

प्रशस्यतरः

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा प्रशस्यः लौ. वि.

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय

प्रशस्य + सि + तर अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

720. वृद्धस्य च ज्यः। (8/4/35)

वृद्धस्य प्रशस्यस्य च ज्यादेशः स्यात् ञीष्ठेयस्सु परतः। ज्येष्ठः।

वृद्ध एवं प्रशस्य को ज्य आदेश होता है ञि, इष्ठ एवं ईयसु (प्रत्यय) परे होने पर।

ज्येष्ठः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा प्रशस्यः लौ. वि.

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से इष्ठ प्रत्यय

प्रशस्य + सि + इष्ठ अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

प्रशस्य + इष्ठ

वृद्धस्य ...... (720) सू. से प्रशस्य को ज्य आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ज्य + इष्ठ

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अ का इ के साथ ए

ज्येष्ठ

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

ज्येष्ठ + सि

शेष शैववत्

पक्ष में — जहां पर इष्ठ प्रत्यय नहीं होगा वहां —

प्रशस्यतम:

अयमेषां प्रकृष्ट: अतिशयेन वा प्रशस्य: लौ. वि.

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय

प्रशस्य + सि + तम अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

ज्येष्ठ:

अयमेषां प्रकृष्ट: अतिशयेन वा वृद्ध: लौ. वि.

गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से इष्ठ प्रत्यय

वृद्ध + सि + इष्ठ अ. वि.

शेष पूर्ववत्

पक्ष में — जहां पर इष्ठ प्रत्यय नहीं होगा वहां —

वृद्धतम:

अयमेषां प्रकृष्ट: अतिशयेन वा वृद्ध: लौ. वि.

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय

वृद्ध + सि + तम अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

721. ज्यायान् । (8/4/36)

ईयसौ वृद्धप्रशस्ययो: ज्यादेशो ज्यायान् इति निपात्यते । ज्यायान्, ज्यायसी ।

Ã;lq ¼çR;;½ ijs gksus ij o`) ,oa ç'kL; dks T; vkns'k gksus ij T;k;ku~ fuikru ls gksrk gS A

ज्यायान्

अयमनयो: प्रकृष्ट: अतिशयेन वा प्रशस्य: लौ. वि.

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय

प्रशस्य + सि + ईयसु अ. वि.

तद्धिता: (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

प्रशस्य + ईयसु, उकार अनुबन्ध

वृद्धस्य ...... (720) सू. से प्रशस्य को ज्य आदेश

ज्य + ईयस्

ज्यायान् (721) सू. से निपातन से ईकार का आकार

ज्य + आयस्

समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

ज्यायस् + सि

शेष पटीयान्वत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में — जहां पर ईयसु प्रत्यय नहीं होगा वहां —

प्रशस्यतरः

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा प्रशस्यः लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय
प्रशस्य + सि + तर अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

ज्यायान्

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा वृद्धः लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय
वृद्ध + सि + ईयसु अ. वि.
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — जहां पर ईयसु प्रत्यय नहीं होगा वहां —

वृद्धतरः

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा वृद्धः लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय
वृद्ध + सि + तर अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

ज्यायसी

इयमनयोः प्रकृष्टा अतिशयेन वा प्रशस्या लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय
प्रशस्या + सि + ईयसु अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
प्रशस्या + ईयसु, उकार अनुबन्ध
वृद्धस्य ...... (720) सू. से प्रशस्या को ज्या आदेश
ज्या + ईयस्
ज्यायान् (721) सू. से निपातन से ईकार का आकार
ज्या + आयस्
समानानां ...... (36) सू. से आकार का आकार के साथ दीर्घ
ज्यायस्
गौरादिभ्यः (308) सू. से ईप् प्रत्यय
ज्यायस् + ईप्, प् अनुबन्ध
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों का मिलाने पर ज्यायसी
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
ज्यायसी + सि
हसेपः ...... (183) सू. सि का लोप करने पर ज्यायसी रूप सिद्ध हुआ।
पक्ष में — जहां ईयसु प्रत्यय नहीं होगा वहां —

प्रशस्यतरा

इयमनयोः प्रकृष्टा अतिशयेन वा प्रशस्या लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय
प्रशस्या + सि + तर अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

प्रशस्या + तर

मानि ...... (626) सू. से पुंवद्भाव

प्रशस्य + तर

वर्णों को मिलाने पर प्रशस्यतर

आबत: ...... (295) सू. से आप् प्रत्यय

प्रशस्यतर + आप्, प् अनुबन्ध

समानानां ...... (36) सू. से अकार का आकार के साथ दीर्घ

प्रशस्यतरा + सि

आप: (172) सू. से सि का लोप करने पर प्रशस्यतरा रूप सिद्ध हुआ।

ज्यायसी

इयमनयो: प्रकृष्टा अतिशयेन वा वृद्धा लौ. वि.

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय

वृद्धा + सि + ईयसु अ. वि.

शेष पूर्ववत्

पक्ष में—जहां पर ईयसु प्रत्यय नहीं होगा वहां—

वृद्धतरा

इयमनयो: प्रकृष्टा अतिशयेन वा वृद्धा लौ. वि.

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय

वृद्धा + सि + तर अ. वि.

शेष प्रशस्यतरावत्

722. युवाल्पयो: कन् वा। (8/4/33)

vu;ks% dukns'kks ok L;kr~ ×kh"Bs;Llq ijr% A vfr'k;su ;qok vYiks ok—dfu"B%] duh;ku~A i{ks—

युवन् एवं अल्प इन दो शब्दों को कन् आदेश विकल्प से होता है ञि, इष्ठ और ईयसु (प्रत्यय) परे होने पर।

कनिष्ठ:

अयमेषां प्रकृष्ट: अतिशयेन वा युवा लौ. वि.

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर

गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से इष्ठ प्रत्यय

युवन् + सि + इष्ठ अ. वि.

तद्धिता: (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

युवन् + इष्ठ

युवाल्पयो: ...... (722) सू. से युवन् को विकल्प से कन् आदेश

कन् + इष्ठ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर कनिष्ठ

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

कनिष्ठ + सि

शेष शैववत्

पक्ष में—जहां पर युवन् शब्द को कन् आदेश नहीं होगा वहां —

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

723. स्थूलदूरयुवह्रस्वक्षिप्रक्षुद्राणां यलादेर्नामिनो गुणश्च। (8/4/42)

एषामिमनि ओष्ठेयस्सु च परेषु यलादेरवयवस्य लोपो नामिनश्च गुणः स्यात्। यविष्ठः, यवीयान्, अल्पिष्ठः, अल्पीयान्, गरिष्ठः, गरीयान्।

bu ¼LFkwy] nwj] ;qou~] f{kç ,oa {kqnz½ ds beu~] f×k] b"B ,oa bZ;lq ¼çR;;½ ijs gksus ij ;ykfn ¼ftle— ;] o] j] y g® ,sls½ vo;o dk yksi vkSj ukeh dks xq.k gksrk gS A

यविष्ठः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा युवा लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से इष्ठ प्रत्यय
युवन् + सि + इष्ठ अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
युवन् + इष्ठ
अन्त्य ...... (18) सू. से अन् की टि संज्ञा
टेः (634) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप
युव् + इष्ठ
स्थूल ...... (723) सू. से वकार का लोप और उकार को गुण
यो + इष्ठ
ओदौतो ...... (34) सू. से ओकार का अव्
य् + अव् + इष्ठ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर
यविष्ठ
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
यविष्ठ + सि
शेष शैववत्
पक्ष में— जहां पर इष्ठ प्रत्यय नहीं होगा वहां —

युवतमः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा युवा लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय
युवन् + सि + तम अ. वि.
शेष पञ्चतयवत्

कनिष्ठः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा अल्पः लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय की प्राप्ति उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से इष्ठ प्रत्यय
अल्प + सि + इष्ठ अ. वि.
शेष पूर्ववत्
पक्ष में— जहां पर अल्प शब्द को कन् आदेश नहीं होगा वहां —

अल्पिष्ठः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा अल्पः लौ. वि.
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से इष्ठ प्रत्यय
अल्प + सि + इष्ठ अ. वि.
शेष कुलीनवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पक्ष में— जहां पर इष्ठ प्रत्यय नहीं होगा वहां—

अल्पतमः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा अल्पः लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (717) सू. से तम प्रत्यय
अल्प + सि + तम अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

कनीयान्

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा युवा लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से विकल्प से तर प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय
युवन् + सि + ईयसु अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
युवन् + ईयसु, उकार अनुबन्ध
युवा ...... (722) सू. से विकल्प से युवन् को कन् आदेश
कन् + ईयस्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर कनीयस्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
कनीयस् + सि
शेष पटीयान्वत्

पक्ष में— जहां पर युवन् को कन् आदेश नहीं होगा वहां —

यवीयान्

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा युवा लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय
युवन् + सि + ईयसु अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
युवन् + ईयसु, उकार अनुबन्ध
अन्त्य... (18) सू. से अन् की टिसंज्ञा
नोऽपदस्य ...... (406) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का लोप
युव् + ईयस्
स्थूल ...... (723) सू. से वकार का लोप एवं नामी को गुण
यो + ईयस्
ओदौतो ...... (34) सू. से ओकार को अव्
य् + अव् + ईयस्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर यवीयस्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
यवीयस् + सि
शेष पटीयान्वत्

पक्ष में— जहां पर इष्ठ प्रत्यय नहीं होगा वहां —

युवतरः

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा युवा लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

युवन् + सि + तर अ. वि.
शेष पञ्चतयवत्

कनीयान्

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा अल्पः लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर की प्राप्ति उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से ईयसु प्रत्यय
अल्प + सि + ईयसु अ. वि.
शेष पूर्ववत्
पक्ष में — जहां पर अल्प को कन् आदेश नहीं होगा वहां —

अल्पीयान्

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा अल्पः लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय
अल्प + सि + ईयसु अ. वि.
शेष पटीयान्वत्
पक्ष में — जहां पर ईयसु प्रत्यय नहीं होगा वहां —

अल्पतरः

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा अल्पः लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय
अल्प + सि + तर अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

गरिष्ठः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा गुरुः लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से इष्ठ प्रत्यय
गुरु + सि + इष्ठ अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
गुरु + इष्ठ
प्रियस्थिर ...... (635) सू. से गुरु को गर आदेश
गर + इष्ठ, अकार उच्चारणार्थ
गर् + इष्ठ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर गरिष्ठ
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
गरिष्ठ + सि
शेष शैववत्
पक्ष में — जहां पर इष्ठ प्रत्यय नहीं होगा वहां —

गुरुतमः

अयमेषां प्रकृष्टः अतिशयेन वा गुरुः लौ. वि.
प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय
गुरु + सि + तम अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

गरीयान्

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा गुरुः लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
गुणाङ्गा ...... (717) सू. से विकल्प से ईयसु प्रत्यय
गुरु + सि + ईयसु अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
गुरु + ईयसु
प्रियस्थिर ...... (635) सू. से गुरु को गर आदेश
गर + ईयसु, उकार अनुबन्ध, अकार उच्चारणार्थ
गर् + ईयस्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर गरीयस्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
गरीयस् + सि
शेष पटीयान्वत्
पक्ष में — जहां पर ईयसु प्रत्यय नहीं होगा वहां —

गुरुतरः

अयमनयोः प्रकृष्टः अतिशयेन वा गुरुः लौ. वि.
द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय
गुरु + सि + तर अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

724. त्यादेश्च प्रशंसायां रूपः। (8/2/6)

त्याद्यन्तात् नाम्नश्च प्रशंसायां रूपः स्यात्। प्रशस्तं पचति — पचतिरूपम्, पश्यतिरूपम्, प्रशस्तो वैयाकरणः — वैयाकरणरूपः, नैयायिकरूपः।

त्यादि अन्त से और नाम से प्रशंसा अर्थ में रूप (प्रत्यय) होता है।

पचतिरूपम्

प्रशस्तं पचति लौ. वि.
त्यादेश्च ...... (724) सू. से रूप प्रत्यय
पचति + रूप
वर्णों को मिलाने पर पचतिरूप
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पचतिरूप + सि
शेष कौसुम्भवत्

पश्यतिरूपम्

प्रशस्तं पश्यति लौ. वि.
त्यादेश्च ...... (724) सू. से रूप प्रत्यय
पश्यति + रूप
वर्णों को मिलाने पर पश्यतिरूप
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
पश्यतिरूप + सि
शेष कौसुम्भवत्

वैयाकरणरूपः

प्रशस्तो वैयाकरणः लौ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

त्यादेश्च ...... (724) सू. से रूप प्रत्यय
वैयाकरण + सि + रूप अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

नैयायिकरूपः

प्रशस्तो नैयायिकः लौ. वि.
त्यादेश्च ...... (724) सू. से रूप प्रत्यय
नैयायिक + सि + रूप अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

725. अतमादेरीषदसमाप्ते कल्पदेश्यदेशीयाः। (8/2/7)

तमाद्यन्तवर्जितात् त्याद्यन्तात् नाम्नश्च ईषदसमाप्तेऽर्थे कल्प, देश्य, देशीय इत्येते प्रत्ययाः स्युः। ईषदसमाप्तं पचति — पचतिकल्पम्, पचतिदेश्यम्, पचतिदेशीयम्। एवं पटुकल्पः, पटुदेश्यः, पटुदेशीयः।

rekfn vUr dks NksM+dj R;kfn vUr ls vkSj uke ls Ã"kn~ ¼vFkkZr~ FkksM+k½ vlekIr vFkZ e— dYi] ns'; ,oa ns'kh; çR;; gks tkrs g®

A

पचतिकल्पम्

ईषदसमाप्तं पचति लौ. वि.
अतमादे ...... (725) सू. से कल्प प्रत्यय
पचति + कल्प
शेष पचतिरूपवत्

पचतिदेश्यम्

ईषदसमाप्तं पचति लौ. वि.
अतमादे ...... (725) सू. से देश्य प्रत्यय
पचति + देश्य
शेष पचतिरूपवत्

पचतिदेशीयम्

ईषदसमाप्तं पचति लौ. वि.
अतमादे ...... (725) सू. से देशीय प्रत्यय
पचति + देशीय
शेष पचतिरूपवत्

पटुकल्पः

ईषदसमाप्तः पटुः लौ. वि.
अतमादे ...... (725) सू. से कल्प प्रत्यय
पटु + सि + कल्प अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

पटुदेश्यः

ईषदसमाप्तः पटुः लौ. वि.
अतमादे ...... (725) सू. से देश्य प्रत्यय
पटु + सि + देश्य अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

पटुदेशीयः

ईषदसमाप्तः पटुः लौ. वि.
अतमादे ...... (725) सू. से देशीय प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पटु + सि + देशीय अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

726. नाम्नः प्राग् बहुर्वा। (8/2/8)

ईषदसमाप्तेऽर्थे नाम्नः प्राग् बहुप्रत्ययो वा स्यात्। ईषदसमाप्तः पटुः—बहुपटुः, बहुभुक्तम्।

ईषद् असमाप्त अर्थ में नाम से पूर्व बहु प्रत्यय विकल्प से होता है।

बहुपटु :

ईषदसमाप्तः पटुः लौ. वि.

नाम्नः ...... (726) सू. से विकल्प से पटु से पूर्व बहु प्रत्यय

बहु + पटु + सि अ. वि.

?

पक्ष में — जहां पर बहु प्रत्यय नहीं होगा वहां —

पटुकल्पः

ईषदसमाप्तः पटुः लौ. वि.

अतमादे ...... (725) सू. से कल्प प्रत्यय

पटु + सि + कल्प अ. वि.

शेष पूर्ववत्

पटुदेश्यः

ईषदसमाप्तः पटुः लौ. वि.

अतमादे ...... (725) सू. से देश्य प्रत्यय

पटु + सि + देश्य अ. वि.

शेष पूर्ववत्

पटुदेशीयः

ईषदसमाप्तः पटुः लौ. वि.

अतमादे ...... (725) सू. से देशीय प्रत्यय

पटु + सि + देशीय अ. वि.

शेष पूर्ववत्

बहुभुक्तम्

ईषदसमाप्तं भुक्तम् लौ. वि.

नाम्नः ...... (726) सू. से विकल्प से भुक्त से पूर्व बहु प्रत्यय

बहु + भुक्त + सि अ. वि.

?

पक्ष में—जहां पर बहु प्रत्यय नहीं होगा वहां—

भुक्तकल्पम्

ईषदसमाप्तं भुक्तम् लौ. वि.

अतमादे ...... (725) सू. से कल्प प्रत्यय

भुक्त + सि + कल्प अ. वि.

शेष गोमयवत्

भुक्तदेश्यम्

ईषदसमाप्तं भुक्तम् लौ. वि.

अतमादे ...... (725) सू. से देश्य प्रत्यय

भुक्त + सि + देश्य अ. वि.

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष गोमयवत्

भुक्तदेशीयम्

ईषदसमाप्तं भुक्तम् लौ. वि.

अतमादे ...... (725) सू. से देशीय प्रत्यय

भुक्त + सि + देशीय अ. वि.

शेष गोमयवत्

727. पाशः क्षेपे । (8/2/11)

क्षेपो निन्दा। क्षेपेऽर्थे वर्तमानान्नाम्नः स्वार्थे पाशः प्रत्ययो भवति। कुत्सितो वैयाकरणः — वैयाकरणपाशः। एवं याज्ञिकपाशः।

क्षेप का अर्थ है निन्दा। क्षेप अर्थ में रहे हुए नाम से स्वार्थ में पाश प्रत्यय होता है।

वैयाकरणपाशः

कुत्सितो वैयाकरणः लौ. वि.

पाशः ...... (727) सू. से पाश प्रत्यय

वैयाकरण + सि + पाश अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

याज्ञिकपाशः

कुत्सितो याज्ञिकः लौ. वि.

पाशः ...... (727) सू. से पाश प्रत्यय

याज्ञिक + सि + पाश

शेष भ्रातृव्यवत्

728. बह्वल्पार्थात् कारकादिष्टानिष्टे शस् । (8/2/12)

dkjdokfpH;ka càYikFkkZH;ka ;Fkkla[;fe"Vs·fu"Vs p Ól~çR;;% L;kr~A cgqH;ks nnkfr—cgq'kks nnkfrA cgq"kq olfr—cgq'kks olfrA ,oeYi'kks nnkfr] vYi'kks olfrA dkjdkfnfr fde~—cgwuka LokehA

कारकवाची बहु अर्थ वाले और अल्प अर्थ वाले नाम से क्रमशः इष्ट एवं अनिष्ट[1] (गम्य) होने पर शस् प्रत्यय होता है।

बहुशो ददाति

बहुभ्यो ददाति लौ. वि.

बह्वल्पार्थात् ...... (728) सू. से शस् प्रत्यय

बहु + भ्यस् + शस् अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्

बहु + शस्

वर्णों का सम्मेलन करने पर बहुशस्

च्वि ...... (भिक्षु. 1/1/51) सू. से शस् प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

शेष ग्रामतःवत्

बहुशो वसति

बहुषु वसति लौ. वि.

बह्वल्पार्थात् ...... (728) सू. से शस् प्रत्यय

बहु + सुप् + शस् अ. वि.

---

[1] इष्टं प्राशित्रादि, अनिष्टं श्राद्धादि।

यज्ञ, विवाहादि अवसर इष्ट (अर्थात् मंगल) है तथा श्राद्धादि अवसर अनिष्ट (अर्थात् अमंगल) है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शेष पूर्ववत्

अल्पशो ददाति

अल्पेभ्यो ददाति लौ. वि.

बह्वल्पार्थात् ...... (728) सू. से शस् प्रत्यय

अल्प + भ्यस् + शस् अ. वि.

शेष बहुश:वत्

अल्पशो वसति

अल्पेषु वसति लौ. वि.

बह्वल्पार्थात् ...... (728) सू. से शस् प्रत्यय

अल्प + सुप् + शस् अ. वि.

शेष बहुश:वत्

<u>बहु एवं अल्प शब्द कारकवाची हो ऐसा क्यों? बहूनां स्वामी प्रस्तुत उदाहरण में बहु शब्द कारकवाची नहीं किन्तु सम्बन्धवाची है अत: शस् प्रत्यय नहीं हुआ।</u>

729. प्रकृते मयट्। (8/2/15)

çkpq;sZ.k ç/kkU;su ok Ñre~——çÑre~ A çÑrs·FksZ orZekukr~ ukEuks e;V~ L;kr~ A çpqjeéée~——vée;e~] ç/kkua ?k`re~—— ?k`re;e~] nf/ke;e~ A

çpqjrk ¼vFkkZr~ vf/kdrk½ vFkok ç/kkurk ls fd;k gqvk çÑr dgykrk gS A çÑr vFkZ e— jgs gq, uke ls e;V~ çR;; gksrk gS A

अन्नमयम्

प्रचुरमन्नम् लौ. वि.

प्रकृते ...... (729) सू. से मयट् प्रत्यय

अन्न + सि + मयट् अ. वि.

शेष गोमयवत्

घृतमयम्

प्रधानं घृतम् लौ. वि.

प्रकृते ...... (729) सू. से मयट् प्रत्यय

घृत + सि + मयट् अ. वि.

शेष गोमयवत्

दधिमयम्

प्रधानं दधि लौ. वि.

प्रकृते ...... (729) सू. से मयट् प्रत्यय

दधि + सि + मयट् अ. वि.

शेष गोमयवत्

730. अस्मिन्। (8/2/16)

प्रकृतेऽर्थे वर्तमानात् नाम्न: सप्तम्यर्थे मयट् स्यात्। अन्नं प्रकृतमस्मिन्— अन्नमयं भोजनम्, अपूपमयं पर्व।

प्रकृत अर्थ में रहे हुए नाम से सप्तमी अर्थ में मयट् (प्रत्यय) होता है।

अन्नमयं भोजनम्

अन्नं प्रकृतमस्मिन् लौ. वि.

अस्मिन् (730) सू. से मयट् प्रत्यय

अन्न + सि + मयट् अ. वि.

शेष गोमयवत्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अपूपमयं पर्व

अपूपाः प्रकृताः अस्मिन् लौ. वि.

अस्मिन् (730) सू. से मयट् प्रत्यय

अपूप + सि + मयट् अ. वि.

शेष गोमयवत्

731. अभूततद्भावे कृभ्वस्तिभ्यां कर्मकर्तृभ्यां च्विः। (8/2/18)

कर्मार्थात् करोतिना योगे कर्त्रर्थाच्च भ्वस्तिभ्यां योगे अभूततद्भावेऽर्थे च्विप्रत्ययः स्यात्।

deZ vFkZ ls Ñ /kkrq ds ;ksx e— vkSj dÙkkZ vFkZ ls Hkw ,oa vl~ /kkrq ds ;ksx e— vHkwrrn~Hkko[1] ¼tSlk ug° Fkk oSlk gks tkus½ vFkZ e— fPo çR;; gksrk gS A

732. ईश्च्वाववर्णस्याऽनव्ययस्य। (4/1/60)

अव्ययवर्जितस्य अवर्णान्तस्य ईः स्यात् च्वौ परे।

अव्यय वर्जित अवर्णान्त का ई हो जाता है च्वि (प्रत्यय) परे होने पर।

733. वेर्लोपः। (4/4/48)

विप्रत्ययस्य लोपः स्यात् सर्वत्र। अशुक्लं शुक्लं करोति — शुक्ली करोति पटम्, शुक्ली भवति, शुक्ली स्यात् वस्त्रम्।

सर्वत्र विप्रत्यय का लोप होता है।

शुक्ली करोति[2] पटम्

अशुक्लं शुक्लं करोति लौ. वि.

अभूत...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय

शुक्ल + अम् + च्वि अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास...... (395) सू. से विभ. का लुक्

शुक्ल + च्वि

ईश्च्वा...... (732) सू. से अकार का ईकार

शुक्ली + च्वि, च् अनुबन्ध

वेर्लोपः (733) सू. से वि का लोप

शुक्ली

च्वि...... (भिक्षु. 1/1/51) सू. से च्वि प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

शुक्ली + सि

अव्ययस्य (294) सू. से सि विभ. का लुक् करने पर शुक्ली करोति रूप सिद्ध हुआ।

शुक्ली भवति वस्त्रम्

अशुक्लं शुक्लं भवति लौ. वि.

अभूत ...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय

---

1 जो वस्तु पहले जिस रूप में न हो और बाद में उस रूप को प्राप्त कर ले तो इसे अभूततद्भाव कहते हैं।

2 'शुक्ली' और 'करोति' पदों का समास नहीं होता क्योंकि लोक में नाम का धातु के साथ समास वर्जित है। अतः इन दोनों को पृथक् पृथक् लिखना चाहिए मिलाकर नहीं। यदि कृधातु क्त्वा आदि प्रत्ययान्त होगी तो ऊर्यादिनुकरणोपसर्गच्विडाचो गतिर्धातोः प्राक् च (425) सू. से गतिसंज्ञक होकर गतिः (420) सू. से समास हो जाता है जैसे शुक्लीकृत्य, शुक्लीकृतः आदि।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

शुक्ल + सि + च्वि अ. वि.

शेष शुक्ली करोतिवत्

शुक्ली स्यात् वस्त्रम्

अशुक्लं शुक्लं स्यात् लौ. वि.

अभूत....... (731) सू. से च्वि प्रत्यय

शुक्ल + सि + च्वि अ. वि.

शेष शुक्ली करोतिवत्

734. च्वियग्यङ्क्यादादियक्येषु। (4/1/51)

च्व्यादिषु परेषु पूर्वस्य दीर्घः स्यात्। शुची करोति, शुची भवति, पटू करोति, पटू भवति।

च्वि, यक्, यङ् एवं क्यादादि का य परे होने पर पूर्व को दीर्घ होता है।

शुची करोति (पटम्)

अशुचिं शुचिं करोति लौ. वि.

अभूत...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय

शुचि + अम् + च्वि अ. वि.

तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा

समास...... (395) सू. से विभ. का लुक्

शुचि + च्वि

च्वि ...... (734) सू. से इकार का दीर्घ

शुची + च्वि, चकार अनुबन्ध

वेर्लोपः (733) सू. से वि का लोप

शुची

च्वि ...... (भिक्षु. 1/1/51) सू. से च्वि प्रत्यय की अव्यय संज्ञा

शेष शुक्ली करोतिवत्

शुची भवति (पटः)

अशुचिः शुचिः भवति लौ. वि.

अभूत ...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय

शुचि + सि + च्वि अ. वि.

शेष शुची करोतिवत्

पटू करोति

अपटुं पटुं करोति लौ. वि.

अभूत...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय

पटु + अम् + च्वि अ. वि.

शेष शुची करोतिवत्

पटू भवति

अपटुः पटुः भवति लौ. वि.

अभूत...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय

पटु + सि + च्वि अ. वि.

शेष शुची करोतिवत्

735. कात्स्न्र्ये साद्वा। (8/2/22)

कात्स्न्र्ये गम्ये च्व्यर्थे सात्प्रत्ययो वा स्यात्।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सम्पूर्णता प्रकट होने पर च्वि अर्थ में सात् प्रत्यय विकल्प से होता है।

736. सात्सुगोः। (2/2/67)

सात्प्रत्ययस्य सुगागमस्य च सस्य प्राप्तं षत्वं न स्यात्। सर्वं काष्ठमनग्निमग्निं करोति— अग्निसात् करोति, अग्निसाद् भवति स्याद्वा।

सात् प्रत्यय एवं सुक् आगम के स् को प्राप्त होने वाला ष् नहीं होता है।

अग्निसात् करोति

सर्वं काष्ठमनग्निमग्निं करोति लौ. वि.
अभूत ...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
कार्त्स्न्ये...... (735) सू. से विकल्प से सात् प्रत्यय
अग्नि + अम् + सात् अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास ...... (395) सू. से विभ. का लुक्
अग्नि + सात्
वर्णों को मिलाने पर अग्निसात्
क्विला ...... (116) सू. से स् के स्थान पर ष् की प्राप्ति किन्तु
सात् ...... (736) सू. से निषेध
च्वि ...... (भिक्षु. 1/1/50) सू. से सात् प्रत्यय की अव्यय संज्ञा
शेष शुक्ली करोतिवत्
पक्ष में — जहां पर कार्त्स्न्ये ...... (735) सू. से सात् प्रत्यय नहीं होगा वहां—

अग्नी करोति काष्ठम्

सर्वं काष्ठमनग्निमग्निं करोति लौ. वि.
अभूत...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय
अग्नि + अम् + च्वि अ. वि.
शेष शुक्ली करोतिवत्

अग्निसाद् भवति

सर्वं काष्ठमनग्निः अग्निः भवति लौ. वि.
अभूत...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
कार्त्स्न्ये ...... (735) सू. से सात् प्रत्यय
अग्नि + सि + सात् अ. वि.
शेष अग्निसात् करोतिवत्
पक्ष—में जहां पर सात् प्रत्यय नहीं होगा वहां —

अग्नी भवति काष्ठम्

सर्वं काष्ठमनग्निः अग्निः भवति लौ. वि.
अभूत...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय
अग्नि + सि + च्वि अ. वि.
शेष शुक्ली करोतिवत्

अग्निसात् स्यात्

सर्वं काष्ठमनग्निः अग्निः स्यात् लौ. वि.
अभूत ...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर
कार्त्स्न्ये ...... (735) सू. से विकल्प से सात् प्रत्यय
अग्नि + सि + सात् अ. वि.
शेष अग्निसात् करोतिवत्
पक्ष में—जहां पर सात् प्रत्यय नहीं होगा वहां—

अग्नी स्यात् काष्ठम्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

सर्वं काष्ठमनग्निः अग्निः स्यात् लौ. वि.
अभूत ...... (731) सू. से च्वि प्रत्यय
अग्नि + सि + च्वि अ. वि.
शेष शुक्ली करोतिवत्

737. प्राग्यावात् कच् । (8/2/42)

यावशब्दात् प्राग् येऽर्थास्तेषु कजधिकारो वेदितव्यः ।

याव शब्द (सू. 745) से पहले जो अर्थ हैं[1] उनमें कच् का अधिकार जान लेना चाहिए।

738. कुत्सिताल्पाज्ञातेषु । (8/2/47)

कुत्सिताल्पाज्ञातेऽर्थे वर्तमानाद् यथायोगं कजादयः प्रत्यया भवन्ति । कुत्सितोऽल्पोऽज्ञातो वाऽश्वः — अश्वकः । एवं घृतकम्, तैलकम् ।

कुत्सित (अर्थात् निन्दित) अल्प और अज्ञात[2] अर्थ में रहे हुए (नाम) से यथायोग कच् आदि प्रत्यय होते हैं।

अश्वकः

कुत्सितोऽल्पोऽज्ञातो वाऽश्वः लौ. वि.
कुत्सिता ...... (738) सू. से कच् प्रत्यय
अश्व + सि + कच् अ. वि., च् अनुबन्ध
शेष भ्रातृव्यवत्

घृतकम्

कुत्सितमल्पमज्ञातं वा घृतम् लौ. वि.
कुत्सिता ...... (738) सू. से कच् प्रत्यय
घृत + सि + कच् अ. वि.
शेष गोमयवत्

तैलकम्

कुत्सितमल्पमज्ञातं वा तैलम् लौ. वि.
कुत्सिता ...... (738) सू. से कच् प्रत्यय
तैल + सि + कच् अ. वि.
शेष गोमयवत्

739. ह्रस्वे । (8/2/60)

ह्रस्वेऽर्थे वर्तमानाच्छब्दरूपाद्यथायोगं कजादयः प्रत्ययाः भवन्ति । ह्रस्वः पटः — पटकः, वृक्षकः ।

ह्रस्व अर्थ में रहे हुए शब्दरूप से यथायोग कच् आदि प्रत्यय होते हैं।

पटकः

ह्रस्वः पटः लौ. वि.
ह्रस्वे (739) सू. से कच् प्रत्यय
पट + सि + कच् अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

वृक्षकः

ह्रस्वः वृक्षः लौ. वि.

---

[1] भिक्षुशब्दानुशासनम् के 8/2/42 से 8/2/71 तक के सूत्रों में जो अर्थ आए हैं उनमें कच् प्रत्यय का अधिकार है।

[2] अज्ञातं प्रकृत्युपातधर्मव्यतिरेकण केनचित् स्वत्वादिना धर्मेणानिश्चितम्।
स्वरूप से ज्ञात पदार्थ जब सम्बन्धविशेष आदि धर्म से अनिश्चित होता है तब वह (पदार्थ) अज्ञात है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

ह्रस्वे (739) सू. से कच् प्रत्यय

वृक्ष + सि + कच् अ. वि.

शेष भ्रातृव्यवत्

740. त्यादिसर्वादेरक् प्राक् टेः। (8/2/43)

त्याद्यन्तस्य सर्वादीनां च टेः प्राक् अक् प्रत्ययो भवति प्राग् यावीयेष्वर्थेषु। कचोऽपवादः। कुत्सितमल्पमज्ञातं पचति — पचतकि, सर्वकः, विश्वकः।

;ko 'kCn ¼lw- 745½ ls iwoZ tks vFkZ g® mu vFkks± e— R;kfn vUr vkSj lokZfn dh fV ls igys vd~ izR;; gksrk gS A

पचतकि

कुत्सितमल्पमज्ञातं वा पचति लौ. वि.

कुत्सिता ...... (738) सू. से कच् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

अन्त्य ...... (18) सू. से इ की टि संज्ञा

त्यादि ...... (740) सू. से टिसंज्ञक वर्ण से पूर्व अक् प्रत्यय

पचत् + अक् + इ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर पचतकि रूप सिद्ध हुआ।

सर्वकः

कुत्सितोऽल्पोऽज्ञातो वा सर्वः/सर्व एव लौ. वि.

सर्व एक शब्द है

कुत्सित ...... (738) सू. से कच् की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

अन्त्य ...... (18) सू. से अ की टि संज्ञा

त्यादि ...... (740) सू. से टिसंज्ञक वर्ण से पूर्व अक् प्रत्यय

सर्व् + अक् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर सर्वक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

सर्व + सि

शेष शैववत्

विश्वकः

कुत्सितोऽल्पोऽज्ञातो वा विश्वः/विश्व एव लौ. वि.

कुत्सित ...... (738) सू. से कच् प्रत्यय की प्राप्ति किन्तु उसे रोककर

अन्त्य ...... (18) सू. से अ की टिसंज्ञा

त्यादि ...... (740) सू. से टिसंज्ञक वर्ण से पूर्व अक् प्रत्यय

विश्व् + अक् + अ

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर विश्वक

प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय

विश्वक + सि

शेष शैववत्

741. युष्मदस्मदोरनोत्सभादेः स्यादेः। (8/2/44)

अनयोः परस्य ओकारसकारभकारादिवर्जितस्य स्यादेष्टेः प्रागक् स्यात्। त्वयका, मयका, युष्माककम्, अस्माककम्। अनोत्सभादेरिति किम् — युवकयोः, युष्मकासु, युवकाभ्याम्।

;q"en~ vkSj vLen~ ls ijs vksdkj] ldkj vkSj Hkdkj oftZr L;kfn dh fV ls iwoZ vd~ ¼izR;;½ gksrk gS A

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

त्वयका

कुत्सितेन अल्पेन अज्ञातेन वा त्वया/त्वया एव लौ. वि.
त्वया पद तृ. वि. ए. व. के टा प्रत्यय का रूप है
अन्त्य ...... (18) सू. से आ की टि संज्ञा
युष्मद ...... (741) सू. से टिसंज्ञक वर्ण से पूर्व अक् प्रत्यय
त्वय् + अक् + आ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर त्वयका रूप सिद्ध हुआ।

मयका

कुत्सितेन अल्पेन अज्ञातेन वा मया/मया एव लौ. वि.
मया पद तृ. वि. ए. व. के टा प्रत्यय का रूप है
अन्त्य ...... (18) सू. से आ की टि संज्ञा
युष्मद ...... (741) सू. से टिसंज्ञक वर्ण से पूर्व अक् प्रत्यय
मय् + अक् + आ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर मयका रूप सिद्ध हुआ।

युष्माककम्

कुत्सितानाम् अल्पानाम् अज्ञातानां वा युष्माकम्/युष्माकम् एव लौ. वि.
युष्माकम् पद ष. वि. ब. व. के आम् प्रत्यय का रूप है
अन्त्य ...... (18) सू. से अम् की टि संज्ञा
युष्मद ...... (741) सू. से टिसंज्ञक वर्णों से पूर्व अक् प्रत्यय
युष्माक् + अक् + अम्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर युष्माककम् रूप सिद्ध हुआ।

अस्माककम्

कुत्सितानाम् अल्पानाम् अज्ञातानां वा अस्माकम्/अस्माकम् एव लौ. वि.
अस्माकम् पद ष. वि. ब. व. के आम् प्रत्यय का रूप है
अन्त्य ...... (18) सू. से अम् की टि संज्ञा
युष्मद ...... (741) सू. से टिसंज्ञक वर्ण से पूर्व अक् प्रत्यय
अस्माक् + अक् + अम्
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर अस्माककम् रूप सिद्ध हुआ।
सूत्र में ओकारादि, सकारादि एवं भकारादि प्रत्ययों को क्यों छोड़ा ?
युवकयोः, युष्मकासु एवं युवकाभ्याम् इन उदाहरणों में क्रमशः ओस्, सुप् एवं भ्याम् प्रत्यय हैं अतः सू. 741 से स्यादि की टि से पूर्व अक् नहीं हुआ है किन्तु त्यादि ...... 740 सू. से मूल शब्द युष्मद् की टि से पूर्व अक् हुआ है।

युवकयोः

कुत्सितयोः अल्पयोः अज्ञातयोः वा युवयोः/युवयोः एव लौ. वि.
युष्मद् एक शब्द है
ष. वि. एवं स. वि. के द्विवचन की विवक्षा में ओस् प्रत्यय
युष्मद् + ओस्
अन्त्य ...... (18) सू. से अद् की टि संज्ञा
त्यादि ...... (740) सू. से टिसंज्ञक वर्णों से पूर्व अक् प्रत्यय
युष्म् + अक् + अद् + ओस्
मान्तयोर्युवावौ द्वित्वे (271) सू. से युष्म् को युव आदेश

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

युव + अक् + अद् + ओस्

अदेतो ...... (102) सू. से अकार का लोप

युव् + अक् + अद् + ओस्

टाङ्योसि यः (278) सू. से द् का य्

युव् + अक् + अय् + ओस्

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर युवकयोस्

स्रोर्वि ...... (89) सू. से स् का विसर्ग करने पर युवकयोः रूप सिद्ध हुआ।

युष्मकासु

कुत्सितेषु अल्पेषु अज्ञातेषु वा युष्मासु/युष्मासु एव लौ. वि.

युष्मद् एक शब्द है

स. वि. के ब. व. की विवक्षा में सुप् प्रत्यय

युष्मद् + सुप्, प् अनुबन्ध

अन्त्य ...... (18) सू. से अद् की टि संज्ञा

त्यादि ...... (740) सू. से टिसंज्ञक वर्णों से पूर्व अक् प्रत्यय

युष्म् + अक् + अद् + सु

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर

युष्मकद् + सु

आ अमहसयोः (270) सू. से द् का आ

युष्मक आ + सु

समानानां ...... (36) सू. से अकार को आकार के साथ दीर्घ

युष्मका + सु

वर्ण सम्मेलन करने पर युष्मकासु रूप सिद्ध हुआ।

युवकाभ्याम्

कुत्सिताभ्याम् अल्पाभ्याम् अज्ञाताभ्यां वा युवाभ्याम्/युवाभ्याम् एव लौ. वि.

युष्मद् एक शब्द है

तृ. वि., च. वि. एवं पं. वि. के द्विवचन की विवक्षा में भ्याम् प्रत्यय

युष्मद् + भ्याम्

अन्त्य...... (18) सू. से अद् की टि संज्ञा

त्यादि...... (740) सू. से टिसंज्ञक वर्णों से पूर्व अक् प्रत्यय

युष्म् + अक् + अद् + भ्याम्

मान्त...... (271) सू. से युष्म् को युव आदेश

युव + अक् + अद् + भ्याम्

अदेतो...... (102) सू. से अकार का लोप

युव् + अक् + अद् + भ्याम्

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर

युवकद् + भ्याम्

आ ...... (276) सू. से द् का आ

युवक आ + भ्याम्

समानानां ...... (36) सू. से अकार को आकार के साथ दीर्घ

युवका + भ्याम्

वर्ण सम्मेलन करने पर युवकाभ्याम् रूप सिद्ध हुआ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

742. वैकाद् द्वयोर्निर्धार्ये डतरः। (8/2/66)

एकशब्दात् द्वयोर्मध्ये निर्धार्येऽर्थे वर्तमानात् डतरः प्रत्ययो वा भवति। एकतरो भवतोः पटुः। पक्षे एककः। द्वयोरिति किम्—एकोऽस्मिन् ग्रामे राजा। निर्धार्ये इति किम्—एकोऽनयोर्ग्रामयोः स्वामी।

दो के मध्य निर्धार्य[1] अर्थ में रहे हुए एक शब्द से डतर प्रत्यय विकल्प से होता है।

एकतरः

एकः भवतोः पटुः लौ. वि.
वैकाद्...... (742) सू. से विकल्प से डतर प्रत्यय
एक + सि + डतर अ. वि.
तद्धिताः (514) सू. से प्रत्यय की तद्धित संज्ञा
समास...... (395) सू. से विभ. का लुक्
एक + डतर, ड् अनुबन्ध
अन्त्य...... (18) सू. से अकार की टि संज्ञा
डिति...... (146) सू. से टिसंज्ञक वर्ण का लोप
एक् + अतर
स्वरहीनं...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर एकतर
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
एकतर + सि
शेष शैववत्
पक्ष में—जहां पर डतर प्रत्यय नहीं होगा वहां—

एककः

एकः भवतोः पटुः लौ. वि.
एक एक शब्द है
अन्त्य ...... (18) सू. से अ की टिसंज्ञा
त्यादि ...... (740) सू. से टिसंज्ञक वर्ण से पूर्व अक्
एक् + अक् + अ
स्वरहीनं ......न्याय से वर्णों को मिलाने पर एकक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
एकक + सि
शेष शैववत्

वैकाद् ...... (742) सू. में द्वयोः अर्थात् दो में (निर्धारण करने अर्थ में) ऐसा क्यों कहा? एकोऽस्मिन् ग्रामे राजा। इसमें एक शब्द से डतर प्रत्यय नहीं हुआ क्योंकि गांव में एक ही राजा है उसका दो में से निर्धारण नहीं करना है।

वैकाद् ...... (742) सू. में निर्धार्य शब्द क्यों दिया? एकोऽनयोः ग्रामयोः स्वामी इस उदाहरण में दो गांव का एक ही स्वामी है।

743. यत्तत्किमन्येभ्यः। (8/2/67)

यद्, तद्, किम्, अन्य—इत्येतेभ्यो द्वयोरेकस्मिन् निर्धार्येऽर्थे वर्तमानेभ्यो डतरः प्रत्ययो भवति। यतरो भवतोः पटुः ततरो आगच्छतु, कतरोऽन्यतरो वा भवतोः पटुः।

nks e— ls ,d dk fu/kkZj.k djus vFkZ e— jgs gq, ;n~] rn~] fde~ ,oa vU; bu ¼'kCnk—½ ls Mrj izR;; gksrk gS A

---

[1] समुदायादेकदेशो जातिगुणक्रियासंज्ञाद्रव्यैः बुद्ध्या पृथक्क्रियमाणो निर्धार्यः।
जाति, गुण, क्रिया, संज्ञा एवं द्रव्य के द्वारा समुदाय से एक अंश को बुद्धि से पृथक् करना निर्धार्य है।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

यतरः

यः भवतोः पटुः लौ. वि.

यत्तत्...... (743) सू. से डतर प्रत्यय

यद् + सि + डतर अ. वि.

शेष एकतरवत्

ततरः

सः भवतोः पटुः लौ. वि.

यत्तत् ...... (743) सू. से डतर प्रत्यय

तद् + सि + डतर अ. वि.

शेष एकतरवत्

कतरः

कः भवतोः पटुः लौ. वि.

यत्तत् ...... (743) सू. से डतर प्रत्यय

किम् + सि + डतर अ. वि.

शेष एकतरवत्

अन्यतरः

अन्यः भवतोः पटुः लौ. वि.

यत्तत् ...... (743) सू. से डतर प्रत्यय

अन्य + सि + डतर अ. वि.

शेष एकतरवत्

744. बहूनां प्रश्ने डतमश्च वा। (8/2/68)

यदादिभ्यो बहूनां मध्ये निर्धार्येऽर्थे प्रश्नविषये डतमडतरौ वा स्तः। यतमो यतरो वा भवतां पटुः ततमः ततरो वा आगच्छतु, कतमः, कतरः, अन्यतमः, अन्यतरः। पक्षे यकः, सकः, ककः, अन्यकः।

यद्, तद्, किम् एवं अन्य (शब्दों) से बहुतों के मध्य निर्धारण करने अर्थ में प्रश्न विषय में डतम और डतर प्रत्यय विकल्प से होते हैं।

यतमो यतरो वा भवतां पटुः ततमः ततरो वा आगच्छतु

यतमः

यः भवतां पटुः लौ. वि.

बहूनां ...... (744) सू. से विकल्प से डतम प्रत्यय

यद् + सि + डतम अ. वि.

शेष एकतरवत्

यतरः

यः भवतां पटुः लौ. वि.

बहूनां...... (744) सू. से विकल्प से डतर प्रत्यय

यद् + सि + डतर अ. वि.

शेष एकतरवत्

पक्ष में—जहां पर डतम एवं डतर प्रत्यय नहीं होंगे वहां—

यकः

यः भवतां पटुः लौ. वि.

यद् एक शब्द है

अन्त्य...... (18) सू. से अद् की टि संज्ञा

त्यादि...... (740) सू. से टिसंज्ञक वर्णों से पूर्व अक् प्रत्यय

य् + अक् + अद्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

स्वरहीनं...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर यकद्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
यकद् + सि
अन्त्य...... (18) सू. से अद् की टिसंज्ञा
आद्वे ...... (154) सू. से टिसंज्ञक वर्णों का अकार
यक + सि
शेष शैववत्

ततमः

सः भवताम् लौ. वि.
बहूनां...... (744) सू. से विकल्प से डतम प्रत्यय
तद् + सि + डतम अ. वि.
शेष एकतरवत्

ततरः

सः भवताम् लौ. वि.
बहूनां...... (744) सू. से विकल्प से डतर प्रत्यय
तद् + सि + डतर अ. वि.
शेष एकतरवत्
पक्ष में—जहां पर डतम एवं डतर प्रत्यय नहीं होंगे वहां—

सकः

सः भवताम् लौ. वि.
तद् एक शब्द है
अन्त्य ...... (18) सू. से अद् की टि संज्ञा
त्यादि ...... (740) सू. से टिसंज्ञक वर्ण से पूर्व अक् प्रत्यय
त् + अक् + अद्
आद्वे ...... (154) सू. से टिसंज्ञक वर्णों को अकार
त + अक् + अ
स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर तक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
तक + सि
तः सौ सः (239) सू. से तकार का सकार
सक + सि
शेष शैववत्

कतमः

कः भवताम् लौ. वि.
बहूनां ...... (744) सू. से विकल्प से डतम प्रत्यय
किम् + सि + डतम अ. वि.
शेष एकतरवत्

कतरः

कः भवताम् लौ. वि.
बहूनां ...... (744) सू. से विकल्प से डतर प्रत्यय
किम् + सि + डतर अ. वि.
शेष एकतरवत्
पक्ष में—जहां पर डतम एवं डतर प्रत्यय नहीं होंगे वहां—

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

क:

क: भवताम् लौ. वि.
किम् एक शब्द है
अन्त्य..... (18) सू. से इम् की टि संज्ञा
त्यादि......(740) सू. से टिसंज्ञक वर्णों से पूर्व अक् प्रत्यय
क् + अक् + इम्
स्वरहीनं...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर ककिम्
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
ककिम् + सि
किम: क: (230) सू. से अक् प्रत्यय सहित किम् को क आदेश
क + सि
शेष शैववत्

अन्यतम:

अन्य: भवताम् लौ. वि.
बहूनां...... (744) सू. से विकल्प से डतम प्रत्यय
अन्य + सि + डतम अ. वि.
शेष एकतरवत्

अन्यतर:

अन्य: भवताम् लौ. वि.
बहूनां......(744) सू. से विकल्प से डतर प्रत्यय
अन्य + सि + डतर अ. वि.
शेष एकतरवत्
पक्ष में—जहां पर डतम एवं डतर प्रत्यय नहीं होंगे वहां—

अन्यक:

अन्य: भवताम् लौ. वि.
अन्य एक शब्द है
अन्त्य...... (18) सू. से अ की टि संज्ञा
त्यादि......(740) सू. से टिसंज्ञक वर्ण से पूर्व अक् प्रत्यय
अन्य् + अक् + अ
स्वरहीनं...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर अन्यक
प्र. वि. के ए. व. की विवक्षा में सि प्रत्यय
अन्यक + सि
शेष शैववत्

745. यावादिभ्य: क:। (8/2/72)

एभ्य: स्वार्थे क: स्यात्। याव एव यावक:, मणिक:, भिक्षुक:।
याव आदि (शब्दों) से स्वार्थ में क प्रत्यय होता है।

यावक:

याव एव लौ. वि.
यावादिभ्य: ...... (745) सू. से क प्रत्यय
याव + सि + क अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

मणिक:

मणि: एव लौ. वि.
यावादिभ्य: ...... (745) सू. से क प्रत्यय

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

मणि + सि + क अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

भिक्षुकः

भिक्षुः एव लौ. वि.
यावादिभ्यः ...... (745) सू. से क प्रत्यय
भिक्षु + सि + क अ. वि.
शेष भ्रातृव्यवत्

इति स्वार्थिकाः।
स्वार्थिक अधिकार समाप्त।
इति तद्धिताः।
तद्धित प्रकरण समाप्त।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अथ द्विरुक्तप्रक्रिया

अब द्विरुक्त (अर्थात् दो बार कथन) प्रक्रिया प्रारम्भ हो रही है।

746. भृशाभीक्ष्ण्यसातत्यवीप्सासु द्विः प्राक् तमादेः (8/4/85)

क्रियायाः साकल्यं भृशार्थः। पौनःपुन्यमाभीक्ष्ण्यम्। क्रियान्तरैरव्यवधानं सातत्यम्। व्याप्तुमिच्छा वीप्सा। भृशादिष्वर्थेषु यत्पदं वाक्यं वा तत् तमादिप्रत्ययेभ्यः प्रागेव द्विः स्यात्। लुनीहि लुनीहि इत्येवायं लुनाति, भोजं भोजं व्रजति, पचति पचति, वृक्षं वृक्षं सिञ्चति। प्राक् तमादेरिति किम्-पचति पचतितमाम्, पचति पचतितराम्।

भृश का अर्थ है क्रिया की सम्पूर्णता। आभीक्ष्ण्य का अर्थ है पुनः पुनः (अर्थात् बार-बार)। सातत्य का अर्थ है अन्य क्रियाओं के द्वारा व्यवधान न डालना। व्याप्त करने की इच्छा का नाम है वीप्सा।

भृशादि अर्थों में जो पद अथवा वाक्य है वह तम, तर आदि प्रत्ययों से पहले ही द्वित्व हो जाता है।

लुनीहि लुनीहि

भृशं पुनः पुनः वा अयं लुनाति इति लुनीहि

भृशादि ...... (746) सू. से लुनीहि को द्वित्व करने पर लुनीहि लुनीहि रूप सिद्ध हुआ।

भोजं भोजं व्रजति

भृशं पुनः पुनः वा भुक्त्वा व्रजति इति भोजं व्रजति

भृशादि ...... (746) सू. से भोजं को द्वित्व करने पर भोजं भोजं व्रजति रूप सिद्ध हुआ।

पचति पचति

सततं पचति इति पचति

भृशादि ...... (746) सू. से पचति को द्वित्व करने पर पचति पचति रूप सिद्ध हुआ।

वृक्षं वृक्षं सिञ्चति

प्रति वृक्षं सिञ्चति इति वृक्षं सिञ्चति

भृशादि ...... (746) सू. से वृक्षं को द्वित्व करने पर वृक्षं वृक्षं सिञ्चति रूप सिद्ध हुआ।

तमादि प्रत्ययों से पूर्व द्वित्व होता है ऐसा क्यों? पचति पचतितमाम् एवं पचति पचतितराम् में पहले पचति द्वित्व हुआ है तत्पश्चात् तम्, आम् एवं तर, आम् प्रत्यय लगे हैं अन्यथा पचतितमाम् पचतितमाम् एवं पचतितराम् पचतितराम् अनिष्ट रूप हो जाते।

पचतितमाम्

भृशः पुनः पुनः सततं वा अयमेषामतिशयेन पचति इति पचति

भृशादि ...... (746) सू. से पचति को द्वित्व करने पर

पचति पचति

प्रकृष्टे ...... (714) सू. से तम प्रत्यय

पचति पचतितम

त्यादि ...... (716) सू. से आम् प्रत्यय

पचति पचतितम + आम्

समानानां ...... (36) सू. से अकार को आकार के साथ दीर्घ करने पर पचति पचतितमाम् रूप सिद्ध हुआ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

पचति पचतितराम्

भृशं पुनः पुनः सततं वा अयमनयोः अतिशयेन पचति इति पचति

भृशादि ...... (746) सू. से पचति को द्वित्व

पचति पचति

द्वयो ...... (715) सू. से तर प्रत्यय

पचति पचतितर

त्यादि ...... (716) सू. से आम् प्रत्यय

पचति पचतितर + आम्

शेष पचति पचतितमाम्वत्

747. सम्भ्रमे यावद्बोधम् (8/4/93)

सम्भ्रमे द्योत्ये यत्पदं वाक्यं वा यावब्दोधं द्विः स्यात्। सर्पः 3, बुध्यस्व 3।

संभ्रम[1] प्रकट होने पर जो पद अथवा वाक्य है बोध होने तक (अर्थात् जब तक बोध न हो तब तक) द्वित्व होता है।

सर्पः 3

सर्प एक शब्द है

सम्भ्रमे ...... (743) सू. से द्वित्व द्वित्व होने पर सर्पः 3 रूप सिद्ध हुआ।

बुध्यस्व 3

बुध्यस्व एक वाक्य है

सम्भ्रमे ...... (743) सू. से द्वित्व द्वित्व होने पर बुध्यस्व सिद्ध हुआ।

748. अधोऽध्युपरि सामीप्ये (8/4/94)

अधस्, अधि, उपरि इत्येतानि द्विः स्युः सामीप्ये गम्ये। अधोऽधो ग्रामम्-ग्रामस्य अधस्तात् समीपदेश इत्यर्थः। अध्यधि ग्रामम्, उपर्युपरि ग्रामम्। सामीप्ये इति किम्- अधः पन्नगाः, उपरि चन्द्रमाः।

सामीप्य[1] प्रकट होने पर अधस्, अधि एवं उपरि ये द्वित्व हो जाते हैं।

अधोऽधो ग्रामम्

ग्रामस्य अधः

अधो ...... (748) सू. से अधः को द्वित्व

अधः अधः ग्रामस्य

अधः अधः ग्राम

उपर्यधोऽधिभिर्द्वित्वे (346) सू. से ग्राम शब्द में द्वितीया विभक्ति

अतोऽत्युः (84) सू. से विसर्ग का उकार

अध उ अधः

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का उकार के साथ ओकार

अधो अधः

एदोतोऽतः पदान्ते (44) सू. से अकार का लोप करने पर अधोऽधः ग्रामम् रूप सिद्ध हुआ।

अध्यधि ग्रामम्

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

अधि ग्रामस्य

अधो ...... (748) सू. से अधि को द्वित्व

अधि अधि ग्रामस्य

उपर्य ...... (346) सू. से ग्राम शब्द में द्वितीया विभक्ति

अधि अधि ग्रामम्

इवर्णादीनां ...... (29) सू. से इकार का यकार

अध्य् अधि ग्रामम्

स्वरहीनं ...... न्याय से वर्णों को मिलाने पर अध्यधि ग्रामम् रूप सिद्ध हुआ।

उपर्युपरि ग्रामम्

उपरि ग्रामस्य

अधो ...... (748) सू. से उपरि को द्वित्व

उपरि उपरि ग्रामस्य

उपर्य ...... (346) सू. से ग्राम शब्द में द्वितीया विभक्ति

उपरि उपरि ग्रामम्

शेष अध्यधि ग्रामम्वत्

समीपता प्रकट हो ऐसा क्यों? अधः पन्नगाः, उपरि चन्द्रमाः। इन दोनों उदाहरणों में दिए गए पन्नग (सांप) एवं चन्द्रमाः दोनों ही इस पृथ्वी से दूर हैं अतः अधः एवं उपरि द्वित्व नहीं हुए।

749. आधिक्यानुपूर्व्ये (8/4/96)

आधिक्ये आनुपूर्व्ये च शब्दरूपं द्विः स्यात्। नमो नमः-अधिकं नम इत्यर्थः। ज्येष्ठं ज्येष्ठमनुप्रवेशय-आनुपूर्व्येणेत्यर्थः।

अधिकता एवं क्रमशः (अर्थ) में शब्द रूप द्वित्व हो जाता है।

नमो नमः

अधिकं नमः ऐसा विग्रह

आधिक्या ...... (749) सू. से अधिकता अर्थ में नमः को द्वित्व

नमः नमः

हबे (85) सू. से विसर्ग का उकार

नमउ नमः

अवर्णस्ये ...... (38) सू. से अकार का उकार के साथ ओकार करने पर नमो नमः रूप सिद्ध हुआ।

ज्येष्ठं ज्येष्ठमनुप्रवेशय

ज्येष्ठस्य आनुपूर्व्येण प्रवेशय ऐसा विग्रह

आधिक्या ...... (749) सू. से क्रमशः अर्थ में ज्येष्ठं को द्वित्व करने पर ज्येष्ठं ज्येष्ठम् अनुप्रवेशय सिद्ध हुआ।

750. प्रोपोत्समः पादपूरणे (8/4/95)

एते उपसर्गा द्विः स्युः तेन चेत् पादः पूर्येत।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

प्रप्रशान्तकषायाग्ने-रुपोपप्लववर्जितम्।

उदुज्ज्वलं तपो यस्य, संसंश्रयत तं जिनम्।।

पादपूरणे इति किम्-प्रणम्य सच्छासनवर्धमानम्।

प्र, उप, उद् एवं सम् ये उपसर्ग द्वित्व हो जाते हैं। उससे यदि पाद की पूर्त्ति होती हो।

प्रप्रशान्तकषायाग्ने-**रुपोप**प्लववर्जितम्।

उदुज्ज्वलं तपो यस्य, **संसं**श्रयत तं जिनम्।।

प्रस्तुत श्लोक में अनुष्टुप् छन्द है। जिसके प्रत्येक चरण में आठ अक्षर होते हैं किन्तु इस श्लोक के प्रत्येक चरण में सात-सात अक्षर हैं अत: प्र आदि प्रोपोत् ...... (750) सू. से द्वित्व हो गए हैं।

पादपूर्त्ति हो ऐसा क्यों? प्रणम्य सच्छासनवर्धमानम्। यह श्लोक नहीं किंतु एक वाक्य है अत: प्रणम्य में प्र उपसर्ग द्वित्व नहीं हुआ है।

751. द्वन्द्वं वा (8/4/90)

द्विरुक्तस्य द्विशब्दस्य द्वन्द्वमिति वीप्सायां वा निपात्यते। द्वन्द्वं द्वौ द्वौ वा तिष्ठतः, द्वन्द्वं युद्धं द्वयोर्द्वयोर्युद्धं वा प्रवर्तते, द्वन्द्वं द्वाभ्यां द्वाभ्यां वा कृतम्। द्वन्द्वः समासः, द्वन्द्वः कलहः, द्वन्द्वं युद्धमिति तु शब्दान्तरम्।

दो बार कहे हुए द्वि शब्द का द्वन्द्वं (पद) वीप्सा अर्थ में विकल्प से निपातन से सिद्ध होता है।

द्वन्द्वं तिष्ठतः

द्वौ द्वौ तिष्ठत: ऐसा विग्रह

द्वन्द्वं वा (751) सू. से विकल्प से द्वौ द्वौ के स्थान पर निपातन से द्वन्द्वं करने पर द्वन्द्वं तिष्ठत: रूप सिद्ध हुआ।

द्वन्द्वं युद्धम्

द्वयोर्द्वयोर्युद्धम् ऐसा विग्रह

द्वन्द्वं वा (751) सू. से विकल्प से द्वयो: द्वयो: के स्थान पर निपातन से द्वन्द्वं करने पर द्वन्द्वं युद्धम् रूप सिद्ध हुआ।

द्वन्द्वं कृतम्

द्वाभ्यां द्वाभ्यां कृतम् ऐसा विग्रह

द्वन्द्वं वा (751) सू. से विकल्प से द्वाभ्यां द्वाभ्यां के स्थान पर निपातन से द्वन्द्वं करने पर द्वन्द्वं कृतम् रूप सिद्ध हुआ।

पक्ष में-सर्वत्र विग्रह ही रह जाएगा।

द्वन्द्व एक समास है। कलह एवं युद्ध द्वन्द्व के पर्याय हैं।

इति द्विरुक्तप्रक्रिया।

द्विरुक्तप्रक्रिया समाप्त।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

परिशिष्ट - I

तद्धित प्रकरण के सूत्रों की अकारादि अनुक्रमणिका

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
625	अजाविभ्यां थ्यः।
566	अणि।
518	अत इञ्।
725	अतमादेरीषदसमाप्ते कल्पदेश्यदेशीयाः।
674	अतोऽनेकस्वरात्।
602	अधिकृत्य कृते ग्रन्थे।
748	अधोऽध्युपरि सामीप्ये।
587	अनाराच्छश्वत्पृथगोऽव्ययस्य।
533	अनोऽट्ये ये।
585	अन्तादिमध्यान्मः।
731	अभूततद्भावे कृभ्वस्तिभ्यां कर्मकर्तृभ्यां च्विः।
618	अर्हति।
654	अवयवात्तयट्।
647	अवेः संघातविस्तारयोः।
551	अश्वादीयो वा।
670	अस्तपोमायामेधास्रजो विन् वा।
730	अस्मिन्।
696	अहीयरुहोऽपादाने।
749	आधिक्यानुपूर्व्ये।
606	इकण्।
698	इतोऽतः कुतः।
536	इतोऽनिञः।
651	इदं किमोऽतुरियुक्रियू चास्य।
599	ईयो मत्वर्थजिह्वामूलाङ्गुलिभ्यश्च।
732	ईश्च्वाववर्णस्याऽनव्ययस्य।
517	उवर्णस्याऽस्वयंभुवोऽव्।
650	ऊर्ध्वं दघ्नड्द्वयसटौ।
589	ऋतुनक्षत्रसन्ध्यादेरण्।
560	ऋतुवायुपित्रुषसो यः।
561	ऋतो रस्तद्धिते ये।
643	ऋत्विग्भ्य ईयः।
550	ऋवर्णोवर्णेसुर्दोर्भ्य इकस्येतः।
521	ऋष्यन्धकवृष्णिकुरुभ्यः।
713	एकात्सकृच्चास्य।
705	कथमित्थम्।
622	कथादेरिकण्।
522	कन्यायाः कनीनश्च।
548	कवचिहस्त्यचित्ताच्चेकण्।
735	कार्त्स्न्ये साद्वा।

सूत्राङ्कः	सूत्रम्
697	किमद्व्यादिसर्वाद्यवैपुल्यबहोस्तस्।
702	किमन्यैकसर्वयत्तदः काले दा।
701	कुत्रात्रक्वकुहेह।
738	कुत्सिताल्पाज्ञातेषु।
537	कुलादीनः।
593	कुशले।
592	कृतलब्धक्रीतसंभूतेषु।
604	कृते।
680	कृपाहृदयाद्वालुः।
573	क्वामेहत्रतसस्त्यप्।
534	क्षत्रादियः।
528	क्षुद्राभ्यो वा।
645	क्षेत्रे शाकटशाकिनौ।
524	गर्गादिर्यञ्।
582	गहादिभ्यः।
717	गुणाङ्गादिष्ठेयसू तदर्थे वा।
556	गोः पुरीषे।
541	गोः स्वरे यः।
523	गोत्रे बिदादेः पौत्रादौ।
545	गोत्रोक्षोष्ट्रोरभ्रराज-राजन्यराजपुत्रवत्साजमनुष्यवृद्धाकञ्।
552	ग्रामजनबन्धुगजसहायेभ्यस्तल्।
571	ग्रामादीनञ् च।
663	चतुरो येयौ चलोपश्च।
685	चतुर्वर्णादिभ्यष्टयण्।
611	चरति।
734	च्वियग्यङ्क्यादादियक्येषु।
694	जातीयदेशीययोः।
721	ज्यायान्।
669	झपात्।
634	टेः।
707	डत्यतु संख्यावत्।
575	णोऽरण्यात्।
629	तत्र।
591	तत्र जाते।
620	तत्र साधौ।
648	तदस्य सञ्जातं तारकादिभ्य इतः।
666	तदस्यास्मिन्नस्तीति मतुः।
592	तद्वेत्त्यधीते।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

514 तद्धिताः।
546 तद्धितेऽनाति यस्वरे।

सूत्राङ्कः सूत्रम्

609 तरति।
584 तवकममकावेकत्वे।
699 तसादिः स्यादिवत्।
623 तस्मै हिते।
630 तस्य।
544 तस्य समूहे।
516 तस्यापत्ये।
627 तस्यार्हे क्रियायां वत्।
605 तस्येदम्।
590 तिष्यपुष्ययोर्नक्षत्रेऽणि।
565 तेन छन्ने रथे।
607 तेन दीव्यतिखनतिजयतिजितेषु।
603 तेन प्रोक्ते।
543 तेन रक्ते रागात्।
646 तेन वित्ते चञ्चुचणौ।
577 तोऽशश्वदकस्मात्।
580 त्यदादिः।
716 त्यादिकिमेदव्ययेभ्यस्ताभ्यामामद्रव्ये।
740 त्यादिसर्वादेरक् प्राक् टेः।
724 त्यादेश्च प्रशंसायां रूपः।
662 त्रेस्तृ च।
665 थटि।
574 दक्षिणापश्चात्पुरसस्त्यण्।
679 दन्तादुन्नतात्।
595 दिगादेर्यः।
538 दुष्कुलादेयण्।
597 दृतिकुक्षिकलशिवस्त्यहेरेयण्।
686 देवात्तल्।
751 द्वन्द्वं वा।
715 द्वयोर्विभज्ये च तरः।
568 द्विगोरनपत्ये यस्वरादेर्लुगद्विः।
712 द्वित्रिचतुर्भ्यः सुच्।
656 द्वित्रिभ्यामयड् वा।
710 द्वित्रेर्धमुञेधौ।
527 द्विस्वरादनद्याः।
661 द्वेस्तीयः।
614 धर्माधर्माभ्यां चरति।
549 धेनोरनञः।
526 नडादिभ्य आयनण्।
572 नद्यादेरेयण्।
675 न द्रव्यदिभ्यः।
692 नवादीनतनत्नञ्च नू चास्य।
668 नस्ते मत्वर्थे।

सूत्राङ्कः सूत्रम्

690 नामरूपभागेभ्यो धेयः।
726 नाम्नः प्राग् बहुर्वा।
671 नावादेरिकः।
615 निकटादिषु वसति।
558 निष्फले तिलात् पिञ्जपेजौ।
636 नैकस्वरस्य।
660 नो मट्।
610 नौ द्विस्वरादिकः।
564 न्यायादेरिकण्।
613 पक्षिमत्स्यमृगाख्येभ्यो हन्ति।
639 पतिराजान्तगुणाङ्गाराजादिभ्यः कर्मणि च।
578 परजनराज्ञोऽकीयः।
612 पर्पादेरिकट्।
621 पर्षदो ण्यणौ।
586 पश्चादग्रान्तादिमः।
727 पाशः क्षेपे।
554 पितृमातृभ्यां व्यडुलौ भ्रातरि।
555 पित्रोर्डामहट्।
557 पुरुषात् कृतहितवधविकारसमूहेष्वेयञ्।
633 पृथुमृदुभृशकृशदृढपरिवृढस्य ऋतो रः।
632 पृथ्वादेरिमन् वा।
693 प्रकारे जातीयः।
704 प्रकारे था।
729 प्रकृते मयट्।
714 प्रकृष्टे तमः।
683 प्रज्ञादिभ्यः।
601 प्रभवति।
649 प्रमाणान्मात्रट्।
719 प्रशस्यस्य श्रः।
515 प्राग्दीव्यतेरण्।
737 प्राग्यावात्कच्।
539 प्राग्वतोऽग्निकलेरेयण्।
635 प्रियस्थिरस्फिरोरुगुरुबहुलतृ-
प्रदीर्घह्रस्ववृद्धवृन्दारकाणामिमन्यपि
प्रस्थस्फवरगरबंहत्रपद्राघह्रसवर्षवृन्दाः।
750 प्रोपोत्समः पादपूरणे।
744 बहूनां प्रश्ने डतमश्च वा।
718 बहोर्णीष्ठे भूय्।
728 बह्वल्पार्थात्कारकादिष्टानिष्टे शस्।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

644 ब्रह्मणस्त्वः।
576 भवतोरिकणीयसौ।
594 भवे।
631 भावे त्वतलौ।

सूत्राङ्कः सूत्रम्

695 भूतपूर्वे चरट्।
637 भूर्लोपश्चेवर्णस्य।
746 भृशाभीक्ष्ण्यसातत्यवीप्सासु द्विः प्राक् तमादेः।
684 भेषजादिभ्यो यण्।
530 भ्रातुर्व्यश्च।
598 मध्याद्दिनण्णेया मुम् चास्य।
535 मनोर्याणौ षुक् च।
691 मर्तादिभ्यो यः।
626 मानिक्यङ्कच्तस्त्रतरतमचरट्कल्प-
देश्यरूपपाशथ्येथट्थट्तिथट्प्लुक्षु।
667 मावर्णान्तोपधाद्वतुः।
617 मूल्यैः क्रीते।
687 मृदस्तिकः।
525 यञञोऽश्यापर्णान्तगोपवनादेः।
653 यत्तत्किमः संख्याया डतिर्वा।
743 यत्तत्किमन्येभ्यः।
652 यत्तदेतदो डावट्।
745 यावादिभ्यः कः।
641 युवादेरण्।
722 युवाल्पयोः कन् वा।
741 युष्मदस्मदोरनोत्सभादेः स्यादेः।
542 येऽयकि।
547 राजन्यमनुष्ययूनामके।
532 राज्ञो जातौ।
689 रादेफो वा।
570 राष्टादियः।
642 लघुपूर्वाद् य्वृवर्णात्।
600 वर्गान्तात्।
638 वर्णदृढादिभ्यष्टयण् च।
688 वर्णाव्ययात्स्वरूपे कारः।
588 वर्षाकालेभ्य इकण्।
678 वाच आलाटौ।
677 सुखादेः।
540 स्त्रीपुंसाभ्यां नञ्स्नञौ।
723 स्थूलदूरयुवक्षिप्रक्षुद्राणां यलादेर्नामिनो गुणश्च।
628 स्यादेरिवे।
529 स्वसुरीयः।
679 वातातीसारपिशाचानां कुक् च।
583 वा युष्मदस्मदोऽञीनञौ युष्माकास्माकौ च।

सूत्राङ्कः सूत्रम्

711 वारे कृत्वस्।
659 विंशतेस्तेर्डिति।
658 विंशत्यादेर्वा तमट्।
553 विकारे।
708 विचाले च।
682 विनयादिभ्य इकण्।
720 वृद्धस्य च ज्यः।
581 वृद्धादीयः।
519 वृद्धिः स्वराणामादेर्ञ्णिति तद्धिते।
733 वेर्लोपः।
742 वैकाद् द्वयोर्निर्धार्ये डतरः।
709 वैकाद् ध्यमुञ्।
673 व्रीह्यादिभ्यस्तौ।
596 शरीरावयवात्।
624 शरीरावयवाद्यः।
672 शिखादिभ्य इन्।
520 शिवादेरण्।
569 शेषे।
619 शोभते।
531 श्वशुराद्यः।
664 षट्कतिकतिपयाच्च थट्।
657 संख्यापूरणे डट्।
706 संख्याया धा।
579 संज्ञावृद्धं वा।
593 सन्धिर्य्वोरैडौट् च।
747 संभ्रमे यावद्बोधम्।
608 संस्कृते।
567 संस्कृते भक्ष्ये।
640 सखिदूतवणिग्भ्यो यः।
616 सतीर्थ्यः।
703 सदाधुनेदानीमेतर्हि।
700 सप्तम्याः।
736 सात्सुगोः।
559 सास्य देवता।
681 स्वामिन्नीशे।
655 ह्रस्वान्नामिनस्ते।
739 ह्रस्वे।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तद्धित प्रकरण में प्रयुक्त तद्धित के अतिरिक्त सूत्रों की अकारादि अनुक्रमणिका

सूत्राङ्कः सूत्रम्
103 अतो जस्भ्यांये।
84 अतोडत्युः।
सूत्राङ्कः सूत्रम्
191 अतोऽम्।
251 अत्वसोरभ्वादेः सौ।
सूत्राङ्कः सूत्रम्
102 अदेतोरपदान्तेऽतः।
448 अधिकं च तद्धितोत्तरपदसमाहारेषु।
18 अन्त्यस्वरादिष्टिः।
507 अन्यस्य दुगीयकारके।
121 अवकुप्वनुस्वारविसर्गजिह्वा-
मूलीयोपध्मानीयैरन्तरेऽपि।
38 अवर्णस्येवर्णादावेदोदरलः।
294 अव्ययस्य।
276 आ अम्हसयोः।
70 आद्यन्तौ ट्कितौ।
154 आद्वेष्टेरः।
172 आपः।
295 आबतः स्त्रियाम्।
223 इन्हन्पूषन्नर्यम्णां सौ च।
29 इवर्णादीनां स्वरे यवरलाः।
451 इवर्णावर्णस्य।
307 ईप्यतः।
249 उदृदितोधात नुम्।
425 ऊर्याद्यनुकरणोपसर्गच्विडाचो
गतिर्धातोः प्राक् च।
500 एकादशषोडशषोडन्षोढाषड्ढाः।
33 एदैतोरयायौ।
44 एदोतोऽतः पदान्ते।
34 ओदौतोरवावौ।
230 किमः कः।
257 क्वस उष्मतौ च।
207 क्वस्स्स्रंस्ध्वंस्भ्रंसनडुहां दः।
573 क्वामेहत्रतसस्त्यप्।
116 क्विलादेकपदेऽपदान्ते कृतस्य सस्य।
72 खसे चपा झथानाम्।
426 गतिः।
सूत्राङ्कः सूत्रम्
308 गौरादिभ्यः।
245 चजोः कगौ।
156 जस्शसोर्डतिष्णो लुक्।
59 झसा जबाः।
39 झसानां झसे सवर्णे।
278 टाङ्योसि यः।
146 डिति टेः।
239 तः सौ सः।
275 त्वमौ प्रत्ययोत्तरपदे चैकत्वे।
131 नाम सिदयहसे।
135 नाम्नो नोऽनह्नः।
406 नोऽपदस्य तद्धिते।
196 नोपधाया नुटि चाधौ दीर्घः।
250 न्स्महतः।
133 पुंस्त्रियोः स्यमौजस्।
271 मान्तयोर्युवावौ द्वित्वे।
195 मिदन्त्यस्वरात्परः।
306 मुख्यात्षिट्टिदणञ्नञ्स्नञेयेकणीकण्क्वरपः।
77 मोऽनुस्वारयमौ हसे सवर्णौ।
79 म्नां झपे ञमः सवर्णोऽपदान्ते।
82 विसर्गस्य सश्छते।
65 ष्टुभिः ष्टुः।
449 संख्यापूर्वो द्विगुश्च।
206 संयोगस्य।
36 समानानां सवर्णे दीर्घः सह।
104 समानादमः।
395 समासप्रत्यययोः।
89 स्रोर्विसर्गः।
85 हबे।
310 हसात्तद्धितस्य।
183 हसेपः सेर्लोपः।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

तद्धित प्रकरण में प्रयुक्त भिक्षुशब्दानुशासनम् के सूत्र

सूत्राङ्कः   सूत्रम्

1/1/50 अधण्तस्वाद्येनान्तः ।

1/1/51 च्विसात्त्राडाच्तसिशसिज्वदामः ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

परिशिष्ट - III
तद्धित प्रकरणम् की संक्षिप्त झांकी

सूत्र	पद	विग्रह	प्रकृति–प्रत्यय	प्रत्ययविधायक सूत्र
517	भानवः	भानोः अपत्यम्	भानु+अण्	तस्यापत्ये (516)
519	दाशरथिः	दशरथस्य अपत्यम्	दशरथ+इञ्	अत इञ् (518)
520	शैवः	शिवस्य अपत्यम्	शिव+अण्	शिवादे... (520)
	प्रौष्ठः	प्रौष्ठस्य अपत्यम्	प्रौष्ठ+अण्	शिवादे... (520)
521	वाशिष्ठः	वशिष्ठस्य अपत्यम्	वशिष्ठ+अण्	ऋष्यन्धक....(521)
	श्वाफल्कः	श्वफल्कस्य अपत्यम्	श्वफल्क+अण्	ऋष्यन्धक....(521)
	वासुदेवः	वसुदेवस्य अपत्यम्	वसुदेव+अण्	ऋष्यन्धक....(521)
	नाकुलः	नकुलस्य अपत्यम्	नकुल+अण्	ऋष्यन्धक....(521)
522	कानीनः	कन्यायाः अपत्यम्	कन्या+अण्	कन्यायाः... (522)
523	बैदः	बिदस्य पौत्राद्यपत्यम्	बिद+अञ्	गोत्रे...... (523)
	काश्यपः	कश्यपस्य पौत्राद्यपत्यम्	कश्यप+अञ्	गोत्रे...... (523)
524	गार्ग्यः	गर्गस्य पौत्राद्यपत्यम्	गर्ग+यञ्	गर्गादि.... (524)
	वात्स्यः	वत्सस्य पौत्राद्यपत्यम्	वत्स+यञ्	गर्गादि.... (524)
525	गर्गाः	गर्गस्य पौत्रादीनि अपत्यानि	गर्ग+यञ्	गर्गादि...... (524)
	बिदाः	बिदस्य पौत्रादीनि अपत्यानि	बिद+अञ्	गोत्रे...... (523)
	गौपवनाः	गोपवनस्य पौत्रादीनि अपत्यानि	गोपवन+अञ्	गोत्रे...... (523)
	श्यापर्णाः	श्यापर्णस्य पौत्रादीनि अपत्यानि	श्यापर्ण+अञ्	गोत्रे...... (523)
	गार्ग्यः स्त्रियः	गर्गस्य पौत्रादीनि अपत्यानि	गर्ग+यञ्	गर्गादि.... (524)
526	नाडायनः	नडस्य पौत्राद्यपत्यम्	नड+आयनण्	नडादिभ्य... (526)
	चारायणः	चरस्य पौत्राद्यपत्यम्	चर+आयनण्	नडादिभ्य... (526)
	बैदिः	बिदस्य अपत्यम्	बिद+इञ्	अत...... (518)
	गार्गिः	गर्गस्य अपत्यम्	गर्ग+इञ्	अत...... (518)
	नाडिः	नडस्य अपत्यम्	नड+इञ्	अत...... (518)
527	दात्तेयः	दत्ताया अपत्यम्	दत्ता+एयण्	द्विस्वरा... (527)
	गौप्तेयः	गुप्ताया अपत्यम्	गुप्ता+एयण्	द्विस्वरा... (527)
	सैप्रः	सिप्राया अपत्यम्	सिप्रा+अण्	तस्या... (516)
528	काणेरः	काणाया अपत्यम्	काणा+एरण्	क्षुद्रा.... (528)
	काणेयः	काणाया अपत्यम्	काणा+एयण्	द्विस्वरा... (527)
	दासेरः	दास्या अपत्यम्	दासी+एरण्	क्षुद्रा.... (528)
	दासेयः	दास्या अपत्यम्	दासी+एयण्	द्विस्वरा... (527)
529	स्वस्रीयः	स्वसुः अपत्यम्	स्वसृ+ईय	स्वसु..... (529)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

530	भ्रातृव्यः	भ्रातुः अपत्यम्	भ्रातृ+व्य	भ्रातु... (530)
	भ्रात्रीयः	भ्रातुः अपत्यम्	भ्रातृ+ईय	भ्रातु... (530)
531	श्वशुर्यः	श्वशुरस्य अपत्यम्	श्वशुर+य	श्वशु... (531)
533	राजन्यः	राज्ञः अपत्यं जातिः	राजन्+य	राज्ञो..... (532)
	राजनः	राज्ञः अपत्यम्	राजन+अण्	तस्या.... (516)
534	क्षत्रियः	क्षत्रस्य अपत्यं जातिः	क्षत्र+इय	क्षत्रादियः (534)
	क्षात्रिः	क्षत्रस्य अपत्यम्	क्षत्र+इञ्	अत... (518)
535	मनुष्यः	मनोः अपत्यं जातिः	मनु+य	मनो... (535)
	मानुषः	मनोः अपत्यं जातिः	मनु+अण्	मनो..... (535)
	मानवः	मनोः अपत्यम्	मनु+अण्	तस्या... (516)
536	नाभेयः	नाभेः अपत्यम्	नाभि+एयण्	इतो... (536)
	आहेयः	अहेः अपत्यम्	अहि+एयण्	इतो... (536)
	दाक्षिः	दक्षस्य अपत्यम्	दक्ष+इञ्	अत..... (518)
537	कुलीनः	कुलस्य अपत्यम्	कुल+ईन	कुला.... (537)
	राजकुलीनः	राजकुलस्य अपत्यम्	राजकुल+ईन	कुला.... (537)
538	दौष्कुलेयः	दुष्कुलस्य अपत्यम्	दुष्कुल+एयण्	दुष्कुला.. (538)
	दुष्कुलीनः	दुष्कुलस्य अपत्यम्	दुष्कुल+ईन	कुला.... (537)
539	आग्नेयः	अग्नेः अपत्यम्	अग्नि+एयण्	प्राग्वतो.. (539)
	कालेयः	कलेः अपत्यम्	कलि+एयण्	प्राग्वतो.... (539)
540	स्त्रैणः	स्त्रियाः अपत्यम्	स्त्री+नञ्	स्त्री..... (540)
	पौंस्नः	पुंसः अपत्यम्	पुंस्+स्नञ्	स्त्री..... (540)
542	गव्यः	गोः अपत्यम्	गो+य	गोः..... (541)
543	कौसुम्भम्	कुसुम्भेन रक्तम्	कुसुम्भ+अण्	तेन..... (543)
	हारिद्रम्	हरिद्रया रक्तम्	हरिद्रा+अण्	तेन..... (543)
	कौङ्कुमम्	कुङ्कुमेन रक्तम्	कुङ्कुम+अण्	तेन..... (543)
544	काकम्	काकानां समूहः	काक+अण्	तस्य... (544)
	बाकम्	बकानां समूहः	बक+अण्	तस्य... (544)
	शौकम्	शुकानां समूहः	शुक+अण्	तस्य... (544)
	यौवतम्	युवतीनां समूहः	युवति+अण्	तस्य... (544)
	स्त्रैणम्	स्त्रीणां समूहः	स्त्री+नञ्	तस्य... (544)
	पौंस्नम्	पुंसां समूहः	पुंस्+स्नञ्	तस्य... (544)
	गव्यम्	गवां समूहः	गो+य	तस्य... (544)
546	गार्गकम्	गर्गाणां समूहः	गार्ग्य+अकञ्	गोत्रो... (545)
	औक्षकम्	उक्षाणां समूहः	उक्षन्+अकञ्	गोत्रो... (545)
	औष्ट्रकम्	उष्ट्राणां समूहः	उष्ट्र+अकञ्	गोत्रो... (545)
	औरभ्रकम्	उरभ्राणां समूहः	उरभ्र+अकञ्	गोत्रो... (545)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	राजकम्	राज्ञां समूहः	राजन्+अकञ्	गोत्रो... (545)
547	राजन्यकम्	राजन्यानां समूहः	राजन्य+अकञ्	गोत्रो... (545)
	राजपुत्रकम्	राजपुत्राणां समूहः	राजपुत्र+अकञ्	गोत्रो... (545)
	वात्सकम्	वत्सानां समूहः	वत्स+अकञ्	गोत्रो... (545)
	आजकम्	अजानां समूहः	अज+अकञ्	गोत्रो... (545)
	मानुष्यकम्	मनुष्याणां समूहः	मनुष्य+अकञ्	गोत्रो... (545)
	वार्धकम्	वृद्धानां समूहः	वृद्ध+अकञ्	गोत्रो... (545)
	वार्द्धकम्	वृद्धानां समूहः	वृद्ध+अकञ्	गोत्रो... (545)
548	कावचिकम्	कवचिनां समूहः	कवचिन्+इकण्	कवचि... (548)
	हास्तिकम्	हस्तिनां समूहः	हस्तिन्+इकण्	कवचि... (548)
	आपूपिकम्	अपूपानां समूहः	अपूप+इकण्	कवचि... (548)
	कैदारिकम्	केदाराणां समूहः	केदार+इकण्	कवचि... (548)
550	धैनुकम्	धेनूनां समूहः	धेनु+इकण्	धेनो.... (549)
551	अश्वीयः	अश्वानां समूहः	अश्व+ईय	अश्वा.. (551)
	आश्वम्	अश्वानां समूहः	अश्व+अण्	तस्य... (544)
552	ग्रामता	ग्रामाणां समूहः	ग्राम+तल्	ग्राम.... (552)
	जनता	जनानां समूहः	जन+तल्	ग्राम.... (552)
	बन्धुता	बन्धूनां समूहः	बन्धु+तल्	ग्राम.... (552)
	गजता	गजानां समूहः	गज+तल्	ग्राम.... (552)
	सहायता	सहायानां समूहः	सहाय+तल्	ग्राम.... (552)
553	सौवर्णं कुण्डलम्	सुवर्णस्य विकारः	सुवर्ण+अण्	विकारे (553)
554	पितृव्यः	पितुः भ्राता	पितृ+व्य	पितृ... (554)
	मातुलः	मातुः भ्राता	मातृ+डुल	पितृ... (554)
555	पितामहः	पितुः पिता	पितृ+डामहट्	पित्रो.... (555)
	पितामही	पितुः माता	पितृ+डामहट्	पित्रो.... (555)
	मातामहः	मातुः पिता	मातृ+डामहट्	पित्रो.... (555)
	मातामही	मातुः माता	मातृ+डामहट्	पित्रो.... (555)
556	गोमयम्	गोः पुरीषम्	गो+मयट्	गोः..... (556)
557	पौरुषेयः ग्रन्थः	पुरुषेण कृतः	पुरुष+एयञ्	पुरुषात्.... (557)
	पौरुषेयं पथ्यम्	पुरुषाय हितम्	पुरुष+एयञ्	पुरुषात्.... (557)
	पौरुषेयः	पुरुषाणां वधः, विकारः, समूहा वा	पुरुष+एयञ्	पुरुषात्.... (557)
558	तिलपिञ्जः	निष्फलस्तिलः	तिल+पिञ्ज	निष्फले.... (558)
	तिलपेजः	निष्फलस्तिलः	तिल+पेज	निष्फले.... (558)
559	जैनः	जिनो देवताऽस्य सः	जिन+अण्	सास्य.... (559)
	शैवः	शिवो देवताऽस्य सः	शिव+अण्	सास्य.... (559)
	बौद्धः	बुद्धो देवताऽस्य सः	बुद्ध+अण्	सास्य.... (559)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	आग्नेय:	अग्नि: देवताऽस्य स:	अग्नि+एयण्	सास्य.... (559)
560	ऋतव्यम्	ऋतु: देवताऽस्य स:	ऋतु+य	ऋतु..... (560)
	वायव्यम्	वायु: देवताऽस्य स:	वायु+य	ऋतु..... (560)
561	पित्र्यम्	पिता देवताऽस्य स:	पितृ+य	ऋतु..... (560)
	उषस्यम्	उषा: देवताऽस्य स:	उषस्+य	ऋतु..... (560)
562	सौत्र:	सूत्रं वेत्त्यधीते वा	सूत्र+अण्	तद्वेत्य... (562)
563	वैयाकरण:	व्याकरणं वेत्त्यधीते वा	व्याकरण+अण्	तद्वेत्य.... (562)
564	नैयायिक:	न्यायं वेत्त्यधीते वा	न्याय+इकण्	न्यायादे.... (564)
	नैमित्तिक:	निमित्तं वेत्त्यधीते वा	निमित्त+इकण्	न्यायादे.... (564)
	मौहूर्त्तिक:	मुहूर्त्तं वेत्त्यधीते वा	मुहूर्त्त+इकण्	न्यायादे.... (564)
565	वास्त्र:	वस्त्रेण छन्नो रथ:	वस्त्र+अण्	तेन.... (565)
	काम्बल:	कम्बलेन छन्नो रथ:	कम्बल+अण्	तेन.... (565)
566	चार्मण:	चर्मणा छन्नो रथ:	चर्मन्+अण्	तेन.... (565)
568	पञ्चकपाल:	पञ्चसु कपालेसु संस्कृत:	पञ्चन्+सुप्+कपाल+सुप्+अण्	संस्कृते.... (567)
570	राष्ट्रिय:	राष्टे जात:, भव:, क्रीत:, कुशलो वा	राष्ट्र+इय	राष्ट्रा... (570)
571	ग्रामीण:	ग्रामे जात:, भव:, क्रीत:, कुशलो वा	ग्राम+ईनञ्	ग्रामा.... (571)
	ग्राम्य:	ग्रामे जात:, भव:, क्रीत:, कुशलो वा	ग्राम+य	ग्रामा.... (571)
572	नादेय:	नद्यां जात:, भव:, क्रीत:, कुशलो वा	नदी+एयण्	नद्यादे.... (572)
	माहेय:	मह्यां जात:, भव:, क्रीत:, कुशलो वा	मही+एयण्	नद्यादे.... (572)
573	क्वत्य:	क्व भव: जातो वा	क्व+त्यप्	क्वामेह... (573)
	अमात्य:	अमा भव: जातो वा	अमा+त्यप्	क्वामेह... (573)
	इहत्य:	इह भव: जातो वा	इह+त्यप्	क्वामेह... (573)
	कुत्रत्य:	कुत्र भव: जातो वा	कुत्र+त्यप्	क्वामेह... (573)
	कुतस्त्य:	कुत: भव: जातो वा	कुतस्+त्यप्	क्वामेह... (573)
	ततस्त्य:	तत: भव: जातो वा	ततस्+त्यप्	क्वामेह... (573)
574	दाक्षिणात्य:	दक्षिणा भव: जातो वा	दक्षिणा+त्यण्	दक्षिणा... (574)
	पाश्चात्य:	पश्चाद् भव: जातो वा	पश्चात्+त्यण्	दक्षिणा... (574)
	पौरस्त्य:	पुर: भव: जातो वा	पुरस्+त्यण्	दक्षिणा... (574)
575	आरण्या: पशव:	अरण्ये भवा: जाता वा	अरण्य+अण्	णोऽरण्यात् (575)
577	भावत्कम्	भवत: इदम्	भवतु+इकण्	भवतो... (576)
	भवदीयम्	भवत: इदम्	भवतु+ईयस्	भवतो... (576)
578	परकीय:	परस्य अयम्	पर+अकीय	पर...... (578)
	जनकीय:	जनस्य अयम्	जन+अकीय	पर...... (578)
	राजकीय:	राज्ञ: अयम्	राजन्+अकीय	पर...... (578)
581	चैत्रीय:	चैत्रस्य अयम्	चैत्र+ईय	वृद्धा.... (581)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	मैत्रीयः	मैत्रस्य अयम्	मैत्र+ईय	वृद्धा.... (581)
	तदीयः	तस्य अयम्	तद्+ईय	वृद्धा.... (581)
	यदीयः	यस्य अयम्	यद्+ईय	वृद्धा.... (581)
582	गहीयः	गहस्य अयम्	गह+ईय	गहादिभ्यः (582)
	अन्यदीयः	अन्यस्य अयम्	अन्य+ईय	गहादिभ्यः (582)
	स्वकीयः	स्वकस्य अयम्	स्वक+ईय	गहादिभ्यः (582)
	देवकीयः	देवकस्य अयम्	देवक+ईय	गहादिभ्यः (582)
583	यौष्माकम्	युवयोः युष्माकं वा इदम्	युष्मद्+अञ्	वा युष्मद...(583)
	यौष्माकीणम्	युवयोः युष्माकं वा इदम्	युष्मद्+ईनञ्	वा युष्मद...(583)
	युष्मदीयम्	युवयोः युष्माकं वा इदम्	युष्मद्+ईय	वृद्धा...... (581)
	आस्माकम्	आवयोः अस्माकं वा इदम्	अस्मद्+अञ्	वा युष्मद...(583)
	आस्माकीनम्	आवयोः अस्माकं वा इदम्	अस्मद्+ईनञ्	वा युष्मद...(583)
	अस्मदीयम्	आवयोः अस्माकं वा इदम्	अस्मद्+ईय	वृद्धा.... (581)
584	तावकम्	तव इदम्	युष्मद्+अञ्	तवक... (584)
	तावकीनम्	तव इदम्	युष्मद्+ईनञ्	तवक... (584)
	त्वदीयम्	तव इदम्	युष्मद्+ईय	वृद्धा.... (581)
	मामकम्	मम इदम्	अस्मद्+अञ्	तवक..... (584)
	मामकीनम्	मम इदम्	अस्मद्+ईनञ्	तवक..... (584)
	मदीयम्	मम इदम्	अस्मद्+ईय	वृद्धा...... (581)
585	अन्तमः	अन्ते भवः	अन्त+म	अन्ता..... (585)
	आदिमः	आदौ भवः	आदि+म	अन्ता..... (585)
	मध्यमः	मध्ये भवः	मध्य+म	अन्ता..... (585)
587	पश्चिमः	पश्चाद् भवः	पश्चात्+इम	पश्चा..... (586)
	अग्रिमः	अग्रे भवः	अग्र+इम	पश्चा..... (586)
	अन्तिमः	अन्ते भवः	अन्त+इम	पश्चा..... (586)
588	वार्षिकः	वर्षासु भवः	वर्षा+इकण्	वर्षा...... (588)
	मासिकः	मासे भवः	मास+इकण्	वर्षा...... (588)
	सांवत्सरिकः	संवत्सरे भवः	संवत्सर+इकण्	वर्षा...... (588)
	दैवसिकः	दिवसे भवः	दिवस+इकण्	वर्षा...... (588)
589	ग्रैष्मः	ग्रीष्मे भवः	ग्रीष्म+अण्	ऋतु...... (589)
	वासन्तः	वसन्ते भवः	वसन्त+अण्	ऋतु..... (589)
590	तैषः	तिष्ये भवः	तिष्य+अण्	ऋतु..... (589)
	पौषः	पुष्ये भवः	पुष्य+अण्	ऋतु..... (589)
	सान्ध्यः	सन्ध्यायां भवः	सन्ध्या+अण्	ऋतु..... (589)
591	स्रौघ्नः	स्रुघ्ने जातः	स्रुघ्न+अण्	तत्र..... (591)
	माथुरः	मथुरायां जातः	मथुरा+अण्	तत्र..... (591)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	आग्नेयः	अग्नौ जातः	अग्नि+एयण्	तत्र..... (591)
	कालेयः	कलौ जातः	कलि+एयण्	तत्र..... (591)
	स्त्रैणः	स्त्रियां जातः	स्त्री+नञ्	तत्र..... (591)
	पौंस्नः	पुंसि जातः	पुंस्+स्नञ्	तत्र..... (591)
	राष्ट्रियः	राष्ट्रे जातः	राष्ट्र+इय	तत्र..... (591)
	ग्रामीणः	ग्रामे जातः	ग्राम+ईन	तत्र..... (591)
	ग्राम्यः	ग्रामे जातः	ग्राम+य	तत्र..... (591)
592	स्रौघ्नः	स्रुघ्ने कृतः, लब्धः, क्रीतः, संभूतो वा	स्रुघ्न+अण्	कृत.... (592)
593	स्रौघ्नः	स्रुघ्ने कुशलः	स्रुघ्न+अण्	कुशले (593)
	माथुरः	मथुरायां कुशलः	मथुरा+अण्	कुशले (593)
594	स्रौघ्नः	स्रुघ्ने भवः	स्रुघ्न+अण्	भवे (594)
	माथुरः	मथुरायां भवः	मथुरा+अण्	भवे (594)
595	दिश्यः	दिशि भवः	दिश्+य	दिगादे.... (595)
	वर्ग्यः	वर्गे भवः	वर्ग+य	दिगादे.... (595)
	आद्यः	आदौ भवः	आदि+य	दिगादे.... (595)
	अन्त्यः	अन्ते भवः	अन्त+य	दिगादे.... (595)
596	दन्त्यः	दन्ते भवः	दन्त+य	शरीरा.... (596)
	कर्ण्यः	कर्णे भवः	कर्ण+य	शरीरा.... (596)
	ओष्ठ्यः	ओष्ठे भवः	ओष्ठ+य	शरीरा.... (596)
	मुख्यः	मुखे भवः	मुख+य	शरीरा.... (596)
	मूर्धन्यः	मूर्धनि भवः	मूर्धन्+य	शरीरा.... (596)
597	दार्तेयं जलम्	दृतौ भवः	दृति+एयण्	दृति..... (597)
	कौक्षेयः व्याधिः	कुक्षौ भवः	कुक्षि+एयण्	दृति..... (597)
	कालशेयं तक्रम्	कलशौ कलश्यां वा भवः	कलशि+एयण्	दृति..... (597)
	वास्तेयं मूत्रम्	वस्तौ भवः	वस्ति+एयण्	दृति..... (597)
	आहेयं विषम्	अहौ भवः	अहि+एयण्	दृति..... (597)
598	माध्यन्दिनः	मध्ये भवः	मध्य+दिनण्	मध्याद्... (598)
	माध्यमः	मध्ये भवः	मध्य+ण	मध्याद्.... (598)
	मध्यमीयः	मध्ये भवः	मध्य+ईय	मध्याद्.... (598)
599	मत्वर्थीयः	मत्वर्थे भवः	मत्वर्थ+ईय	ईयो..... (599)
	जिह्वामूलीयः	जिह्वामूले भवः	जिह्वामूल+ईय	ईयो..... (599)
	अङ्गुलीयः	अङ्गुल्यां भवः	अङ्गुलि+ईय	ईयो..... (599)
	मध्यीयः	मध्ये भवः	मध्य+ईय	ईयो....... (599)
600	कवर्गीयः	कवर्गे भवः	कवर्ग+ईय	वर्गान्तात् (600)
	पवर्गीयः	पवर्गे भवः	पवर्ग+ईय	वर्गान्तात् (600)
601	हैमवती गंगा	हिमवतः प्रभवति	हिमवत्+अण्	प्रभवति (601)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

602	सौभद्रः	सुभद्राम् अधिकृत्य कृतो ग्रंथः	सुभद्रा+अण्	अधिकृत्य... (602)
	सौतारः	सुताराम् अधिकृत्य कृतो ग्रंथः	सुतारा+अण्	अधिकृत्य... (602)
	भाद्रः	भद्राम् अधिकृत्य कृतो ग्रंथः	भद्रा+अण्	अधिकृत्य... (602)
603	गाणधरं द्वादशाङ्गम्	गणधरेण प्रोक्तम्	गणधर+अण्	तेन.... (603)
604	शैवः	शिवेन कृतो ग्रंथः	शिव+अण्	कृते (604)
	सिद्धसेनीयः स्तवः	सिद्धसेनेन कृतो स्तवः	सिद्धसेन+ईय	कृते (604)
	ऐष्टकः	इष्टकाभिः कृतः प्रासादः	इष्टका+अण्	कृते (604)
605	भैक्षवम्	भिक्षोः इदम्	भिक्षु+अण्	तस्येदम् (605)
	स्रौघ्नम्	स्रुघ्नस्य इदम्	स्रुघ्न+अण्	तस्येदम् (605)
	माथुरम्	मथुरायाः इदम्	मथुरा+अण्	तस्येदम् (605)
	आग्नेयम्	अग्नेः इदम्	अग्नि+एयण्	तस्येदम् (605)
	स्त्रैणम्	स्त्रियाः इदम्	स्त्री+नञ्	तस्येदम् (605)
	पौंस्नम्	पुंसः इदम्	पुंस्+स्नञ्	तस्येदम् (605)
	गव्यम्	गोः इदम्	गो+य	तस्येदम् (605)
	नादेयम्	नद्याः इदम्	नदी+एयण्	तस्येदम् (605)
	सौवम्	स्वस्य इदम्	स्व+अण्	तस्येदम् (605)
	दैवम्	देवस्य इदम्	देव+अण्	तस्येदम् (605)
607	आक्षिकः	अक्षैर्दीव्यति	अक्ष+इकण्	तेन.... (607)
	कौद्दालिकः	कुद्दालेन खनति	कुद्दाल+इकण्	तेन..... (607)
	आक्षिकः	अक्षैः जयति	अक्ष+इकण्	तेन..... (607)
	आक्षिकम्	अक्षैः जितम्	अक्ष+इकण्	तेन...... (607)
608	दाधिकम्	दध्ना संस्कृतम्	दधि+इकण्	संस्कृते (608)
609	गौपुच्छिकः	गोपुच्छेन तरति	गोपुच्छ+इकण्	तरति (609)
	औडुपिकः	उडुपेन तरति	उडुप+इकण्	तरति (609)
610	नाविकः	नावा तरति	नौ+इक	नौ...... (610)
	बाहुकः	बाहुभ्यां तरति	बाहु+इक	नौ...... (610)
611	हास्तिकः	हस्तिना चरति	हस्तिन्+इकण्	चरति (611)
	शाकटिकः	शकटेन चरति	शकट+इकण्	चरति (611)
612	पर्पिकः	पर्पेण चरति	पर्प+इकट्	पर्पादि.... (612)
	पर्पिकी	पर्पेण चरति स्त्रीः	पर्प+इकट्	पर्पादि.... (612)
	अश्विकः	अश्वेन चरति	अश्व+इकट्	पर्पादि.... (612)
	रथिकः	रथेन चरति	रथ+इकट्	पर्पादि..... (612)
613	पाक्षिकः	पक्षिणो हन्ति	पक्षिन्+इकण्	पक्षि.... (613)
	शाकुनिकः	शकुनीन् हन्ति	शकुनि+इकण्	पक्षि.... (613)
	मात्स्यिकः	मत्स्यान् हन्ति	मत्स्य+इकण्	पक्षि.... (613)
	मैनिकः	मीनान् हन्ति	मीन+इकण्	पक्षि.... (613)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	मार्गिकः	मृगान् हन्ति	मृग+इकण्	पक्षि.... (613)
	हारिणिकः	हरिणान् हन्ति	हरिण+इकण्	पक्षि.... (613)
614	धार्मिकः	धर्मं चरति	धर्म+इकण्	धर्म.... (614)
	आधर्मिकः	अधर्मं चरति	अधर्म+इकण्	धर्म.... (614)
615	नैकटिको भिक्षुः	निकटे वसति	निकट+इकण्	निकटादिषु..(615)
	वार्क्षमूलिकः	वृक्षमूले वसति	वृक्षमूल+इकण्	निकटादिषु..(615)
	श्माशानिकः	श्मशाने वसति	श्मशान+इकण्	निकटादिषु..(615)
616	सतीर्थ्यः	समानतीर्थे वसति	समानतीर्थ+य	सतीर्थ्यः (616)
617	प्रास्थिकम्	प्रस्थेन क्रीतम्	प्रस्थ+इकण्	मूल्यैः ...(617)
	साप्ततिकम्	सप्तत्या क्रीतम्	सप्तति+इकण्	मूल्यैः ....(617)
618	छात्रिकः	छत्रम् अर्हति	छत्र+इकण्	अर्हति (618)
	चामरिकः	चमरम् अर्हति	चमर+इकण्	अर्हति (618)
	वास्त्रिकः	वस्त्रम् अर्हति	वस्त्र+इकण्	अर्हति (618)
619	आचार्यिकः	आचार्येण शोभते	आचार्य+इकण्	शोभते (619)
	शैलिकी सीता	शीलेन शोभते	शील+इकण्	शोभते (619)
620	कर्मण्यः	कर्मणि साधुः	कर्मन्+य	तत्र.... (620)
	सभ्यः	सभायां साधुः	सभा+य	तत्र .... (620)
621	पार्षद्यः	पर्षदि साधुः	पर्षद्+ण्य	पर्षदो... (621)
	पार्षदः	पर्षदि साधुः	पर्षद्+ण	पर्षदो....(621)
622	काथिकः	कथायां साधुः	कथा+इकण्	कथादे....(622)
	वैकथिकः	विकथायां साधुः	विकथा+इकण्	कथादे....(622)
623	वत्सीयः	वत्साय हितः	वत्स+ईय	तस्मै.... (623)
	पित्रीयः	पित्रे हितः	पितृ+ईय	तस्मै.... (623)
	मात्रीयः	मात्रे हितः	मातृ+ईय	तस्मै.... (623)
	गव्यम्	गवे हितम्	गो+य	तस्मै.... (623)
	स्वीयम्	स्वस्य हितम्	स्व+ईय	तस्मै..... (623)
624	दन्त्यम्	दन्तेभ्यः हितम्	दन्त+य	शरीरा.... (624)
	कर्ण्यम्	कर्णाभ्यां हितम्	कर्ण+य	शरीरा.... (624)
625	अजथ्यम्	अजेभ्यो हितम्	अज+थ्य	अजावि... (625)
	अविथ्यम्	अविभ्यो हितम्	अवि+थ्य	अजावि.... (625)
626	अजथ्यम्	अजाभ्यो हितम्	अजा+थ्य	अजावि.... (625)
627	साधुवत्	साधोरर्हं वृत्तमस्य साधोः	साधु+वत्	तस्यार्हे.... (627)
628	अश्ववत्	अश्व इव धावति चैत्रः	अश्व+वत्	स्यादे..... (628)
	देववत्	देवम् इव पश्यति मुनिम्	देव+वत्	स्यादे..... (628)
629	मथुरावत्	मथुरायामिव पाटलिपुत्रे प्रासादाः	मथुरा+वत्	तत्र (629)
630	चैत्रवत्	चैत्रस्येव मैत्रस्य गावः	चैत्र+वत्	तस्य (630)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

631	गोत्वम्	गोशब्दस्य भाव:	गो+त्व	भावे ....(631)
	गोता	गोशब्दस्य भाव:	गो+तल्	भावे ....(631)
	शुक्लत्वम्	शुक्लस्य भाव:	शुक्ल+त्व	भावे ....(631)
	शुक्लता	शुक्लस्य भाव:	शुक्ल+तल्	भावे ....(631)
	कारकत्वम्	कारकस्य भाव:	कारक+त्व	भावे ....(631)
	कारकता	कारकस्य भाव:	कारक+तल्	भावे ....(631)
	दण्डित्वम्	दण्डिन: भाव:	दण्डिन्+त्व	भावे ....(631)
	दण्डिता	दण्डिन: भाव:	दण्डिन्+तल्	भावे ....(631)
634	प्रथिमा	पृथो: भाव:	पृथु+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	पृथुत्वम्	पृथो: भाव:	पृथु+त्व	पृथ्वादे....(632)
	पृथुता	पृथो: भाव:	पृथु+तल्	पृथ्वादे....(632)
	पार्थवम्	पृथो: भाव:	पृथु+अण्	लघु..... (642)
	म्रदिमा	मृदो: भाव:	मृदु+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	मृदुत्वम्	मृदो: भाव:	मृदु+त्व	पृथ्वादे....(632)
	मृदुता	मृदो: भाव:	मृदु+तल्	पृथ्वादे....(632)
	मार्दवम्	मृदो: भाव:	मृदु+अण्	लघु..... (642)
636	प्रेमा	प्रियस्य भाव:	प्रिय+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	प्रियत्वम्	प्रियस्य भाव:	प्रिय+त्व	पृथ्वादे....(632)
	प्रियता	प्रियस्य भाव:	प्रिय+तल्	पृथ्वादे.....(632)
	स्थेमा	स्थिरस्य भाव:	स्थिर+इमन्	वर्ण... (638)
	स्थिरत्वम्	स्थिरस्य भाव:	स्थिर+त्व	वर्ण......(638)
	स्थिरता	स्थिरस्य भाव:	स्थिर+तल्	वर्ण.... (638)
	स्थैर्यम्	स्थिरस्य भाव:	स्थिर+ट्यण्	वर्ण......(638)
	वरिमा	ऊरो: भाव:	ऊरु+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	ऊरुत्वम्	ऊरो: भाव:	ऊरु+त्व	पृथ्वादे.....(632)
	ऊरुता	ऊरो: भाव:	ऊरु+तल्	पृथ्वादे....(632)
	गरिमा	गुरो: भाव:	गुरु+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	गुरुत्वम्	गुरो: भाव:	गुरु+त्व	पृथ्वादे....(632)
	गुरुता	गुरो: भाव:	गुरु+तल्	पृथ्वादे.....(632)
	गौरवम्	गुरो: भाव:	गुरु+अण्	लघु..... (642)
	बंहिमा	बहुलस्य भाव:	बहुल+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	बहुलत्वम्	बहुलस्य भाव:	बहुल+त्व	पृथ्वादे....(632)
	बहुलता	बहुलस्य भाव:	बहुल+तल्	पृथ्वादे....(632)
	त्रपिमा	तृप्रस्य भाव:	तृप्र+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	तृप्रत्वम्	तृप्रस्य भाव:	तृप्र+त्व	पृथ्वादे....(632)
	तृप्रता	तृप्रस्य भाव:	तृप्र+तल्	पृथ्वादे....(632)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	द्राघिमा	दीर्घस्य भाव:	दीर्घ+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	दीर्घत्वम्	दीर्घस्य भाव:	दीर्घ+त्व	पृथ्वादे....(632)
	दीर्घता	दीर्घस्य भाव:	दीर्घ+तल्	पृथ्वादे....(632)
	ह्रसिमा	ह्रस्वस्य भाव:	ह्रस्व+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	ह्रस्वत्वम्	ह्रस्वस्य भाव:	ह्रस्व+त्व	पृथ्वादे....(632)
	ह्रस्वता	ह्रस्वस्य भाव:	ह्रस्व+तल्	पृथ्वादे...(632)
	वर्षिमा	वृद्धस्य भाव:	वृद्ध+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	वृद्धत्वम्	वृद्धस्य भाव:	वृद्ध+त्व	पृथ्वादे....(632)
	वृद्धता	वृद्धस्य भाव:	वृद्ध+तल्	पृथ्वादे....(632)
	वृन्दिमा	वृन्दारकस्य भाव:	वृन्दारक+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	वृन्दारकत्वम्	वृन्दारकस्य भाव:	वृन्दारक+त्व	पृथ्वादे....(632)
	वृन्दारकता	वृन्दारकस्य भाव:	वृन्दारक+तल्	पृथ्वादे....(632)
637	भूमा	बहो: भाव:	बहु+इमन्	पृथ्वादे....(632)
	बहुत्वम्	बहो: भाव:	बहु+त्व	पृथ्वादे....(632)
	बहुता	बहो: भाव:	बहु+तल्	पृथ्वादे....(632)
	बाहवम्	बहो: भाव:	बहु+अण्	लघु.....(642)
638	शौक्ल्यम्	शुक्लस्य भाव:	शुक्ल+ट्यण्	वर्ण.......(638)
	शुक्लिमा	शुक्लस्य भाव:	शुक्ल+इमन्	वर्ण......(638)
	शुक्लत्वम्	शुक्लस्य भाव:	शुक्ल+त्व	वर्ण.... (638)
	शुक्लता	शुक्लस्य भाव:	शुक्ल+तल्	वर्ण.... (638)
	कार्ष्ण्यम्	कृष्णस्य भाव:	कृष्ण+ट्यण्	वर्ण.... (638)
	कृष्णिमा	कृष्णस्य भाव:	कृष्ण+इमन्	वर्ण.... (638)
	कृष्णत्वम्	कृष्णस्य भाव:	कृष्ण+त्व	वर्ण..... (638)
	कृष्णता	कृष्णस्य भाव:	कृष्ण+तल्	वर्ण......(638)
	दार्ढ्यम्	दृढस्य भाव:	दृढ+ट्यण्	वर्ण.... (638)
	द्रढिमा	दृढस्य भाव:	दृढ+इमन्	वर्ण....(638)
	दृढत्वम्	दृढस्य भाव:	दृढ+त्व	वर्ण.....(638)
	दृढता	दृढस्य भाव:	दृढ+तल्	वर्ण....(638)
	वैमत्यम्	विमते: भाव:	विमति+ट्यण्	वर्ण....(638)
	विमतिमा	विमते: भाव:	विमति+इमन्	वर्ण....(638)
	विमतित्वम्	विमते: भाव:	विमति+त्व	वर्ण....(638)
	विमतिता	विमते: भाव:	विमति+तल्	वर्ण....(638)
	वैमतम्	विमते: भाव:	विमति+अण्	लघु....(642)
639	आधिपत्यम्	अधिपते: कर्म भावो वा	अधिपति+ट्यण्	पति....(639)
	अधिपतित्वम्	अधिपते: कर्म भावो वा	अधिपति+त्व	पति....(639)
	अधिपतिता	अधिपते: कर्म भावो वा	अधिपति+तल्	पति....(639)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	नारपत्यम्	नरपतेः कर्म भावो वा	नरपति+ट्यण्	पति....(639)
	नरपतित्वम्	नरपतेः कर्म भावो वा	नरपति+त्व	पति....(639)
	नरपतिता	नरपतेः कर्म भावो वा	नरपति+तल्	पति....(639)
	आधिराज्यम्	अधिराजस्य कर्म भावो वा	अधिराज+ट्यण्	पति....(639)
	अधिराजत्वम्	अधिराजस्य कर्म भावो वा	अधिराज+त्व	पति....(639)
	अधिराजता	अधिराजस्य कर्म भावो वा	अधिराज+तल्	पति....(639)
	यौवराज्यम्	युवराजस्य कर्म भावो वा	युवराज+ट्यण्	पति....(639)
	युवराजत्वम्	युवराजस्य कर्म भावो वा	युवराज+त्व	पति....(639)
	युवराजता	युवराजस्य कर्म भावो वा	युवराज+तल्	पति....(639)
	मौढ्यम्	मूढस्य कर्म भावो वा	मूढ+ट्यण्	पति...(639)
	मूढत्वम्	मूढस्य कर्म भावो वा	मूढ+त्व	पति....(639)
	मूढता	मूढस्य कर्म भावो वा	मूढ+तल्	पति....(639)
	वैदुष्यम्	विदुषः कर्म भावो वा	विद्वसु+ट्यण्	पति....(639)
	विद्वत्त्वम्	विदुषः कर्म भावो वा	विद्वसु+त्व	पति....(639)
	विद्वत्ता	विदुषः कर्म भावो वा	विद्वसु+तल्	पति....(639)
	राज्यम्	राज्ञः कर्म भावो वा	राजन्+ट्यण्	पति....(639)
	राजत्वम्	राज्ञः कर्म भावो वा	राजन्+त्व	पति...(639)
	राजता	राज्ञः कर्म भावो वा	राजन्+तल्	पति....(639)
	काव्यम्	कवेः कर्म भावो वा	कवि+ट्यण्	पति....(639)
	कवित्वम्	कवेः कर्म भावो वा	कवि+त्व	पति...(639)
	कविता	कवेः कर्म भावो वा	कवि+तल्	पति....(639)
	वाणिज्यम्	वणिजः कर्म भावो वा	वणिज्+ट्यण्	पति....(639)
	वणिक्त्वम्	वणिजः कर्म भावो वा	वणिज्+त्व	पति....(639)
	वणिक्ता	वणिजः कर्म भावो वा	वणिज्+तल्	पति ...(639)
640	सख्यम्	सख्युः कर्म भावो वा	सखि+य	सखि....(640)
	सखित्वम्	सख्युः कर्म भावो वा	सखि+त्व	सखि....(640)
	सखिता	सख्युः कर्म भावो वा	सखि+तल्	सखि....(640)
	दूत्यम्	दूतस्य कर्म भावो वा	दूत+य	सखि....(640)
	दूतत्वम्	दूतस्य कर्म भावो वा	दूत+त्व	सखि....(640)
	दूतता	दूतस्य कर्म भावो वा	दूत+तल्	सखि....(640)
	वणिज्यम्	वणिजः कर्म भावो वा	वणिज्+य	सखि....(640)
	वणिक्त्वम्	वणिजः कर्म भावो वा	वणिज्+त्व	सखि....(640)
	वणिक्ता	वणिजः कर्म भावो वा	वणिज्+तल्	सखि....(640)
641	यौवनम्	यूनः कर्म भावो वा	युवन्+अण्	युवादे....(641)
	युवत्वम्	यूनः कर्म भावो वा	युवन्+त्व	युवादे....(641)
	युवता	यूनः कर्म भावो वा	युवन्+तल्	युवादे....(641)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	स्थाविरम्	स्थविरस्य कर्म भावो वा	स्थविर+अण्	युवादे....(641)
	स्थविरत्वम्	स्थविरस्य कर्म भावो वा	स्थविर+त्व	युवादे....(641)
	स्थविरता	स्थविरस्य कर्म भावो वा	स्थविर+तल्	युवादे.....(641)
642	मौनम्	मुनेः कर्म भावो वा	मुनि+अण्	लघु.....(642)
	मुनित्वम्	मुनेः कर्म भावो वा	मुनि+त्व	लघु.....(642)
	मुनिता	मुनेः कर्म भावो वा	मुनि+तल्	लघु....(642)
	पाटवम्	पटोः कर्म भावो वा	पटु+अण्	लघु....(642)
	पटुत्वम्	पटोः कर्म भावो वा	पटु+त्व	लघु....(642)
	पटुता	पटोः कर्म भावो वा	पटु+तल्	लघु....(642)
	पैत्रम्	पितुः कर्म भावो वा	पितृ+अण्	लघु....(642)
	पितृत्वम्	पितुः कर्म भावो वा	पितृ+त्व	लघु....(642)
	पितृता	पितुः कर्म भावो वा	पितृ+तल्	लघु....(642)
643	मैत्रावरुणीयम्	मैत्रावरुणस्य कर्म भावो वा	मैत्रावरुण+ईय	ऋत्विग्भ्य..(643)
	मैत्रावरुणत्वम्	मैत्रावरुणस्य कर्म भावो वा	मैत्रावरुण+त्व	ऋत्विग्भ्य....(643)
	मैत्रावरुणता	मैत्रावरुणस्य कर्म भावो वा	मैत्रावरुण+तल्	ऋत्विग्भ्य....(643)
644	ब्रह्मत्वम्	ब्रह्मणः कर्म भावो वा	ब्रह्मन्+त्व	ब्रह्मण....(644)
645	इक्षुशाकटम्	इक्षूणां क्षेत्रम्	इक्षु+शाकट	क्षेत्रे....(645)
	इक्षुशाकिनम्	इक्षूणां क्षेत्रम्	इक्षु+शकिन	क्षेत्रे.....(645)
	शाकशाकटम्	शाकानां क्षेत्रम्	शाक+शाकट	क्षेत्रे.....(645)
	शाकशाकिनम्	शाकानां क्षेत्रम्	शाक+शाकिन	क्षेत्रे....(645)
646	विद्याचञ्चुः	विद्यया वित्तो ज्ञातः	विद्या+चञ्चु	तेन....(646)
	विद्याचणः	विद्यया वित्तो ज्ञातः	विद्या+चण	तेन....(646)
647	अविकटः	अवीनां संघातः	अवि+कट	अवेः ....(647)
	अविपटः	अवीनां विस्तारः	अवि+पट	अवेः ....(647)
648	तारकितं नभः	तारकाः सञ्जाता अस्य	तारका+इत	तदस्य.....(648)
	पुष्पितस्तरुः	पुष्पाणि सञ्जातानि अस्य	पुष्प+इत	तदस्य....(648)
	बुभुक्षितः	बुभुक्षा सञ्जाता अस्य	बुभुक्षा+इत	तदस्य....(648)
	पिपासितः	पिपासा सञ्जाता अस्य	पिपासा+इत	तदस्य....(648)
649	जानुमात्रं जलम्	जानुनी प्रमाणमस्य	जानु+मात्रट्	प्रमाणान्....(649)
	जानुमात्री परिखा	जानुनी प्रमाणमस्याः	जानु+मात्रट्	प्रमाणान्....(649)
	रज्जुमात्री भूमिः	रज्जुः प्रमाणमस्याः	रज्जु+मात्रट्	प्रमाणान्....(649)
650	ऊरुदघ्नं जलम्	ऊरुः प्रमाणमस्य	ऊरु+दघ्नट्	ऊर्ध्वं....(650)
	ऊरुद्वयसं जलम्	ऊरुः प्रमाणमस्य	ऊरु+द्वयसट्	ऊर्ध्वं....(650)
	ऊरुमात्रं जलम्	ऊरुः प्रमाणमस्य	ऊरु+मात्रट्	प्रमाणान्....(649)
	रज्जुमात्री भूमिः	रज्जुः प्रमाणमस्याः	रज्जु+मात्रट्	प्रमाणान्....(649)
651	इयान् पटः	इदं मानमस्य	इदम्+अतु	इदं....(651)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	कियान् पटः	किं मानमस्य	किम्+अतु	इदं....(651)
652	यावान् पटः	यत् मानमस्य	यद्+अतु	यत्तदे....(652)
	तावान् पटः	तत् मानमस्य	तद्+अतु	यत्तदे....(652)
	एतावान् पटः	एतत् मानमस्य	एतद्+अतु	यत्तदे....(652)
653	यति	या संख्या मानमेषाम्	यद्+डति	यत्तत्....(653)
	यावन्तः	या संख्या मानमेषाम्	यद्+अतु	यत्तदे....(652)
	तति	सा संख्या मानमेषाम्	तद्+डति	यत्तत्....(653)
	तावन्तः	सा संख्या मानमेषाम्	तद्+अतु	यत्तदे....(652)
	कति	का संख्या मानमेषाम्	किम्+डति	यत्तत्....(653)
	कियन्तः	का संख्या मानमेषाम्	किम्+अतु	इदं....(651)
655	चतुष्टयः	चत्वारोऽवयवा अस्य सः	चतुर्+तयट्	अवयवा....(654)
	पञ्चतयो धर्मः	पञ्च अवयवा अस्य सः	पञ्चन्+तयट्	अवयवा....(654)
	दशतयो धर्मः	दश अवयवा अस्य सः	चतुर्+तयट्	अवयवा....(654)
	द्वादशतयः सिद्धान्तः	द्वादश अवयवा अस्य सः	दशन्+तयट्	अवयवा.....(654)
656	द्वयं तपः	द्वौ अवयवौ अस्य तत्	द्वि+अयट्	द्वित्रि....(656)
	द्वितयं तपः	द्वौ अवयवौ अस्य तत्	द्वि+तयट्	अवयवा....(654)
	त्रयं जगत्	त्रय अवयवा अस्य तत्	त्रि+अयट्	द्वित्रि....(656)
	त्रितयं जगत्	त्रय अवयवा अस्य तत्	त्रि+तयट्	अवयवा....(654)
657	एकादशः	एकादशानां पूरणः	एकादशन्+डट्	संख्या....(657)
	द्वादशः	द्वादशानां पूरणः	द्वादशन्+डट्	संख्या....(657)
	त्रयोदशी	त्रयोदशानां पूरणी	त्रयोदशन्+डट्	संख्या....(657)
	चतुर्दशी	चतुर्दशानां पूरणी	चतुर्दशन्+डट्	संख्या....(657)
658	विंशतितमः	विंशतेः पूरणः	विंशति+तमट्	विंशत्यादे....(658)
659	विंशः	विंशतेः पूरणः	विंशति+डट्	संख्या...(657)
	त्रिंशत्तमः	त्रिंशतः पूरणः	त्रिंशत्+तमट्	विंशत्यादे....(658)
	त्रिंशः	त्रिंशतः पूरणः	त्रिंशत्+डट्	संख्या....(657)
660	पञ्चमः	पञ्चानां पूरणः	पञ्चन्+मट्	नो....(660)
	सप्तमः	सप्तानां पूरणः	सप्तन्+मट्	नो....(660)
	अष्टमः	अष्टानां पूरणः	अष्टन्+मट्	नो....(660)
	नवमः	नवानां पूरणः	नवन्+मट्	नो....(660)
	दशमः	दशानां पूरणः	दशन्+मट्	नो....(660)
	एकादशः	एकादशानां पूरणः	एकादशन्+डट्	संख्या....(657)
	द्वादशः	द्वादशानां पूरणः	द्वादशन्+डट्	संख्या....(657)
661	द्वितीयः	द्वयोः पूरणः	द्वि+तीय	द्वे.... (661)
662	तृतीयः	त्रयाणां पूरणः	त्रि+तीय	त्रे.... (662)
663	तुर्यः	चतुर्णां पूरणः	चतुर्+य	चतुरो....(663)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	तुरीयः	चतुर्णां पूरणः	चतुर्+ईय	चतुरो....(663)
665	षष्ठः	षण्णां पूरणः	षष्+थट्	षट्.....(664)
	षष्ठी	षण्णां पूरणी	षष्+थट्	षट्.....(664)
	कतिथः	कतीनां पूरणः	कति+थट्	षट्.....(664)
	कतिपयथः	कतिपयानां पूरणः	कतिपय+थट्	षट्.....(664)
	चतुर्थः	चतुर्णां पूरणः	चतुर्+थट्	षट्.....(664)
	चतुर्थी	चतुर्णां पूरणी	चतुर्+थट्	षट्.....(664)
666	गोमान्	गावोऽस्य अस्मिन् वा सन्ति	गो+मतु	तदस्या....(666)
	तरुमान्	तरवो यस्य यस्मिन् वा सन्ति	तरु+मतु	तदस्या....(666)
667	किंवान्	किम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	किम्+वतु	मावर्णा....(667)
	लक्ष्मीवान्	लक्ष्मीः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	लक्ष्मी+वतु	मावर्णा....(667)
	ज्ञानवान्	ज्ञानम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	ज्ञान+वतु	मावर्णा....(667)
	विद्यावान्	विद्या अस्य अस्मिन् वा अस्ति	विद्या+वतु	मावर्णा....(667)
668	यशस्वान्	यशः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	यशस्+वतु	मावर्णा....(667)
	भास्वान्	भाः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	भास्+वतु	मावर्णा....(667)
669	तडित्वान्	तडिद् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	तडित्+वतु	झपात् (669)
	मरुत्वान्	मरुद् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	मरुत्+वतु	झपात् (669)
670	यशस्वी	यशः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	यशस्+विन्	अस्तपो....(670)
	यशस्वान्	यशः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	यशस्+वतु	मावर्णा....(667)
	तपस्वी	तपः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	तपस्+विन्	अस्तपो....(670)
	तपस्वान्	तपः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	तपस्+वतु	मावर्णा....(667)
	मायावी	माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति	माया+विन्	अस्तपो....(670)
	मायिकः	माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति	माया+इक	व्रीह्यादि....(673)
	मायी	माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति	माया+इन्	व्रीह्यादि....(673)
	मायावान्	माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति	माया+वतु	मावर्णा....(667)
	मेधावी	मेधा अस्य अस्मिन् वा अस्ति	मेधा+विन्	अस्तपो....(670)
	मेधावान्	मेधा अस्य अस्मिन् वा अस्ति	मेधा+वतु	मावर्णा....(667)
	स्रग्वी	स्रग् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	स्रज्+विन्	अस्तपो....(670)
	स्रग्वान्	स्रग् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	स्रज्+वतु	मावर्णा....(667)
671	नाविकः	नौः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	नौ+इक	नावादे....(671)
	नौमान्	नौः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	नौ+मतु	तदस्या..(666)
672	शिखी	शिखा अस्य अस्मिन् वा अस्ति	शिखा+इन्	शिखादि....(672)
	शिखावान्	शिखा अस्य अस्मिन् वा अस्ति	शिखा+वतु	मावर्णा....(667)
	माली	माला अस्य अस्मिन् वा अस्ति	माला+इन्	शिखादि....(672)
	मालावान्	माला अस्य अस्मिन् वा अस्ति	माला+वतु	मावर्णा....(667)
673	व्रीहिकः	व्रीहयः अस्य अस्मिन् वा सन्ति	व्रीहि+इक	व्रीह्यादि....(673)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	व्रीही	व्रीहयः अस्य अस्मिन् वा सन्ति	व्रीहि+इन्	व्रीह्यादि....(673)
	व्रीहिमान्	व्रीहयः अस्य अस्मिन् वा सन्ति	व्रीहि+मतु	तदस्या....(666)
	मायिकः	माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति	माया+इक	व्रीह्या....(673)
	मायी	माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति	माया+इन्	व्रीह्या....(673)
	मायावान्	माया अस्य अस्मिन् वा अस्ति	माया+वतु	मावर्णा....(667)
674	दण्डिकः	दण्डः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	दण्ड+इक	अतो....(674)
	दण्डी	दण्डः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	दण्ड+इन्	अतो....(674)
	दण्डवान्	दण्डः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	दण्ड+वतु	मावर्णा....(667)
	छत्रिकः	छत्रम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	छत्र+इक	अतो....(674)
	छत्री	छत्रम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	छत्र+इन्	अतो....(674)
	छत्रवान्	छत्रम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	छत्र+वतु	मावर्णा....(667)
	मालावान्	माला अस्य अस्मिन् वा अस्ति	माला+वतु	मावर्णा....(667)
	खवान्	खम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	ख+वतु	मावर्णा....((667)
675	द्रव्यवान्	द्रव्यम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	द्रव्य+वतु	मावर्णा....(667)
	धान्यवान्	धान्यम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	धान्य+वतु	मावर्णा....(667)
	पुण्यवान्	पुण्यम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	पुण्य+वतु	मावर्णा....(667)
676	वातकी	वातः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	वात+इन्	वाताती...(676)
	अतिसारकी	अतिसारः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	अतिसार+अन्	वाताती...(676)
	पिशाचकी	पिशाचः अस्य अस्मिन् वा अस्ति	पिशाच+इन्	वाताती...(676)
677	सुखी	सुखम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	सुख+इन्	सुखादेः (677)
	दुःखी	दुःखम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	दुःख+इन्	सुखादेः (677)
678	वाचालः	वाग् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	वाच्+आल	वाच.....(678)
	वाचाटः	वाग् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	वाच्+आट	वाच....(678)
679	दन्तुरः	उन्नता दन्ताः सन्ति अस्य	दन्त+डुर	दन्ता....(679)
	दन्तवान्	दन्ताः सन्ति अस्य	दन्त+वतु	मावर्णा....(667)
680	कृपालुः	कृपा अस्य अस्मिन् वा अस्ति	कृपा+आलु	कृपा....(680)
	कृपावान्	कृपा अस्य अस्मिन् वा अस्ति	कृपा+वतु	मावर्णा....(667)
	हृदयालुः	हृदयम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	हृदय+आलु	कृपा....(680)
	हृदयवान्	हृदयम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	हृदय+वतु	मावर्णा....(667)
681	स्वामी	स्वम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	स्व+मिन्	स्वामि....(681)
	स्ववान्	स्वम् अस्य अस्मिन् वा अस्ति	स्व+वतु	मावर्णा....(667)
682	वैनयिकम्	विनय एव	विनय+इकण्	विनया....(682)
	सामायिकम्	समय एव	समय+इकण्	विनया....(682)
683	प्राज्ञः	प्रज्ञ एव	प्रज्ञ+अण्	प्रज्ञा....(683)
	वाणिजः	वणिगेव	वणिज्+अण्	प्रज्ञा....(683)
684	भैषज्यम्	भेषजमेव	भेषज+यण्	भेषजा....(684)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	आनन्त्यम्	अनन्त एव	अनन्त+यण्	भेषजा....(684)
685	चातुर्वर्ण्यम्	चतुर्वर्ण एव	चतुर्वर्ण+ट्यण्	चतुर्वर्णा....(685)
	सामीप्यम्	समीपमेव	समीप+ट्यण्	चतुर्वर्णा....(685)
	माणिक्यम्	मणिक एव	मणिक+ट्यण्	चतुर्वर्णा....(685)
686	देवता	देव एव	देव+तल्	देवा....(686)
687	मृत्तिका	मृदेव	मृद्+तिक	मृद....(687)
688	अकार:	अ एव	अ+कार	वर्णा...(688)
	ककार:	क एव	क+कार	वर्णा....(688)
	ओङ्कार:	ओमेव	ओम्+कार	वर्णा....(688)
	नमस्कार:	नम एव	नमस्+कार	वर्णा....(688)
	चकार:	च एव	च+कार	वर्णा....(688)
689	रेफ:	र एव	र+एफ	रादे...(689)
	रकार:	र एव	र+कार	वर्णा....(688)
690	नामधेयम्	नाम एव	नामन्+धेय	नाम....(690)
	रूपधेयम्	रूपम् एव	रूप+धेय	नाम....(690)
	भागधेयम्	भाग एव	भाग+धेय	नाम....(690)
691	मर्त्य:	मर्त एव	मर्त+य	मर्ता....(691)
	सूर्य:	सूर एव	सूर+य	मर्ता....(691)
692	नवीनम्	नवमेव	नव+ईन	नवा....(692)
	नूतनम्	नवमेव	नव+तन	नवा....(692)
	नूत्नम्	नवमेव	नव+त्न	नवा....(692)
	नव्यम्	नवमेव	नव+य	नवा....(692)
693	पटुजातीय:	पटु: प्रकारोऽस्य	पटु+जातीय	प्रकारे....(693)
	मृदुजातीय:	मृदु: प्रकारोऽस्य	मृदु+जातीय	प्रकारे....(693)
694	पटुजातीया	पट्वी प्रकारोऽस्या:	पट्वी+जातीय	प्रकारे....(693)
695	आढ्यचर:	भूतपूर्व आढ्य:	आढ्य+चरट्	भूतपूर्वे....(695)
	आढ्यचरी	भूतपूर्वा आढ्या	आढ्या+चरट्	भूतपूर्वे....(695)
	ग्रामत:	ग्रामात्	ग्राम+तस्	अहीय....(696)
696	चोरत:	चोरात्	चोर+तस्	अहीय....(696)
698	कुत:	कस्मात्	किम्+तस्	किम.... (697)
	सर्वत:	सर्वस्मात्	सर्व+तस्	किम.... (697)
	विश्वत:	विश्वस्मात्	विश्व+तस्	किम.... (697)
699	तत:	तस्मात्	तद्+तस्	किम.... (697)
	यत:	यस्मात्	यद्+तस्	किम.... (697)
	इत:	अस्मात्	इदम्+तस्	किम.... (697)
	अत:	एतस्मात्	एतद्+तस्	किम.... (697)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	बहुतः	बहुभ्यः	बहु+तस्	किम.... (697)
701	कुत्र	कस्मिन्	किम्+त्र	सप्तम्याः (700)
	क्व	कस्मिन्	किम्+त्र	सप्तम्याः (700)
	कुह	कस्मिन्	किम्+त्र	सप्तम्याः (700)
	सर्वत्र	सर्वस्मिन्	सर्व+त्र	सप्तम्याः (700)
	तत्र	तस्मिन्	तद्+त्र	सप्तम्याः (700)
	यत्र	यस्मिन्	यद्+त्र	सप्तम्याः (700)
	अत्र	एतस्मिन्	एतद्+त्र	सप्तम्याः (700)
	इह	अस्मिन्	इदम्+त्र	सप्तम्याः (700)
702	कदा	कस्मिन् काले	किम्+दा	किमन्यैक....(702)
	अन्यदा	अन्यस्मिन् काले	अन्य+दा	किमन्यैक....(702)
	एकदा	एकस्मिन् काले	एक+दा	किमन्यैक....(702)
	सर्वदा	सर्वस्मिन् काले	सर्व+दा	किमन्यैक....(702)
	यदा	यस्मिन् काले	यद्+दा	किमन्यैक....(702)
	तदा	तस्मिन् काले	तद्+दा	किमन्यैक....(702)
703	सदा	सर्वस्मिन् काले	सर्व+दा	सदा...(703)
	अधुना	अस्मिन् काले	इदम्+धुना	सदा...(703)
	इदानीम्	अस्मिन् काले	इदम्+दानीम्	सदा...(703)
	एतर्हि	अस्मिन् काले	इदम्+र्हि	सदा...(703)
	तदानीम्	तस्मिन् काले	तद्+दानीम्	सदा...(703)
704	सर्वथा	सर्वेण प्रकारेण	सर्व+था	प्रकारे...(704)
	यथा	येन प्रकारेण	यद्+था	प्रकारे...(704)
	तथा	तेन प्रकारेण	तद्+था	प्रकारे...(704)
	अन्यथा	अन्येन प्रकारेण	अन्य+था	प्रकारे...(704)
705	कथम्	केन प्रकारेण	किम्+था	कथ....(705)
	इत्थम्	अनेन प्रकारेण	इदम्+थम्	कथ....(705)
	इत्थम्	एतेन प्रकारेण	एतद्+थम्	कथ....(705)
706	एकधा	एकेन प्रकारेण	एक+धा	संख्याया....(706)
	द्विधा	द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम्	द्वि+धा	संख्याया....(706)
	त्रिधा	त्रिभिः प्रकारैः	त्रि+धा	संख्याया....(706)
	पञ्चधा	पञ्चभिः प्रकारैः	पञ्चन्+धा	संख्याया....(706)
	षोढा	षड्भिः प्रकारैः	षष्+धा	संख्याया....(706)
707	कतिधा	कतिभिः प्रकारैः	कति+धा	संख्याया....(706)
	कियद्धा	कियद्भिः प्रकारैः	कियतु+धा	संख्याया....(706)
	यतिधा	यतिभिः प्रकारैः	यति+धा	संख्याया....(706)
	यावद्धा	यावद्भिः प्रकारैः	यावतु+धा	संख्याया....(706)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

708	पञ्चधा	एकं राशिं पञ्च कुरु	पञ्चन्+धा	विचाले....(708)
	पञ्चधा	पञ्चभिः प्रकारैः	पञ्चन्+धा	विचाले...(708)
709	ऐकध्यम्	एकेन प्रकारेण	एक+ध्यमुञ्	वैकाद्.... (709)
	एकधा	एकेन प्रकारेण	एक+धा	विचाले... (708)
	ऐकध्यम्	अनेकमेकं करोति	एक+ध्यमुञ्	वैकाद्.... (709)
	एकधा	अनेकमेकं करोति	एक+धा	विचाले... (708)
710	द्वैधम्	द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम्	द्वि+धमुञ्	द्वि...... (710)
	द्वेधा	द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम्	द्वि+एधा	द्वि.... (710)
	द्विधा	द्वाभ्यां प्रकाराभ्याम्	द्वि+धा	विचाले... (708)
	द्वैधम्	एकं राशिं द्वौ करोति	द्वि+धमुञ्	द्वि.... (710)
	द्वेधा	एकं राशिं द्वौ करोति	द्वि+एधा	द्वि.... (710)
	द्विधा	एकं राशिं द्वौ करोति	द्वि+धा	विचाले... (708)
	त्रैधम्	त्रिभिः प्रकारैः	त्रि+धमुञ्	द्वि.... (710)
	त्रेधा	त्रिभिः प्रकारैः	त्रि+एधा	द्वि.... (710)
	त्रिधा	त्रिभिः प्रकारैः	त्रि+धा	विचाले... (708)
	त्रैधम्	एकं राशिं त्रीन् करोति	त्रि+धमुञ्	द्वि.... (710)
	त्रेधा	एकं राशिं त्रीन् करोति	त्रि+एधा	द्वि.... (710)
	त्रिधा	एकं राशिं त्रीन् करोति	त्रि+धा	विचाले... (708)
711	पञ्चकृत्वः	पञ्च वारा अस्य/पञ्चवारम्	पञ्चन्+कृत्वस्	वारे.... (711)
	षट्कृत्वः	षड् वारा अस्य/षड्वारम्	षष्+कृत्वस्	वारे.... (711)
	सप्तकृत्वः	सप्त वारा अस्य/सप्तवारम्	सप्तन्+कृत्वस्	वारे.... (711)
712	द्विर्भुङ्क्ते	द्वौ वारौ अस्य/द्विवारम्	द्वि+सुच्	द्वि... (712)
	त्रिर्भुङ्क्ते	त्रयः वारा अस्य/त्रिवारम्	त्रि+सुच्	द्वि... (712)
	चतुर्भुङ्क्ते	चत्वारो वारा अस्य/चतुर्वारम्	चतुर्+सुच्	द्वि... (712)
713	सकृद् भुङ्क्ते	एकः वारः अस्य/एकवारम्	एक+सुच्	एकात्... (713)
714	शुक्लतमः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन शुक्लः	शुक्ल+तम	प्रकृष्टे... (714)
	साधकतमः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन साधकः	साधक+तम	प्रकृष्टे... (714)
	कारकतमः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन कारकः	कारक+तम	प्रकृष्टे... (714)
715	पटुतरः	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन पटुः	पटु+तर	द्वयो... (715)
	पाचकतरः	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन पाचकः	पाचक+तर	द्वयो... (715)
	आढ्यतराः	सांकाश्यकेभ्यः पाटलिपुत्रकाः प्रकृष्टाः/अतिशयेन आढ्याः	आढ्य+तर	द्वयो... (715)
	अभिरूपतराः	सांकाश्यकेभ्यः पाटलिपुत्रकाः प्रकृष्टाः/अतिशयेन अभिरूपाः	अभिरूप+तर	द्वयो... (715)
716	पचतितमाम्	अयमेषां प्रकृष्टं/अतिशयेन पचति	पचतितम+आम्	त्यादि......(716)
	पचतितराम्	अयमनयोः प्रकृष्टं/अतिशयेन पचति	पचतितर+आम्	त्यादि.....(716)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	किन्तमाम् (पचति)	इदमेषां प्रकृष्टं/अतिशयेन किम् (पचति)	किन्तम+आम्	त्यादि.......(716)
	किन्तराम् (पचति)	इदमनयोः प्रकृष्टं/अतिशयेन किम् (पचति)	किन्तर+आम्	त्यादि......(716)
	अग्रेतमाम्	अयमेषां प्रकृष्टं/अतिशयेन अग्रे	अग्रेतम+आम्	त्यादि......(716)
	अग्रेतराम्	अयमनयोः प्रकृष्टं/अतिशयेन अग्रे	अग्रेतर+आम्	त्यादि......(716)
	उच्चैस्तमाम्	अयमेषां प्रकृष्टं/अतिशयेन उच्चैः	उच्चैस्तम+आम्	त्यादि......(716)
	उच्चैस्तराम्	अयमनयोः प्रकृष्टं/अतिशयेन उच्चैः	उच्चैस्तर+आम्	त्यादि......(716)
	शीघ्रतरं गच्छति	अयमनयोः प्रकृष्टं/अतिशयेन शीघ्रं गच्छति	शीघ्र+तर	द्वयो.........(715)
	किन्तरं दारु	इदमनयोः प्रकृष्टं/अतिशयेन किम्	किम्+तर	द्वयो.........(715)
717	पटिष्ठः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन पटुः	पटु+इष्ठ	गुणाङ्गा...(717)
	पटुतमः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन पटुः	पटु+तम	प्रकृष्टे.....(714)
	पटीयान्	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन पटुः	पटु+ईयसु	गुणाङ्गा...(717)
	पटुतरः	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन पटुः	पटु+तर	द्वयो..... (715)
718	भूयिष्ठः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन बहुः	बहु+इष्ठ	गुणाङ्गा...(717)
	बहुतमः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन बहुः	बहु+तम	प्रकृष्टे.....(714)
	भूयान्	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन बहुः	बहु+ईयसु	गुणाङ्गा...(717)
	बहुतरः	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन बहुः	बहु+तर	द्वयो......(715)
719	श्रेष्ठः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन प्रशस्यः	प्रशस्य+इष्ठ	गुणाङ्गा...(717)
	प्रशस्यतमः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन प्रशस्यः	प्रशस्य+तम	प्रकृष्टे.....(714)
	श्रेयान्	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन प्रशस्यः	प्रशस्य+ईयसु	गुणाङ्गा...(717)
	प्रशस्यतरः	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन प्रशस्यः	प्रशस्य+तर	द्वयो.......(715)
720	ज्येष्ठः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन प्रशस्यः	प्रशस्य+इष्ठ	गुणाङ्गा...(717)
	प्रशस्यतमः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन प्रशस्यः	प्रशस्य+तम	प्रकृष्टे.....(714)
	ज्येष्ठः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन वृद्धः	वृद्ध+इष्ठ	गुणाङ्गा...(717)
	वृद्धतमः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन वृद्धः	वृद्ध+तम	प्रकृष्टे.....(714)
721	ज्यायान्	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन प्रशस्यः	प्रशस्य+ईयसु	गुणाङ्गा...(717)
	प्रशस्यतरः	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन प्रशस्यः	प्रशस्य+तर	द्वयो.......(715)
	ज्यायान्	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन वृद्धः	वृद्ध+ईयसु	गुणाङ्गा...(717)
	वृद्धतरः	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन वृद्धः	वृद्ध+तर	द्वयो.......(715)
	ज्यायसी	इयमनयोः प्रकृष्टा/अतिशयेन प्रशस्या	प्रशस्या+ईयसु	गुणाङ्गा...(717)
	प्रशस्यतरा	इयमनयोः प्रकृष्टा/अतिशयेन प्रशस्या	प्रशस्या+तरा	द्वयो...... (715)
	ज्यायसी	इयमनयोः प्रकृष्टा/अतिशयेन वृद्धा	वृद्धा+ईयसु	गुणाङ्गा...(717)
	वृद्धतरा	इयमनयोः प्रकृष्टा/अतिशयेन वृद्धा	वृद्धा+तरा	द्वयो...... (715)
722	कनिष्ठः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन युवा	युवन्+इष्ठ	गुणाङ्गा...(717)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

723	यविष्ठः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन युवा	युवन्+इष्ठ	गुणाङ्गा...(717)
	युवतमः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन युवा	युवन्+तम	प्रकृष्टे.... (714)
	कनिष्ठः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन अल्पः	अल्प+इष्ठ	गुणाङ्गा...(717)
	अल्पिष्ठः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन अल्पः	अल्प+इष्ठ	गुणाङ्गा...(717)
	अल्पतमः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन अल्पः	अल्प+तम	प्रकृष्टे.... (714)
	कनीयान्	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन युवा	युवन्+ईयसु	गुणाङ्गा...(717)
	यवीयान्	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन युवा	युवन्+ईयसु	गुणाङ्गा...(717)
	युवतरः	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन युवा	युवन्+तर	द्वयो..... (715)
	कनीयान्	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन अल्पः	अल्प+ईयसु	गुणाङ्गा..(715)
	अल्पीयान्	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन अल्पः	अल्प+ईयसु	गुणाङ्गा..(715)
	अल्पतरः	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन अल्पः	अल्प+तर	द्वयो...... (715)
	गरिष्ठः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन गुरुः	गुरु+इष्ठ	गुणाङ्गा....(717)
	गुरुतमः	अयमेषां प्रकृष्टः/अतिशयेन गुरुः	गुरु+तम	प्रकृष्टे.... (714)
	गरीयान्	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन गुरुः	गुरु+ईयसु	गुणाङ्गा...(717)
	गुरुतरः	अयमनयोः प्रकृष्टः/अतिशयेन गुरुः	गुरु+तर	द्वयो........(715)
724	पचतिरूपम्	प्रशस्तं पचति	पचति+रूप	त्यादेश्च.. (724)
	पश्यतिरूपम्	प्रशस्तं पश्यति	पश्यति+रूप	त्यादेश्च.. (724)
	वैयाकरणरूपः	प्रशस्तो वैयाकरणः	वैयाकरण+रूप	त्यादेश्च.. (724)
	नैयायिकरूपः	प्रशस्तो नैयायिकः	नैयायिक+रूप	त्यादेश्च.. (724)
725	पचतिकल्पम्	ईषदसमाप्तं पचति	पचति+कल्प	अतमादे.. (725)
	पचतिदेश्यम्	ईषदसमाप्तं पचति	पचति+देश्य	अतमादे.. (725)
	पचतिदेशीयम्	ईषदसमाप्तं पचति	पचति+देशीय	अतमादे.. (725)
	पटुकल्पः	ईषदसमाप्तः पटुः	पटु+कल्प	अतमादे.. (725)
	पटुदेश्यः	ईषदसमाप्तः पटुः	पटु+देश्य	अतमादे.. (725)
	पटुदेशीयः	ईषदसमाप्तः पटुः	पटु+देशीय	अतमादे.. (725)
726	बहुपटुः	ईषदसमाप्तः पटुः	पटु+बहु	नाम्नः.... (726)
	पटुकल्पः	ईषदसमाप्तः पटुः	पटु+कल्प	नाम्नः.... (726)
	पटुदेश्यः	ईषदसमाप्तः पटुः	पटु+देश्य	नाम्नः.... (726)
	पटुदेशीयः	ईषदसमाप्तः पटुः	पटु+देशीय	नाम्नः.... (726)
	बहुभुक्तम्	ईषदसमाप्तं भुक्तम्	भुक्त+बहु	नाम्न..... (726)
	भुक्तकल्पम्	ईषदसमाप्तं भुक्तम्	भुक्त+कल्प	नाम्न..... (726)
	भुक्तदेश्यम्	ईषदसमाप्तं भुक्तम्	भुक्त+देश्य	नाम्न..... (726)
	भुक्तदेशीयम्	ईषदसमाप्तं भुक्तम्	भुक्त+देशीय	नाम्न..... (726)
727	वैयाकरणपाशः	कुत्सितो वैयाकरणः	वैयाकरण+पाश	पाशः.... (728)
	याज्ञिकपाशः	कुत्सितो याज्ञिकः	याज्ञिक+पाश	पाशः...... (728)
728	बहुशो ददाति	बहुभ्यो ददाति	बहु+शस्	बह्वल्पार्थात्..(728)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	बहुशो वसति	बहुषु वसति	बहु+शस्	बह्वल्पार्थात्..(728)
	अल्पशो ददाति	अल्पेभ्यो ददाति	अल्प+शस्	बह्वल्पार्थात्..(728)
	अल्पशो वसति	अल्पेषु वसति	अल्प+शस्	बह्वल्पार्थात्..(728)
729	अन्नमयम्	प्रचुरम् अन्नम्	अन्न+मयट्	प्रकृते....(729)
	घृतमयम्	प्रधानं घृतम्	घृत+मयट्	प्रकृते....(729)
	दधिमयम्	प्रधानं दधि	दधि+मयट्	प्रकृते....(729)
730	अन्नमयं भोजनम्	अन्नं प्रकृतमस्मिन्	अन्न+मयट्	अस्मिन् (730)
	अपूपमयं पर्व	अपूपः प्रकृतमस्मिन्	अपूप+मयट्	अस्मिन् (730)
733	शुक्लीकरोति पटम्	अशुक्लं शुक्लं करोति	शुक्ल+च्वि	अभूत....(731)
	शुक्लीभवति(वस्त्रम्)	अशुक्लं शुक्लं भवति	शुक्ल+च्वि	अभूत....(731)
	शुक्लीस्यात् वस्त्रम्	अशुक्लं शुक्लं स्यात्	शुक्ल+च्वि	अभूत....(731)
734	शुचीकरोति (पटम्)	अशुचिं शुचिं करोति	शुचि+च्वि	अभूत....(731)
	शुचीभवति (पटः)	अशुचिः शुचिः भवति	शुचि+च्वि	अभूत....(731)
	पटूकरोति	अपटुं पटुं करोति	पटु+च्वि	अभूत....(731)
	पटूभवति	अपटुः पटुः भवति	पटु+च्वि	अभूत....(731)
736	अग्निसात् करोति काष्ठम्	सर्वं काष्ठमनग्निमग्निं करोति	अग्नि+सात्	कार्त्स्न्ये...(735)
	अग्नीकरोति काष्ठम्	सर्वं काष्ठमनग्निमग्निं करोति	अग्नि+च्वि	अभूत....(731)
	अग्निसाद्भवति	सर्वं काष्ठमनग्निः अग्निः भवति	अग्नि+सात्	कार्त्स्न्ये...(735)
	अग्नीभवति काष्ठम्	सर्वं काष्ठमनग्निः अग्निः भवति	अग्नि+च्वि	अभूत....(731)
	अग्निसात्स्यात्	सर्वं काष्ठमनग्निः अग्निः स्यात्	अग्नि+सात्	कार्त्स्न्ये...(735)
	अग्नीस्यात् काष्ठम्	सर्वं काष्ठमनग्निः अग्निः स्यात्	अग्नि+च्वि	अभूत.....(731)
738	अश्वकः	कुत्सितोऽल्पोऽज्ञातो वाऽश्वः	अश्व+कच्	कुत्सिता....(738)
	घृतकम्	कुत्सितमल्पमज्ञातं वा घृतम्	घृत+कच्	कुत्सिता....(738)
	तैलकम्	कुत्सितमल्पमज्ञातं वा तैलम्	तैल+कच्	कुत्सिता....(738)
739	पटकः	ह्रस्वः पटः	पट+कच्	ह्रस्वे (739)
	वृक्षकः	ह्रस्वः वृक्षः	वृक्ष+कच्	ह्रस्वे (739)
740	पचतकि	कुत्सितमल्पमज्ञातं वा पचति	पचति+अक्	त्यादि....(740)
	सर्वकः	कुत्सितोऽल्पोऽज्ञातो वा सर्वः	सर्व+अक्	त्यादि....(740)
	सर्वकः	सर्व एव	सर्व+अक्	त्यादि...(740)
	विश्वकः विश्वकः	कुत्सितोऽल्पोऽज्ञातो वा विश्वः विश्व एव	विश्व+अक् विश्व+अक्	त्यादि...(740) त्यादि....(740)
741	त्वयका त्वयका	कुत्सितेन अल्पेन अज्ञातेन वा त्वया त्वया एव	त्वया+अक् त्वया+अक्	युष्मद....(741) युष्मद...(741)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	मयका मयका	कुत्सितेन अल्पेन अज्ञातेन वा मया मया एव	मया+अक् मया+अक्	युष्मद....(741) युष्मद...(741)
	युष्माककम् युष्माककम्	कुत्सितानाम् अल्पानाम् अज्ञातानां वा युष्माकम् युष्माकम् एव	युष्माकम्+अक् युष्माकम्+अक्	युष्मद....(741) युष्मद....(741)
	अस्माककम् अस्माककम्	कुत्सितानाम् अल्पानाम् अज्ञातानां वा अस्माकम् अस्माकम् एव	अस्माकम्+अक् अस्माकम्+अक्	युष्मद...(741) युष्मद....(741)
	युवकयोः	कुत्सितयोः अल्पयोः अज्ञातयोः वा युवयोः	युष्मद्+अक्	त्यादि....(740)
	युवकयोः	युवयोः एव	युष्मद्+अक्	त्यादि...(740)
	युष्मकासु	कुत्सितेषु अल्पेषु अज्ञातेषु वा युष्मासु	युष्मद्+अक्	त्यादि....(740)
	युष्मकासु	युष्मासु एव	युष्मद्+अक्	त्यादि....(740)
	युवकाभ्याम्	कुत्सिताभ्याम् अल्पाभ्याम् अज्ञाताभ्यां वा युवाभ्याम्	युष्मद्+अक्	त्यादि....(740)
	युवकाभ्याम्	युवाभ्याम् एव	युष्मद्+अक्	त्यादि....(740)
742	एकतरो भवतोः पटुः	एकः भवतोः पटुः	एक+डतर	वैकाद्....(742)
	एककः भवतोः पटुः	एकः भवतोः पटुः	एकः+अक्	त्यादि....(740)
743	यतरो भवतोः पटुः	यः भवतोः पटुः	यद्+डतर	यत्तत्...... (743)
	ततरः आगच्छतु	सः आगच्छतु	तद्+डतर	यत्तत्....... (743)
	कतरोभवतोः पटुः	कः भवतोः पटुः	किम्+डतर	यत्तत्...... (743)
	अन्यतरो भवतोःपटुः	अन्यः भवतोः पटुः	अन्य+डतर	यत्तत्.......(744)
744	यतमो भवतां पटुः	यः भवतां पटुः	यद्+डतम	बहूनां.......(744)
	ततमः आगच्छतु	सः आगच्छतु	तद्+डतम	बहूनां.... (744)
	यतरो भवतां पटुः	यः भवतां पटुः	यद्+डतर	बहूनां..... (744)
	ततरः आगच्छतु	सः आगच्छतु	तद्+डतर	बहूनां.... (744)
	यकः भवतां पटुः	यः भवतां पटुः	यः+अक्	त्यादि... (740)
	सकः	सः आगच्छतु	सः+अक्	त्यादि... (740)
	कतमः	कः भवताम्	किम्+डतम	बहूनां.... (744)
	कतरः	कः भवताम्	किम्+डतर	बहूनां.... (744)
	ककः	कः भवताम्	कः+अक्	त्यादि... (740)
	अन्यतमः	अन्यः भवताम्	अन्य+डतम	बहूनां.... (744)
	अन्यतरः	अन्यः भवताम्	अन्य+डतर	बहूनां..... (744)
	अन्यकः	अन्यः भवताम्	अन्यः+अक्	त्यादि...... (740)
745	यावकः	याव एव	याव+क	यावादिभ्यः....(745)

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

	मणिकः	मणिः एव	मणि+क	यावादिभ्यः....(745)
	भिक्षुकः	भिक्षुः एव	भिक्षु+क	यावादिभ्यः....(745)

इति तद्धिताः

तद्धित प्रकरण समाप्त हुआ।

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कालु कौमुदी के तद्धित प्रकरणगत पदों की अकारादिवर्णानुक्रमणिका

अ

अंगुलीयः 599
अकारः 688
अग्निसात् करोति 736
अग्निसात् स्यात् 736
अग्निसाद् भवति
अग्नीकरोति 736
अग्नीभवति 736
अग्नीस्यात् 736
अग्रिमः 587
अग्रेतमाम् 716
अग्रेतराम् 716
अजथ्यम् 625, 626
अतः 699
अतिसारकी 676
अत्र 701
अधिपतिता 639
अधिपतित्वम् 639
अधिराजता 639
अधिराजत्वम् 639
अधुना 703
अन्तमः 585
अन्तिमः 587
अन्त्यः 595
अन्नमयम् 729
अन्नमयं भोजनम् 730
अन्यकः 744
अन्यतमः 744
अन्यतरः 743, 744
अन्यथा 704
अन्यदा 702
अन्यदीयः 582
अपूपमयं पर्व 730
अभिरूपतरा: 715
अमात्यः 573
अल्पतमः 723
अल्पतरः 723
अल्पशो ददाति 728
अल्पशो वसति 728
अल्पिष्ठः 723
अल्पीयान् 723
अविकटः 647
अविथ्यम् 625
अविपटः 647
अश्वकः 738
अश्ववत् 628
अश्विकः 612
अश्वीयः 551
अष्टमः
अस्मदीयम् 583
अस्माककम् 471

आ

आक्षिकः 607
आक्षिकम् 607
आग्नेयः 539, 559, 591
आग्नेयम् 605
आचार्यिकः 619
आजकम् 547
आढ्यचरः 695
आढ्यचरी 695
आढ्यतराः 715
आदिमः 585
आद्यः 595
आधर्मिकः 614
आधिपत्यम् 639
आधिराज्यम् 639
आनन्त्यम् 684
आपूपिकम् 548
आरण्याः 575
आश्वम् 551
आस्माकम् 583
आस्माकीनम् 583
आहेयः 536
आहेयम् 597

इ

इक्षुशाकटम् 645
इक्षुशाकिनम् 645
इतः 699
इत्थम् 705
इदानीम् 703
इयान् 651
इह 701
इहत्यः 573

उ

उच्चैस्तमाम् 716
उच्चैस्तराम् 716
उषस्यम् 561

ऊ

ऊरुता 636
ऊरुत्वम् 636
ऊरुदघ्नम् 650
ऊरुद्वयसम् 650
ऊरुमात्रम् 650

ऋ

ऋतव्यम् 560

ए

एककः 742
एकतरः 642
एकदा 702
एकधा 706
एकादशः 657, 660
एतर्हि 703
एतावान् 652

ऐ

ऐकध्यम् 709
ऐष्टकः 604

ओ

ओङ्कारः 688
ओष्ठ्यः 596

औ

औक्षकम् 546
औडुपिकः 609
औरभ्रकम् 546
औष्ट्रम् 546

क

ककः 744
ककारः 688
कतमः 744
कतरः 743, 744
कति 653
कतिथः 665
कतिधा 707
कतिपयथः 665
कथम् 705
कदा 702
कनिष्ठः 722, 723
कनीयान् 723
कर्ण्यः 596
कर्ण्यम् 62
कर्मण्यः 620

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

कवर्गीयः 600
कविता 639
कवित्वम् 639
काकम् 544
काणेयः 528
काणेरः 528
काथिकः 622
कानीनः 522
कारकतमः 714
कारकता 631
कारकत्वम् 631
कालशेयम् 597
कालेयः 539, 591
कावचिकम् 548
काम्बलः 565
कार्ष्ण्यम् 638
काव्यम् 639
काश्यपः 523
किंवान् 667
किन्तमाम् 716
किन्तराम् 716
किन्तरं दारु 716
कियद्धा 707
कियन्तः 653
कियान् 651
कुतः 698
कुतस्त्यः 573
कुत्र 701
कुत्रत्यः 573
कुलीनः 537
कुह 701
कृपालुः 680
कृपावान् 680
कृष्णता 638
कृष्णत्वम् 638
कृष्णिमा 638
कैदारिकम् 548
कौक्षेयः 597
कौङ्कुमम् 543
कौद्दालिकः 607
कौसुम्भम् 543
क्व 701
क्वत्यः 573
क्षत्रियः 534
क्षात्रिः 534

ख
खवान् 674

ग
गजता 552
गरिमा 636
गरिष्ठः 723
गरीयान् 723
गर्गाः 525
गव्यः 542
गव्यम् 544, 605, 623
गहीयः 582
गाणधरम् 503
गार्गकम् 546
गार्गिः 526
गार्ग्यः 524
गार्ग्यः स्त्रियः 525
गुरुतमः 723
गुरुतरः 723
गुरुता 636
गुरुत्वम् 636
गोता 631
गोत्वम् 631
गोमयम् 556
गोमान् 666
गौपवनाः 525
गौपुच्छिकः 609
गौसेयः 521
गौरवम् 636
ग्रामतः 695
ग्रामता 552
ग्राम्यः 571, 591
ग्रीष्मः 589

घ
घृतकम् 738
घृतमयम् 729

च
चकारः 688
चतुर्थः 665
चतुर्थी 665
चतुर्दशी 657
चतुर्भुङ्क्ते 712
चतुष्टयः 655
चातुर्वर्ण्यम् 685
चामरिकः 618
चारायणः 526
चार्मणः 566
चैत्रवत् 630
चैत्रीयः 579
चोरतः 696

छ
छत्रवान् 674
छत्री 674
छात्रिकः 618, 674

ज
जनकीयः 578
जनता 552
जानुमात्रम् 649
जानुमात्री 649
जिह्वामूलीयः 599
जैनः 559
ज्ञानवान् 567
ज्यायसी 721
ज्यायान् 721
ज्येष्ठः 720

त
तडित्वान् 669
ततः 699
ततमः 744
ततरः 743, 744
ततस्त्यः 573
तति 653
तत्र 701
तथा 704
तदा 702
तदानीम् 703
तदीयः 581
तपस्वान् 670
तपस्वी 670
तरुमान् 666
तारकितं नभः 648
तावकम् 584
तावकीनम् 584
तावन्तः 653
तावान् 652
तिलपिञ्जः 558
तिलपेजः 558
तुरीयः 663
तुर्यः 663
तृतीयः 662
तृप्रता 636
तृप्रत्वम् 636
तैलकम् 738
तैषः 590
त्रपिमा 636
त्रयम् 656
त्रयोदशी 657
त्रिंशः 659
त्रिंशत्तमः 659
त्रितयम् 656
त्रिधा 706, 710
त्रिर्भुङ्क्ते 712
त्रेधा 710
त्रैधम् 710
त्वदीयम् 584
त्वयका 741

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

द

दण्डवान् 674
दण्डिक: 674
दण्डिता 631
दण्डित्वम् 631
दण्डी 674
दधिमयम् 729
दन्तवान् 679
दन्तुर: 679
दन्त्य: 596
दशतय: 655
दशम: 660
दाक्षि: 536
दाक्षिणात्य: 574
दात्तेय: 527
दाधिकम् 608
दार्ढ्यम् 638
दार्तेयम् 597
दाशरथि: 519
दासेय: 528
दिश्य: 595
दीर्घता 636
दीर्घत्वम् 636
दु:खी 677
दूतता 640
दूतत्वम् 640
दूत्यम् 640
दृढता 638
दृढत्वम् 638
देवकीय: 582
देवता 686
देववत् 628
दैवम् 605
दैवसिक: 588
दौष्कुलीन: 538
दौष्कुलेय: 538
द्रढिमा 638
द्रव्यमान् 675
द्राघिमा 636
द्वयम् 656
द्वादश: 657, 660
द्वादशतय: 655
द्वितयम् 656
द्वितीय: 661
द्विधा 706, 710
द्विर्भुङ्क्ते 712
द्वेधा 710
द्वैधम् 710
धान्यवान् 675
धार्मिक: 614
धैनुकम् 550

न

नमस्कार: 688
नरपतिता 639
नरपतित्वम् 639
नवम: 660
नवीनम् 692
नव्यम् 692
नाकुल: 521
नाडायन: 526
नाडि: 526
नादेय: 572
नाभेय: 536
नामधेयम् 690
नारपत्यम् 639
नाविक: 610, 671
नूतनम् 692
नूत्नम् 692
नैकटिक: 615
नैमित्तिक: 564
नैयायिक: 564
नैयायिकरूप: 724
नौमान् 671

प

पचतिकल्पम् 725
पचतकि 740
पचतितमाम् 716
पचतितराम् 716
पचतिदेशीयम् 725
पचतिदेश्यम् 725
पचतिरूपम् 724
पञ्चकपाल: 567
पञ्चकृत्व: 711
पञ्चतय: 655
पञ्चधा 706, 708
पञ्चम: 660
पटक: 738
पटिष्ठ: 717
पटीयान् 717
पटुकल्प: 725, 726
पटुजातीय: 693
पटुजातीया 694
पटुतर: 715, 717
पटुतम: 717
पटुता 642
पटुत्वम् 642
पटुदेशीय: 725, 726
पटूकरोति 734
पटूभवति 734
परकीय: 578
पर्पिक: 612
पर्पिकी 612
पवर्गीय: 600
पश्चिम: 587
पश्यतिरूपम् 726
पाक्षिक: 613
पाचकतर: 715
पाटवम् 642
पार्थवम् 634
पार्षद: 621
पार्षद्य: 621
पाश्चात्त्य: 574
पितामह: 555
पितामही 555
पितृता 642
पितृत्वम् 642
पितृव्य: 554
पित्रीय: 623
पित्र्यम् 561
पिपासित: 648
पिशाचकी 676
पुण्यवान् 675
पुष्पितस्तरु: 648
पृथुता 634
पृथुत्वम् 634
पैत्रम् 642
पौंस्न: 540, 591
पौंस्नम् 544, 605
पौरस्त्य: 574
पौरुषेय: 557
पौरुषेय: ग्रन्थ: 557
पौरुषेयं पथ्यम् 557
पौष: 590
प्रथिमा 634
प्रशस्यतम: 719, 720
प्रशस्यतर: 719, 721
प्रशस्यतरा 721
प्राज्ञ: 683
प्रास्थिकम् 617
प्रियता 636
प्रियत्वम् 636
प्रेमा 636
प्रौष्ठ: 520

ब

बंहिमा 636
बन्धुता 552
बहुत: 699
बहुतम: 718
बहुतर: 718
बहुता 637
बहुत्वम् 637
बहुपटु: 726
बहुभुक्तम् 726

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

बहुलता 636
बहुलत्वम् 636
बहुशो ददाति 728
बहुशो वसति 728
बाकम् 544
बाहवम् 637
बाहुकः 610
बिदाः 525
बुभुक्षितः 648
बैदः 523
बैदिः 526
बौद्धः 559
ब्रह्मत्वम् 644

भ

भवदीयम् 577
भागधेयम् 690
भाद्रः 502
भानवः 517
भावत्कम् 577
भास्वान् 668
भिक्षुकः 745
भुक्तकल्पम् 726
भुक्तदेशीयम् 726
भुक्तदेश्यम् 726
भूमा 637
भूयान् 718
भूयिष्ठः 718
भैक्षवम् 605
भैषज्यम् 684
भ्रातृव्यः 530
भ्रात्रीयः 530

म

मणिकः 745
मत्वर्थीयः 599
मथुरावत् 629
मदीयम् 584
मध्यमः 585
मध्यमीयः 598
मध्यीयः 599
मनुष्यः 535
मयका 741
मरुत्वान् 669
मर्त्यः 691
माणिक्यम् 685
मातामहः 555
मातामही 555
मातुलः 554
मात्रीयः 623
मात्स्यिकः 613
माथुरः 591, 593, 594
माथुरम् 605
माध्यन्दिनः 598
माध्यमः 598
मानवः 535
मानुषः 535
मानुष्यकम् 547
मामकम् 584
मामकीनम् 584
मायावान् 670, 673
मायावी 670
मायिकः 670, 673
मायी 670
मार्गिकः 613
मार्दवम् 634
मालावान् 672, 674
माली 672
मासिकः 588
माहेयः 572
मुख्यः 596
मुनिता 642
मुनित्वम् 642
मूढता 639
मूढत्वम् 639
मूर्धन्यः 596
मृत्तिका 687
मृदुजातीयः 693
मृदुता 634
मृदुत्वम् 634
मेधावान् 670
मेधावी 670
मैत्रावरुणता 643
मैत्रावरुणत्वम् 643
मैत्रावरुणीयम् 643
मैत्रीयः 581
मैनिकः 613
मौढ्यम् 639
मौनम् 642
मौहूर्त्तिकः 564
म्रदिमा 634

य

यकः 744
यतः 699
यतमः 744
यतरः 743, 744
यति 653
यतिधा 707
यत्र 701
यथा 704
यदा 702
यदीयः 581
यविष्ठः 723
यशस्वान् 670, 688
यशस्वी 670
याज्ञिकपाशः 727
यावकः 745
यावद्धा 707
यावान् 652
यावन्तः 653
युवकयोः 741
युवकाभ्याम् 741
युवतमः 723
युवता 641
युवत्वम् 641
युवराजता 639
युवराजत्वम् 639
युष्माककम् 741
युष्मकासु 741
युष्मदीयम् 583
यौवतम् 544
यौवनम् 641
यौवराज्यम् 639
यौष्माकम् 583
यौष्माकीणम् 583

र

रकारः 689
रज्जुमात्री 649, 650
रथिकः 612
राजकम् 546
राजकीयः 578
राजकुलीनः 537
राजता 639
राजत्वम् 639
राजनः 533
राजन्यः 533
राजन्यकम् 547
राजपुत्रकम् 547
राज्यम् 639
राष्ट्रियः 570, 591
रूपधेयम् 690
रेफः 689

ल

लक्ष्मीवान् 667

व

वणिक्ता 639, 640
वणिक्त्वम् 639, 640
वणिज्यम् 640
वत्सीयः 623
वरिमा 636
वर्ग्यः 595
वर्षिमा 636
वाचाटः 678

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun

वाचालः 678
वाणिजः 683
वाणिज्यम् 639
वातकी 676
वात्सकम् 547
वात्स्यः 524
वायव्यम् 560
वार्क्षमूलिकः 615
वार्द्धकम् 547
वार्धकम् 547
वार्षिकः 588
वाशिष्ठः 521
वासन्तः 589
वासुदेवः 521
वास्तेयम् 597
वास्त्रः 565
वास्त्रिकः 618
विंशः 659
विंशतितमः 658
विद्याचञ्चुः 645
विद्याचणः 646
विद्यावान् 667
विद्वत्ता 639
विद्वत्वम् 639
विमतिता 638
विमतित्वम् 638
विमतिमा 638
विश्वकः 740
विश्वतः 698
व्रीहिकः 673
व्रीहिमान् 673
व्रीही 673
वृक्षकः 738
वृद्धतमः 720
वृद्धतरः 721
वृद्धतरा 721
वृद्धता 636
वृद्धत्वम् 636
वृन्दारकत्वम् 636
वृन्दिमा 636
वैकथिकः 622
वैदुष्यम् 639
वैनयिकम् 682
वैमतम् 638
वैमत्यम् 638
वैयाकरणः 563
वैयाकरणपाशः 727
वैयाकरणरूपः 724

श

शाकटिकः 611
शाकशाकटम् 645
शाकशाकिनम् 645
शाकुनिकः 613
शिखावान् 672
शिखी 672
शीघ्रतरं गच्छति 716
शुक्लतमः 714
शुक्लता 638
शुक्लत्वम् 638
शुक्लिमा 638
शुक्ली करोति 733
शुक्ली भवति 733
शुक्ली स्यात् 733
शुची करोति 734
शुची भवति 734
शैलिकी 619
शैवः 520, 559, 604
शौकम् 544
शौक्ल्यम् 638
श्माशानिकः 615
श्यापर्णाः 525
श्रेयान् 719
श्रेष्ठः 719
श्वशुर्यः 531
श्वाफल्कः 521

ष

षट्कृत्वः 711
षष्ठः 665
षष्ठी 665
षोढा 706

स

सकः 744
सकृद् भुङ्क्ते 713
सखिता 639
सखित्वम् 639
सख्यम् 639
सतीर्थ्यः 616
सदा 703
सप्तकृत्वः 711
सप्तमः 660
सभ्यः 620
सर्वकः 740
सर्वतः 698
सर्वत्र 701
सर्वथा 704
सर्वदा 702
सहायता 552
सांवत्सरिकः 588
साधकतमः 714
साधुवत् 627
सान्ध्यः 590
साप्ततिकम् 617
सामयिकम् 682
सामीप्यम् 685
सिद्धसेनीयः 604
सुखी 677
सूर्यः 691
सैप्रः 527
सौतारः 502
सौत्रः 562
सौभद्रः 502
सौवम् 605
सौवर्णम् 553
स्त्रैणः 540, 591
स्त्रैणम् 544, 605
स्थविरता 641
स्थविरत्वम् 641
स्थाविरम् 641
स्थिरता 636
स्थिरत्वम् 636
स्थेमा 636
स्थैर्यम् 636
स्रुग्वान् 670
स्रुग्वी 670
स्रौघ्नः 591, 594
स्रौघ्नम् 605
स्वकीयः 582
स्ववान् 681
स्वस्रीयः 529
स्वामी 581
स्वीयम् 624

ह

हारिणिकः 613
हारिद्रम् 543
हास्तिकः 611
हास्तिकम् 548
हृदयवान् 680
हृदयालुः 680
हैमवती 601
ह्रसिमा 636
ह्रस्वता 636
ह्रस्वत्वम् 636

Jain Vishva Bharati Institute (Deemed University), Ladnun